माध्यमिक पाठ्यक्रम

उद्यमिता (249)

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

आईएसओ 9001 : 2000 प्रमाणित

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्था)

ए-24-25 इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-201301 (उ. प्र.)

वेबसाइट : www.nios.ac.in टोल फ्री नं. - 18001809393

सलाहकार समिति

प्रोफेसर सरोज शर्मा
अध्यक्ष, एनआईओएस

डॉ. राजीव कुमार सिंह,
निदेशक (शैक्षिक), एनआईओएस

पाठ्यक्रम समिति

डॉ. पूनम सिन्हा,
निदेशक (उद्यमिता शिक्षा),
एनआईईएसबीयूडी

डॉ. नुने श्रीनिवास राव,
निदेशक, केबीआईसी,
भारत सरकार, मुम्बई

डॉ. श्रीकांत शर्मा,
सहा. संकाय सदस्य् (एसईई),
राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
संस्थान (एमएसएमई), हैदराबाद

श्री रमेश कुमार,
सहायक प्रोफेसर,
शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ बिजनेस
स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

डॉ. भगवान दास,
प्रधानाचार्य / विशेष कार्य अधिकारी,
(ओएसडी) विद्यालय शाखा,
शिक्षा निदेशालय,
दिल्ली

डॉ. अनुप्रिया पांडे,
सहायक प्रोफेसर, एसओएमएस,
इग्नू नई दिल्ली

सुश्री अंशुल खरबंदा,
शैक्षिक अधिकारी, एनआईओएस मुख्यालय,
नोएडा (उ.प्र.)

पाठ लेखक

डॉ. नुने श्रीनिवास राव,
निदेशक, केबीआईसी,
भारत सरकार, मुम्बई

डॉ. श्रीकांत शर्मा,
सहा. संकाय सदस्य् (एसईई),
राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
संस्थादन (एमएसएमई), हैदराबाद

डॉ. संगीता जैरथ,
एसोसिएट प्रोफेसर, गार्गी कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. गीता किचलु,
एसोसिएट प्रोफेसर, गार्गी कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली

सुश्री लक्ष्मी देवी,
सहायक प्रोफेसर, गार्गी कॉलेज, दिल्ली
विश्िवविद्यालय, दिल्ली

डॉ. निधि केसरी,
सहायक प्रोफेसर, शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ
बिजनेस स्टीडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

डॉ. अंशिका अग्रवाल,
सहायक प्रोफेसर, रामानुजन कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्री निशांत शर्मा,
सहायक प्रोफेसर, मोती लाल नेहरू
(संध्या) कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

सम्पादन मंडल

प्रोफेसर गोपीनाथ (सेवानिवृत्त)
प्रमुख एवं डीन, वाणिज्य विभाग, दीन दयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, उ. प्र.

डॉ. नंदिता मिश्रा,
एसोसिएट प्रोफेसर
ऐमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा, उ. प्र.

डॉ. सोनाली आहूजा दुआ,
एसोसिएट प्रोफेसर, गार्गी कालेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. उमा एस. सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर,
एआरएसडी कालेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. रमेश कुमार,
एसोसिएट प्रोफेसर,
शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ बिजनेस स्टडीज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. निधि केसरी,
सहायक प्रोफेसर, शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ बिजनेस स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. विजेता सिंह,
सहायक प्रोफेसर,
ऐमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा, उ. प्र.

प्रो. रेनू जटाना,
पूर्व डीन तथा संकाय अध्यक्ष,
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

सुश्री बिनीता सेन,
परामर्शदाता सम्पादक,
नई दिल्ली
(भाषा संपादन)

डॉ. राम नारायण मीणा,
सहायक निदेशक (शैक्षिक),
एनआईओएस, नोएडा (उ.प्र.)

सुश्री अंशुल खरबंदा,
शैक्षिक अधिकारी,
एनआईओएस, नोएडा (उ.प्र.)

अनुवादक मंडल

श्री विनोद कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (सेवानिवृत्त)
एयर इंडिया, दिल्ली

श्री विवेक सक्सेना
सहायक निदेशक,
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान
नई दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयक

सुश्री अंशुल खरबंदा
शैक्षिक अधिकारी, एनआईओएस मुख्यालय, नोएडा (उ.प्र.)

ग्राफिक, कवर डिजाइन एवं डीटीपी

राज कुमार बेन्जंकी
ग्राफिक आर्टिस्ट, एनआईओएस, नोएडा, (उ.प्र.)

मैसर्स शिवम ग्राफिक्स
431, ऋषि नगर, रानी बाग, दिल्ली - 110034

आपके साथ थोड़ी सी बातचीत

प्रिय शिक्षार्थियो,

हमें प्रसन्नता है कि आपने माध्यमिक स्तर पर उद्यमिता का एक विषय के रूप में चयन किया है। उद्यमिता पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है।

जैसा कि आप जानते हैं, हम में से अनेकों के पास अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए विचार हैं। अनेक विचारशील युवा अपनी अच्छी खासी और अच्छे वेतन वाली नौकरियों को छोड़कर अपने कैरियर के लिए उद्यमिता का चयन कर रहे हैं। इस संदर्भ में, हमने अपने विद्यार्थियों में उद्यमिता, उसके स्वरूप एवं उसकी विशेषताओं की मूलभूत समझ विकसित करने का प्रयास किया है। इसके अलावा, हम आपको उद्यमिता की विभिन्न अवधारणाओं जैसे नवाचार, मूल्य संवर्धन, प्रेरणा के सिद्धांत, उद्यम स्थापित करने की प्रक्रिया और उद्यमिता के लिए उपलब्ध इको-सिस्टम एवं सरकार द्वारा प्रदान की जा रही सहायताएं आदि से परिचित करवाना चाहते हैं। इस अध्याय से आप में इस विचार की उत्पति होगी कि हम कैरियर विकल्प के रूप में उद्यमिता कैसे चुन सकते हैं और इस विकल्प का चयन हमें क्यों करना चाहिए।

इस पाठ्यक्रम में उद्यमिता, रचनात्कता एवं नवाचार, उद्यमिता प्रेरणा, उद्यमिता अवसर, सूक्ष्म, लक्षु एवं मध्यम उद्यम एवं उद्यमिता की तंत्रव्यवस्था तथा परियोजना कार्य मिलाकर कुल छः माड्यूल हैं। प्रत्येक पाठ को मुक्त और दूरस्थ माध्यम से आप जैसे स्व-प्रेरित शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। चित्रों / आंकड़ों की प्रस्तुति से स्पष्ट करने के साथ-साथ पाठ लेखन सरल भाषा में किया गया है। इन सभी में पाठगत प्रश्न शामिल हैं जो प्रत्योक पाठ के हर खंड के बाद प्रस्तुत किए गए हैं। सामान्यशतः, ऐसे प्रश्नों के उत्तर लघु प्रकार के हैं, जिनमें वस्तुनिष्ठ प्रकार, सही और गलत, कॉलम मिलान, रिक्त स्थान और बहुविकल्पीय प्रश्न हैं जो आपको यह जानने में मदद करेंगे कि आपने किस खंड में क्या सीखा है। पाठ के अंत में इन प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं। यदि आप प्रश्नों के जवाब देने में सक्षम हैं, तो आप आगे बढ़ सकते हैं। यदि नहीं, तो आपको फिर से संबंधित खंड का अध्ययन करना चाहिए।

मुझे पूरा विश्वास है कि ये पाठ रोचक प्रतीत होंगे और वास्तविक जीवन की स्थितियों से अपने ज्ञान की सम्बद्धता करने में आप सक्षम होंगे। इसलिए, इन सभी पाठों को ध्यान से पढ़ें और परीक्षा की अच्छी तैयारी करें।

अंततः आपको कार्य क्षेत्र में प्रवेश करना है जो या तो रोजगार या स्व-रोजगार हो सकता है। कार्यस्थल पर आपकी सफलता इस तथ्य पर निर्भर करेगी कि आपने कितनी कुशलता से अपने कार्य का निर्वाह किया है। अंतिम मॉडयूल केस स्टडी दृष्टिकोण का उपयोग करके नियत कार्य करने के कौशल को विकसित करने के लिए डिजाइन किया गया है।

यह उम्मीद की जाती है कि यह परियोजना कार्य आपको उद्यमिता के विभिन्न पहलुओं को समझने इसे अपने जीवन में सार्थक करने के लिए कौशल विकास में सहायक होंगे।

उद्यमिता में परीक्षा में एक प्रश्न पत्र शामिल होगा जो 100 अंकों का होगा। आपके अभ्यास के लिए, पुस्तक के अंत में एक आदर्श प्रश्न पत्र दिया गया है। इसके बाद विस्तृत अंक योजना है जो आपको बताएगी कि आपके उत्तरों का मूल्यांकन कैसे किया जाएगा। सभी सवालों के जवाब देने की कोशिश करें और अंक योजना में दिए गए उत्तर की तुलना करें।

यदि आपको इसके अध्ययन में किसी प्रकार की कोई कठिनाई होती है, तो हमें आप निःसंकोच लिख सकते हैं।

आपकी सफलता की कामना के साथ।

पाठ्यक्रम समिति

अध्ययन सामग्री का उपयोग कैसे करें

शुभकामनाएं! आपने स्व-अध्ययन करने की चुनौती को स्वीकार किया है। एनआईओएस आपके प्रयास के पथ पर आपके साथ है और इसके लिए आपको ध्यान में रखकर विशेषज्ञों के एक दल की सहायता से माध्यमिक स्तर पर उद्यमिता की स्व-अध्ययन सामग्री का निर्माण किया गया है। यदि आप दिए गए निर्देशों का पालन करते हैं, तो आप इस सामग्री से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त कर पाएंगे। सामग्री में उपयोग किए जाने वाले प्रासंगिक चिह्न आपका मार्गदर्शन करेंगे। ये चिह्न आपकी सुविधा के लिए नीचे दिए गए हैं।

शीर्षक : इनसे आपको व्याप्तक सामग्री का स्पष्ट संकेत प्राप्त होता है। आइए इन्हें पढ़ें :

अध्ययन से प्राप्त होने वाले लाभ : इसमें आपके लिए ऐसे विवरण स्पष्ट किए गए हैं कि संबधित पाठ के अध्ययन से आपको क्या लाभ होगा। इसके उद्देश्य से आप यह भी ज्ञात कर सकेंगे कि आपने पाठ के माध्यम से क्या सीखा है। इन्हें अवश्य पढ़ें।

टिप्पणियां : प्रत्येक पृष्ठ में महत्वपूर्ण बिंदुओं को लिखने या नोट्स बनाने के लिए साइड मार्जिन रखा गया है।

पाठगत प्रश्न : प्रत्येक खंड के अंत में बहुत छोटे उत्तर की अपेक्षा वाले स्वयं जांच किए जाने योग्य प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर पाठ के अंत में दिए गए हैं। इनसे आप अपनी प्रगति की जाँच स्वयं कर सकेंगे। ऐसे प्रश्नों के उत्तर दें। यदि आप इसमें सफल होते हैं तो आगे बढ़ने अथवा पाठ का अध्ययन फिर से करने का निर्णय स्वयं ले सकते हैं।

सुझाए गए क्रियाकलाप : अवधारणा की बेहतर समझ के लिए कुछ क्रियाकलापों का सुझाव दिया गया है।

आपने क्या सीखा : यह पाठ के मुख्य बिंदुओं का सारांश है। यह पुनःस्मरण करने और सुधार में मदद करेगा। इससे पाठ का संक्षेप एवं पाठ को दोहराने में आपको मदद मिल सकती है। आप इसमें अपने स्वयं के बिन्दु भी जोड़ सकते हैं।

पाठांत प्रश्न : ये लंबे और छोटे प्रश्न हैं जिनसे पूरे विषय की स्पष्ट समझ के लिए अभ्यास करने का अवसर मिलता है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर : इनसे आपको यह जानकारी मिल सकेगी कि आपने प्रश्नों का सही उत्तर दिया है अथवा नहीं।

शब्दावली : पाठ में प्रयुक्त विषय से संबंधित कठिन शब्दों की एक वर्णमाला सूची बेहतर समझ के लिए प्रदान की गई है और समझाया गया है।

वेब संसाधन: ये वेबसाइट विस्तारित शिक्षा प्रदान करती हैं। आवश्यक जानकारी को सामग्री में शामिल किया गया है और अधिक जानकारी के लिए आप इनका संदर्भ ले सकते हैं।

विषय सूची

पाठ का नाम		पृष्ठ संख्या
माडयूल 1:	उद्यमिता	
1.	उद्यमिता : एक परिचय	1
2.	उद्यमी : एक परिचय	16
3.	उद्यमशीलता का महत्त्व	29
माडयूल 2:	रचनात्माकता एवं नवाचार	
4.	रचनात्माकता : सफल उद्यमिता के लिए एक आवश्यकता	46
5.	नवाचार और मूल्य संवर्धन की आवश्यकता	62
6.	नवाचार और समस्या समाधानकर्ता के रूप में उद्यमी	79
माडयूल 3:	उद्यमिता उत्प्रेरणा	
7.	उद्यमिता : मूल्य तथा दृष्टिकोण	96
8.	उपलब्धि उत्प्रेरण	111
9.	सफल उद्यमी	126
माडयूल 4:	उद्यमिता अवसर	
10.	विचारोत्पत्ति	141
11.	उद्यम की स्थापना	159
12.	संसाधन एकत्रण	176
माडयूल 5:	सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा उद्यमिता परितंत्र	
13.	सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसमएमई)	191
14.	किससे, किसके लिए सम्पर्क करें	210
15.	उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं	222
16.	उष्मायन (इनक्यूबेशन) : एक परिचय	239
17.	ई–संसाधन	253
मॉडयूल 6:	परियोजना कार्य	
18.	परियोजना कार्य	266
	पाठ्यक्रम	i-viii
	प्रश्न पत्र प्रारूप	ix-xi
	आदर्श प्रश्नपत्र	xii-xv
	अंकयोजना	xvi-xxiii

मॉडयूल 1

उद्यमिता

अधिकतम अंक - 20

अध्ययन के घंटे - 45

एक उद्यमी के रूप में किए जाने वाले कार्यों को उद्यमिता कहा जाता है। इस मॉड्यूल के अध्ययन से आप उद्यमिता की अवधारणा और परिभाषा को समझने में सक्षम हो सकेंगे। आपको इसके प्रकार और कार्य, नैतिकता, उद्यमी के मूल्य और उद्यमशीलता का महत्व ज्ञात होगा। आप उद्यमियों के गुणों को भी समझ पाएंगे।

पाठ 1 उद्यमिता : एक परिचय

पाठ 2 उद्यमी : एक परिचय

पाठ 3 उद्यमशीलता का महत्त्व

1

उद्यमिता : एक परिचय

इस पाठ को आरंभ करने से पहले आप अपने से यह ज्ञात करें कि क्या आप मेहनती, बुद्धिमान और रचनात्मक प्रवृत्ति के हैं तथा जोखिम उठाने एवं लोगों के साथ अच्छे संबंध बनाने के लिए तत्पर हैं। यदि आपका उत्तर हां है, तो अपनी इस प्रतिभा को संजोए रखें, अपने अन्तर्मन में व्याप्त इस बल के प्रभाव से आगे बढ़ते रहें। आप उद्यमिता के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। पूंजीवादी व्यवस्था के उस क्षेत्र में आप अपनी जगह बनाने जा रहे हैं जहां आर्थिक प्रतिस्पर्धा का सामना आप अपने विचारों का कार्यान्वयन करके करेंगे। उद्यमिता का अर्थ पारंपरिक व्यवसाय से जुड़े रहना नहीं है। इसके लिए नव निर्माण की आवश्यकता होती है। इसके लिए मात्र विचारों से ही काम नहीं चलता अपितु नए व्यावसायिक परिवेश का संवर्धन तथा कार्यान्वयन भी करना पड़ता है।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- उद्यमिता की अवधारणा, अभिप्राय तथा विशेषताओं की व्याख्या करते हैं;
- रोजगार, स्व-रोजगार एवं उद्यमिता के मध्य अंतर एवं तुलना करते हैं;
- उद्यमिता के विभिन्न स्वरूपों की रूपरेखा तैयार करते हैं; तथा
- उद्यमिता का आजीविका के एक विकल्प के रूप में विश्लेषण करते हैं।

1.1 उद्यमिता का अभिप्राय

उद्यमिता को ऐसे अन्तर्दृष्टिपरक व्यक्तियों की संकल्पनाओं एवं नव विचारों को साकार स्वरूप प्रदान करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो सूचनाओं एवं संसाधनों के उपयोग से अपनी संकल्पना को साकार करने में सफल हुए है। उद्यमिता किसी

व्यक्ति में समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा लाभ कमाने की मंशा से व्यवसाय स्थापित करने के अपने विचारों को साकार स्वरूप प्रदान करके अपना व्यवसाय स्थापित करने की क्षमता (अर्थात ज्ञान तथा कौशल) है।

उद्यमिता को ऐसी व्यवस्था कहा जा सकता है जिसमें उद्यमी (सामर्थ्यवान उद्यमी), संस्थान एवं सरकार शामिल है। इस व्यवस्था के अंतर्गत वांछित नीतिगत परिणामों से उद्यमशीलता की प्रक्रियाओं का स्तर बढ़ता है।

1.2 उद्यमिता की परिभाषा

बॉमोल की उद्यमिता की परिभाषा में प्रत्येक प्रकार के अवसर-व्यवहार की अपेक्षा-जिसकी व्यापकता स्वयं उनके शब्दों में, अवसरों, राजनैतिक लाभ प्राप्ति एवं ''संगठित अपराध'' शामिल है।

वेन्नकर्स एवं थुरिक द्वारा प्रस्तुत की गई परिभाषा संभवतः अधिक विस्तारित एवं समावेशी है:

उद्यमिता, स्वयं व्यक्तियों में, समूहों में, मौजूदा संगठनों के भीतर एवं उनके बाहर भी नए आर्थिक अवसरों (नए उत्पादों, नई उत्पादन विधियों, नई संगठनात्मक योजनाओं और नए उत्पाद-बाजार संयोजनों) का निर्माण करने और बाजार के सम्मुख अपने विचारों को प्रस्तुत करने की प्रकट क्षमता और आकांक्षा है, जो बाजार में व्याप्त अनिश्चितता और अन्य बाधाओं को विचार में लेकर स्थान, स्वरूप और संसाधनों तथा संस्थानों के उपयोग से संबंधित निर्णय लेकर पूरी की जाती है।

इस प्रकार, उद्यमिता को एक ऐसी आर्थिक प्रक्रिया माना जा सकता है जिसमें अनिश्चिता का जोखिम होते हुए भी लाभ की प्राप्ति के उद्देश्य से किसी विचार की उत्पति अथवा अवसर की उत्पति करके, उसका संवर्धन और उसका विकास करके संसाधनों के प्रभावी उपयोग के साथ उसका कार्यान्वयन किया जाता है।

1.3 उद्यमिता की विशेषताएँ

i. उद्यमिता एक आर्थिक प्रक्रिया है जो लाभोन्मुख व्यवसाय की उत्पति, विकास एवं अनुरक्षण के लिए की जाती है।

ii. इसका प्रारंभ विक्रय तथा बाजार में लाभ की प्राप्ति के लिए अवसर की एक संभावना के रूप में पहचान करने से होता है।

iii. उद्यमिता उपलब्ध संसाधनों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग है।

iv. उद्यमिता किसी उद्यम अथवा किसी उद्यमी की जोखिम ग्रहण करने की क्षमता है।

पाठगत प्रश्न 1.1

1. रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखिए :

   (क) उद्यमिता के लिए मात्र .... से ही काम नहीं चलता अपितु नए व्यावसायिक परिवेश का .... भी करना पड़ता है।

   (ख) उद्यमिता उपलब्ध संसाधनों का सर्वश्रेष्ठ .... है।

   (ग) उद्यमिता एक आर्थिक प्रक्रिया है जो .... की उत्पत्ति, विकास एवं अनुरक्षण के लिए की जाती है।

1.4 उद्यमिता के प्रकार

आइए, उद्यमिता के विभिन्न स्वरूपों पर एक नजर डालते हैं। आर्थिक विकास के लिए उद्यमिता के सभी स्वरूप महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य शक्ति का कार्य करते हैं।

1.4.1. जोखिम के आधार पर

(क) नवोपाय उद्यमिता नवोपाय उद्यमिता की उत्पति नव विचारों तथा उन्हें व्यवहार्य व्यवसाय में परिवर्तित करके अपने उत्पादन बाजार में इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि वह ग्राहकों की पसंद पर खरा उतर सके और कभी कभार बाजार में उसके नए ग्राहक भी तैयार कर सके। इसके उदाहरण स्टीव जॉब्स एवं बिल गेट्स हैं।

(ख) अनुकरणशील उद्यमिता के अंतर्गत बाजार में अपना प्रभाव स्थापित करने के उद्देश्य से कुछ व्यवसाय विचारों की नकल करके चालू विधियों का उपयोग करके तथा उनमें थोड़े सुधार करके किया जाता है अनुकरणशील उद्यमिता का अभिलक्षण बाह्य परिवर्तनशील परिवेश के अनुसार प्रौद्योगिकियों को अंगीकार करना है। इसके उदाहरण छोटे शापिंग कॉम्प्लेक्स एवं छोटे कार निर्माता है।

(ग) फैबियन (अवसरवादी) उद्यमिता की सम्बद्धता ऐसे व्यवसाय संगठनों से है जिनमें वैयक्तिक स्वामी नव विचारों एवं नवोपायों की न तो कोई संकल्पना ही करता है और न ही उनका कार्यान्वियन करता है। व्यापार संव्यवहार ग्राहक, धर्म, व्यापार एवं पूर्व व्यवहारों के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं। ऐसे संगठन जोखिम उठाने अथवा बदलाव के प्रति ज्यादा इच्छुक नहीं होते हैं तथा वे अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित पुरानी विधियों के अनुसार ही अपना व्यवहार करते है।

(घ) ड्रोन (दूर नियंत्रित) उद्यमिता का संबंध ऐसे व्यवसायों से है जिनमें स्वामी विद्यमान व्यवस्था एवं व्यापार के क्रियाकलापों की गति के प्रति संतुष्ट होता है तथा बाजार में नेतृत्व की प्राप्ति के लिए कोई रूचि नहीं दर्शाता है। निरंतर घाटे उठाने के बावजूद भी वे उत्पादन की विद्यमान विधियों में किसी प्रकार का बदलाव नहीं करना चाहते हैं।

1.4.2 व्यवसाय के स्वरूपों के आधार पर

(क) कृषि उद्यमिता के अंतर्गत खेती, कृषि उत्पादों की बिक्री, सिंचाई, कृषि यांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न प्रकार के कृषि क्रियाकलाप आते हैं।

(ख) निर्माण उद्यमिता के अंतर्गत ग्राहकों की आवश्यकताओं को संज्ञान में लेने तथा तदनुसार ग्राहकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निर्माण के उपयोग के लिए संसाधनों एवं प्रौद्योगिकी की खोज करके कच्ची सामग्रियों को तैयार उत्पाद में परिवर्तित करने की प्रक्रिया की जाती है।

(ग) व्यापार उद्यमिता के अंतर्गत निर्माताओं से तैयार उत्पाद प्राप्त किए जाते हैं तथा इन्हें ग्राहकों को या तो सीधे अथवा किसी थोक व्यापारी, डीलर अथवा खुदरा व्यापारी जैसे मध्यस्थ माध्यमों से बेचा जाता है। इसमें मध्यस्थ निर्माता और ग्राहकों के बीच कड़ी/लिंक की भूमिका निभाता है।

1.4.3 प्रौद्योगिकी के प्रयोग के आधार पर

(क) प्रौद्योगिकीय उद्यमिता विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर आधारित उद्योग की स्थापना करने एवं उसका संचालन करने की प्रक्रिया के लिए है। इसमें उत्पादन के लिए नवोपाय युक्त विधियों का उपयोग किया जाता है।

(ख) गैर-प्रौद्योगिकीय उद्यमिता व्यावसायिक उत्तरजीविता एवं प्रतिस्पर्धी बाजार में टिके रहने के लिए विपणन एवं वितरण रणनीतियों के लिए वैकल्पिक एवं कृत्रिम विधियों का उपयोग किया जाता है।

1.4.4 स्वामित्व के आधार पर

(क) कॉर्पोरेट उद्यमिता का प्रारंभ बर्गेलमैन द्वारा किया गया था। कॉर्पोरेट स्वामित्व वह है जिसके अंतर्गत कोई व्यक्ति नवोपाय एवं कौशल के उपयोग से किसी कॉर्पोरेट उपक्रम का प्रबंधन एवं नियंत्रण करता है।

(ख) निजी उद्यमिता का अर्थ किसी व्यक्ति द्वारा व्यवसाय के स्वामी के रूप में अपना व्यवसाय स्थापित करना एवं उससे जुड़े जोखिमों का वहन करना है।

(ग) राजकीय उद्यमिता वह होती है जिसमें व्यापार एवं औद्योगिक उद्यम का संचालय राज्य अथवा सरकार द्वारा किया जाता है।

(घ) संयुक्त उद्यमिता के अंतर्गत संयुक्त व्यावसायिक प्रक्रिया निजी उद्यमी एवं सरकार के मध्य की जाती है।

1.4.5 उद्यम के आकार के आधार पर

1. **सूक्ष्म उद्यम :** ऐसा व्यवसाय जिसकी कारोबार (टर्नओवर) पांच करोड़ रुपए तक हो।
2. **लघु-स्तरीय उद्यमिता :** ऐसा उद्यम जिसका वार्षिक कारोबार (टर्नओवर) 5 करोड़ रुपए से अधिक हो परंतु 75 करोड़ रुपए से अधिक न हो।
3. **मध्यम-स्तरीय उद्यमिता :** ऐसा उद्यम जिसका कारोबार (टर्नओवर) 75 करोड़ रुपए से अधिक तथा 250 करोड़ रुपए तक हो।
4. **वृहद स्तरीय उद्यमिता:** ऐसा व्यवसाय जिसका कारोबार (टर्नओवर) 250 करोड़ रुपए से अधिक हो।

1.4.6 लैंगिक आधार पर

महिला उद्यमिता

महिला उद्यमिता के लिए भारत सरकार की परिभाषा के अनुसार ''किसी व्यवसाय उद्यम में महिला उद्यमिता वह है जिसमें कम से कम 51 प्रतिशत वित्तीय हितों का स्वामित्व, प्रबंधन एवं नियंत्रण महिला द्वारा किया जा रहा हो तथा उद्यम में उत्पन्न रोजगार का कम से कम 51 प्रतिशत अंशभाग महिलाओं को प्राप्त हो।''

स्कमपीटर ने महिला उद्यमिता की परिभाषा 'व्यवसाय उद्यम में महिलाओं की इक्विटी एवं रोजगार में भागीदारी होने के आधार'' पर की है।

1.4.7 सामाजिक समस्याओं के आधार पर

सामाजिक उद्यमिता

सामाजिक उद्यमिता की अवधारणा वर्ष 1960 के आसपास उत्पन्न हुई थी परन्तु बांग्लादेश में मुहम्मद युनूस द्वारा की गई ''ग्रामीण बैंक'' की स्थापना इस दिशा में प्रथम प्रयास था जिसमें इस अवधारणा का पूरी तरह से उपयोग किया गया था। सामाजिक उद्यमिता में सामाजिक समस्याओं एवं पर्यावरणीय समस्याओं को विचार में लेकर बदलाव करने की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इसमें समाज कल्याण में योगदान का दायित्व प्रधान हैं तथा लाभ को अधिक प्राथमिकता न देकर उत्तरजीविता की अनिवार्यता के साथ इसे दोयम दर्जा प्रदान किया गया है।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. **निम्नलिखित में संबंध स्थापित कीजिए:**

स्तम्भ 'क'	स्तम्भ 'ख'
(क) महिला उद्यमिता	i. जोखिम

(ख)	लघु स्तरीय उद्यमिता	ii.	उद्यमिता का आकार
(ग)	कॉर्पोरेट उद्यमिता	iii.	स्वामित्व
(घ)	व्यापार उद्यमिता	iv.	लिंग
(ङ)	अनुकरणीय उद्यमिता	v.	व्यापार के प्रकार

2. यह बताएं कि नीचे प्रस्तुत विवरण में से क्या सत्य अथवा क्या असत्य है :

(क) बिल गेट्स नवोपाय उद्यमिता का उदाहरण हैं।

(ख) कॉर्पोरेट उद्यमिता की शुरुआत बर्गेलमैन ने की थी।

(ग) शहनाज हुसैन महिला उद्यमिता का उदाहरण हैं।

(घ) छोटे शापिंग काम्प्लेक्स का विकास अनुकरणीय उद्यमिता का उदाहरण हैं।

3. दिए गए उत्तरों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :-

(क) महिला उद्यमिता के लिए न्यूनतम वित्तीय हित कितने होने अपेक्षित हैं:

(i) 35 प्रतिशत

(ii) 51 प्रतिशत

(iii) 75 प्रतिशत

(iv) 100 प्रतिशत

(ख) सामाजिक उद्यमिता की अवधारणा लगभग कब उत्पन्न हुई थी:

(i) 1960

(ii) 1965

(iii) 1990

(iv) 2014

(ग) कोई व्यवसाय जिसका कारोबार (टर्नओवर) 5 करोड़ रुपए से कम है उसे कौन सा उद्यम माना गया है:

(i) सूक्ष्म उद्यम

(ii) लघु उद्यम

(iii) मध्यम उद्यम

(iv) वृहद उद्यम

(घ) कोई उद्यम जिसका कारोबार (टर्नओवर) 75 करोड़ रुपए से अधिक परन्तु 250 करोड़ रुपए तक है, उसे कौन सा उद्यम माना गया है :

(i) वृहद् उद्यम

(ii) लघु उद्यम

(iii) मध्यम उद्यम

(iv) सूक्ष्म उद्यम

1.5 स्व-रोजगार

सरकार स्व-रोजगार को बढ़ावा देना चाहती है क्योंकि प्रत्येक को रोजगार देना लगभग असंभव है। तीन प्रकार के लोग होते हैं। पहली अर्थात क श्रेणी के पास शायद ही कोई बचत या धन है और उन्हें जो भी रोजगार उपलब्ध हैं, उनके पास लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, भले ही ये कम भुगतान और आकस्मिक हों। दूसरी अर्थात ख श्रेणी वह है जिनके पास कुछ बचत या धन तो है लेकिन वे किसी अन्य के कार्यालय, कारखाने या दुकान में काम करना करके पारिश्रमिक (वेतन या मजदूरी) कमाना चाहते हैं। तीसरी श्रेणी वह है जो लाभ कमाने के उद्देश्य से अपने स्वयं का व्यवसाय/दुकान चलाना चाहते हैं। पहली दो श्रेणियां कर्मचारी या प्रबंधक के रूप में दूसरों के व्यवसाय में कार्यरत हैं। तीसरी श्रेणी के लोग एकल उद्यम या स्वरोजगार की श्रेणी में आते हैं।

आइए, हम एक उदाहरण पर विचार करते हैं। यदि डॉक्टर या इंजीनियर जैसे पेशेवर योग्य व्यक्ति किसी अन्य संगठन में एक निश्चित वेतन या शुल्क के लिए काम करते हैं, तो ऐसे व्यक्ति स्व-नियोजित नहीं है। यदि वही डॉक्टर अपना स्वयं का चिकित्सालय (क्लीनिक) खोलकर अपना काम शुरू करता है, तो वह स्व-रोजगार है।

स्व-रोजगार के लाभ एवं हानियाँ :

लाभ

- अपने अनुसार सटिक कार्य के चयन की स्वतंत्रता
- कार्य समय में लोचकता
- शैक्षणिक डिग्री अथवा प्रमाण पत्र होने अथवा न होने की आवश्यक नहीं हैं
- असीमित धन राशि अर्जन की संभावनाएं
- कोई औपचारिक छुट्टी अथवा सेवानिवृत्ति का दिन तय नहीं
- कर कानूनों के अंतर्गत कर कटौती एवं छूट के लाभों की प्राप्ति
- व्यावसायिक क्षमता होने के कारण आत्म संतोष की प्राप्ति

हानियाँ

- प्रतिदिन व्यस्त व्यवसाय समय सारणी
- व्यवसाय आय में भिन्नता परन्तु खर्चे निरंतर जारी
- व्यावसायिक सफलता के प्रति तनावग्रस्त
- औपचारिक सेवानिवृति की योजना का आनन्द प्राप्त न होना

1.6 आजीविका

आपका ध्यान आए उन लोगों की ओर अवश्य गया होगा, जो नौकरियों की तलाश में देश के विभिन्न भागों से पलायन करके आते हैं। ऐसे गरीब लोग सड़क के किनारे अस्थायी,

अनधिकृत झोपड़ियाँ बनाते हैं जिन्हें झोंपड़पट्टी या झुग्गियों के रूप में जाना जाता है। ये लोग पहले कृषि या हस्तशिल्प के माध्यम से अपनी आजीविका कमा रहे थे अथवा इन्हें नौकरी के कोई अवसर उपलब्ध नहीं थे। गांव के प्रत्येक परिवार के लिए उपलब्ध भूमि सदैव समान रहती है और परिवार के सदस्यों की संख्या बढ़ती चली है जिससे मात्र कृषि के माध्यम से परिवार का पोषण करना कठिन हो जाता है। इसलिए, लोग नौकरी की तलाश में शहरों में आते हैं।

एक ही भूखंड से फसल उत्पत्ति को बढ़ाने के लिए सरकार बेहतर कृषि तकनीक प्रदान करके इनकी समस्याओं का समाधान कर रही है। साथ ही साथ गांवों के भीतर रोजगार और आजीविका के अन्य अवसर भी उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। युवाओं को प्रशिक्षण और वित्त प्रदान करके अपने उद्यम शुरू करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

1.6.1 आजीविका का अर्थ

आजीविका का अर्थ है जीवन की मूल आवश्यकता जैसे कि भोजन, वस्त्र, आश्रय, स्वास्थ्य और अपने और अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इन्हें प्राप्त करने की क्षमता हासिल करना। जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को प्राप्त करने की क्षमता शिक्षा और कौशल के माध्यम से क्षमताओं को विकसित करने का अवसर प्राप्त होने से होती है। भारत सरकार ने आजीविका के विकास के लिए अनेक विचारणीय कार्य किए हैं।

पाठगत प्रश्न 1.3

निम्नलिखित में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

1. स्व-रोजगार से किसी व्यक्ति को निम्नलिखित में से क्या चयन करने की स्वतंत्रता मिलती है:
   (क) समय
   (ख) स्थान
   (ग) इस प्रकार के कार्य जिससे सभी लाभ एवं हानियाँ प्राप्त होती हैं।
   (घ) उपर्युक्त सभी
2. निम्नलिखित में से किसका संबंध स्व-रोजगार से नहीं है?
   (क) ऑनलाइन शिक्षण
   (ख) ऑनलाइन शॉप खोलकर अपना नियमित व्यवसाय करना
   (ग) संदेश प्रेषण की सेवाएं प्रदान करना
   (घ) अध्यापन
3. उद्यमिता उन लोगों के लिए है जो:
   (क) वेतन प्राप्त करते हैं
   (ख) जो काम करना पसंद नहीं करते हैं

टिप्पणी

(ग) जिनमें अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने की क्षमता होती है

(घ) जो व्यवसाय में जोखिम उठाना पसंद नहीं करते हैं।

1.7 उद्यमशीलता एवं रोजगार के मध्य अंतर

किसी कार्य विशेष का चयन करने से पूर्व हमें कार्य एवं उद्यमिता के गुण दोषों की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। ऐसा करने से सुविचारित निर्णय लिया जा सकता है।

1. वरीयता और गैर-वरीयता के आधार पर

	नौकरी	उद्यमिता
गुण	1. आपके पास अपने काम के लिए निर्दिष्ट समय है। यदि कभी कार्यालय समय के पश्चात काम करना भी पड़ता है तो ऐसा प्रतिदिन नहीं होता है। 2. अपने कार्य समय के पश्चात आपके पास अपने अन्य कार्यों के लिए समय मिल जाता है। 3. आपको प्रत्येक माह के अंत में वेतन प्राप्त होता है। 4. आपकी पदोन्नति होती है और नए क्रियाकलाप मिलते हैं। 5. अपने पूरे कार्यकाल के दौरान शिष्ट जनों के साथ संगत रहती है।	1. आप किसी को रिपोर्ट नहीं करते और अपना कार्य स्वतंत्रता के साथ करते हैं। 2. कड़ी मेहनत और उसी के अनुसार पारिश्रमिका जितने बेहतर उत्पाद एवं सेवाएं आप देंगे उतनी ही बेहतर तरक्की की संभावनाएं होती हैं। 3. जब भी आपको सुविधा हो आप छुट्टी मना सकते हैं। 4. अपने बॉस आप खुद ही हैं, आप जो चाहें वो करें 5. वांछित अजीविका वृद्धि के साथ कार्य के प्रति संतुष्टि प्राप्त होती है।
दोष	1. आपको अपने काम का पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं मिलता है। 2. कड़ी मेहनत की अक्सर अनदेखी होती है। 3. अपने समूह में प्रतिस्पर्धा से आप परेशान हो सकते हैं 4. कार्य के प्रति थोड़ी अथवा बिल्कुल संतुष्टि प्राप्त न होना 5. मंदी के दौर में नौकरी छिन जाने का भय	1. यदि आप वांछित परिणाम प्राप्त नहीं कर पाते है तो आपका व्यवसाय ठप्प हो सकता है। जोखिम कारक अत्यधिक उच्च है। 2. वित्तीय सफलता का कोई आश्वासन नहीं। ऐसे अनेक उद्यम हैं जो अब अपना रोजमर्रा का डेस्क कार्य कर रहे हैं। 3. अपने बॉस स्वयं होते हुए भी आपको छुट्टी का उपयोग करने का अवसर नहीं मिल पाता है। 4. आपका कोई एक बॉस नहीं होता अपितु अनेकों होते हैं। सभी हितधारक आपसे बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पाद अथवा सेवाओं की अपेक्षा करते हैं। 5. आप समाज अथवा परिवार के लिए ज्यादा समय नहीं निकाल सकेंगे।

2. विशेषताओं के आधार पर :

आधार	उद्यमिता	नौकरी
1. रचनात्मकता बनाम निरंतरता	उद्यमिता के अंतर्गत विचारों की उत्पत्ति करने, तथा कुछ नए प्रकार के विकास करने तथा समस्याओं का निवारण विशिष्ट ढंग से किया जाना अपेक्षित होता है।	नौकरी में समान प्रकार के कार्य करते रहना तथा इसे कुछ बेहतर ढंग से करना होता है। रचनात्मकता उपयोगी एवं सराहनीय हो सकती है परन्तु यह उत्तरजीविता के लिए आवश्यक नहीं है क्योंकि पोषण ही एकमात्र आवश्यकता नहीं है। समय पर कार्य करना ज्यादा जरूरी है।
2. जोखिम	उद्यमिता में व्यवसाय में असफल होने पर मूल पूंजी गवां बैठने का जोखिम रहता है।	नौकरी में अपेक्षाकृत वित्तीय जोखिम कम होते हैं। छटनी अथवा नौकरी से निकाले जाने पर ध न की हानि हो सकती है अथवा आपको कम वेतन पर समान प्रकार की दूसरी नौकरी मिल सकती है।
3. पूरा दिन बनाम नियत कार्य घंटे	उद्यमी अपने उद्यम के प्रति चूंकि स्वयं उत्तरदायी होते हैं इसलिए वे समयनिष्ठ नहीं हो पाते हैं। उनके लिए परिवार अथवा समाज की अपेक्षाओं के मध्य समायोजन करना कठिन होता है।	नौकरी करने अक्सर नियत समय सारणी के अनुसार कार्य करते हैं तथा परिवार के लिए उनके पास काफी समय होता है।
4. विविधता बनाम केन्द्रित कौशल	उद्यमिता विविधतायुक्त बहु-कौशलों की प्रक्रिया है, बिल्कुल वैसे जैसे आपको अपनी नाव का निर्माण स्वयं ही करना है और खेना भी खुद ही है।	नौकरी में केन्द्रित कौशल अपेक्षि होता है जो किसी विशेष क्षेत्र का विशेषज्ञ बनने के लिए शिक्षा से प्राप्त किया जा सकता है।
5. अप्रत्याशिता बनाम वृद्धिशीलता	यदि निष्ठापूर्वक कार्य किए जाएं तो उद्यमिता से अप्रत्याशित विकास हो सकता है जिससे समृद्धि एवं प्रतिष्ठता प्राप्त हो सकती है।	नौकरी में पदोन्नति के स्वरूप में समय के साथसाथ संगत वेतनवृद्धियां प्राप्त होती हैं जिससे प्रत्येक उन्नति के साथ वेतन में निरंतर वृद्धि होती रहती है।
6. आय के प्रति अनिश्चिता बनाम वेतन की निश्चिता	उद्यमशीलता ऐसे लोगों के लिए नहीं है जो वेतन के बिना जी नहीं सकते हैं। इसमें महीनों तक, कभी कभार वर्षों तक, लाभ न होने की अनिश्चिता रहती है।	नौकरी में धन तुरंत प्राप्त होता है, वेतन निर्धारित एवं निश्चित होते हैं।

1.8 आजीविका के विकल्प के तौर पर उद्यमिता

क्या आप सदैव कुछ अलग करने का प्रयास करते रहे हैं और अधीनस्थ या कर्मचारी के रूप में काम करना आपको कभी पसंद नहीं आया है? यदि ऐसा है, तो उद्यमिता आपके लिए सही

विकल्प हो सकता है। सुव्यवस्थित क्षेत्रों में अवसरों की कमी के कारण उद्यमिता लोकप्रियता हो रही है। अर्थव्यवस्था के फलने-फूलने के साथ, आज का वातावरण उद्यमशीलता के लिए अनुकूल है। वस्तुत: कोई भी उद्यमी बन सकता है क्योंकि उसे किसी औपचारिक योग्यता की आवश्यकता नहीं होती है।

इतिहास उन उद्यमियों की सफलता की कहानियों से भरा हुआ है जिन्हें किसी अवसर में सफलता के आभास हुए हैं और उन्होंने उसका लाभ उठाया है। उद्यमी सरकारी और सामाजिक क्षेत्र के विविध क्षेत्रों में व्याप्त इन सुधारों से रचनात्मक भूमिका निभा रहे हैं।

ऐसे प्रमुख कारक नीचे प्रस्तुत किए गए हैं जो किसी व्यक्ति को विकल्प के रूप में उद्यमिता का चयन करने के प्रति आकर्षित अथवा विचलित सकते हैं:

क. बाध्यता कारक : नीचे दिए गए बाध्यता कारक किसी व्यक्ति को उद्यमिता का चयन नहीं करने देते हैं:

1. संस्कृति
2. रोजगार के वैकल्पिक स्रोत के प्रति वैयक्तिक वरीयता
3. वैयक्तिक क्षमताएं

ख. आकर्षण कारक : नीचे प्रस्तुत कारकों से व्यक्ति उद्यमिता का चयन आजीविका के रूप में करता है:-

1. अपनी वर्तमान नौकरी के प्रति निराशा अथवा असंतोष
2. नौकरी से निकाला जाना
3. पसंद की नौकरी प्राप्त न होना अथवा नौकरी प्राप्त करने में कठिनाई होना
4. ऐसा आभास होना कि वर्तमान नौकरी में कार्य बंद होने के कारण जोखिम है।
5. नए व्यावसायिक अवसर उपलब्ध होने के कारण अपना स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ करने की मंशा।
6. उद्यमिता की पारिवारिक पृष्ठभूमि, वित्तीय स्थिरता, अवसंरचना की उपलब्धि सहित सुचारू वातावरण होना।

पाठगत प्रश्न 1.4

1. दिए गए उत्तरों में से सही उत्तर का चयन कीजिये :

   1. क्षमता की कमी का संबंध इनमें से किससे है :

      (क) आकर्षण कारक

      (ख) बाध्यता कारक

(ग) - (क) तथा (ख) दोनों

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

2. निम्नलिखित में कौन सा कारक बाध्यता कारक से संबंधित नहीं है?

(क) नौकरी के प्रति असंतुष्टि

(ख) अपर्याप्त वेतन

(ग) कार्य करने का उत्साह

(घ) उपर्युक्त सभी

आपने क्या सीखा

- उद्यमशीलता एक ऐसा आर्थिक आकर्षण स्थिति है जो दो स्थितियों के भंवर में फंसा होता है, पहला आकर्षक अवसर उपलब्ध होना और दूसरा स्वयं में उद्यमिता के प्रति आकर्षण होना है।
- उद्यमशीलता एक ऐसा पराक्रम है जो व्यावसायिक लाभ की प्राप्ति के उद्देश्य से अपनी प्रबंधकीय क्षमताओं के उपयोग से प्रारंभ किया गया है और उसे चलायमान किया गया है।
- अपने स्वामित्व के व्यवसाय का चयन उद्यमी के जोखिम उठाने की क्षमता के तथ्य पर निर्भर है क्योंकि प्रत्येक व्यवसाय में भिन्न प्रकार के गुण एवं दोष होते हैं।
- उद्यमिता का अभिप्राय स्व-रोजगार है जिसके अंतर्गत कोई व्यक्ति सभी अतिरिक्त लाभों एवं लाभों की प्राप्ति के लिए अपनी स्वतंत्रता से समय, स्थान एवं की कार्य की विधि का निर्धारण करता है तथा व्यवसाय में व्याप्त सभी जोखिमों एवं हानियों का बहन भी करता है।
- आजीविका एवं जीवन की भोजन, पानी, आश्रय, वस्त्र और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हम बाध्य कारक का चयन करते हैं क्योंकि इसमें अपना स्वयं का उद्यम प्रारंभ करने का आकर्षण व्याप्त है।

पाठांत प्रश्न

1. उद्यमशीलता की परिभाषा के साथ साथ इसके आकर्षणों की व्याख्या कीजिये।
2. कॉर्पोरेट उद्यमिता का क्या अर्थ है?
3. स्व-रोजगार का अभिप्राय व्यक्त कीजिये?

4. आजीविका से आपका क्या अभिप्राय है?

5. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की परिभाषा प्रस्तुत कीजिये।

6. उद्यमिता के विभिन्न विलक्षणों को परिभाषित कीजिये।

7. नवाचार उद्यमिता की व्याख्या कीजिये।

8. अनुकरणीय उद्यमिता की व्याख्या कीजिये।

9. सामाजिक उद्यमिता की व्याख्या कीजिये।

10. महिला उद्यमिता का वर्णन कीजिये।

11. ऐसे बाध्य कारकों की व्याख्या करें जिनसे कोई व्यक्ति उद्यमिता को आजीविका के रूप में अपनाने के प्रति हतोत्साहित होता है।

12. उद्यमिता एवं नौकरी के मध्य भिन्नताओं का वर्णन कीजिये।

13. उद्यमिता के गुण दोषों का वर्णन कीजिये।

14. नौकरी के गुण दोषों का वर्णन कीजिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. (क) विचारोत्पति: निर्माण

   (ख) उपयोग

   (ग) लाभोन्मुख व्यवसाय

1.2

1. (क) (iv)

   (ख) (ii)

   (ग) (iii)

   (घ) (v)

2. (ङ) (i)

   (क) सत्य

   (ख) सत्य

(ग) सत्य

(घ) सत्य

3. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (iii)

1.3

1. (घ) 2. (घ) 3. (3)

1.4

1. 1. (ख) 2. (ग)

करें और सीखें

1. चार छात्रों का एक समूह बनाएं और अपने आसपास के एक झुग्गी झोपड़ी बस्ती (स्लम क्षेत्र) में जाएं। विभिन्न परिवारों के कम से कम चार व्यक्तियों से संपर्क करें और एक सूची बनाएं कि वे अपनी आजीविका कैसे कमा रहे हैं।

2. अपने मित्रों के एक समूह को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से व्यवस्थित करके स्व-रोजगार के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की एक सूची बनाएं। कम से कम चार ऐसे व्यक्तियों से मिलें जो स्व-रोजगार कर रहे हैं और उन्हें सरकार के प्रयासों की जानकारी दें।

संकल्पना चित्र

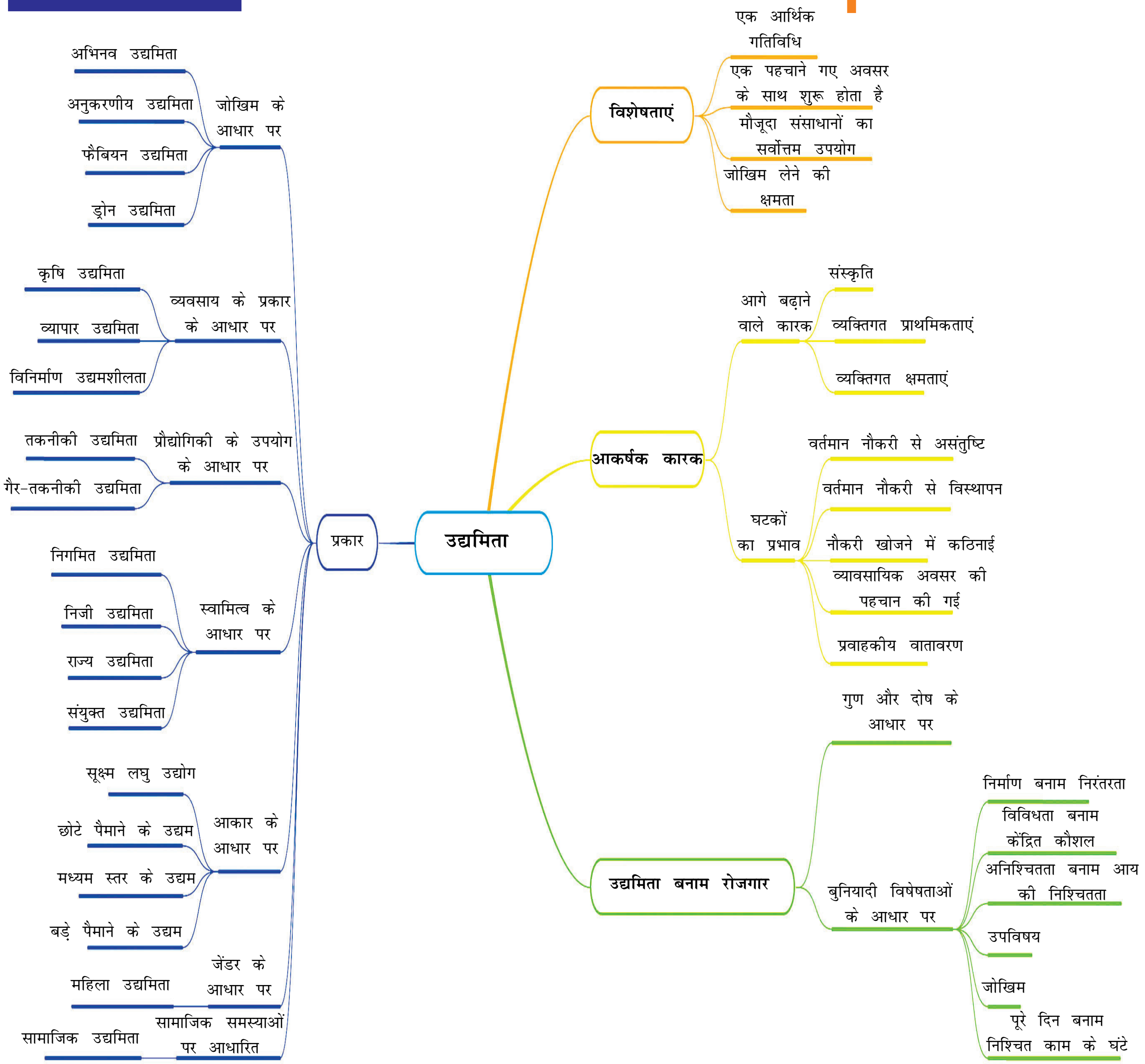

2

उद्यमी : एक परिचय

भारतीय उद्योग को कई प्रतिष्ठित उद्यमियों द्वारा नई दिशा प्रदान की गई है। जिन्होंने उद्यम को देखने का नजरिया बदल दिया है। इन्होंने व्यवसाय करने के पारंपरिक दृष्टिकोण को तोड़ते हुए यह कर दिखाया कि छोटी शुरुआत से भी भारत के सबसे बड़े उद्यम का निर्माण किया जा सकता है।

ऐसे ही एक उद्यमी हैं लक्ष्मी नारायण मित्तल (जन्म 15 जून, 1950)। वह दुनिया की सबसे बड़ी स्टील कंपनी आर्सेलर मित्तल के सीईओ थे। सेंट जेवियर कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने एक स्टील मिल में एक प्रशिक्षु के रूप में काम किया और फिर अपना स्टील प्लांट खोला। उनके व्यापार करने की विचारधारा कमजोर और बंद पड़े उद्योगों को फिर से जीवित करने पर जोर देती हैं। मित्तल ने साबित किया कि धैर्य और दृढ़ संकल्प के साथ कमजोर कंपनियों को लाभ कमाने वाली कंपनियों में बदला जा सकता है।

ऐसे ही प्रतिष्ठित उद्यमियों में से एक थे स्टीव जॉब्स जिन्होंने अपनी दृष्टि और दृढ़ संकल्प के साथ एप्पल कम्प्यूटर्स की शुरुआत की, जो आज विश्व में अपने प्रौद्योगिकी और नवीनता के लिए प्रसिद्ध है। जॉब्स और मित्तल दोनों में समानता यह है कि वे दूसरों के लिए काम करने के बजाय खुद के मालिक बनना चाहते थे। वे अपने सपनों को पूरा करना चाहते थे और उससे लाभ कमाना चाहते थे। उनके जैसे सफल उद्यमियों ने इस तथ्य को साबित कर दिया है कि दृढ़ता और कड़ी मेहनत की सही मात्रा से, छोटे उद्यम या उपक्रम से भी सफल बन सकते हैं।

हाल ही में 'वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम' द्वारा विश्व के 350 विशालतम कंपनियों के शीर्ष प्रबंधक वर्ग का एक सर्वे किया गया, जिसमें यह पाया गया कि डिजिटलाइजेशन और रोबोटाइजेशन, या उद्योग 4.0 के कारण 2020 तक विश्व स्तर पर 50 लाख नौकरियां समाप्त हो सकती हैं। उच्चतर कौशल नौकरियों में वृद्धि अधिक होगी। अत: उद्यमी इससे प्रभावित नहीं होगा क्योंकि उद्यमशीलता स्वचालित नहीं हो सकती।

उद्यमी अवसरों को भुनाने में विश्वास करते हैं। वे अपने विवेक से अनिश्चित एवं नये अवसरों का आँकलन करते हुए स्थिति अपने पक्ष में करने का प्रयास करते हैं। आप ने पहले अध्याय में उद्यमशीलता की अवधारणा तथा उद्यमिता आप को क्या अवसर प्रदान कर सकती है, इसका का अध्ययन किया है। इस अध्याय में, आप एक सफल उद्यमी बनने के आवश्यक गुणों एवं लक्षणों के बारे में अध्ययन करेंगे।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप :

- एक उद्यमी के अर्थ की व्याख्या करते हैं;
- एक उद्यमी के लक्षणों की पहचान करते हैं;
- उद्यमियों के प्रकारों का वर्गीकरण करते हैं;
- एक उद्यमी द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों पर चर्चा कर पाते हैं; तथा
- एक उद्यमी बनने के लाभों का वर्णन करते हैं।

2.1 उद्यमी का अर्थ

उद्यमी शब्द की उत्पत्ति फ्रांसीसी शब्द एंट्रप्रेंड्रे से हुई है, जो दो शब्दों एंट्रे और प्रेंड्रे से बना है। एंट्रे का अर्थ है 'के बीच', 'और प्रिंड्रे', का अर्थ होता है 'लेने के लिए'। दो फ्रांसीसी शब्दों का संयोजन उद्यमी शब्द का निर्माण करता है जो एक नए उद्यम का जोखिम उठाता है।

एक उद्यमी का अर्थ एक ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह से है जो एक नए उद्यम का जोखिम उठाने को तैयार हैं। एक उद्यमी स्वयं अपना मालिक होता है और इसलिए वह स्वनियोजित और स्वतंत्र होता है। वह नए उद्यम के जोखिम को समझता है और समाज में मूल्यवर्द्धन करता है।

उद्यमी, निवेशकों और प्रबंधकों से अलग होते हैं। एक उद्यमी न केवल उद्यम के नए नए विचार लाता है, बल्कि उद्यम के लिए धन की व्यवस्था भी करता है। दूसरी ओर, एक निवेशक मुख्य रूप से उद्यम में पैसा निवेश करता है। इसके अलावा, एक उद्यमी का निवेशकों की तुलना में उद्यम के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है जो अपने निवेश पर सचेत रहते हैं।

एक उद्यमी एक प्रबंधक से भिन्न होता है, जो किसी और के लिए काम करता है। उद्यमी आत्मनिर्भर होता है और प्रबंधक को नियुक्त कर सकता है। उद्यमिता में जोखिम के तत्व भी शामिल होते हैं जबकि प्रबंधन में किसी के संरक्षण में काम करने के कारण जोखिम शामिल नहीं होते हैं।

उद्यमी

उद्यमी मौजूदा संगठन में ही काम करने वाले ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो नवाचारों में विश्वास करते हैं खोज करते है, जिसकी वजह से वे मौजूदा संगठन में एक नया अनुभाग का आरम्भ भी कर पाते हैं।

2.2 उद्यमी की परिभाषा

पीटर एफ. ड्रकर ने अपनी पुस्तक 'इनोवेटिव एंटर प्रेन्योर' में लिखते है कि, ''उद्यमी इनोवेटर्स के रूप में परिवर्तन की खोज करते हैं और अवसरों का फायदा उठाते हैं। ''ड्रकर के अनुसार, ''नई खोज उद्यमियों का विशिष्ट उपकरण है, जिसके माध्यम से वे इस अवसर से एक अलग व्यवसाय, एक अलग सेवा में परिवर्तन लाते हैं। यह एक अध्ययन के विषय के रूप में प्रस्तुत, सीखने और अभ्यास करने में सक्षम है। उद्यमियों को नवीनता के स्रोतों, परिवर्तनों और उनके लक्षणों के लिए उद्देश्यपूर्ण खोज करने की आवश्यकता होती है, जो सफल नवाचारों के अवसरों का संकेत देती हैं और उन्हें सफल नवाचारों के सिद्धांतों को जानने और लागू करने की आवश्यकता है।''

2.3 एक सफल उद्यमी बनने के लक्षण

एक सफल उद्यमी के पास उद्यमशीलता की भावना होनी चाहिए। यह विशेषता सभी सफल उद्यमियों में होती हैं। हालांकि एक सफल उद्यमी बनने के लिए कोई नियत नियम नहीं है, लेकिन फिर भी निम्न लिखित लक्षण एक सफल उद्यमी बनने में मदद कर सकते हैं।

1. **कुछ कर गुजरने का जज्बा :** एक सफल उद्यमी बनने के लिए व्यक्ति को काम करने की इच्छा होनी चाहिए और उद्यम में सफल होने के लिए एक अंत निहित इच्छा शक्ति होनी चाहिए। काम न करने के इच्छुक व्यक्ति एक सफल निवेशक तो बन सकता है लेकिन एक सफल उद्यमी नहीं बन सकता है।

2. **जोखिम लेने वाला :** एक उद्यमी के अद्वितीय गुणों में से एक निश्चित मात्रा में अपनी इच्छा से जोखिम उठाना भी शामिल है। वास्तव में, एक उद्यमी को जोखिम लेने के इच्छुक व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है।

3. **उत्तरदायी :** एक उद्यमी को एक सक्रिय और उत्तरदायी भूमिका निभानी पड़ती हैं। यह उम्मीद की जाती है कि एक उद्यमी जीवन के हर क्षेत्र से अवसरों की तलाश करेगा। एक उद्यमी जो उपलब्ध अवसरों को नहीं देख सकता है, उसके सफल होने की संभावना कम होती है।

4. **सर्जक :** एक सफल उद्यमी वह है जो अपनी पसंद से काम करता है न की मजबूरी में। इसका तात्पर्य यह है कि, एक सफल उद्यमी बनने के लिए एक व्यक्ति को पहला कदम उठाना होगा या योजनाओं को एक व्यावहारिक स्थिति में बदलना होगा न कि वह यह प्रतिक्षा करे कि दूसरा कोई और यह कार्य करेगा।

5. **दृढ़ता :** हर उद्यम सफल नहीं होता है। लेकिन एक उद्यमी ही उद्यम को सफल बनाता है। दृढ़ता और आशावाद एक सफल उद्यमी बनने की कुंजी है। जब तक सफलता नहीं मिलती तब तक कोशिश करते रहना चाहिए।

6. **जिज्ञासु :** किसी उद्यमी की सफलता या असफलता के पीछे किसी उद्यमी के व्यक्तित्व का अत्यधिक महत्त्व होता है। जिज्ञासु उद्यमी को अधिक जानने और अधिक सीखने की इच्छा होती है। एक जिज्ञासु व्यक्ति को अधिक जानकारी लेने और नए विचारों और नवाचार की तलाश होती है।

7. **प्रतिबद्धता:** काम के प्रति प्रतिबद्धता और निष्ठा और कार्य को समय-सीमा में पूरा करने की क्षमता एक उद्यमी के महत्त्वपूर्ण लक्षण हैं। एक सफल उद्यमी को कभी कुछ व्यक्तिगत असफलता का सामना करना पड़ सकता है।

8. **स्व-प्रेरित :** यह एक उद्यमी की जिम्मेदारी है कि वह स्वयं प्रेरित बना रहे और उद्यम से जुड़े दूसरों को भी प्रेरणा देता रहे। एक सफल उद्यमी बाहरी नियंत्रण के बजाय आंतरिक नियंत्रण पर निर्भर करता है।

9. **मुखर :** दूरदर्शी होना एक सफल उद्यमी बनने के लिए मुख्य आवश्यकता है और एक व्यक्ति जो विचारों को मुखरता और ठोस रूप से व्यक्त कर सकता है वह ही एक सफल उद्यमी बन सकता है। यदि कोई ऐसा नहीं कर सकता, तो उस का उद्यम सफल नहीं हो सकता।

10. **प्रेरक :** यह आवश्यक नहीं है कि हर संभावित निवेशक जो आप के रास्ते में आए वह आप के उद्यम में निवेश करें। यह वह अवसर है जहाँ एक सफल उद्यमी अपने अनुनय कौशल का प्रदर्शन करता है जो संभावित निवेशकों को अपने उद्यम में निवेश करवाने के लिए तैयार करता है।

11. **रणनीतिकार :** एक उद्यमी के रूप में सफल होने के लिए एक रणनीतिक दिमाग के साथ दूरदर्शी भी होना चाहिए। उद्यमी को विभिन्न स्थितियों का पूर्वाभास करने, लक्षणों को पहचानने और फिर आवश्यक क्रियाओं को करने में सक्षम होना चाहिए।

12. **नवाचारिता :** नवाचारिता प्रासंगिक और सफल होने की कुंजी है। सफल उद्यमिता किसी उत्पाद से संबंधित नहीं है। यह मौजूदा या नए उत्पादों या सेवाओं को अधिक बेहतर बनाने से है।

पाठगत प्रश्न 2.1

निम्नलिखित में से सही और गलत कथनों की पहचान कीजिये।

1. एक उद्यमी अपना मालिक होता है।

2. उद्यमी मौजूदा संगठन के बाहर काम करने वाले उद्यमी हैं।

3. दूरदर्शिता एक उद्यमी के लिए बिल्कुल भी लाभदायक नहीं है।

4. उद्यमी की प्रकृति किसी उद्यम की सफलता या असफलताओं में अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है।

5. जोखिम किसी भी उद्यम का अनिवार्य हिस्सा है।

2.4 विभिन्न प्रकार के उद्यमी

उद्यमियों को विभिन्न विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है, जिन्हें पारस्परिक रूप से एक मात्र लक्षण नहीं मानना चाहिए। एक कसौटी पर वर्गीकृत उद्यमी अन्य श्रेणी के तहत भी अपने को समायोजित कर सकता है।

उद्यम के स्वरूप के आधार पर

* **व्यापार उद्यमी :** एक व्यापारिक उद्यमी उत्पाद या सेवाओं के निर्माताओं और ग्राहकों के बीच एक आदान-प्रदानकर्ता है। इसलिए एक व्यापारिक उद्यमी का मुख्य कार्य उत्पादों की खरीद और आखिरी ग्राहक तक उसी उत्पाद को उपलब्ध कराना है।

* **विनिर्माण उद्यमी :** एक विनिर्माण उद्यमी आपूर्ति-मांग श्रृंखला के अंतर को पूरा करता है। ग्राहकों की आवश्यकतानुसार उत्पादों की पहचान करना और उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधनों की खोज करता है। ऐसे उद्यमी माल तैयार करते हैं, कच्चे माल को तैयार कर आखिरी उत्पाद में परिवर्तन करते हैं।

* **व्यवसाय उद्यमी :** व्यावसायिक उद्यमी विनिर्माण और व्यापार उद्यमियों को शामिल करने वाला एक व्यापक शब्द है। व्यावसायिक उद्यमी एक नया उद्यम स्थापित करने के विचार पर काम करते हैं। उद्यम छोटा या बड़ा हो सकता है लेकिन विचार वास्तविकता में साकार हो जाता है।

उन्नत प्रौद्योगिकी के आधार पर

* **तकनीकी उद्यमी (टैक्नोप्रेन्योर) :** ये उद्यम प्रौद्योगिकी या विज्ञान से संबंधित हैं। तकनीकी उद्यमी या टेक्नोप्रिन्योर मुख्य रूप से नई प्रौद्योगिकी-आधारित उत्पादों के नवाचार से संबंधित होते हैं। एक उद्यमी जो आपके मोबाइल या लैपटॉप के लिए एक नया ऑपरेटिंग सिस्टम विकसित कर रहा है, वह एक टेक्नोप्रिन्योर है। वे ज्यादातर ग्राहक को वांछित अनुभव प्रदान करने के लिए एक तकनीक पर काम करते हैं।

* **गैर-तकनीकी उद्यमी (टैक्नोप्रेन्योर) :** टेक्नोप्रिन्योर के विपरीत, नॉन-टेक्नोप्रेन्योर अपने उद्यम के मूल के रूप में प्रौद्योगिकी पर भरोसा नहीं करते हैं। वे वैकल्पिक या अनुकारी तरीकों का उपयोग करते हैं। गैर-तकनीकी उद्यमी में विनिर्माण और व्यापारिक उद्यमी शामिल हो सकता हैं, जिन का ध्यान प्रौद्योगिकी या तकनीक से संचालित उत्पादों के उपयोग या विकास पर नहीं होता है।

* **पेशेवर उद्यमी :** पेशेवर उद्यमी शब्द का अर्थ भ्रामक हो सकता है क्योंकि व्यावसायिकता हर उद्यमी से अपेक्षित होती है। लेकिन एक पेशेवर उद्यमी एक पेशेवर व्यक्ति है जो एक उद्यम स्थापित करने में दिलचस्पी रखता है लेकिन एक बार स्थापित होने के बाद इसे प्रबंधित करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाता है। उसके बाद, एक पेशेवर उद्यमी इसे किसी अन्य व्यक्ति को बेच देता है और एक अन्य उद्यम स्थापित करने के लिए आगे बढ़ता है।

स्वामित्व के आधार पर

* **निजी उद्यमी :** एक निजी उद्यमी उद्यम को एक निजी संबंध या उद्यम के रूप में स्थापित करता है, उसका प्रबंधन करता है। उद्यम में राज्य या सरकार की कोई भागीदारी नहीं होती है और संपूर्ण जोखिम निजी उद्यमी द्वारा वहन किया जाता है और उससे होने वाला पूरा लाभ भी उसी व्यक्ति का होता है।

* **सार्वजनिक उद्यमी :** सार्वजनिक या राज्य उद्यमी राज्य या सरकार के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है जब वे एक उद्यमी के रूप में किसी उद्यम की शुरुआत करते हैं। इस स्थिति में निजी उद्यमी की तरह सभी लागत/जोखिम राज्य/सरकार द्वारा वहन किए जाते हैं। लेकिन इस से होने वाले लाभ केवल राज्य/सरकार को ही नहीं मिलते बल्कि, जनता भी ऐसे उपक्रम का लाभ उठा सकती है।

* **मिश्रित या संयुक्त उद्यमी :** जैसा कि नाम से पता चलता है, यह श्रेणी तब उत्पन्न होती है जब कोई उद्यम निजी उद्यमी और राज्य द्वारा सामूहिक रूप से स्वामित्व में होता है या चलता है। ऐसे उद्यमों को निजी उद्यमी की विशेषज्ञता और उद्यमशीलता का लाभ मिलता है और साथ ही उद्यम में निवेशक के रूप में राज्य से धन प्राप्त होता है।

अनुकूलन क्षमता या नवीनता के आधार पर

* **नवोन्मेषी उद्यमी :** नवोन्मेषी उद्यमी एक नयी सोच को चुनते हैं या ऐसे समाधान लाते हैं जो लोगों के जीवन में परिवर्तन ला सके। उद्यमी नई तकनीकों, नए उत्पादों, कार्य के नए तरीकों या यहां तक कि नए बाजारों की खोज करते हैं। जब विकास का एक निश्चित स्तर पहले से मौजूद है और जब लोग बेहतर और संशोधित उत्पाद और सेवाएं चाहते हैं, तो ये उद्यमी नवाचार कर सकते हैं।

* **अनुकरणशील (इमीटेटीव) उद्यमी :** ये उद्यमी नवाचार करने वाले उद्यमियों का अनुकरण करते हैं और उनके सफल नवाचारों को अपनाने के लिए प्रेरित रहते हैं। अनुकरणशील उद्यमी परिवर्तन या नवाचार की पहल नहीं करते हैं। वे केवल एक मौजूदा तकनीक की नकल करते हैं और उत्पादों और सेवाओं का अपना संस्करण पेश करते हैं। इसका एक उदाहरण जेनेरिक दवाओं के उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमी हैं।

* **फैबियन उद्यमी :** इन उद्यमियों की विशेषता यह है कि ये बदलाव में विश्वास नहीं करते हैं। वे आमतौर पर कोई भी साहसिक कदम उठाने से बचते हैं और जब असफलता

बिल्कुल नजदीक होती है तब यह उस से बचने के लिए कदम उठाते हैं। इन्हें निस्तेज भी कहा जा सकता है क्योंकि ये आलसी होते हैं और उद्यम को बेहतर बनाने के लिए नए तरीकों को अपनाने में सहज नहीं हो पाते हैं।

* **ड्रोन (सुस्त) उद्यमी :** ड्रोन (सुस्त) उद्यमी फैबियंस से एक कदम आगे होता हैं क्योंकि वे उद्यम में किसी भी प्रकार के बदलाव के लिए सहज नहीं होते हैं। यहां तक कि नुकसान होने के जोखिम पर भी वे रूढ़िवादी तरीकों पर ही चलते हैं। वे हमेशा मौजूदा तकनीक या उत्पादन के तरीकों के साथ सहज महसूस करते हैं। वे पिछड़े हुए भी हैं, क्योंकि वे पारंपरिक तरीके से काम करना जारी रखते हैं और किसी भी संभावित बदलाव का विरोध करते हैं।

उत्पत्ति के आधार पर

* **प्रथम पीढ़ी के उद्यमी :** पहली पीढ़ी के उद्यमी परिवार में उद्यम के सृजनकर्ता होते हैं। यह शब्द वास्तव में नए उद्यमियों के लिए एक पर्याय है जिसका अर्थ है कि वे किसी भी मौजूदा उद्यम को आगे ही नहीं ले जाते हैं, बल्कि वे एक नए उद्यम को शुरू करने और स्थापित करने के लिए शून्य से शुरू करते हैं।

* **अगली पीढ़ी के उद्यमी :** दूसरी पीढ़ी या अगली पीढ़ी उद्यमियों को उद्यमी के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है क्योंकि वे अपने परिवारों द्वारा पहले से स्थापित उद्यमों को जारी रखते हैं या उसे आगे बढ़ाते हैं। लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनके द्वारा लिया गया उद्यम सफलतापूर्वक जारी है, इन अगली पीढ़ी के उद्यमियों को प्रतिस्पर्धा का सामना करने और आगे बढ़ने और विस्तार करने के लिए बाजार में कुछ नवीन और विकसित करना पड़ता है।

* **शास्त्रीय उद्यमी :** एक शास्त्रीय उद्यमी वह है जो ग्राहकों और उद्यम की मार्केटिंग जरूरतों के साथ स्वयं सहायता उपक्रमों के विकास के साथ संबंध रखता है। यह व्यक्ति एक विशिष्ट उद्यमी है, जिसका उद्देश्य लाभों या मुनाफे को अधिकतम करना है और इस तरह के रिटर्न या मुनाफे के प्रवाह को सुनिश्चित करना है चाहे उद्यम आगे बढ़े या नहीं।

पाठगत प्रश्न 2.2

दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिये।

1. निम्नलिखित में से कौन एक सफल उद्यमी का लक्षण नहीं है?

   (i) मुखर (ii) प्रतिबद्ध (iii) जोखिम नहीं लेने वाला (iv) जिज्ञासु

2. प्रभावशाली उद्यमी वही होते हैं जो

   (i) परिवर्तनों पर संदेह कर रहे हैं

(ii) पारंपरिक रूप से संचालित करना चाहते हैं

(iii) नवप्रवर्तन उद्यमियों के नेतृत्व का अनुसरण करते हैं

(iv) नवाचार के लिए प्रतिबद्ध हैं

3. एक उद्यमी जो केवल ग्राहकों और विपणन की जरूरतों से संबंध रखता है, वह है-

(i) ड्रोन (सुस्त) उद्यमी

(ii) शास्त्रीय उद्यमी

(iii) प्रथम पीढ़ी के उद्यमी

(iv) फैबियन उद्यमी

2.5 उद्यमी के कार्यों का विवरण

एक उद्यमी कई कार्य करता है और उद्यम की सफलता सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक उद्यमी द्वारा किए जाने वाले कार्य निम्नलिखित हैं :

1. **अवसरों की पहचान करना और पहल करना :** एक उद्यमी का पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य उद्यमी प्रकृति के अवसरों की पहचान करना है और फिर पहल करना और समाज को आवश्यक उत्पादों और सेवाओं को प्रदान करने के लिए या आवश्यक तकनीक विकसित करने के लिए एक सक्रिय भूमिका निभाना है। इसलिए, किसी भी उद्यमी द्वारा किया जाने वाला पहला काम 'क्या है और क्या नहीं' के बीच के अंतर को भरना है।

2. **संसाधनों की व्यवस्था करना :** उद्यमी को एक विचार को वास्तविकता में बदलने के लिए आवश्यक संसाधनों की पहचान करनी होती है। उद्यमी द्वारा इन संसाधनों की व्यवस्था और प्रबंधन किया जाना चाहिए। ये संसाधन मानव संसाधन या गैर-मानव संसाधन होते हैं जैसे पूंजी, मशीनरी, उपकरण आदि।

3. **जोखिम लेना :** उद्यमी परिकलित जोखिम लेते हैं यानि कि जोखिम लेने से पूर्व अवसर का भलीभांती मूल्यांकन करना। यह उद्यमी ही होता है जो श्रम, आपूर्तिकर्ताओं और उधारदाताओं को भुगतान की गारंटी देता है और किसी भी आकस्मिता के कारण हुए नुकसान को वहन भी करता है। इसके अलावा, जोखिम लेने के बाद एक उद्यम सफल हो भी सकता है या नहीं भी। इसलिए यह उद्यमी द्वारा किया गया एक प्रमुख कार्य है।

4. **निर्णय लेने का कार्य :** किसी भी उद्यम को स्थापित करने और चलाने के दौरान एक उद्यमी को कई निर्णय लेने पड़ते हैं। इनमें उपयोग किए जाने वाले संसाधनों की गुणवत्ता, मात्रा और मूल्य के बारे में निर्णय लेने से लेकर और उपयोग किए जाने वाले उत्पादों और सेवाओं के प्रकारों के बारे में निर्णय शामिल होते हैं। अन्य नियमित और गैर-नियमित निर्णयों में पूंजीगत संरचना का नियोजन, जिस की व्यवहार्यता को देखते हुए परियोजना, संगठन की संरचना और इस तरह के कई और मापदंड शामिल हैं।

5. **नवाचार और अनुकूलन :** एक उद्यमी नए उत्पादों, सेवाओं, बाजारों, प्रक्रियाओं, रणनीतियों और तकनीकों को विकसित करने का प्रयास करता है। इसके लिए नवाचार

की आवश्यकता होती है। यह नवाचार के माध्यम से नए और बेहतर विकल्प बनाए जाते हैं। इसलिए, एक उद्यमी लगातार नई तकनीक विकसित करने का प्रयास करता है या कम से कम वह मौजूदा तकनीक या प्रक्रियाओं को पहचानने की कोशिश करता है जो पर्यावरण के अनुकूल हो।

6. **सामाजिक समारोह :** उद्यमशीलता समाज की जरूरतों के इर्द-गिर्द घूमती है और इसलिए एक उद्यमी समाज के प्रतिदायित्वों की अनदेखी नहीं कर सकता है। उद्यमी का यह कर्त्तव्य है कि वह दूसरों को उद्यमिता या उद्यमशीलता उद्यम करने के लिए प्रोत्साहित करे। उद्यमों से सामाजिक रूप से रोजगार उत्पन्न करने की अपेक्षा की जाती है, न कि एक इष्टतम राशि से परे सामाजिक संसाधनों का दोहन करने के लिए।

7. **प्रबंधनकीप कार्य :** उद्यम में प्रक्रियाओं की योजना, आयोजन, स्टाफ, निर्देशन और नियंत्रण जैसे प्रबंधकीय कार्य करना उद्यमी का दायित्व होता है।

एक उद्यमी के प्रबंधकीय कार्य

1. **योजना :** वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए भविष्य में उठाए जाने वाले कदमों की रूपरेखा तैयार करना। इसमें ऐसे प्रश्न शामिल हैं जैसे कि क्या किया जाना है? कब किया जाना चाहिए? कैसे किया जाना चाहिए? किस को क्या करना चाहिए? इत्यादि।

2. **आयोजन :** संपूर्ण संगठन को एक-दूसरे के साथ सद्भाव में परस्पर जुड़े और परस्पर निर्भर संरचनाओं में विभाजित किया गया है। एक उद्यमी को सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न भाग के सामंजस्य पूर्ण समायोजन को सुनिश्चित करना होता है।

3. **स्टाफिंग :** लोग, जिन्हें मानव संसाधन के रूप में भी जाना जाता है, किसी भी संगठन का सार है। एक उद्यमी को सही भूमिका के लिए सही व्यक्ति ढूंढ़ना होगा और उन्हें अपने पास बनाए रखना होगा। यह जिम्मेदारी अक्सर भरती, चयन और अन्य कार्यों के साथ शुरू होती है।

4. **निर्देशन :** इसका अर्थ उद्यम में कार्मिकों को निर्देश देने, मार्ग दर्शन करने, संचार करने और प्रेरित करने की प्रक्रिया से है। पर्यवेक्षण, संवाद, नेतृत्व और प्रेरणा निर्देश के तहत आने वाले कार्य हैं।

5. **नियंत्रण :** यह वास्तविक और वांछित परिणामों की तुलना को संदर्भित करता है ताकि यदि परिणाम नकारात्मक हों तो समय रहते सुधारात्मक कार्रवाई की जा सके और यदि परिणाम सकारात्मक हों तो प्रयासों की पुनरावृत्ति की जा सकती है।

2.6 एक उद्यमी बनने के लाभ

ऐसे कई कारण हैं जो किसी व्यक्ति को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित कर सकते हैं लेकिन उनमें से तीन मुख्य कारण हैं जो लोगों को उद्यमी बनने के लिए ज्यादा प्रेरित करते हैं।

1. **अपना मालिक स्वयं बनना :** यह किसी भी व्यक्ति द्वारा सबसे अधिक बोले जाने वाला कारण है, जो है खुद उद्यमी है अथवा उद्यमी बनना चाहता है। स्वयं के व्यवसाय या फर्म की महत्त्वाकांक्षा रखने वाले लोग दूसरों के लिए काम करके या पारंपरिक फर्मों में काम करने से निराश हो सकते हैं।

   एक व्यक्ति जो 9 बजे से 5 बजे तक का पालन नहीं करना चाहता है, वह उद्यमी के रूप में अपने समयानुसार काम कर सकता है। साथ ही, व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करना भी इस बात पर निर्भर हो सकता है कि स्वयं के लिए काम करना दूसरों के लिए काम करने से बेहतर है। हालांकि इस तरह के फैसलों में जोखिम होते हैं, कुछ लोग उन्हें जोखिम उठाने का खतरा लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। एक व्यक्ति एक उद्यम को चलाने में सक्षम हो सकता है और जीवन और काम की बीच बेहतर संतुलन बनाने की स्थिति में हो सकता है।

2. **अपने स्वयं के विचारों का अनुसरण करना :** किसी के खुद के उद्यम शुरू करने का एक और कारण है अपने विचारों को आगे बढ़ाने की स्वतंत्रता और उस विचार को अपने तरीके से साकार करने में सक्षम होना। कभी-कभी, बड़े संगठनों में पदानुक्रम में निचले स्तर के कर्मचारी की ओर से आने वाले अच्छे विचारों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इन विचारों को या तो नोटिस नहीं किया जाता है या प्रबंधन द्वारा उचित ध्यान नहीं दिया जाता है। नतीजतन, कुछ कर्मचारी ऐसे संगठनों को छोड़ना और अपने उद्यम शुरू करना पसंद करते हैं। अपने स्वयं के उद्यम के लिए जिम्मेदारी के साथ अधिक ऊर्जा के साथ काम करने की प्रेरणा मिलती है। यह भावनात्मक रूप से कम थकाऊ होता है।

3. **वित्तीय लाभ कमाना :** एक उद्यमी उद्यम से वित्तीय लाभ अर्जित करना चाहता है। यह कारण उद्यम शुरू करने के उपरोक्त दो कारणों से गौण हो सकता है क्योंकि उद्यम शुरू करने की प्रेरणा मौद्रिक लाभ की तुलना में केवल व्यक्ति के स्वयं के अंदर से आती है। प्राथमिक प्रेरणा उद्यम की वृद्धि की संभावना से आती है, जिसमें से मौद्रिक लाभ स्वचालित रूप से प्राप्त होने लगेंगे।

पाठगत प्रश्न 2.3

1. निम्नलिखित में से कौन एक उद्यमी द्वारा किया जाने वाला प्रबंधकीय कार्य नहीं है?

   (i) नियंत्रण (ii) योजना

   (iii) स्टाफिंग (iv) दूसरों की आलोचना करना

2. दूसरों को प्रेरित करने की प्रक्रिया उद्यमी के किस प्रबंधकीय कार्य का हिस्सा है?

   (i) योजना बनाना (ii) निर्देशन

   (iii) नियंत्रण (iv) स्टाफिंग

आपने क्या सीखा

- एक उद्यमी एक ऐसा व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह होता है जो नए उद्यम का जोखिम उठाने को तैयार होता है।
- उद्यमी निवेशकों और प्रबंधकों से अलग होते हैं।
- एक सफल उद्यमी बनने के लिए किसी के पास कुछ विशेष गुण होने चाहिए जैसे कि जवाबदेही, प्रतिबद्धता, पहल, जिज्ञासु, रणनीतिकार आदि।
- एक व्यापारिक उद्यमी एक मध्यमकर्ता के रूप में कार्य करता है जबकि एक विनिर्माण उद्यमी उत्पाद और ग्राहकों के बीच अंतर को भरता है। एक व्यावसायिक उद्यमी में विनिर्माण और व्यापारिक उद्यमी दोनों शामिल हो सकते हैं।
- गैर-तकनीकी उद्यमी के विपरीत, तकनीकी उद्यमी मुख्य रूप से नई प्रौद्योगिकी-आधारित उत्पादों के नवाचार में निवेश करते हैं।
- शुद्ध निजी उद्यम में कोई राज्य या केन्द्रीय सरकार की भागीदारी नहीं होती है।
- नवप्रवर्तक उद्यमी नई तकनीकों की शुरुआत कर सकते हैं, जबकि नकल करने वाले उद्यमी नवाचार उद्यमियों का अनुकरण करते हैं।
- ड्रोन (सुस्त) उद्यमी किसी भी तरह के बदलाव के लिए तैयार नहीं होते हैं। शास्त्रीय उद्यमी एक विशिष्ट उद्यमी है जिसका उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना है।
- एक उद्यमी के कार्यों में सामाजिक और प्रबंधकीय कार्य शामिल हैं।
- किसी के स्वयं के सपने को साकार करने में सक्षम होने की क्षमता, आपका खुद का मालिक होना और वित्तीय लाभ कमाने की इच्छा उद्यमी बनने के प्रेरक कारण है।

पाठांत प्रश्न

1. उद्यमिता का क्या अर्थ है? एक सफल उद्यमी बनने के कोई भी तीन लक्षण बताइये?
2. अनुकूलन या नवीनता के आधार पर उद्यमियों के प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए?
3. पहली पीढ़ी और अगली पीढ़ी उद्यमियों के बीच भेद बताइये?
4. एक उद्यमी के प्रबंधकीय कार्यों पर चर्चा कीजिये?
5. कथन की व्याख्या करें कि एक उद्यमी के लिए वित्तीय लाभ गौण महत्त्व के होते हैं?
6. अवसरों की पहचान और जोखिम उठाने की इच्छा एक उद्यमी के मूल कार्य हैं। दिए गए कथन की व्याख्या कीजिए?
7. व्यापारिक उद्यमी व्यवसाय उद्यमियों से कैसे भिन्न हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. सही
2. गलत
3. गलत
4. सही
5. सही

2.2

1. (iii)
2. (iii)
3. (ii)

2.3

1. (iv)
2. (ii)

करें और सीखें

1. मान लीजिए कि आपकी बहन, जो एक फैशन डिजाइनर है, एक प्रतिष्ठित एमएनसी में अपनी नौकरी छोड़ने के बारे में सोच रही है कि वह अपनी खुद की कपड़ों का काम शुरू करे, लेकिन उसने इस अवसर को जाने देने का फैसला किया है क्योंकि उसने पढ़ा है कि दस में से नौ नए उपक्रम विफल हो जाते हैं। आप उसे क्या सलाह देंगे?

2. अभिनव उद्यमियों, अनुकरण करने वाले उद्यमियों, फेबियन उद्यमियों और ड्रोन (सुस्त) उद्यमियों में से प्रत्येक के दो-दो उदाहरणों को सूचीबद्ध कीजिए।

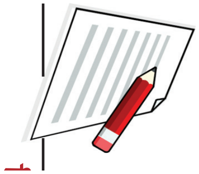

अवधारणा नक्शे

उद्यमियों का परिचय

- **वर्गीकरण**
  - उद्यम की प्रकृति के आधार पर
    - व्यापार उद्यमी
    - निर्माण उद्यमी
    - व्यवसाय के उद्यमी
  - प्रौद्योगिकी की गहराई के आधार पर
    - टैक्नोप्रेन्योर
    - गैर तकनीकी उद्यमी
    - पेशेवर उद्यमी
  - स्वामित्व प्रकार के आधार पर
    - निजी उद्यमी
    - सार्वजनिक उद्यमी
    - संयुक्त उद्यमी
  - अनुकूलनशीलता और नवीनता के आधार पर
    - अभिनव उद्यमी
    - अनुकरणीय उद्यमी
    - फैबियन उद्यमी
    - ड्रोन उद्यमी
  - पीढ़ी के आधार पर
    - पहली पीढ़ी के उद्यमी
    - अगली पीढ़ी के उद्यमी
    - पारम्परिक उद्यमी
- **उद्यमी बनने के लाभ**
  - अपने बॉस खुद बनें
  - अपने खुद के विचारों का पीछा करें
  - वित्तीय पुरस्कार प्राप्त करें
- **प्रमुख लक्षण**
  - करने की इच्छा
  - जोखिम लेने वाला
  - उत्तरदायी
  - प्रारंभ करने वाला
  - अटलता
  - जिज्ञासु
  - प्रतिबद्ध
  - आत्म प्रेरित
  - निश्चयात्मक
  - प्रेरक
  - रणनीतिज्ञ
  - अभिनव
- **कार्य**
  - अवसरों की पहचान करना और पहल करना
  - संसाधनों की व्यवस्था
  - जोखिम लेने का कार्य
  - निर्णय लेने का कार्य
  - नवाचार और अनुकूलन
  - सामाजिक कार्य
  - प्रबंधकीय कार्य

3

उद्यमशीलता का महत्त्व

पूर्व पाठ में, आपने उद्यमियों के अर्थ, उनके लक्षणों, उद्यमियों के प्रकार, एक उद्यमी द्वारा किए गए विभिन्न कार्य और एक उद्यमी बनने के लाभों के बारे में जाना है।

एक अवधारणा के रूप में उद्यमशीलता भारत में प्राचीन काल से मौजूदा है। प्राचीन और मध्ययुगीन भारत को उद्योगों और व्यापारियों के देश के रूप में मान्यता दी गई है, जिनके व्यापार भारत की भौगोलिक सीमाओं को पार करते थे। विभिन्न प्राचीन और मध्यकालीन ऐतिहासिक ग्रंथ इसके साक्ष्य/प्रमाण हैं। उद्यमियों को राष्ट्र निर्माता माना जाता है क्योंकि वे ध न उत्पन्न करते हैं और अर्थव्यवस्था में रोजगार के अवसर पैदा करते हैं। आधुनिक भारत ने कई ऐसे उद्यमियों को देखा है, जिन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था में धन सृजन और रोजगार सृजन में अत्यधिक योगदान दिया है। ऐसे उद्यमियों के उल्लेखनीय उदाहरणों में धीरूभाई अंबानी, अजीम प्रेमजी, नारायण मूर्ति, भाई मोहन सिंह और कैलाश चंद्र महिंद्रा शामिल हैं। उद्यमी अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक हैं क्योंकि वे आय के सृजक, धन निर्माता और वित्तीय और भौतिक संसाधनों के उपयोग के रूप में अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करते हैं। इस पाठ में, हम एक राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के साथ-साथ उद्यमिता कैसे रोजगार सृजन में मदद करती है और साथ ही संतुलित क्षेत्रीय विकास में उद्यमिता के योगदान पर भी चर्चा करेंगे।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप :

- किसी राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में उद्यमिता की भूमिका को रेखांकित करते हैं;
- रोजगार सृजन के साधन के रूप में उद्यमशीलता की पहचान करते हैं; और
- तथा संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए उद्यमिता के योगदान की व्याख्या करते हैं।

3.1 सामाजिक-आर्थिक कारक (चर)

ऐसे कई कारक हैं जो उद्यमशीलता को प्रभावित करते हैं, जिनमें से सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों ने ज्यादातर देश-विदेश के उद्यमियों को प्रभावित किया है। इन तीन कारकों पर नीचे चर्चा की गई है। सामाजिक कारक मूल रूप से देश के सामाजिक निर्माण और संरचना से संबंधित हैं। कुछ सामाजिक कारक निम्न प्रकार हैं:

i. सामाजिक उद्देश्य

ii. प्रतिष्ठा और आत्म-सम्मान

iii. सांस्कृतिक मूल्य

iv. परम्पराएं और निषेध

v. प्रजातीय मूल्य

vi. बाल पालन अभ्यास

vii. राष्ट्रवादी दृष्टिकोण

viii. देशभक्ति की भावना

ix. धार्मिक विश्वास

इसी तरह, उद्यमियों का मुख्य उद्देश्य आर्थिक कल्याण को अधिकतम स्तर पर ले जाना है। आर्थिक कारक देश की अर्थव्यवस्था के वित्त और संरचना से संबंधित हैं। कुछ आर्थिक कारक हैं :

i. उत्पादन के कारक

ii. बाजार प्रोत्साहन

iii. पूंजी भंडार

iv. वित्त

v. बैंक और वित्तीय संस्थान

vi. नए उत्पादों को बाजार में उतारना

vii. नए बाजारों का निर्माण

viii. उत्पादन के तरीके

पाठगत प्रश्न 3.1

बताएं कि निम्नलिखित में से कौन सा आर्थिक चर या सामाजिक चर हैं:

i. वित्त

ii. धार्मिक विश्वास

iii. उत्पादन के तरीके

iv. सांस्कृतिक मूल्य

v. पूंजी भंडार

vi. प्रतिष्ठा

3.1.1 सामाजिक-आर्थिक विकास में उद्यमशीलता की भूमिका

आज के भारत के विकास में उद्यमियों की बड़ी भूमिका रही है। कला, संस्कृति, विज्ञान, स्वास्थ्य, भोजन, फैशन और मनोरंजन जैसे सभी क्षेत्रों में, उद्यमियों ने अपनी उत्कृष्टता दिखाई है। उद्यमियों ने हमारी अर्थव्यवस्था के तेजी से विकास पर जोर दिया है। इसके कुछ कारण हैं:

1. **उत्पादन :** उत्पादन में राष्ट्रीय संसाधनों की भागीदारी शामिल है जैसे भूमि, श्रम, पूंजी और प्रौद्योगिकी। उद्यमियों ने माल का उत्पादन करने और राष्ट्रीय आय उत्पन्न करने के लिए तथा सेवाएं प्रदान करने के लिए उनका सबसे अच्छा और प्रभावी तरीके से उपयोग किया है।

2. **कैरियर विकल्प/अवसर :** भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। यह तेज गति से बढ़ रही है लेकिन फिर भी, रोजगार सृजन के मामले में सीमित रोजगार उत्पन्न करती है। उद्यमशीलता असीमित कैरियर विकल्प प्रदान करती है। उद्यमी न केवल अपने लिए एक आजीविका का निर्माण करते हैं बल्कि वे हजारों लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा करते हैं।

3. **आर्थिक शक्ति का वितरण :** उद्यमी आमतौर पर छोटे पैमाने पर व्यापार की शुरूआत करते हैं और फिर अपने व्यवसाय को बढ़ाते हैं। इस प्रक्रिया में, वे शक्ति वितरित करते हैं और आर्थिक शक्तियों का संतुलन बनाते हैं।

4. **प्रतिस्पर्धा का निर्माण :** उद्यमी न केवल नए उत्पाद और सेवाएं बनाते हैं बल्कि बाजार में प्रतिस्पर्धा भी पैदा करते हैं। इससे ग्राहकों को कम कीमतों पर बेहतर उत्पाद और सेवाएं मिलती हैं।

5. **नवाचार :** उद्यमी नई तकनीकों और नये उत्पादों का निर्माण करते हैं जो एक अर्थव्यवस्था के लिए लागत कम करने और धन उत्पन्न करने मे मदद करता है। इससे अर्थव्यवस्था को अपने आप को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खुद को स्थापित करने में मदद मिलती है।

6. **रोजगार सृजन :** उद्यम देश में रोजगार के अवसर पैदा करते हैं। ''टाटा संस और रिलायंस इंडस्ट्रीज'' जैसे व्यापारिक घरानों का योगदान निर्विवाद है।

पाठगत प्रश्न 3.2

बताएं कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत :

i. सिडबी का अर्थ भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक है।

ii. भारत में पारिवारिक पृष्ठभूमि सामाजिक कारक नहीं है।

iii. उद्यमी जोखिम उठा सकते हैं।

iv. उद्यमी नए नवाचार और तकनीकें बनाते हैं।

v. सरकार भारत में उद्यमियों की मदद नहीं करती है।

भारत में उद्यमशीलता के सामाजिक-आर्थिक मूल

भारत में उद्यमियों की उत्पत्ति सामाजिक और आर्थिक कारकों का प्रत्यक्ष कार्य है। उन कारकों में से कुछ इस प्रकार हैं :

1. **क्षेत्रीय प्रभाव :** परंपरागत रूप से, उद्यमी विशिष्ट क्षेत्र के होते हैं जैसे गुजरात और राजस्थान के मारवाड़ी और जैन, तमिलनाडु के चेट्टियार और पारसी। लेकिन यह चलन तेजी से बदल रहा है दक्षिण भारत के नायडू, सिख, खान, पंजाब के अरोड़ा और हरियाणा के मित्तलों से उद्यमियों की नई पीढ़ी चुनौतियाँ पेश कर रही हैं।

2. **पारिवारिक पृष्ठभूमि :** पारिवारिक पृष्ठभूमि को बचपन से ही उद्यमशीलता के कौशल को विकसित करने में मदद करता है। पारिवारिक पृष्ठभूमि, व्यापार की गहरी समझ और रणनीति मुहैया कराता है। उद्यमशीलता के माहौल में आगे बढ़ते हुए, बनिया समुदाय के एक बच्चे के उद्यमी बनने की संभावना अधिक है। अब यह चलन बदल रहा है। उद्यमियों का एक बड़ा हिस्सा बेरोजगार युवाओं से आ रहा है। यहां तक कि सफल उद्यमी या तो कृषि पृष्ठभूमि से आते हैं या किसी संगठन में नौकरी करते हैं जैसे सचिन और बिन्नी बंसल, दोनों ही फ्लिपकार्ट को शुरू करने से पहले अमेजन के लिए काम करते थे।

3. **शिक्षा का स्तर :** शिक्षा ज्ञान का एक मंच देती है और उद्यमी बनने की गुंजाइश में वृद्धि करती है। शिक्षा के माध्यम से, आप न केवल ज्ञान प्राप्त करेंगे बल्कि प्रभावी ढंग से काम करने के लिए कुशलतापूर्वक तकनीकी कौशल भी प्राप्त करते हैं। उदाहरणत: विजय शेखर शर्मा, दिल्ली इंजीनियरिंग कॉलेज के पूर्व छात्र हैं। यह पेटीएम के संस्थापक हैं। आईआईटी दिल्ली से स्नातक दीपिंदर गोपाल जोमेटो के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं।

4. **प्रवासी चरित्र :** उद्यमियों में अधिक लाभदायक क्षेत्रों या अधिक लाभ की गुंजाइश वाले क्षेत्रों में शिफ्ट करने की गुणवत्ता होती है। उदाहरण : travelkhana.com भारतीय ट्रेनों में यात्रा के दौरान ताजा भोजन ऑर्डर करने की सुविधा प्रदान करता है।

5. **फर्म क्लस्टर :** किसी विशेष क्षेत्र में इसी प्रकार की फर्मों का समूह भी उद्यमियों को उस व्यवसाय के लिए चुनने के लिए प्रेरित करता है, यदि वे उस क्षेत्र में काम कर रहे हैं। उदाहरणत: बेंगलुरु की सिलिकॉन वैली।

3.1.2 सामाजिक-आर्थिक विकास में उद्यमियों की भूमिका

उद्यमी अर्थव्यवस्था में कई मायनों में सामाजिक-आर्थिक विकास के पूरक और प्रोत्साहित करने में मदद करते हैं। इनमें से कुछ हैं:

1. **पूंजी का जुटान :** उद्यमी पूंजी जुटाने के प्रयास करते हैं और निवेशकों के पैसे का उपयोग उनके लिए धनार्जन करने के लिए तथा अर्थव्यवस्था सबसे अच्छे तरीके से करते हैं। इस प्रकार उद्यमी संसाधनों के कुशल उपयोग को सुनिश्चित करता है।

2. **रोजगार सृजन :** उद्यमी केवल स्वरोजगार ही नहीं करते हैं बल्कि उद्यम, चाहे सूक्ष्म हो या बड़ा उसकी स्थापित करके कई लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान करते हैं। इससे बेरोजगारी को कम करने में मदद मिलती है और देश में आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। उदाहरण के लिए, ओयो, एक आतिथ्य संगठन, जो दुनिया के 17,000 से अधिक कर्मचारियों को काम पर रखता है।

3. **फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज :** एक उद्यमी आगे संपर्क भी बनाता है और उसके व्यवसाय से संबंधित पिछड़े संगठन से संपर्क करके और आगे के विकास में मदद करता है। उदाहरण के लिए, एक कपड़ा उद्यम को कच्चे माल, रसायन, कताई मिलों आदि की आवश्यकता होती है, और उद्यम को आगे ले जाने के लिए विपणन, गोदामों की जरूरत है। इस में जिस तरह से, एक उद्यमी क्रमश: पीछे और आगे के उद्यमों के मध्य संबंध बनाता है।

4. **संतुलित क्षेत्रीय विकास :** उद्यमी क्षेत्रीय असमानताओं को हटाने में मदद करता है और संतुलित क्षेत्रीय विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। और ऐसा इसलिए भी होता है क्योंकि सरकार पिछड़े क्षेत्रों में रियायतें, कई तरह की सब्जिडी देती है। उदाहरणत: भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्र।

5. **आर्थिक शक्ति का समान वितरण :** पनप रहे नये उद्यमी लोगों के व्यक्तियों के हाथों में आर्थिक शक्ति के समान वितरण में मदद कर रहा है। इस प्रकार के सुनिश्चित कर रहे हैं कि धन का अधिक न्यायसंगत प्रसार हो ताकि, आर्थिक शक्ति कुछ एकाधिकार की स्थिति पैदा करने वाले हाथों में निहित नहीं रहे।

6. **प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि :** उद्यमी बाजार के रुझान और नए अवसरों को भुनाते हैं। वे न केवल देश के संसाधनों का सबसे प्रभावी तरीके से उपयोग करते हैं जैसे भूमि, श्रम और पूंजी बल्कि राष्ट्रीय संपदा में भी योगदान देते हैं। यह देश की प्रति व्यक्ति उच्च आय प्राप्त करने में मदद करता है।

7. **बेहतर जीवन स्तर :** उद्यमी दुर्लभ वस्तुओं और बेहतर तरीकों से हमारे दरवाजे तक सेवाएं देकर बेहतर जीवन शैली प्रदान करने में मदद करते हैं। उदाहरण : स्विगी और बिग बास्केट आपके स्थान पर क्रमश: सब्जियाँ भोजन और फल वितरित करते हैं।

8. **आयात प्रतिस्थापन और निर्यात संवर्धन :** उद्यमी आत्मनिर्भर बनने के लिए राष्ट्र की मदद करते हैं। वे उत्पादों का निर्माण करते हैं जो स्थानीय रूप से दुर्लभ होते हैं और जिनका आयात करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार, वे देश की विदेशी आयातित

वस्तुओं पर निर्भरता को कम करते हैं। इसके अलावा, वे देश के लिए विदेशों में उत्पादों का निर्यात करके धनार्जन में भी योगदान करते हैं।

3.1.3 उद्यमिता के निर्माण में सरकार का योगदान

उद्यमी किसी भी देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान करते हैं जैसे : रोजगार प्रदान करके, क्षेत्रीय विकास, निर्यात को बढ़ावा देना, भुगतान संतुलन में सुधार करना, लघु उद्योगों और ग्रामीण उद्योगों को विकसित करना इत्यादि। उद्यमियों के प्रवेश को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय और राज्य सरकारें आधारभूत संरचना के माध्यम से सहायता प्रदान कर रही हैं यथा वित्त, विपणन, प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और अन्य कार्यक्षेत्र। उद्यमशीलता में वृद्धि के लिए कुछ सरकारी सहायता, उपाय और संस्थान निम्न प्रकार हैं :

1. **राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) :** इस बैंक का मूल लक्ष्य ग्रामीण विकास के माध्यम से ग्रामीण व्यापार, कृषि सहायता, लघु उद्योग का विकास, कुटीर और ग्रामोद्योग का विकास, और अन्य संबंधित मुद्दे है।

नाबार्ड

2. **ग्रामीण लघु व्यवसाय विकास केंद्र (RSBDC) :** यह छोटे और मध्यम उद्यमों, सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित व्यक्तियों और समूहों की सहायता करता है।

3. **राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (NSIC) :** इसका मूल उद्देश्य लघु व्यवसाय ईकाइयों का विकास करना है। यह स्वदेशी और आयातित कच्चे माल खरीद, आपूर्ति और वितरण में मदद करता है। यह प्रौद्योगिकी पार्क और प्रौद्योगिकी उन्नयन के बारे में जागरूकता पैदा करना व सॉफ्टवेयर विकसित करने में भी मदद करता है।

4. **लघु उद्योग विकास बैंक ऑफ इंडिया (SIDBI) :** यह छोटे उद्यमियों और व्यापारिक संगठनों को वित्तीय सहायता व उनकी क्रेडिट (साख) आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता प्रदान करता है।

5. **असंगठित उद्योगों के लिए राष्ट्रीय आयोग (NCEUS) :** यह ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और बदलती दुनिया के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा के अधिक अवसर पैदा करने में मदद करता है।

3.1.4 उद्यमशीलता को बढ़ाने में वित्तीय संस्थानों की भूमिका

वित्त, किसी भी व्यावसायिक उद्यम का जीवन है। आप अपने संभावित विचार रख सकते हैं, लेकिन वित्त के बिना वे फलिभूत नहीं होंगे। इसलिए, सरकार और निजी क्षेत्र दोनों एक

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ताकि हर कोई अपने संभावित विचारों के अनुसार उद्यम शुरू करने के लिए आवश्यक वित्त प्राप्त कर सके। एक नए उद्यम की वित्तीय योजना को ध्यान में रखते हुए उद्यम के उद्देश्य, प्रकृति और व्यवसाय का आकार, ऋण-पात्रता उद्यम, विकास और उद्यम की विस्तार योजना, बाजार की आवश्यकताएं और सरकारी नियम तैयार किये जाने चाहिए। नए स्टार्टअप वित्तपोषण के कुछ स्रोत हैं :

1. उद्यम औचित्य (स्वेट इक्विटी)
2. व्यक्तिगत वित्तपोषण
3. व्यक्तिगत क्रेडिट सीमा
4. दोस्त और परिवार
5. बैंक ऋण
6. पीयर-टू-पीयर लेंडिंग
7. सूक्ष्म ऋण
8. खरीद आदेश वित्तपोषण
9. फैक्टरिंग लेखा प्राप्य
10. एंजेल निवेशक
11. क्राउड फंडिंग
12. वेंचर कैपिटल
13. कॉर्पोरेट पार्टनर
14. विलय और अधिग्रहण।
15. आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ)

उद्यमिता में वित्तीय संस्थाओं की भूमिका

3.1.6 उद्यमशीलता विकास के क्षेत्र में समाज का योगदान

यदि लोग उत्पादों और सेवाओं में बदलाव स्वीकार न करें तो उद्यमियों का प्रयास सफल नहीं हो सकता। इसलिए, समाज लोगों को प्रोत्साहित या हतोत्साहित करके उद्यम के लिए अनुकूल माहौल और आजीविका के लिए उनकी पसंद बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पाठगत प्रश्न 3.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

i. राष्ट्रीय .... और ग्रामीण विकास बैंक।

ii. राष्ट्रीय .... उद्योग निगम।

iii. ग्रामीण और ...... उद्यमिता विकास।

iv. भारतीय लघु .... विकास बैंक।

v. व्यापार संबंधी .... सहायता और महिलाओं के लिए विकास योजना (TREAD)

3.2 रोजगार के अवसर

भारत में, विशेष रूप से शिक्षित युवाओं और योग्य व्यक्तियों के बीच बढ़ती बेरोजगारी का मुकाबला करना एक बड़ी चुनौती बन जाती है। अगर ऐसे लोग उद्यमी बनना चुनते हैं, तो वे न केवल खुद के लिए रोजगार और बेहतर जीवन स्तर का निर्माण करते हैं, बल्कि अनेक व्यक्तियों को रोजगार भी प्रदान करते हैं।

जैसे-जैसे उद्यमी समाज के विभिन्न वर्गों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करते हैं, वे देश की आर्थिक समृद्धि में भी योगदान करते हैं। एक नया उद्यम स्थापित करने के लिए श्रम आपूर्ति, आदानों की आपूर्ति औद्योगिक उपकरणों, बिक्री कर्त्ता व्यक्तियों, संचार सुविधाओं, बिजली, बुनियादी ढांचे जैसे मशीनरी, फर्नीचर और संबंधित उपकरण परिवहन, गोदाम (वेयरहाउसिंग), बीमा (इंश्योरेंस) आदि के सृजन की ओर ले जाता हैं। एक स्थापित उद्यमी मांग को बढ़ाता है ऐसी सुविधाओं के लिए और रोजगार के अवसर पैदा करता है। जब एक नया उद्यम आता है, तो पुराने लोग पहले से स्थापित उद्यमी उनकी क्षमता बढ़ाने और आगे बढ़ाने में कोशिश करते हैं। इससे बाजार में और अधिक रोजगार पैदा करने में भी मदद मिलती है।

3.2.1 रोजगार उत्पत्ति में उद्यमियों का योगदान

उद्यमी रोजगार के अवसर उत्पन्न करने के लिए निम्नलिखित तरीकों से मदद करते हैं:

1. **वित्त और बैंकिंग सेवाएं :** वित्त किसी भी व्यवसाय का आधार होता है। उद्यमी कैशियर, अकाउंटेंट, कलेक्शन एजेंट और सुरक्षा कर्मचारी जैसी नौकरियां उत्पन्न करते हैं।

2. **बीमा सेवाएँ :** बढ़ती अनिश्चितता और अपराध दर के साथ, हर उद्यमी अपने माल और अन्य सामग्रियों की सुरक्षा करना चाहता है और किसी भी तरह की हानि या नष्ट होने से बचाने के लिए अपनी मशीनरी, गोदामों, कारखानों, दुकानों, माल की बीमा पॉलिसी करवाते हैं जिसके कई बीमा एजेंटों को अपनी आजीविका कमाने में मदद मिलती है। वे, बदले में, अर्थव्यवस्था के भीतर मुद्रा संचालित भी करते हैं।

3. **स्टॉक और कमोडिटी एक्सचेंज :** ये प्लेटफॉर्म शेयरों की बिक्री और खरीद, डिबेंचर, कमोडिटीज और प्रतिभूतियों जैसी सहायक सेवाएं प्रदान करते हैं। इससे स्टॉक मार्केटिंग कर्मियों जो ट्रेडिंग का प्रबंधन करते हैं तथा अन्य कर्मचारियों के लिए रोजगार सृजित करने में मदद मिली है।

टिप्पणी

4. **कंसल्टेंसी सेवाएं :** यह भारत में सबसे उभरते हुए क्षेत्रों में से एक है। इसमें प्रबंधन केंद्र, व्यापार सलाहकार, बीमा सलाहकार, कानूनी परामर्श, और विवाह परामर्श आदि शामिल हैं। ये केन्द्र इनमें काम करने वाले लोगों के लिए स्वरोजगार तथा अन्य रोजगार के अवसररों का निर्माण कर रहे हैं।

5. **प्लेसमेंट सेवाएं :** शिक्षा व रोजगार से संबंधित विभिन्न संस्थान छात्रों को आवश्यक कौशल और ज्ञान ही नहीं देते हैं बल्कि रोजगार प्राप्त करने में उनकी मदद भी करते हैं। ज्ञान प्रदान कर रहे हैं। ये संस्थानन केवल आवश्यक कौशल और ज्ञान दें, बल्कि अपने छात्रों की नौकरी पाने में मदद भी करें। इसके लिए, ऐसे संस्थान अपने छात्रों को इंटर्नशिप और रोजगार देने के लिए विभिन्न उद्यमों के साथ गठजोड़ करते हैं।

6. **एजेंसी सेवाएँ :** बढ़ती कानूनी और तकनीकी जटिलताओं के कारण बढ़ते व्यापार के साथ, एक उद्यम के लिए कई बार सब कुछ अपने से संभालना मुश्किल हो जाता है इसलिए, कुछ गतिविधियाँ जैसे सुरक्षा और हाउसकीपिंग आदि को कुछ मुक्त रूप से कार्य करने वाले लोगों (फ्रीलांसरर्स) अथवा उस कार्य में विशेषज्ञता प्राप्त किसी संस्थान को दे दिया जाता है। इससे बाजार में अधिक रोजगार उत्पन्न करने में मदद मिलती है।

7. **पैकिंग सेवा :** सामान को सुरक्षित रूप से पैक करने की आवश्यकता होती है ताकि वे गोदामों में या पारगमन में क्षतिग्रस्त न हो सकें। इसमें अधिकांश रोजगार के अवसर के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। आमतौर पर, ऐसे काम के लिए कोई उच्च तकनीकी ज्ञान जरूरी नहीं होता है।

8. **माल और परिवहन सेवाओं का वितरण :** उद्यमी अपने माल, सबसे अच्छे बाजार और सबसे सस्ते उत्पादन स्थान के लिए खोज करते रहते हैं। यह बहुत संभव है कि उनके उत्पादन और माल की खपत की जगह अलग-अलग होती है। इस तरह, एक उद्यमी ड्राइवर, मैकेनिक, ऑपरेटर आदि के लिए रोजगार के अधिक अवसर पैदा करता है।

9. **वेयरहाउसिंग सेवाएं :** उद्यमी बड़े पैमाने पर अर्थव्यवस्था को प्राप्त करना पसंद करते हैं। उन्हें अपने कच्चे माल को स्टोर करने और निर्मित माल के लिए गोदामों की आवश्यकता होती है। यह कई लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करता है जैसे कर्मचारियों, श्रमिकों, ड्राइवरों और सुरक्षा कर्मियों इत्यादि।

10. **संचार सेवाएं :** संचार किसी भी व्यवसाय की कुंजी होती है। किसी भी संगठन में कुशल और आसान संचार व्यवस्था उसकी कार्य प्रणाली को बेहतर करती है। उद्यमी इस क्षेत्र में कुशल और अकुशल लोगों के लिए रोजगार पैदा करने में मदद करते हैं।

11. **विज्ञापन सेवाएँ :** विज्ञापन उत्पादों को बढ़ावा देने और लोगों को उत्पादुं से परिचित कराने में मदद करते हैं। विज्ञापन का उपयोग करने वाले उद्यमी डिजाइनरों, कलाकारों, लेखकों, फोटोग्राफरों और उद्योग में अन्य कर्मियों के लिए रोजगार पैदा करते हैं।

12. **लेखा और रिपोर्टिंग सेवाएँ :** किसी भी संगठन में बढ़ते घोटालों और अन्य कारणों से लेखा परीक्षण अनिवार्य हो गया है। इससे एकाउंटेंट, चार्टर्ड अकाउटेंट, लागत लेखाकार और कंपनी सचिव जैसे रोजगार उत्पन्न होने में सहायता मिलती है।

13. **सुरक्षा और सुरक्षा सेवाएँ :** बढ़ती अपराध दर के साथ, किसी भी संगठन की सुरक्षा लगातार महत्त्वपूर्ण होती जा रही है। यह सुरक्षा गार्ड, चपरासी, क्लर्क और चौकीदार के जैसी नौकरियां पैदा करती है।

14. **इवेंट मैनेजमेंट :** यह मुख्य रूप से समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम से संबंधित है। भारत में तीव्र गति से इवेंट मैनेजरों का महत्त्व बढ़ रहा है। इससे इस क्षेत्र में नौकरी के कई अवसर पैदा करने में मदद मिली है।

15. **इंटरटेनमेंट एंटरप्रेन्योर :** इन दिनों उद्यमी भी व्यापार विकल्प चुनते हैं जो दूसरों का मनोरंजन करते हैं। अन्य व्यवसायों की तरह नृत्य अकादमी, संगीत, गायन, वीडियो गेम, पार्लर, फोटोग्राफी जैसे व्यवसाय काफी फलफूल रहे हैं। इसने कई डिजाइनरों, शिल्पकारों, इंजीनियरों, तकनीशियनों और रखरखाव कर्मियों के लिए रोजगार पैदा करने में मदद मिली है।

16. **कृषि, सिंचाई और कृषि आधारित उत्पाद :** बढ़ते वित्त के साथ, बेहतर बुनियादी ढांचे और सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता से किसान अधिक उत्पादन करने में सक्षम हुए हैं और यहां तक कि अपनी उपज अंतरराष्ट्रीय बाजार में बेचने में भी सक्षम हैं।

17. **लघु और मध्यम व्यापार :** ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के विकास की देखभाल करने हेतु सरकार बहुत सी पहल कर रही है। भारत में छोटे और मध्यम व्यवसायों का समर्थन और पोषण करने के लिए, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) मंत्रालय की स्थापना की गई है। इससे स्व-रोजगार के अवसर और औद्योगिकीकरण प्रदान करने में मदद मिलती है जो संतुलित क्षेत्रीय विकास और राष्ट्रीय आय के बेहतर वितरण की ओर अग्रसर है।

18. **शिक्षा :** शिक्षा एक उद्यमी बनाने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का स्तर और प्रकार एक व्यक्ति को कौशल प्रदान करता है। साथ ही, एक शिक्षित व्यक्ति एक शिक्षक बनकर या अपने स्वयं के शिक्षण संस्थान खोलकर एक उद्यमी बन सकता है।

19. **जल संग्रहण और प्रदूषण नियंत्रण :** बढ़ते विकास के साथ और दुनिया के बदलते परिवेश में, पृथ्वी अधिक से अधिक गर्म होती जा रही है। इसके कारण पानी की कमी बढ़ती जा रही है। प्रदूषण बढ़ रहा है। इससे जल एकत्रीकरण और प्रदूषण नियंत्रण के क्षेत्र में उद्योग स्थापित करने में उद्यमीयों के लिए अवसरों का निर्माण हुआ है।

3.3 संतुलित क्षेत्रीय विकास

संतुलित क्षेत्रीय विकास का अर्थ है अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र के विकास का उचित ध्यान रखना और ताकि आजीविका कमाने के अवसर मिल सकें। संतुलित क्षेत्रीय विकास का तात्पर्य है कि प्रत्येक क्षेत्र/देश की स्थिति रोजगार सृजन और व्यापार उद्यम के मामले में समान वृद्धि दर्ज करती हो। असंतुलित क्षेत्रीय विकास बड़े पैमाने पर कम विकसित क्षेत्र से अधिक विकसित क्षेत्र की ओर लोगों के पलायन को बढ़ावा दे सकता है। प्राकृतिक संसाधन अत्यधिक बिखरे हुए हैं। भारत वनस्पतियों और जीवों, खनिजों और मौसम की विभिन्न दशाओं

में सम्पन्न है। भूमि के कुछ भाग उपजाऊ हैं तो कुछ भाग अनुपजाऊ हैं। यह भी अन्य क्षेत्रों की तुलना में किसी क्षेत्र विशेष के विकास को प्रेरित करता है। प्राकृतिक संसाधनों का असंतुलित वितरण कुछ हाथों में ही धन संचय को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई और कलकत्ता अन्य शहरों की तुलना में अधिक सम्पन्न है।

3.3.1 क्षेत्रीय असमानता के प्रमुख कारण

विभिन्न क्षेत्रों में असमानता पैदा करने वाले प्रमुख कारक हैं :

1. **भौगोलिक कारक :** कुछ क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता है जबकि अन्य क्षेत्रों में न्यूनता है। विभिन्न प्रकार के व्यवसाय विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के लिए उपयुक्त हैं। यह भी असमानताओं की ओर ले जाता है। उदाहरण के लिए, भारत के उत्तरी भाग में, हिमालय के कारण कृषि आधारित उद्योग है वहीं दक्षिणी भाग में सागर की उपस्थिति के कारण मछली पकड़ने वाले उद्योग अधिक हैं।

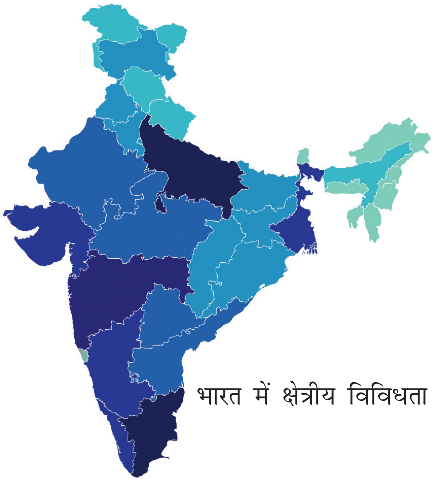

भारत में क्षेत्रीय विविधता

2. **स्थान प्राथमिकताएं :** कुछ क्षेत्र उनके स्थानीय फायदों के कारण पसंद किये जाते हैं। आमतौर पर जो बेहतर बुनियादी सुविधाओं वाले क्षेत्रों को अधिक पसंद किया जाता है जब एक उद्यम स्थापित किया जाना हो।

3. **जनसंख्या का असमान वितरण :** जनसंख्या की कार्यशील गुणवत्ता और बहुलता एक क्षेत्र में इसके मूल्य को परिभाषित करती हैं और इसे अद्वितीय बनाता है।

4. **ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में प्रवासन :** लोगों के प्रवासन से ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों के भौतिक आकार में वृद्धि होती है, चाहे लंबवत या क्षैतिज रूप से। इससे असमानताएँ बढ़ती हैं।

5. **मौसमी बेरोजगारी :** कुछ उद्योग जैसे पर्यटन और खेती मौसमी बेरोजगारी का सामना करते हैं यह भी क्षेत्रीय असमानताओं की ओर ले जाता है।

6. **धन का असमान वितरण :** धनाढ्य आबादी वाले क्षेत्रों का इससे क्षेत्रीय असमानताएं भी होती हैं।

3.3.2 क्षेत्रीय विकास की आवश्यकता

संतुलित क्षेत्रीय विकास का मतलब सभी क्षेत्रों का समान रूप से विकास नहीं है बल्कि इसका अर्थ है कि किसी क्षेत्र की क्षमता का प्रभावी तरीके से उपयोग करना जो एक राष्ट्र के लिए महत्त्वपूर्ण है। संतुलित क्षेत्रीय विकास निम्नलिखित तरीकों से मदद करता है :

1. आय और धन की विषमताएँ कम करना
2. एक अर्थव्यवस्था के विकास में तेजी लाना
3. गरीबी दूर करना
4. जीवन स्तर में वृद्धि करना
5. पिछड़े क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसरों का निर्माण करना
6. प्राकृतिक संसाधनों का इष्टतम उपयोग करना
7. स्वच्छता संबंधी समस्याओं का सामना करने में मदद करता है क्योंकि यह अधिक भीड़ से बचा जाता है

छोटे और बड़े पैमाने पर दोनों इकाइयों की स्थापना संतुलित क्षेत्रीय विकास में योगदान करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में लघु इकाइयों का विकास बड़े पैमाने पर इकाइयों की स्थापना की तुलना में आसान और अधिक प्रभावी होता है। क्योंकि छोटे पैमाने की इकाइयों को पूंजीगह तकनीक के बजाय श्रम-गहन प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता होती है। छोटे पैमाने की इकाइयों को कम निवेश की तथा पानी और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं जैसी कम आधारित संचरनाओं की आवश्यकता पड़ती है।

3.3.3 संतुलित क्षेत्रीय विकास में उद्यमी का योगदान

संतुलित क्षेत्रीय विकास में उद्यमी का योगदान इस प्रकार से होता है :

1. **बाजार की स्थितियों का ज्ञान :** उद्यमी अपने को आगे बढ़ाने के लिए सर्वोत्तम बाजार की खोज करता है। वे अप्रयुक्त बाजारों, विभिन्न अवसरों और उत्पादन के अनुकूल कारकों के साथ बाजारों की खोज करते हैं। यह संतुलित क्षेत्रीय विकास में मदद करता है।

2. **सरकारी सहायता प्रणाली :** भारत में, सरकार संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए उद्यमियों को रियायती दरों पर भूमि का आवंटन, बुनियादी ढांचा, वित्त, सब्सिडी, करों से छूट, कर अवकाश, अद्यतन प्रौद्योगिकी की आपूर्ति बिजली और लाइसेंसिंग नीति को आसान करके अनेक अवसर प्रदान करता है।

3. **संसाधनों का इष्टतम उपयोग :** भारत जैसे देश में, जहाँ पर प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन हैं वहाँ उनका सबसे अच्छे तरीके से उपयोग करना आवश्यक हो जाता है। उद्यमी अपने उद्यम कौशल से देश के इन संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हैं। यह संतुलित क्षेत्रीय विकास को दिशा देता है।

4. **सुधारात्मक सामाजिक ढाँचा :** उद्यमी पारंपरिक समाज में आधुनिकता लाने में मदद करते हैं वे बाजार की जरूरतों को भाप कर अपने अभिनव विचारों के माध्यम से उन्हें रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाएँ और बेहतर स्वच्छता जैसी सामाजिक आवश्यकताओं की

आपूर्ति करते हैं आज के परिदृश्य में उद्यम के माध्यम अंधविश्वास की उपस्थिति के गलतफहमी को कम किया गया है। अब समाज बदल रहा है। इसने क्षेत्रीय विकास को नई दिशा दी है।

5. **उत्पादकता में सुधार :** उद्यमी ने नए विचारों और नवाचारों का नेतृत्व करता है जिससे कम लागत पर अधिक उत्पादन किया जा सकता है। संतुलित क्षेत्रीय विकास और देश के धन में वृद्धि अधिक उत्पादकता से होती है।

6. **मल्टी डायमेंशनल डेवलपमेंट :** उद्यमी मल्टी-डायमेंशनल (उद्यम का बहु-आयामी विकास) में मदद करते हैं उनकी बुद्धिमत्ता, दूरदृष्टि, समर्पण के माध्यम से विकास साहस, विभिन्न नई तकनीकों का ज्ञान, को समझना, बाजार, आदि पर आधारित है।

7. **आत्मनिर्भर समाज :** उद्यमी आवश्यकताओं के अनुसार पर्याप्त वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करके एक आत्म निर्भर समाज बनाने में मदद करता है। सरकार क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने के लिए उद्यमियों को प्रेरित करती है। सरकार उद्यमियाें को पिछड़े क्षेत्रों में अपना व्यवसाय स्थापित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन और लाभ प्रदान करती है।

8. **क्षेत्रीय विषमताओं को दूर करना :** क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने या कम करने के लिए सरकार में उद्यमी शामिल हैं। इसके लिए, सरकार उद्यमियों को पिछले क्षेत्रों में अपना व्यवसाय स्थापित करना। विभिन्न प्रोत्साहन और लाभ प्रदान करती है।

पाठगत प्रश्न 3.4

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

i. उद्यमी .... संसाधनों के उपयोग में मदद करते हैं।

ii. उद्यमी .... अवसर पैदा करते हैं।

iii. रोजगार संतुलित .... विकास में मदद करता है।

iv. उद्यमी आगे और .... लिंक बनाते हैं।

v. उद्यमी .... शक्तियों के समान वितरण में मदद करते हैं।

आपने क्या सीखा

- सरकार की आर्थिक नीति, संस्थागत वित्त जैसे आर्थिक कारक, सामाजिक कारक जैसे पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक स्थिति, नस्ल, क्षेत्रीय प्रभाव, सामाजिक गतिशीलता आदि भारत में उद्यमशीलता को प्रभावित करते हैं।
- औद्योगिक संपदा, कच्चे माल की उपलब्धता आदि प्रभाव भारत में उद्यमशीलता को प्रभावित करते हैं।

- उत्पादन, कैरियर विकल्प, आर्थिक शक्ति का वितरण प्रतिस्पर्धा का विकास, नवाचार आदि। उद्यमिता को सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण बनाते हैं।
- उद्यमी पूंजी का जुटाव, रोजगार सृजन, आगे और पिछड़े संबंध, संतुलित क्षेत्रीय विकास, समान वितरण आर्थिक शक्ति, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के बेहतर मानक रहन-सहन आयात प्रतिस्थापन और निर्यात संवर्धन, आदि के माध्यम से सामाजिक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- 'महिला उद्यमी' शब्द उन महिला समूहों के लिए प्रयुक्त किया गया है जो व्यवसायिक उद्यम संचालित करती है। महिला उद्यमियों को आगे बढ़ाने के लिए कुछ योजनाएं नीचे दी गई हैं–

  व्यापार संबंध उद्यमिता सहायता और महिलाओं के लिए विकास योजना (TREAD), सूक्ष्म और लघु उद्यम क्लस्टर विकास कार्यक्रम (MSE-CDP), क्रेडिटगारंटी फंड योजना, उद्यमी और प्रबंधकीय के लिए समर्थनविकास और महिलाओं के लिए निषेध पैकेज के तहत प्रदर्शनीविपणन के तहत सीसीईए द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म और लघु उद्यम समर्थन, ग्रामीण और महिला उद्यमिता विकास (आरडब्ल्यूईडी), आदि।
- उद्यमियों के लिए कुछ सरकारी योजनाएँ इन बैंकों द्वारा दी जा रही हैं: जैसे- कृषि और ग्रामीण विकास (NABARD), ग्रामीण लघु व्यवसाय विकास केंद्र (RSBDC), राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (NSIC), स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक औफ इंडिया (SIDBI), असंगठित क्षेत्र के उद्यमियों के लिए राष्ट्रीय आयोग (NCEUS) आदि।

पाठांत प्रश्न

1. उद्यमिता से संबंधित सभी सामाजिक कारकों की व्याख्या कीजिए।
2. उद्यमिता से संबंधित सभी आर्थिक कारकों की व्याख्या कीजिए।
3. उद्यमी सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण क्यों है?
4. भारत में उद्यमियों की उत्पत्ति कैसे हुई?
5. सामाजिक, आर्थिक विकास में उद्यमियों की भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।
6. उद्यमियों को प्रोत्साहित करने में सरकार की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
7. ''महिला उद्यमियों'' को परिभाषित कीजिये। सरकार महिला उद्यमियों की मदद कैसे करती है?
8. नए उद्यम के लिए वित्त के विभिन्न स्रोतों की सूची बनाइये।
9. क्षेत्रीय असमानताएँ क्यों होती हैं? क्षेत्रीय विकास में इनके संतुलन की आवश्यकता क्यों होती है?

टिप्पणी

10. संतुलित क्षेत्रीय विकास क्या है? संतुलित क्षेत्रीय विकास में उद्यमी कैसे योगदान देते हैं?

11. उद्यमी रोजगार के अवसर कैसे पैदा करते हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

i) आर्थिक परिवर्तनीय ii) सामाजिक परिवर्तनीय iii) आर्थिक परिवर्तनीय iv) सामाजिक परिवर्तनीय v) आर्थिक चर vi) सामाजिक चर।

3.2

i) सही ii) गलत iii) सही iv) सही v) गलत

3.3

i) कृषि ii) लघु iii) महिलाएं iv) उद्योग v) उद्यमिता

3.4

i) इष्टतम ii) रोजगार iii) क्षेत्रीय iv) पिछड़े v) आर्थिक

अवधारणा नक्शे

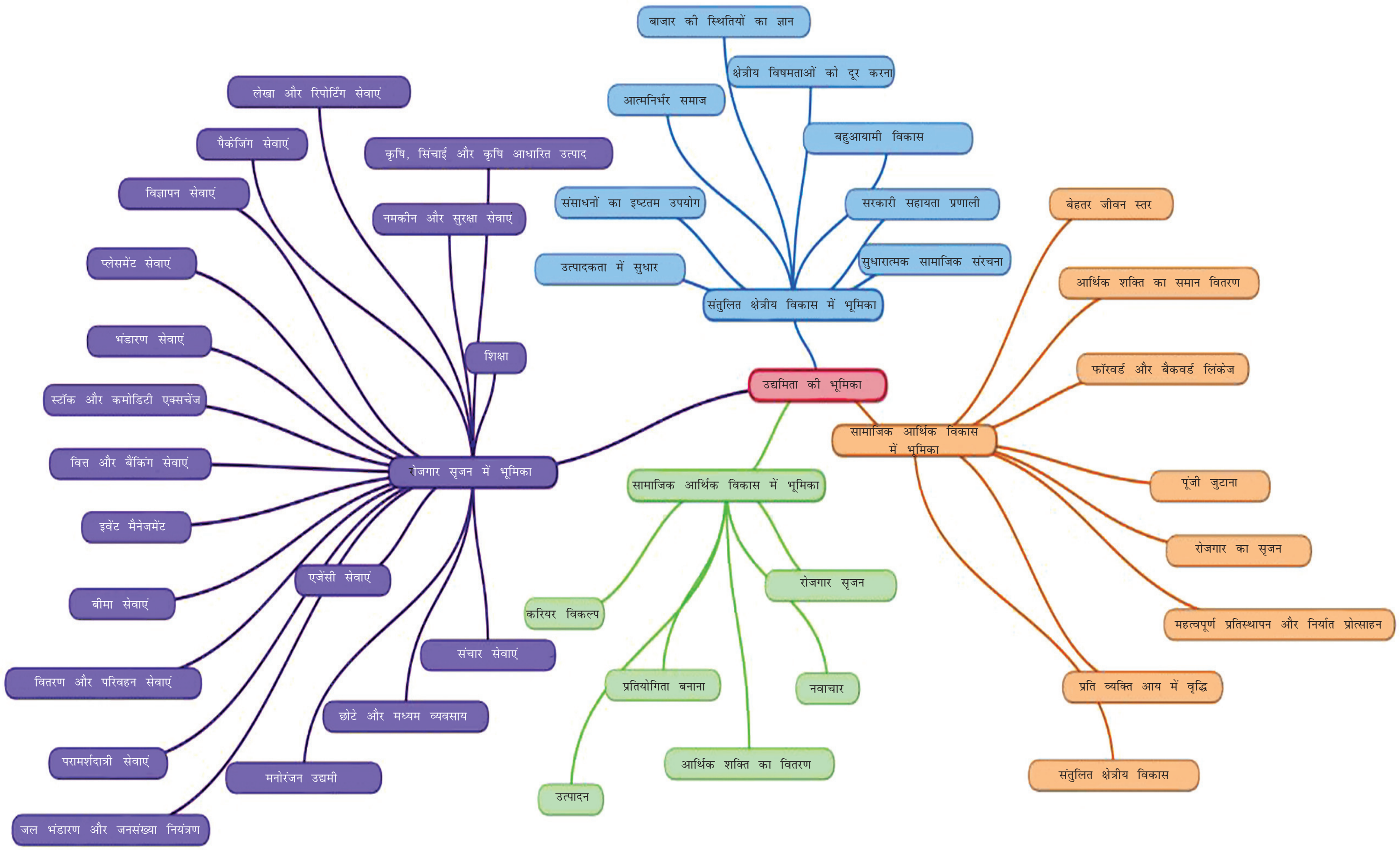
उद्यमिता की भूमिका
संतुलित क्षेत्रीय विकास में भूमिका
बाजार की स्थितियों का ज्ञान
क्षेत्रीय विषमताओं को दूर करना
आत्मनिर्भर समाज
बहुआयामी विकास
संसाधनों का इष्टतम उपयोग
सरकारी सहायता प्रणाली
उत्पादकता में सुधार
सुधारात्मक सामाजिक संरचना
रोजगार सृजन में भूमिका
लेखा और रिपोर्टिंग सेवाएं
पैकेजिंग सेवाएं
कृषि, सिंचाई और कृषि आधारित उत्पाद
विज्ञापन सेवाएं
नमकीन और सुरक्षा सेवाए
प्लेसमेंट सेवाएं
भंडारण सेवाएं
शिक्षा
स्टॉक और कमोडिटी एक्सचेंज
वित्त और बैंकिंग सेवाएं
इवेंट मैनेजमेंट
एजेंसी सेवाएं
बीमा सेवाएं
संचार सेवाएं
वितरण और परिवहन सेवाएं
छोटे और मध्यम व्यवसाय
परामर्शदात्री सेवाएं
मनोरंजन उद्यमी
जल भंडारण और जनसंख्या नियंत्रण
सामाजिक आर्थिक विकास में भूमिका
करियर विकल्प
रोजगार सृजन
प्रतियोगिता बनाना
नवाचार
आर्थिक शक्ति का वितरण
उत्पादन
सामाजिक आर्थिक विकास में भूमिका
बेहतर जीवन स्तर
आर्थिक शक्ति का समान वितरण
फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज
पूंजी जुटाना
रोजगार का सृजन
महत्वपूर्ण प्रतिस्थापन और निर्यात प्रोत्साहन
प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
संतुलित क्षेत्रीय विकास

मॉड्यूल 2

रचनात्मकता एवं नवाचार

अधिकतम अंक-12 **अध्ययन के घंटे**

समस्याओं और अवसरों को देखकर नये विचारों को विकसित करने और नये तरीकों की खोजन करने की योग्यता रचनात्मकता कहलाती है। लोगों को जीवन अथवा समाज को समृद्ध करने के क्रम में समस्याओं और अवसरों के लिए रचनात्मक समाधान प्रस्तुत करने की योग्यता नवाचार कहलाती है। नवाचार एवं रचनात्मकता समस्याओं के समाधान और अवसरों के क्रम में लोगों के जीवन को बढ़ाने एवं समाज को समृद्ध करने की क्षमता है।

यह मॉड्यूल आपमें रचनात्मकता और नवाचार को समझने की योग्यता विकसित करेगा। साथ ही नवाचार के द्वारा मूल्य संवर्धन को समझने में भी आपकी मदद करेगा। सफल उद्यमी की यात्रा में यह आपको प्रेरित कर पायेगा। आईपीआर (IPR) के विषय में संक्षिप्त परिचय भी शामिल किया गया है।

पाठ 4 : रचनात्मकता : सफल उद्यमिता के लिए एक आवश्यकता

पाठ 5 : नवाचार और मूल्य संवर्धन की आवश्यकता

पाठ 6 : नवाचार और समस्या समाधानकर्त्ता के रूप में उद्यमी

4

रचनात्मकता : सफल उद्यमिता के लिए एक आवश्यकता

क्या आपने कभी अपनी माता जी को रसोई में काम करते समय ध्यान से देखा है? यदि आप उन्हें ध्यान से देखें तो आपको यह ज्ञात होगा कि वे परिवार के भिन्न-भिन्न सदस्यों के स्वाद को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन पकाती है। रचनात्मकता, वस्तुत: एक वैयक्तिक प्रतिभा है जो असामान्य परन्तु उपयोगी कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। रचनात्मकता, रोजमर्रा के किए जाने वाले कार्यों को सरल बनाने की असाधारण विधियां खोजने एवं उपयोग में लाने के लिए प्रेरित करने की क्षमता है। इस प्रकार, किसी भी व्यवसाय के लिए सृजनात्मकता एक अत्यावश्यक तत्व है। सरल शब्दों में रचनात्मकता किसी कार्य को भिन्न प्रकार से करने के मौलिक प्रयास करने की एक प्रक्रिया है।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप :

- रचनात्मकता तथा उद्यमशीलता में इसकी भूमिका की व्याख्या करते हैं;
- रचनात्मकता संवर्धन की विधियों का विश्लेषण करते हैं; तथा
- रचनात्मकता की बाधाओं की पहचान एवं उन्हें दूर करने के उपाय करते हैं।

4.1 रचनात्मकता की अवधारणा

रचनात्मकता एक ऐसा मनोभाव है जो किसी व्यक्ति की रूचि, भावनात्मक प्रतिक्रिया तथा उसे कुछ करने की प्रेरणा प्रदान करता है। यह एक एकीकृत विषय है जिसका उपयोग नए उत्पादों की जानकारी देने के लिए प्रत्येक प्रकार के अभियान संदेशों, कार्रवाई के आह्वाहनों (कॉल टू एक्शन), संचार चैनलों एवं श्रोताओं के सम्मुख किया जा सकता है। रचनात्मकता से किसी भी क्षेत्र में उत्पादनों में नवीनता एवं उपयोगी विचारों की उत्पत्ति की जा सकती है।

4.2 रचनात्मकता का अभिप्राय

उद्यमशीलता में रचनात्मक क्रियाओं का अभिप्राय परम्परागत रूप से किए जाने वाले कार्यों की रूपरेखा में बदलाव लाने तथा यथोचित विचार से ऐसे नव उद्यम स्थापित करने की प्रक्रिया करना है जिससे व्यवस्था में उन्नत कौशल अथवा प्रभाव की उत्पत्ति हो सके। इसके दो महत्त्वपूर्ण घटक प्रक्रिया एवं व्यक्ति होते हैं।

प्रक्रिया लक्ष्य-उन्मुख है और यह किसी समस्या का समाधान करने के लिए की जाती है। व्यक्ति एक सक्रिय स्रोत है जो किसी समाधान का निर्धारण करता है। किसी समस्या का कोई समाधान अपनाने पर भी वे अक्सर और अधिक नवोपाय की प्रक्रियाएं करते हैं। वैसे ही जैसे हेनरी मिल्लर ने कहा है ''किसी भी उद्देश्य की कभी कोई थाह नहीं होती अपितु उसमें हर बार कुछ नया करने की ललक बनी रहती है।''

रचनात्मकता की आकांक्षा अनुभवों, अन्वेषणों, जिज्ञासा, अनुमानों से प्राप्त ज्ञान की बुनियाद, कुछ सीखने की मंशा तथा नए ढंग से विचार करने की क्षमता का उपयोग कर संकल्पनाओं एवं जानकारियों का संश्लेषण करने से उत्पन्न होती है।

4.3 रचनात्मकता की परिभाषा

इसकी कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:-

जोसेफ शम्पीटर ने पुरानी विधियों को सिरे से त्याग कर उनके स्थान नई विधियों का अपनाने का अपना आर्थिक सिद्धान्त ''रचनात्मक खंडन'' प्रस्तुत किया है।

ड्रेवडाहल का यह कहना है कि ''रचनात्मकता किसी व्यक्ति में व्याप्त नई अथवा नवीन रचनाओं, उत्पादों या विचारों की उत्पत्ति की वह क्षमता है जो पूर्व में निर्माता को ज्ञान नहीं होता है।''

तदनुसार, रचनात्मकता उन विचारों की प्रस्तुति की क्षमता है जो नए होने के साथ साथ भिन्न प्रकार की सोच से उत्पन्न होते हैं।

4.4 रचनात्मकता के अभिलक्षण

(क) **कल्पनाशीलता :** रचनात्मक सोच की शुरूआत ऐसा कुछ नया करने की कल्पना से होती है जो न तो कहीं विद्यमान है और न ही उसके बारे में किसी को कोई जानकारी कभी थी, इसलिए कल्पनाशीलता को हम पहले स्थान पर रख रहे हैं।

(ख) **उद्देश्यपरकता :** रचनात्मक कल्पना के लिए व्यवसाय के किसी उद्देश्य, लक्ष्य का होना अत्यावश्यक है।

(ग) **मौलिकता :** मौलिकता का अर्थ आविष्कार करने अथवा स्वतंत्र रूप से विचार करने एवं रचनात्मक कार्य करने अथवा कुछ नई अथवा असामान्य गुणवत्ता की उत्पत्ति करने की क्षमता होता है।

(घ) **मूल्यपरकता :** इसका अर्थ है कि उत्पाद अथवा परिणाम का सराहनीय गुणों से युक्त होने के साथ साथ विशेषत: मौलिक मूल्य से सम्पन्न होता है।

(ङ) **क्षमता :** कुछ नया करने की कल्पना या आविष्कार करने की क्षमता होना है। इसके लिए केवल योग्यता होना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु इसके लिए किसी कार्य विशेष को फलदायक स्वरूप में करने का कौशल भी अपेक्षित है।

4.5 रचनात्मकता के लिए अपेक्षित घटक

(क) **ज्ञान :** समस्याओं और उनके संभावित उन समाधानों के बारे में जानकारी जो समस्याओं को हल करने में सहायक हो सकते हैं। इसकी प्राप्ति किसी एक अथवा चार प्रकार के स्वरूपों यथा सहज ज्ञान, नवोपाय, कल्पनाशीलता तथा प्रेरणा से की जा सकती है।

(ख) **अभिप्रेरणा :** उद्यमशीलता के उद्देश्य से रचनात्मकता के लिए आंतरिक प्रेरणा और बाह्य प्रेरणा के संयोजन की आवश्यकता होती है। बाह्य प्रेरणा से भौतिक परिणाम प्राप्त होते है जबकि आंतरिक प्रेरणा का संबंध सीधा लक्ष्य से जुड़ा होता है।

(ग) **आकांक्षा :** उद्यमी के विचारों में आंकाक्षा का समावेश अवश्य होना चाहिए और वह उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जोखिम उठाने के लिए तत्पर होना चाहिए।

(घ) **निज-अनुशासन :** विफलता और अस्वीकृति की स्थिति का नियंत्रण करने एवं उससे उबरने की क्षमता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

4.6 उद्यमिता के लिए रचनात्मकता की आवश्कता

वैश्वीकरण, उन्नत प्रौद्योगिकी और अत्यधिक औद्योगीकरण ने अपार व्यावसायिक अवसर पैदा किए हैं। आयात और निर्यात से उत्पादों तक आसान पहुंच स्थापित हुई है। तो इन स्थितियों में किस प्रकार कोई व्यवसायी उत्पादों से भरे बाजार के लिए अपना कोई उत्पाद निर्मित करने अथवा आपूर्ति करने के बारे में विचार कर सकता हैं जहां उपभोक्ताओं के लिए पहले से ही अपनी विश्वसनीय प्राथमिकताएं और बहुत सारे विकल्पों की भरमार है। हम अपने उत्पाद को किस प्रकार अपने उत्पाद को अन्य के मुकाबले खरा बना सकते हैं? ऐसे सभी प्रश्नों का उत्तर आपको रचनात्मकता एवं नवोपाय से प्राप्त हो सकता है।

रचनात्मकता और उद्यमशीलता साथ साथ चलते हैं। यह दोनों ही एक-दूसरे के लिए महत्त्वपूर्ण हैं और एक के बिना दूसरे की सफलता की गारंटी नहीं की जा सकती है।

1. **नवोपाय को प्रोत्साहन :** किसी भी संगठन की सफलता के लिए रचनात्मकता को यदि हम हृदय मानते हैं तो नवोपाय को ऑक्सिजन माना जाना चाहिए। कोई भी अनूठा विचार आविष्कार माना जा सकता है परन्तु कोई ऐसा विचार जो अनूठा होने के साथ साथ उपयोगी भी है तो वह नवोपाय है। साधारण शब्दों में, नवोपाय का अर्थ आविष्कार का व्यावसायीकरण है।

2. **उच्चतर और समग्र सफलता की कूंजी :** संगठनों में रचनात्मक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति होना आवश्यक हैं। उनकी प्रतिभा को सही ढंग से निखार कर उनके कौशल का सदुपयोग किया जा सकता है।

3. **विचारोत्पत्ति को प्रोत्साहित करना :** विचार उत्पत्ति रचनात्मकता की पूर्व–आवश्यकता है। विचार तब निखर कर उभरते हैं जब ये अत्यधिक ध्यान केन्द्रण एवं अनुशासित ढंग से किए जाते हैं।

4. **दायरे से बाहर की विचारोत्पत्ति :** सर्वाधिक नई खोजें तब होती हैं जब दो या दो से अधिक असंबंधित विषय सकारात्मक विचार के साथ किसी कार्य का संपादन एकजुट होकर करते हैं।

5. **उत्पादकता संवर्धन में सहायक :** रचनात्मकता से नवीन प्रकार के उत्पादों और सेवाओं की उत्पत्ति हो सकती है जिससे बाजार में मांग बढ़ने से उत्पादकता बढ़ सकती है।

6. **कर्मचारियों में व्याप्त संभावनाओं का दोहन :** आज कर्मचारियों को प्रत्येक स्तर पर रचनात्मक विचारों से ऐसी अनछूई अपार संभावनाओं की अपार व्यापकता का आभास है। कर्मचारियों को रचनात्मक कार्यों के प्रति प्रेरित करके संगठन उनमें व्याप्त संभावनाओं का दोहन कर सकते हैं।

7. **रचनात्मकता का विकास :** रचनात्मकता अक्षय संसाधनों से युक्त एक आंतरिक विशेषता है जिसे कभी भी टैप करके कुछ नया सीखा जा सकता है। हम सभी रचनात्मक क्षमता और विचार प्रक्रिया के साथ पैदा हुए हैं और अपनी इन क्षमताओं का विकास एवं अपनी इन क्षमताओं की सुदृढ़ता की प्रक्रिया हम स्वयं कर सकते हैं। नए कौशलों को समझकर अथवा अपने मस्तिष्क में अलग ढंग से विचार करने की क्षमता उत्पन्न करने का अभ्यास करके रचनात्मक कार्य किए जा सकते हैं।

8. **अधिक धन उत्पत्ति :** रचनात्मकता से प्रतिस्पर्धा बढ़ती है जिसके परिणामस्वरूप ग्राहक संतुष्टि में बढ़ोतरी होने से व्यवसाय की टर्नओवर भी बढ़ती है।

9. **बाजार में अधिक हिस्सेदारी :** उत्पादों एवं सेवाओं के साथ साथ व्यवसाय में अनुभव का भी मोल होता है जिससे बाजार में हिस्सेदारी बढ़ती है अर्थात बाजार में होने वाली कुल बिक्री में उद्यम की बिक्री की हिस्सेदारी अधिक हो जाती है।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. नीचे दिये गये कथनों में से सत्य अथवा क्या असत्य कथन की पहचान कीजिए :

(क) किसी उद्यम का हृदय रचनात्मकता होती है।

(ख) बाह्य प्रेरणा से भौतिक परिणाम प्राप्त होते है

(ग) आर्थिक सिद्धांत ''रचनात्मक खंडन'' की प्रस्तुति जोसेफ शम्पीटर ने की है।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

(क) उद्यमी के विचारों में .... अवश्य होना चाहिए और वह उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जोखिम उठाने के प्रति तत्पर होना चाहिए।

(ख) रचनात्मकता से प्रतिस्पर्धा बढ़ती है जिसके परिणामस्वरूप ग्राहक .... होने से व्यवसाय की टर्नओवर भी बढ़ती है।

(ग) रचनात्मक कल्पना के लिए व्यवसाय के किसी .... होना अत्यावश्यक है।

3. सही उत्तर का चयन करें :

(क) विचारों की मौलिकता

(i) विचारों की मौलिकता

(ii) ज्ञान

(iii) क्षमता

(iv) कल्पना

(ख) जब बाजार में होने वाली कुल बिक्री में उद्यम की बिक्री की हिस्सेदारी अधिक हो जाती है तो इसे:

(i) अधिक धन उत्पत्ति कहा जाता है

(ii) लाभ में बढ़ोतरी कहा जाता है

(iii) बाजार में अधिक हिस्सेदारी कहा जाता है

(iv) उपर्युक्त सभी

4.7 रचनात्मकता में बढ़ोतरी करने की विधियां

रचनात्मकता की विधियों के अंतर्गत विचार उत्पत्ति (रचनात्मकता) एवं विचारों को वास्तविक स्वरूप प्रदान करने की विधि के लिए अपेक्षित साधन एवं अनेक विधियां सुझाई गई हैं। किसी व्यक्ति अथवा समूह में रचनात्मकता की शक्ति की उत्पत्ति नीचे प्रस्तुत कुछ महत्त्वपूर्ण विधियों से की जा सकती है:-

1. **विचार मंथन :** इस विधि का विकास एलेक्स एफ. ओसबोर्न द्वारा वर्ष 1957 में किया गया था। विचार मंथन का अर्थ किसी समूह में व्यक्तियों द्वारा, किसी प्रकार की आलोचना के बिना, किसी समस्या के समाधान के लिए गुणों एवं अवगुणों का मूल्यांकन करके अनेक फलकारक विचारों की उत्पत्ति करना है। ऐसा समूह में शामिल

सदस्यों द्वारा समूह के अध्यक्ष के साथ सक्रिय सहकार्यता से किया जाता है, प्रस्तुत विचारों में से गैर-उपयोगी विचारों को हटा दिया जाता है तथा शेष ऐसे सभी विचारों की एक विस्तृत सूची तैयार करते हैं जिनके संबंध में आगे विचार किया जा सकता है।

प्रस्तुत प्रत्येक विचार के संबंध में उसके उद्देश्यपरक होने, समस्या का समाधान करने के योग्य होने, किसी प्रकार की नई समस्या उत्पन्न न करने, विद्यमान व्यवस्थाओं के अनुकूल होने तथा उससे प्रतिफल प्राप्त हो सकने जैसे मुद्दों पर विचार किया जाता है। इस प्रकार की सामूहिक विचार मंथन की विधि का उद्देश्य एक दूसरे से प्राप्त जानकारी को इनपुट मानकर आगे की प्रक्रिया की दिशा निर्धारित करना है।

विचार मंथन नीचे प्रस्तुत विधियों से किया जा सकता है:-

(क) स्कैम्मपर (SCAMMPERR) : इस विधि का विकास माइकल माइकैल्को द्वारा किया गया है। इस विधि के अंतर्गत नव विचार की उत्पत्ति नीचे दी गई सूची के अनुसार प्रक्रिया की जाती है। यह शब्द एक परिवर्णी अर्थात एक्रोनिस है।

'S' का अर्थ इसमें सबस्टिटयूट (Substitute) अर्थात विकल्प है, जिसका अभिप्राय यह है क्या हम घटकों, सामग्रियों, व्यक्तियों में किसी प्रकार का परिवर्तन कर सकते हैं।

'C' का अर्थ कम्बाइन (Combine) अर्थात मिश्रण है, जिसका अभिप्राय यह ज्ञात करना है कि क्या हम अन्य प्रकार के संयोजनों अथवा सेवाओं अथवा पूर्णताओं का मिश्रण कर सकते हैं।

'A' का अर्थ एडाप्ट (Adapt) अर्थात अंगीकार करना है, जिसका अभिप्राय यह है कि क्या हम कोई परिवर्तन, किसी प्रक्रिया में बदलाव अथवा किसी अन्य तत्व का उपयोग कर सकते हैं।

'M' का अर्थ मैग्नीफाइ (Magnify) अर्थात वृद्धि करना है, जिसका अभिप्राय है कि क्या हम इसे संवर्धित आकर्षणों के साथ बड़ा, लम्बा, ऊंचा, अत्युक्ति का स्वरूप दे सकते हैं।

'M' का मोडिफाइ (Modify) अर्थात बदलाव करना है, जिसका अभिप्राय है कि हम इसके स्तरको कम कर सकते है, स्वरूप को बदल सकते हैं, लक्षणों (जैसे कि रंग) में बदलाव कर सकते हैं।

'P' का अर्थ है पुट टू अनोदर यूज (Put to another use) अर्थात किसी अन्य आशय से उपयोग, जिसका अभिप्राय है कि क्या हम इस उत्पाद का उपयोग किसी अन्य आशय से कर सकते हैं।

'E' का अर्थ है इलेमिनेट (Eliminate) अर्थात समाप्त करना, जिसका अभिप्राय है कि क्या हम इसके आकर्षण समाप्त कर सकते हैं तथा इसे सरल बना सकते हैं (उदाहरणत: ऑटो फोकस कैमरा)

'R' का रिअरेंज (Rearrange) अर्थात् पुन: व्यवस्थित करना है, जिसका अभिप्राय है कि

हम इसके फीचर्स को पुनःव्यवस्थित करके उसके परिणाम देख सकते हैं (उदाहरणतः टाटा नैनो का इंजन उसके पृष्ठ भाग में है)

' R' का अर्थ रिवर्स (Reverse) अर्थात विपरीत प्रक्रिया करना है, जिसका अभिप्राय है कि क्या हम जो प्रक्रिया कर रहे हैं उसके विपरीत प्रक्रिया कर सकते हैं।

इसलिए, जब भी किसी नए उत्पाद या सेवाओं को लॉन्च किया जाना है या किसी विद्यमान में कोई सुधार करने होते हैं तो जांच सूची के इन प्रश्नों को सुलझाकर उचित बदलाव किए जाने चाहिए।

(ख) रोड ब्रिज- एक भीड़भाड़ वाले रोड ब्रिज का उदाहरण लेते हैं, जो मंथन सत्र का एक अच्छा थीम बन सकता है। यातायात और प्रवाह प्रक्रिया के बीच अनेकों विचारणीय समानताएं हैं। सड़क यातायात की समस्याओं के बारे में विचार करके जब हम समाधान खोजते हैं तो हमारा ध्यान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं पर्यावरण के कारकों की ओर भी चला जाता है। निम्नलिखित प्रकार के अनेकों समाधान हमें सूझते हैं :-

- यातायात के प्रवाह में तेजी लाएं
- यातायात का प्रवाह कम करें
- यातायात का मार्ग परिवर्तित कर दें

(ग) छः विचारशील हैट: इस तकनीक का निर्माण एडवर्ड डे बोनो द्वारा किया गया है:

इस तकनीक में किसी समस्या अथवा किसी अवसर के बारे में एक दृष्टिकोण से नहीं बल्कि छह अलग-अलग दृष्टिकोणों से विचार करने की विधि बताई गई है। इस तकनीक में लोगों को अलग-अलग रंग की टोपी पहनने के लिए कहा जाता है और अपनी टोपी के रंग के आधार पर विचार करने और अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए कहा जाता है। ऐसा करके किसी समस्या अथवा अवसर के संबंध में भिन्न पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के मध्य व्याप्त असहमतियां आड़े नहीं आ पाती हैं। टोपी और टोपी के रंग निम्नानुसार प्रतिनिधित्व करते हैं:-

- **सफेद टोपी :** तटस्थता की प्रतीक है, सफेद टोपी पहनने वाला व्यक्ति उपलब्ध आंकड़ों पर ध्यान केंन्द्रित करता है। ऐसा विचार उन विचारधाराओं का विश्लेषण करने के लिए आवश्यक है जो ऐसी ही किसी समस्या के लिए पूर्व काल में विचार में लाई गई हैं।
- **लाल टोपी :** यह रंग अग्रि, उत्कंठा का प्रतीक है जो किसी समस्या का समाधान संवेदनाओं, भावनाओं, सहज ज्ञान के साथ विचार करने के लिए है।
- **काली टोपी :** सजगता का प्रतीक यह रंग विवेचना के साथ कानूनी, न्यायिक, नैतिक ढंग से विचार के लिए है। इसके अंतर्गत उन सभी खराब बिन्दुओं को विचार में लिया जाता है जो उपयोगी हो सकते हैं अथवा उपयोगी नहीं हो सकते हैं। इसके अंतर्गत की जाने वाली प्रक्रिया को कडक एवं लचीला बनाना पड़ता है।

- **पीली टोपी :** आशा का प्रतीक यह रंग आशावादी प्रतिक्रिया, सकारात्मक लाभ इंगित करने के लिए आशावादी दृष्टिकोण के साथ प्रोत्साहन का भाव उत्पन्न किया जाता है।

- **हरी टोपी :** विकास, जो रचनात्मकता का प्रतीक है, के लिए है, इसके अंतर्गत किसी समस्या का समाधान रचनात्मक सोच से किया जाता है।

छः विचारशील हैट

- **नीली टोपी :** प्रक्रिया नियंत्रण के उद्देश्य से आकाश का प्रतिनिधित्व करती है जो ऐसी बैठक के आयोजक पहनते हैं तथा शेष उपस्थित व्यक्तियों की अगुवाई करते हैं, प्रत्येक को समान समय देते हैं एवं प्रस्तुत विचारों को ध्यान में रखकर सर्वसम्मति स्थापित करते हैं।

2. **माइंड-मैपिंग :** यह तकनीक टोनी बुजान द्वारा विकसित की गई थी और इसे विचारों एवं ध्यान केन्द्रण बिंदुओं को निरंतर ट्री-डायग्राम पर नोट किए जाने वाला स्पाइडर डॉयग्राम भी कहा जाता है। माइंड मैप किसी कागज अथवा सफेद बोर्ड पर बनाए जाते हैं। इसका प्रारंभिक बिंदु एक बड़े कागज या सफेद बोर्ड के केंद्र में लिखा गया केंद्रीय विचार होता है जो उस विषय का प्रतिनिधित्व करता है जिसके लिए माइंड मैप तैयार किया जाना है। इसके पश्चात प्रमुख विषय का प्रतिनिधित्व एक वृक्ष के रूप में करते हुए वृक्ष की अलग अलग विस्तारित शाखाओं में विषय से संबंधित उप-विषय लिख दिए जाते हैं। इसी प्रकार आगे उप- विषय जोड़े जाते हैं और अगले स्तरों पर अच्छी उप-शाखाएं इसमें जोड़ी जाती हैं। इसके अलावा इसी तरह से उप-विषयों और अगले स्तरों को सूक्ष्म उप-शाखाओं को जोड़ता रहता है। विचारों को एक से अधिक स्थानों पर रखा जा सकता है और फिर इनकी परस्पर सम्बद्धता को दर्शाया जा सकता है तथा इसके लिए रंगीन पेंसिलों के उपयोग से रिश्तों को दिखाने के लिए जोड़ा जा सकता है और रंग पेंसिल का उपयोग करके परस्पर सम्बद्धता की कड़ी को आगे दर्शाया जा सकता है।

3. **पार्श्व सोच :** इसकी अभिव्यक्ति 1967 में एडवर्ड डी बोनो द्वारा की गई थी जिसमें किसी समस्या के समाधान के गैर-पारंपरिक विधियों के बारे में बताया गया है। इसके अंतर्गत श्रोताओं से किसी समस्या के समाधान के लिए पूर्व काल में विभिन्न परिस्थितियों में समान प्रकार की समस्याओं पर किए गए समाधानों पर विचार करने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार, पार्श्व सोच का अर्थ पारंपरिक विधियों एवं पूर्व धारणाओं के उपयोग के बिना समस्याओं का समाधान खोजना है। इस विधि में समस्याओं का निवारण अप्रत्यक्ष एवं रचनात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. यह बताएं कि नीचे प्रस्तुत विवरण में से क्या सत्य अथवा क्या असत्य है :

   क) नीली टोपी प्रक्रिया नियंत्रण के उद्देश्य से आकाश का प्रतिनिधित्व करती है।

   ख) हरी टोपी विकास के लिए है, इसके अंतर्गत किसी समस्या का समाधान रचनात्मक सोच से किया जाता है।

   ग) छः विचारशील टोपियों की तकनीक का निर्माण एडवर्ड डे बोनो द्वारा किया गया है।

   घ) पुल की सड़क पर भीड़भाड़ की समस्या के लिए रोड ब्रिज तकनीक का उपयोग किया जा सकता है।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

   क) किसी समस्या के समाधान के गैर-पारंपरिक विधियों से किया जाता है तो उसे . ... कहा जाता है।

   ख) .... का अर्थ पारंपरिक विधियों एवं पूर्व धारणाओं के उपयोग के बिना समस्याओं का समाधान खोजना है।

   ग) पार्श्व सोच की अभिव्यक्ति .... द्वारा की गई थी।

   घ) .... किसी कागज अथवा सफेद बोर्ड पर बनाए जाते हैं।

   ङ) SCAMMPERR (स्कैम्मपर) तकनीक का संबंध .... से है।

   च) .... के अंतर्गत सकारात्मक लाभ इंगित करने के लिए आशावादी दृष्टिकोण के साथ प्रोत्साहन का भाव उत्पन्न किया जाता है।

3. निम्नलिखित में संबंध स्थापित करें :

कॉलम क		*कॉलम ख*
(क) सफेद टोपी	(i)	नियंत्रण प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रण के लिए है
(ख) लाल टोपी	(ii)	उपलब्ध आंकड़ों पर ध्यान केंद्रित करती है। यह उन विचारधाराओं का विश्लेषण करने के लिए है जो ऐसी ही किसी समस्या के लिए पूर्व काल में विचार में लाई गई हैं।
(ग) नीली टोपी	(iii)	विवेचना के साथ कानूनी, न्यायिक, नैतिक ढंग से विचार के लिए है।

टिप्पणी

(घ) हरी टोपी (iv) आशावादी प्रतिक्रिया, सकारात्मक लाभ इंगित करने के लिए आशावादी दृष्टिकोण के साथ प्रोत्साहन का भाव उत्पन्न किया जाता है।

(ङ) पीली टोपी (iv) रचनात्मकता का प्रतीक है, इसके अंतर्गत किसी समस्या का समाधान रचनात्मक सोच से किया जाता है।

4.8 रचनात्मकता में बाधाएं

रचनात्मकता की प्रक्रिया में थोड़ी बहुत अड़चनें आती हैं। कुछ ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं जिनसे मानव मन से उभरने वाले रचनात्मक विचार बाधित हो सकते हैं।

1. **पर्यावरणीय बाधाएं :**

क) विशेषज्ञों पर निर्भरता : विशेषज्ञों के साथ काम करते समय सबसे पहला नियम यह अपना चाहिए कि आपको उन्हें अपनी समस्या का कोई हल निकालने के नहीं कहना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से वे आपको ऐसे शब्दजाल में फंसा सकते हैं जो आपको आसानी से समझ नहीं आ सकता है। आपको सीधे उनसे ऐसे संसाध नों के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए जो आप सिस्टम को समझने के लिए जानना चाहते है। विशेषज्ञ को आधी अधूरी जानकारी भी हो सकती है तथा उसे इतनी अधिक जानकारी भी हो सकती है जिसमें वह स्वयं ही उलझा हुआ हो।

ख) वांछित संसाधनों की कमी : संसाधनों की आवश्यकता होने से काफी पूर्व समय समय पर वांछित संसाधन एकत्र करते रहना चाहिए। इसे पूंजी, श्रम एवं कच्ची सामग्री के रूप में जानी जाने वाली आर्थिक बाधा भी कहा जाता है।

ग) ऊपर से नीचे के क्रम में निर्णय निर्धारण : निर्णय निर्धारण के लिए ऊपर से नीचे का क्रम अपनाया जाना चाहिए जिसके अंतर्गत कार्रवाईयों एवं नीतियों का निर्धारत ऊपर के क्रम से प्रारंभ होता है। इसे ब्लैक बॉस के उपयोग से वर्गीकृत किया चाहिए क्योंकि ऐसा करने से सारी व्यवस्था नियंत्रण में रहती है।

घ) बहुत अधिक सहयोग : बहुत अधिक सहयोग से संघर्ष, समूह सोच, निष्क्रियता और संचार भंग की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। कभी-कभी, बहुत अधिक सहयोग के कारण सर्वश्रेष्ठ विचारों को साझा करना कठिन हो जाता है।

ङ) कड़ी प्रतिस्पर्धा : अस्वास्थ्यकर प्रतियोगिता या गला काट प्रतियोगिता की स्थिति कोई अच्छी स्थिति नहीं है। इसके कारण हार अथवा जीत की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

1.1 **पर्यावरणीय बाधाओं का निवारण करने के उपाय :**

(i) **व्यवहार में परिवर्तन :** उद्यमियों की सकारात्मक सोच सफलता प्राप्ति में सहायक होती है।

(ii) **आर्थिक पर्यावरण :** इसमें आर्थिक स्थिरता एवं व्यवसाय क्रम शामिल है। आर्थिक पर्यावरण उद्यमियों के लिए एक बेकाबू कारक है परन्तु सरकारी नीतियों जैसे औद्योगिक नीति, लाइसेंसिंग नीति, राजकोष नीति तथा वित्तीय नीति में स्थिरता की ओर ध्यान देते रहने से इसके संबंध में कुछ सीमा तक पूर्वानुमान लगाए जा सकते हैं।

(iii) **व्यवसाय पर्यावरण :** इसके अंतर्गत कार्य व्यवस्थाएं एवं प्रतिस्पर्धा शामिल है जिससे देश में उद्यमिता का विकास प्रभावित होता है। कड़े विनियमों के उपयोग से कार्य व्यवस्थाओं में सुधार लाए जा सकते हैं। प्रतिस्पर्धा से बचाव नहीं किया जा सकता है परन्तु इसे स्वास्थ्यकर बनाया जा सकता है।

(iv) **निर्णय निर्धारण :** निर्णय निर्धारण त्वरित एवं प्राधिकारियों के योगदान के साथ किया जाना चाहिए विशेषत: ऐसे पदाधिकारियों के योगदान के साथ जो अनिवार्य प्राधिकारों को सौंपने के प्रति उत्तरदायी एवं जवाबदेह हैं।

2. कार्य-नीति से जुड़ी बाधाएं :

कार्यनीति एक प्रकार की योजना है जो उत्पन्न होने वाले अवसरों का लाभ उठाने एवं जोखिमों का प्रबंधन करने के लिए होती है। इसके उपयोग से रोजमर्रा की वस्तुस्थिति से लाभ उठाए जाते हैं अथवा घाटों से बचाव किया जाता है।

क) **विचारोत्पत्ति के कौशल की कमी :** विचार निरंतर आते जाते रहते हैं परन्तु हम सही समय पर ही ऐसे सही विचार का उपयोग नहीं कर पाते हैं जिनमें अवसरों में परिवर्तित करने की शक्ति होती है।

ख) **समस्या को सुलझाने की दिशाहीन विधियां :** सामान्यत:, समस्याओं को सुलझाने की प्रक्रियाएं तय होती हैं, इसके अंतर्गत पहले तो समस्या को संज्ञान में लिया जाता है और फिर उसके समाधान के लिए योजना बनाकर कार्रवाई की जाती है अथवा समाधान किया जाता है और अंत में उसकी जांच एवं अपनाई गई प्रक्रिया की व्याख्या की जाती है। प्रत्येक कोई समस्याओं के निवारण के लिए इसी प्रक्रिया का उपयोग करता है। इस निर्धारित व्यवस्था का अनुसरण न करने से समस्या जटिल हो जाती है।

ग) **विधियों का खराब ढंग से निष्पादन :** निष्पादन का अर्थ कार्य का संपादन करना है। खराब ढंग से निष्पादन करने से सभी प्रयास व्यर्थ हो सकते हैं। ऐसा नेतृत्व की कमी होने, काफी बड़ा अथवा काफी छोटा डेलिगेशन होने तथा निरर्थक बैठकों के कारण हो सकता है।

घ) **निरंतरता की कमी होना :** निर्णयों पर पुनर्विचार करना, फीडबैक प्राप्त करना, मॉनीटरिंग करना, प्रभाव की समीक्षा करने जैसी कुछ विधियां है जिनका अनुसरण किया जाना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति इस ओर ध्यान नहीं देता है तो इसे अनुभव की कमी ही माना जा सकता है।

2.1 कार्य-नीति से जुड़ी बाधाओं के निवारण के उपाय :

(i) **विचारोत्पत्ति एवं विचार स्वीकृति :** आकांक्षी उद्यमी अपने कार्य से संबंधित निवारण के कौशल स्वयंमेव विकसित कर लेते हैं। इसके लिए समस्या एवं उसके समाधान के लिए अपेक्षित कौशल की जानकारी शामिल है। उद्यमी यह भी ज्ञात करता है कि क्या समस्या यथार्थ है तथा इसकी कोई उपयोगी उपयोग्यता है अथवा नहीं है।

(ii) **परिणामों का मूल्यांकन :** विचारों का निष्पादन गुण दोष के मूल्यांकन के पश्चात करने से लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में मॉनीटरिंग एवं फीडबैक के बिना वांछित परिणाम संभव नहीं हो पाते हैं।

3. **वैयक्तिक बाधाएं :** कुछ ही लोग उद्यमिता को आजीविका के रूप में अपनाते हैं। यहां तक कि ऐसे समाज में भी केवल कुछ ही लोग अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने का साहस कर पाते हैं जहां उद्यमिता को प्रगति माना जाता है। इसके कुछ कारण निम्नलिखित हैं:-

क) **आत्म-विश्वास की कमी :** आत्म-विश्वास का अर्थ अपने स्वयं की क्षमताओं के प्रति भरोसा अथवा विश्वास होना है। आत्मविश्वास न होने से आप स्वयं को कमजोर, असहाय एवं शक्तिहीन मानने लग जाते हैं जिसका कारण ज्ञान, कौशल अथवा क्षमता न होना है।

ख) **अनुकूलता की आवश्यकता :** प्रत्येक को अपने स्वयं के प्रति समाज के स्वीकृत मानकों, परम्पराओं, नियमों, अथवा कानून के संबंध में अनुकूलता की आवश्यकता होती है। इनसे दूरी बनाने से सामाजिक अस्वीकृति की स्थिति आ सकती है।

ग) **पूर्व धारणाएं :** पूर्व धारणाओं का अर्थ एक निश्चित विधि से विचार करना है जो कि अवचेतन मन की स्थिति के कारण होता है।

घ) **अनिश्चितता के प्रति शंका :** अप्रत्याशित प्रकृति के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में अनिश्चितताएं व्याप्त हैं। यदि आपको अनिश्चितता पसंद नहीं हैं तो आप रचनात्मक प्रक्रियाएं सही ढंग से नहीं कर सकेंगे।

3.1 वैयक्तिक बाधाओं से बचाव की विधियां :

उद्यमिता विकास के लिए अनेक वैयक्तिक कौशलों की आवश्यकता पड़ती है। इनमें तकनीकी ज्ञान, सामान्य सूझ बूझ, योजना, व्यवस्थापन, निर्देशन एवं नियंत्रण एवं मानव व्यवहार शामिल है। ये सुदृढ़ उद्यमिता संस्कृति के निर्माण में सहायक होते हैं।

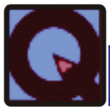

पाठगत प्रश्न 4.3

1. यह बताएं कि नीचे प्रस्तुत विवरण में से क्या सत्य अथवा क्या असत्य है :

   क) बाधाएं रचनात्मक प्रक्रियाओं में सहायक होती हैं।

ख) यदि आपको अनिश्चितता पसंद नहीं हैं तो आप रचनात्मक प्रक्रियाएं सही ढंग से नहीं कर सकेंगे।

ग) आत्म-विश्वास का अर्थ अपने स्वयं की क्षमताओं के प्रति भरोसा अथवा विश्वास होना है।

2. रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखें :

क) .... का अर्थ एक निश्चित विधि से विचार करना है जो कि अवचेतन मन की स्थिति के कारण होता है जिसके कारण लोग सही समय पर सही निर्णय नहीं ले पाते हैं।

(ख) कभी-कभी, बहुत अधिक सहयोग के कारण सर्वश्रेष्ठ विचारों को साझा करना . ... हो जाता है।

3. निम्नलिखित में संबंध स्थापित करें :

कॉलम क		**कॉलम ख**
(क) वांछित .... की कमी	(i)	पर्यावरणीय बाधा संसाधन
(ख) अनुकूलता की आवश्यक	(ii)	कार्यनीति से जुड़ी बाधा
(ग) निरंतरता की कमी	(iii)	वैयक्तिक बाधा

आपने क्या सीखा

- रचनात्मकता न केवल वांछनीय है अपितु यह वर्तमान तेजी से बदलते ऐसे कारोबारी परिदृश्य में सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण है जहां ग्राहकों को महत्त्व दिया जाता है।
- उद्यमी की रचनात्मकता क्रिया से जहां एक ओर प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिलती है वहीं ग्राहक संतुष्टि का स्तर भी बढ़ जाता है जिससे अपने नए बेहतर उत्पाद के प्रति संतुष्टि का भाव उत्पन्न होता है।
- रचनात्मकता के घटकों के बारे में जागरूकता अपरिहार्य है। इससे ज्ञान, प्रेरणा, आकांक्षा और आत्म-अनुशासन भाव उत्पन्न होता हैं।
- उद्यमी की रचनात्मकता के ध्यान केन्द्रण बिंदु ग्राहक, अद्वितीय और प्रासंगिक उत्पाद और बाजार सेवा, विफलता की स्वीकृति, विविध प्रतिभाशाली पूल और मितव्ययिता हैं।
- कुछ ऐसी निश्चित विधियां हैं जिनके माध्यम से उपयोगी रचनात्मक विचारों को विकसित किया जा सकता है लेकिन सबसे महत्वपूर्ण तकनीक विचार मंथन है जो व्यावसायिक क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपयोग की जाती है।
- रचनात्मकता की उत्पत्ति सरल नहीं है। इसमें कुछ बाधाएँ हैं जो रचनात्मकता को हतोत्साहित करती हैं। ऐसी बाधाएं पर्यावरणीय बाधाएँ, कार्यनीति से जुड़ी बाधाएँ एवं वैयक्तिक बाधाएं होती हैं।

- व्यक्तियों एवं प्रक्रियाओं के संबंध में सकारात्मक उपायों के उपयोग से संगठन में रचनात्मकता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

पाठांत प्रश्न

1. उद्यम से संबंधित रचनात्मकता क्याा है?
2. क्षमता का अभिप्राय क्या है?
3. कल्पना के साकार होने का अर्थ क्या है?
4. रचनात्मकता के घटक क्या हैं?
5. पार्श्व सोच क्या है?
6. विचार मंथन का अभिप्राय क्या है?
7. माइंड मैपिंग का अर्थ क्या है?
8. इस वाक्य की व्याख्या करें- ''किसी भी उद्देश्य की कभी कोई थाह नहीं होती अपितु उसमें हर बार कुछ नया करने की ललक बनी रहती है।''
9. उद्यमिता में रचनात्मकता की आवश्यकता की व्याख्या करें।
10. पर्यावरणीय बाधाओं एवं उनसे बचाव की विधियों का वर्णन करें।
11. कार्य नीति संबंधी बाधाओं एवं उनसे बचाव की विधियों का वर्णन करें।
12. वैयक्तिक बाधाओं एवं उनसे बचाव की विधियों का वर्णन करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य
2. (क) आकांक्षा (ख) संतुष्टि (ग) उद्देश्य
3. (क) (ii) (ख) (iii)

4.2

1. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य (घ) सत्य
2. (क) पार्श्व सोच (ख) पार्श्व सोच (ग) एडवर्ड डे बोनो (घ) माइंड मैप
   (ङ) विचार मंथन (च) पीली टोपी

3. (क) (ii) (ख) (vi) (ग) (i) (घ) (v)
(ङ) (iv) (च) (iii)

4.3

1. (क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य
2. (क) पूर्व धारणा (ख) बचाव
3. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

करें और सीखें

1. आप टेलीविजन अक्सर देखते होंगे। तीन व्यक्तियों का समूह बनाएं और रोजमर्रा उपयोग के तीन भिन्न उत्पादों के विज्ञापनों का चयन करें। उनमें उत्पाद के लिए उपयोग में लाई गई रचनात्मकता एवं उससे प्राप्त संदेश अथवा अपील के बिंदु लिखें।
2. अक्सर यह कहा जाता है कि भारतीय ऑटोमोबाइल सेक्टर मंदी के दौर से गुजर रहा है। छः हैट की विधि का उपयोग करके विचार मंथन करें तथा इसके कारणों को समझकर इससे उभरने के उपायों पर विचार करें।

टिप्पणी

रचनात्मकता : सफल उद्यमिता के लिए एक आवश्यकता

अवधारणा नक्शे

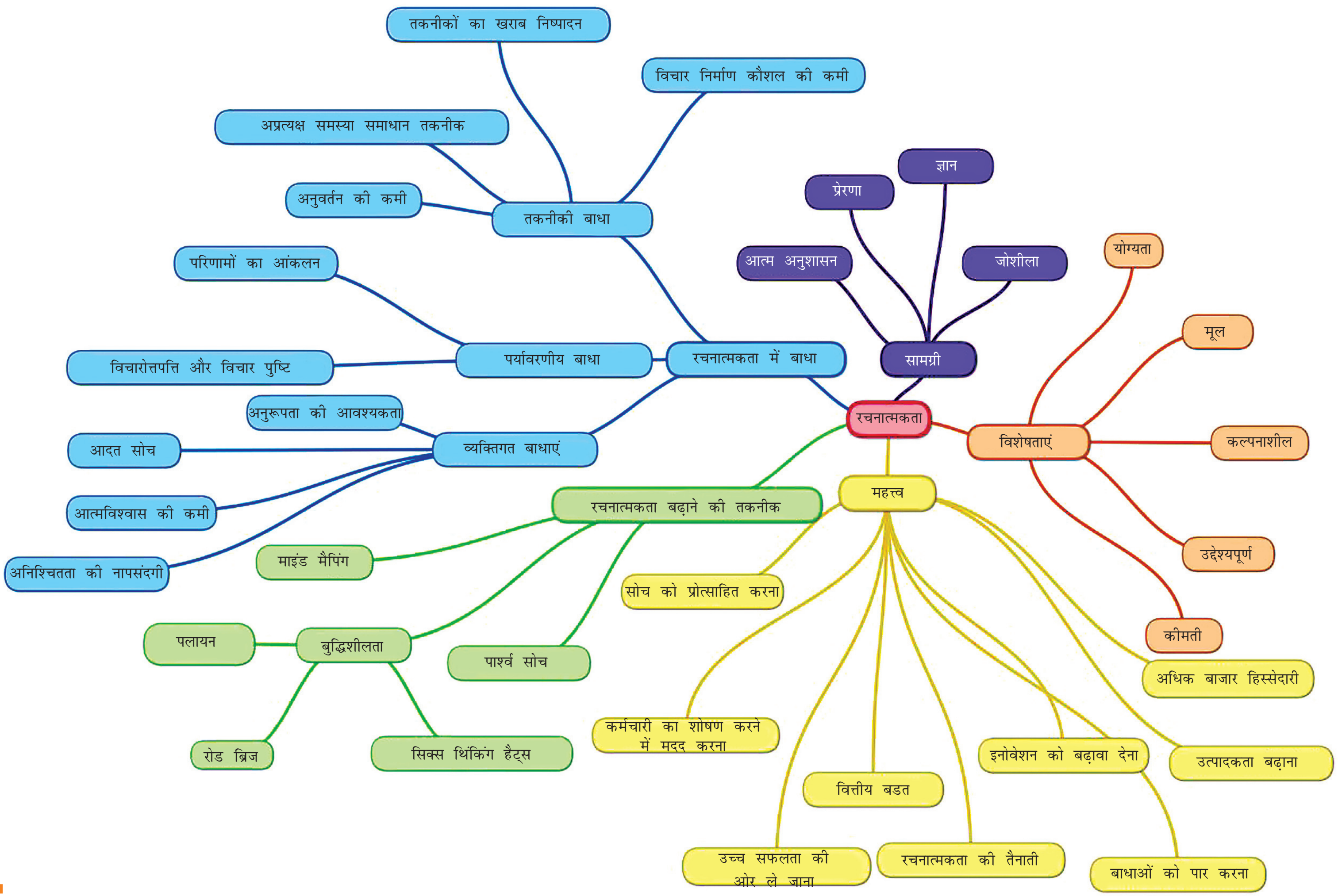

5

नवाचार और मूल्य संवर्धन की आवश्यकता

विश्व अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण ने विश्व-व्यापार परिदृश्य में एक बदलाव को जन्म दिया है। आज, पूरी दुनिया विभिन्न देशों में निर्मित वैश्विक उत्पादों की ग्राहक है। इसने नवाचार की आवश्यकता को जन्म दिया है। इसके कारण प्रतियोगियों पर प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाने के लिए नवाचार की आवश्यकता हुई है। अग्रणी कंपनियों के पास भविष्य की चुनौतियों के लिए अभिनव दृष्टिकोण होना चाहिए जो उन्हें अपने प्रतियोगियों से अलग करता है। नवाचार तेजी से एक विशिष्ट कौशल बन रहा है। कहावत कि, ''आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है'', इस तथ्य पर प्रकाश डालती है कि किसी चीज की कमी किसी को उस स्थान को भरने के लिए कल्पना करने और कुछ बनाने के लिए प्रेरित कर सकती है। हालांकि, सभी लोग यह नहीं मानते हैं कि यह सच है। उन्हें लगता है कि किसी चीज का बहुत अधिक मात्रा में होना आविष्कार के जन्म का कारण बन सकता है। कई आविष्कार केवल पहले से मौजूद किसी वस्तु का ही एक रूपांतरण हैं। पीटरएफ, ड्रकर ने ठीक ही कहा है, *''एक व्यवसाय का उद्देश्य ग्राहक बनाना है; लाभ केवल व्यापार मॉडल को मान्यता प्रदान करता है।''*

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- नवाचार के अर्थ की व्याख्या करते हैं;
- विचार, आविष्कार और नवाचार के बीच अंतर करते हैं;
- नवाचार और मूल्य संवर्धन के लिए रचनात्मकता की भूमिका पर चर्चा करते हैं; तथा
- उद्यम में बौद्धिक संपदा अधिकारों के उपयोग का वर्णन करते हैं।

5.1 विचार, आविष्कार और नवाचार

जब आप अपने रसोई में एक चूहा देखते हैं, तो आपको लगता है कि वह यहां के खाने को

नुकसान पहुंचा सकता है। आप जल्दी से चूहे को फंसाने के तरीके खोजने लगते हैं। यदि आपके पास घर पर चूहे दानी नहीं है, तो आप चूहे को बाहर निकालने के लिए या उसे फंसाने के अन्य तरीकों के साथ कोशिश करते हैं। यह उदाहरण दिखाता है कि आवश्यकता विचारों को कैसे उत्पन्न करती है। आपकी रचनात्मकता के आधार पर, आप चूहे को अपनी रसोई से भगाने के लिए कई चतुर विचार आपके दिमाग में आते हैं जिन्हें लोकप्रिय भाषा में जुगाड़ प्रणाली के रूप में जाना जाता है। यदि आप इस काम में सफल हैं, तो आपने वास्तव में अपनी आविष्कारशीलता से एक वास्तविक समस्या हल कर ली है। यदि आप जुगाड़ के व्यवसायीकरण के बारे में सोचते हैं, तो आपने जो आविष्कार किया है, उसे नवाचार के रूप में जाना जाएगा।

5.1.1 विचार

एक विचार या एक व्यावसायिक विचार एक उत्पाद या सेवा पर केंद्रित होता है जिसे वित्तीय लाभ के लिए बाजार में पेश किया जा सकता है। एक विचार व्यापार की बुनियाद होता है जिसके बिना कुछ भी आगे बढ़ा नहीं जा सकता है, यहां तक कि व्यवसाय को स्थापित भी नहीं किया जा सकता है। एक व्यक्ति के पास कई विचार हो सकते हैं। सभी विचार ध्यान दिए जाने लायक नहीं होते हैं। केवल व्यवहार्य और वास्तविक विचारों में ही व्यवसाय में परिवर्तित होने की ताकत होती है।

विचार

5.1.2 आविष्कार

एक ऐसी नवीन चीज विकसित करना जो पहले अस्तित्व में नहीं थी, आविष्कार कहलाता है। यह कोई एक सेवा या उत्पाद हो सकती है। जो उपभोक्ताओं की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। आविष्कार का अर्थ है अपने स्वयं से अथवा प्रयोगों के माध्यम से एक उत्पाद का निर्माण करना। आविष्कार एक विशिष्ट अथवा श्रेष्ठ उपकरण मिश्रण अथवा एक प्रक्रिया भी हो सकती है। इस प्रकार आविष्कार किसी के द्वारा बनाई गई एक नवीन चीज होती है। आविष्कार के उदाहरण है– उत्पाद डिजास, व्यवसाय मॉड्क या वर्किंग प्रोटोटाइप। विशेषरूप में इनमें शामिल हैं– राइड ब्रदर्श द्वारा बनाया गया विमान, जंक किल्क द्वारा एकीकृत सर्किट और स्टीफन वोज्नियाक द्वारा प्रस्तुत ऐप्पल-II कम्प्यूटर।

5.1.3 नवाचार

नवाचार वह तरीका है जिसमें उद्यमी नए अवसरों की खोज करता है या उसे इस तरह प्रस्तुत करता है जो विचारों को मुनाफे में बदल देता है। नवाचार पर परीक्षण अपनी नवीनता के बजाय अकेले विचारों के बाजार में अपनी सफलता में निहित है। नवाचार रचनात्मक विचारों को उपयोगी उत्पादों, सेवाओं या संचालन के तरीकों में बदलने की प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में, नवाचार आपको

नवाचार

आविष्कृत उत्पादों का व्यवसायीकरण करने की अनुमति देता है। इसलिए, व्यापार के कई पहलुओं में नवाचार हो सकता है जैसे:

क) स्मार्टफोन, एयर प्यूरीफायर जैसे नए उत्पाद

ख) नए उत्पादन के तरीके जैसे पहले से पैक सैंडविच

ग) नए बाजार जैसे स्त्रिकर्स/मार्स आइसक्रीम

घ) नए संगठनात्मक ढांचे जैसे डेल

ङ) आपूर्ति के लिए स्रोत जैसे ड्रॉपशिपिंग

च) व्यवसाय करने का नया तरीका जैसे सभी उत्पादों और सेवाओं को एक एप्लीकेशन के तहत जोड़ना जैसे स्विगी, ओला आदि।

5.2 नवाचार की अवधारणा

आमतौर पर, नवाचार में तीन अवधारणाएँ शामिल होती हैं:

क) रचनात्मकता: यह एक नए, उपयोगी विचार, दृष्टिकोण या काम करने के तरीके को एक नए तरीके से प्रस्तुत करना है। रचनात्मकता का अर्थ केवल पारम्परिक तरीके से हटकर सोचना नहीं है बल्कि उसकी कल्पना करना है कि सोचने का कोई पूर्व निर्धारित नियम ही नहीं है। रचनात्मकता में समस्याओं और अवसरों के अद्वितीय या नए समाधान का विकास शामिल है जैसे ई-टिकटिंग और ई-बैंकिंग।

ख) सुधार : यदि आम तौर पर बोला जाए तो नवाचार का मुख्य उद्देश्य लोगों के जीवन को बेहतर बनाना है। यह पहले से मौजूदा मशीन या उत्पाद को बेहतर बनाने के लिए निरंतर प्रयासों या किसी प्रक्रिया को पूरा करने के वैकल्पिक साधन खोजने को संदर्भित करता है। उदाहरण: आरओ प्यूरीफायर तकनीकी को तांबे के तत्व से उन्नत बनाना।

ग) आविष्कार : आविष्कार अधिकारों के मालिक ही उन से जुड़े उत्पादों का उत्पादन कर सकते हैं। एक आविष्कार विचार प्रक्रिया का एक अधिक परिपक्व हिस्सा है। यह अधिक वास्तविक और आसानी से परिभाषित किया जा सकता है; इससे जुड़े अधिकारों का पेटेंट या लाइसेंस प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण: एयर प्यूरीफायर का विकास।

5.2.1. मापने वाला नवाचार :

इसे स्तर से मापा जा सकता है।

क) नकल : यह नवाचार का सबसे निम्नतम स्तर है। यह एक अलग बाजार में दूसरे के विचार की नकल करता है।

ख) वृद्धिशील : यह नवाचार का मध्यम स्तर है। यह मौजूदा वस्तुओं के आधार पर गुणवत्ता, गति और सामर्थ्य में बेहतर बनाकर नया उत्पाद बाजार में प्रस्तुत करता है। इसे विकासवादी या निरंतर नवाचार के रूप में भी जाना जाता है।

ग) **मौलिक :** नवाचार का सबसे बड़ा स्तर है। यह मौजूदा तरीके को अस्वीकार करता है और व्यवसाय करने का एक बिल्कुल अलग तरीका प्रस्तुत करता है। यह क्रांतिकारी, परिवर्तनकारी या प्रतिमान बदलाव के रूप में भी जाना जाता है।

5.2.2 नवाचार के प्रकार

1. **विघटनकारी नवाचार :** एक नए उत्पाद या सेवा का प्रतिनिधित्व करता है जो बाजार के निचले स्तर से प्रवेश करता है और धीरे-धीरे बाजार के ऊपरी स्तर तक पहुंच बना कर मौजदू, स्थापित उत्पादों को चलन से बाहर कर देता है। इस व्यवधान के कारण उत्पन्न परिवर्तन अपने आप में एक मामूली या वृद्धिशील तकनीकी नवाचार हो सकता है।

2. **मौलिक नवाचार** एक प्रमुख तकनीकी सफलता को दर्शाता है।

3. **असतत नवाचार** एक नई तकनीक है जिसे मौजूदा आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक नए तरीके से विकसित किया जाता है। एचपी इंकजेट प्रिंटर इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जो कागज पर स्याही लगाने के एक नए और बेहतर तरीके से पहले के प्रिंट हेड तकनीकों की जगह ले रहा है।

4. **महत्त्वपूर्ण खोज** एक अप्रत्याशित आविष्कार होता है जो जिसकी तुलना मौजूदा उत्पादों या समाधान के साथ नहीं की जा सकती है। मॉडल निर्माण के लिए लागू स्टीरियो लिथोग्राफी, या त्रिआयामी प्रिंटिंग एक अच्छा उदाहरण है।

5.2.3 नवाचार का महत्त्व

क. **एक संगठन के लिए :** किसी भी संगठन को महत्त्वपूर्ण लाभ पहुंचा सकता है। यह किसी भी व्यवसाय में सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण कौशल में से एक है।

i. **प्रतिस्पर्धात्मक लाभ :** प्रतिस्पर्धात्मक लाभ: नवाचार प्रतियोगियों पर प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त देता है। इसकी सहायता से उत्पाद, सेवाओं, विधि, प्रक्रिया सभी को नया किया जा सकता है।

ii. **निवेश पर अधिकतम लाभ :** प्रतिस्पर्धात्मक लाभ में वृद्धि और निरंतर नवाचार के कारण अक्सर प्रदर्शन और लाभप्रदता में वृद्धि होती है।

iii. **उत्पादकता में वृद्धि :** नवाचार और तकनीकी सुधारों से प्रेरितआर्थिक विकास उत्पादन की लागत को कम करता है और उत्पादन क्षमता में बढोत्तरी करता है।

iv. **कंपनी की संस्कृति पर सकारात्मक प्रभाव :** नवाचार का सकारात्मक प्रभाव कंपनी की संस्कृति पर पड़ता है क्योंकि यह कम्पनी की अधिग्रहण, दक्षता, कौशल और ज्ञान के सर्वोत्तम उपयोग करने की क्षमता में वृद्धि करती है।

v. **कर्मचारियों के मनोबल में बढोत्तरी :** एक संगठन जो अपने कर्मचारियों को नवाचार करने के लिए स्वतंत्रता देता है, अक्सर उनका मनोबल उच्च होता है।

ख. समाज के लिए : समाज की उन्नति के लिए नवाचार महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि यह सामाजिक समस्याओं को हल करता है और समाज की कार्य करने की क्षमता को बढ़ाता है। समाज के दृष्टिकोण से नवाचार के मौलिक परिणाम निम्नलिखित हैं:

i. **आर्थिक विकास :** तकनीकी नवाचार को आर्थिक वृद्धि का एक प्रमुख स्रोत माना जाता है। नवाचार का उद्देश्य उत्पादकता बढ़ाने वाले नए समाधानों और प्रौद्योगिकियों का विकास करना है जिस से कि पुराने इनपुट से अधिक से अधिक उत्पादन किया जा सके।

ii. **नौकरियों का भविष्य :** तकनीकी प्रगति और बढ़ी हुई उत्पादकता के कारण जीडीपी में वृद्धि होती है जिस से आजीविका में बड़े बदलाव होते हैं।

iii. **समृद्धिशाली समाज :** सामान्य तौर पर, नवाचार और आर्थिक विकास के कारण जीवन स्तर में वृद्धि होती है जिसके कारण समाज अधिक समृद्धिशाली होता है।

iv. **बीमारी, गरीबी और भुखमरी में कमी :** विकासशील देश नई डिजिटल प्रौद्योगिकियों और नवाचार समाधानों पर निर्भर करते हैं जिसके कारण दुनिया के सबसे गरीब क्षेत्रों में बीमारी, गरीबी और भुखमरी से लड़ने के लिए बड़े पैमाने पर अवसर पैदा होते हैं।

v. **संसाधन अनुकूलन :** इनका उपयोग करके सबसे अच्छे संभव तरीकों से संसाधनों को बचाने में मदद मिलती है।

vi. **पर्यावरणीय स्थिरता :** स्थिरता और पर्यावरण संबंधी मुद्दे जैसे जलवायु परिवर्तन, ऐसी चुनौतियाँ हैं जिनके लिए वर्तमान और भविष्य में बहुत अधिक काम करने और अभिनव समाधानों की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए पेपर बैग के नवाचार से प्लास्टिक बैग का उपयोग कम किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. निम्नलिखित कथनों में से सही और गलत की पहचान कीजिए:

   क) एक आविष्कार एक अद्वितीय या नया उपकरण, विधि, रचना या प्रक्रिया है।

   ख) नवाचार से आविष्कार होता है।

   ग) नवोन्मेष रचनात्मक विचारों को उपयोगी उत्पाद, सेवा या संचालन की विधि में बदलने की प्रक्रिया है।

2. रिक्त स्थान भरें:

   क) नवाचार का उद्देश्य नए विचारों और प्रौद्योगिकियों को मूर्त रूप देना है जो कि .... में वृद्धि करती हैं।

टिप्पणी

ख) संगठन जो कर्मचारियों को नवाचार करने की स्वतंत्रता देते हैं, अक्सर उनका .... उच्च होता है।

ग) तकनीकी प्रगति और उत्पादकता में वृद्धि के कारण ...... में वृद्धि हुई है।

घ) व्यापार करने के मौजूदा तरीके को पूरी तरह से अस्वीकार करना और बिल्कुल एक नए तरह से अलग रास्ता अपनाना नवाचार का .... स्तर है।

5.3 विचार एवं नवाचार में भिन्नता

विचार	नवाचार
1. कोई भी विचार दिमाग की सोच या दिमाग की कल्पना हो सकती है।	1. कोई भी आविष्कार नई विधि, रचना या प्रक्रिया होती है। एक आविष्कार एक अद्वितीय या नए उपकरण, विधि, रचना या प्रक्रिया है।
2. विचारों का पेटेन्ट नहीं करवाया जा सकता है।	2. आविष्कारों का पेटेन्ट प्राप्त किया जा सकता है।
3. कोई भी विचार आपके दिमाग के कल्पना की प्रसिद्ध उपज हो सकती है।	3. एक आविष्कार आपके विचार को साबित करने के लिए अगला कदम है। आविष्कार उस विचार का परिणाम है जो फलने-फूलने और सफल होने के लिए एक लंबी प्रक्रिया से गुजरता है।
4. विचार केवल सैद्धातिंकधाराणा है जिसे सिद्ध किया जाना शेष होता है। एक विचार सामान्यत: प्रकृति में सैद्धांतिक होता है और इसे किसी समाधान या प्रोटोटाइप के साथ सिद्ध करना होता है।	4. एक विचार अपने आप में तब तक आविष्कार नहीं बन जाता है जब तक कि इसे समाधान प्रदान करने के लिए विकसित नहीं किया जाता है। एक आविष्कार उस विचार का विस्तार है जिसे विकसित किया गया है। यदि आप विचार का पता नहीं लगते हैं तो आप केवल आविष्कार पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकते।
5. कोई भी विचार किसी समस्या के लिए एक अभिनव तरीके से समाधान देता है जिसे आप एक विचारशील प्रक्रिया के माध्यम से या अनुभव से प्राप्त करते हैं। यह अचानक से दमिाग की बत्ती जलाने वाला क्षण होता है जो आपके दिमाग के पीछे होने वाली एक समस्या को हल करने में मदद करता है।	5. जब यह साबित हो जाए कि एक विचार किसी अद्वितीय तरीके से किसी समस्या हल कर सकता है तो यह आविष्कार में परिवर्तित हो जाता है। एक विचार के लिए एक आविष्कार बनने के लिए सबसे अधिक आवश्यक यह है कि वह प्रतिरोध का पालन करे।

5.4 रचनात्मकता एवं नवाचार के मध्य भिन्नता

आधार	रचनात्मकता	नवाचार
अर्थ	रचनात्मकता नए विचारों के सृजन का कार्य है।	नवाचार बाजार में प्रभावी ढंग से आविष्कार का कार्यान्वयन है। उत्पादक
प्रक्रिया	कल्पनाशील	हां
मात्रात्मक	नहीं	हां
धन की आवश्यकता	नहीं	हां
जोखिम	नहीं	

5.5 आविष्कार और नवाचार में भिन्नता

आधार	आविष्कार	नवाचार
1. परिभाषा	• नई वस्तुएं जिनको बनाया या सृजन किया जाता है आविष्कार कहलाती हैं।	• किसी आविष्कार का व्यवसायीकरण करना ही नवाचार कहलाता है।
2. उद्देश्य	• किसी गंभीर समस्या को हल करना • कोई बेहतर उपयोगी उत्पाद बनाना • बाजार के बीच के अंतर को भरना • इससे कोई नया व्यापार शुरू करना	• व्यापार को बढ़ाना और सफल करना • लाभ कमाना
3. पेटेन्ट	• आविष्कारों का पेटेन्ट या लाईसेंस प्राप्त किया जा सकता है।	• उत्पादित उत्पादों का पेटेन्ट या लाईसेंस प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
4. मूल्य सृजन	• हो सकता है कि कोई आविष्कार सकारात्मक मूल्य सृजन नहीं कर पाए।	• नवाचार को अपनाया जाता है और यह सकारात्मक मूल्य सृजन निश्चित रूप से करता है।
5. आवश्यक कौशल	• आधारभूत वैज्ञानिक कौशल	• रणनीति, मार्केटिंग और तकनीकी कौशल का वृहदसामंजस्य

5.6 मूल्य संवर्धन

मूल्य संवर्धन का शाब्दिक अर्थ है, किसी उत्पाद या सेवाओं में मूल्य जोड़ना। जब ग्राहक अतिरिक्त आऊटपुट के लिए अतिरिक्त धनराशि देने को तैयार होता है तो उसे मूल्यवर्धित माना जाता है। इस गतिविधि को ही मूल्य वर्धन कहा जाता है।

- मूल्य वर्धन से क्या सृजित होता है?
- गुणवत्ता: क्या उत्पाद/सेवा ग्राहक को उसकी अपेक्षा या उससे अधिक मिलती है?
- कार्यक्षमता : क्या यह आवश्यक कार्यात्मक आवश्यकताओं को पूरा करता है?
- रूप: क्या यह उपयोगी है?
- स्थान: क्या यह सही जगह पर है?
- समय: क्या यह सही समय पर है?
- कीमत: क्या ग्राहक के लिए इसे खरीदना संभव है?

5.6.1 मूल्य के प्रकार

अतिरिक्त मूल्य बनाने की कला आपके व्यवसाय को अपने ग्राहकों की आंखों के माध्यम से देखने की क्षमता से शुरू होती है। मूल्य वर्धन निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं:

क) **क्रियात्मक मूल्य :** कार्यात्मक मूल्य या मूर्त मूल्य भौतिक रूप से या किसी तरह की प्रक्रिया में मापा जाता हैं या अधिक कल्पित तरीके से देखा जा सकता है या अनुभव किया जा सकता है। कार्यात्मक मूल्य उन वस्तुओं की मुख्य विशेषताओं को संदर्भित करता है जो किसी व्यक्ति की व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं जैसे कि वस्तु को खरीदना, मनोवैज्ञानिक कारण, विश्वसनीयता, किसी उत्पाद का स्वामित्व आदि।

ख) **भावनात्मक मूल्य :** भावनात्मक मूल्य या अमूर्त मूल्य वे पहलू हैं जो ग्राहक के मन में उत्पाद को खरीदने के लिए एक ब्रांड और उत्पाद के बारे में सकारात्मक भावनाएं पैदा करती हैं। व्यापार से व्यापार के लिए भावनात्मक मूल्य सबसे उपयुक्त हैं और इसमें विश्वास, मन की शांति, सुरक्षा और विश्वसनीयता जैसे गुण शामिल होते हैं।

ग) **अर्थपूर्ण मूल्य :** अर्थपूर्ण मूल्य संस्कृति के ऐसे पहलूओं के बारे में सोचने का तरीका होता है जो इस तरह के उत्पादों को संशोधित कर उपयोग और प्रसारित करते हैं। ये मूल्य हैं :

i. **कलात्मक मूल्य** में सौंदर्य, सद्भाव और रूप शामिल हैं।

ii. **सामाजिक मूल्य** में समुदाय, कर्तव्य, न्याय और सुरक्षा शामिल हैं।

iii. **आध्यात्मिक मूल्य** में अंतर्दृष्टि, जागरूकता, सच्चाई, आश्चर्य और एकता शामिल हैं। भारत का हिंदू, सिक्ख, बौद्ध, ईसाई और कन्फ्यूशीयनवाद का दिलचस्प धार्मिक मिश्रण गतिशीलता का सांस्कृतिक स्रोत है जिसके माध्यम से देश सामाजिक और निर्यात के माध्यम से भी काम कर रहा है।

iv. **ऐतिहासिक मूल्य** में पहचान, समय और निरंतरता शामिल है।

v. **व्यक्तित्व में सिद्धि,** सृजन, मोचन और मान्यता शामिल हैं।

5.6.2 नवाचार और मूल्य संवर्धन के लिए रचनात्मकता की भूमिका

रचनात्मकता नवाचार और मूल्य संवर्धन का स्रोत है। रचनात्मकता नवाचार की ओर ले जाती है और नवाचार मूल्य संवर्धन सुनिश्चित करता है। नवाचार और मूल्य जोड़ने से एक व्यवसाय के लिए मुख्य लाभ में निम्नलिखित शामिल हैं:

क) उच्च मूल्य प्राप्त करने से राजस्व और मुनाफे में वृद्धि

ख) प्रतियोगिता के दृष्टिकोण से बढ़त बनाना

ग) कम कीमत पर ग्राहकों को अपनी तरफ आकर्षित करने की कोशिश करने वाले प्रतियोगियों से रक्षा करना

घ) किसी व्यवसाय को उसके लक्ष्यित बाजार पर अधिक ध्यान केंद्रित करना

ङ) बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि

च) अपने उत्पादों, पैकेजों, बाजारों पर लोगों के संबंध में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्राप्त होती है और यह अपने उत्पादों को दूसरों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ देता है और अपने उत्पादों को बहुत अधिक कीमत पर बेचा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 5.2

1. बताएं कि क्या निम्नलिखित कथन नहीं या गलत हैं :

   क) आविष्कार पेटेंट योग्य है।

   ख) नवाचार को नकारात्मक मूल्य बनाने के लिए अपनाया और सिद्ध किया गया है।

   ग) जब आप अपने व्यवसाय को प्रतिद्वंद्वी की नजर से देखते हैं तो मूल्य संवर्धन को बेहतर तरीके से समझा जा सकता है।

2. सही उत्तर चुनें :

1. निम्न में से कौन सा तरीका यह दर्शाता है कि मूल्यवर्धन कैसे किया जाता है?

   क) बढ़ा हुआ मुनाफा

   ख) बढ़ा हुआ टर्नओवर

   ग) बाजार में बढ़ी हुई हिस्सेदारी

   घ) उपर्युक्त सभी

2. आध्यात्मिक मूल्यों में शामिल हैं–

   क) अर्न्तदृष्टि

   ख) जागरूकता

ग) सत्य

घ) उपर्युक्त सभी

3. निम्नलिखित का मिलान करें:

कॉलम क	कॉलम ख
क) कार्यात्मक मूल्य	क) अमूर्त पहलू
ख) भावनात्मक मूल्य	ख) मूर्त पहलु
ग) ऐतिहासिक मूल्य	ग) पहचान, समय और निरंतरता
घ) सौंदर्य मूल्य	घ) समाज, कर्तव्य, न्याय और सुरक्षा शामिल हैं
ङ) सामाजिक मूल्य	ङ) सुंदरता, सामंजस्य और रूप शामिल हैं

5.7 बौद्धिक संपदा अधिकार

बौद्धिक संपदा (आईपी) अधिकारों का ज्ञान आज की दुनिया में बहुत जरूरी है। बौद्धिक संपदा से तात्पर्य कॉपीराइट, पेटेंट, भौगोलिक संकेत, ट्रेडमार्क और अन्य अमूर्त संपत्तियों से है।

आईपी अधिकार:

क) नई कृतियों के लिए व्यक्ति को प्रोत्साहन प्रदान करता है।

ख) रचनाकारों और अन्वेषकों को उचित मान्यता प्रदान करता है।

ग) बौद्धिक संपदा के लिए सामग्री इनाम सुनिश्चित करता है।

घ) वास्तविक और मूल्य उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करता है।

बौद्धिक संपदा कानून में निम्नलिखित कानून शामिल हैं:

(1) ट्रेडमार्क से संबंधित कानून (व्यापार चिह्न अधिनियम, (1999)

(2) कॉपीराइट कलात्मक कार्य, साहित्यिक कार्य, ऑडियो वीडियो से संबंधित कानून रिकॉर्ड्स और सॉफ्टवेयर (कॉपीराइट अधिनियम, 1957)

(3) औद्योगिक डिजाइन से संबंधित कानून (डिजाइन अधिनियम, 2000)

(4) पेटेंट से संबंधित कानून (पेटेंट अधिनियम, 1970)

(5) भौगोलिक संकेत से संबंधित कानून। (भौगोलिक संकेत पंजीकरण और संरक्षण अधिनियम, 1999)

5.7.1 ट्रेडमार्क

इसका अर्थ है कोई भी शब्द, नाम, प्रतीक या उपकरण या कोई संयोजन जिस का उपयोग वाणिज्य में उत्पादों की पहचान करने के लिए किया जाता है या इस्तेमाल करने का ईरादा होता है और जिसका उपयोग किसी एक निर्माता या विक्रेता के सामान को दूसरों द्वारा निर्मित या बेचा जाने वाले सामान से अलग करना होता। ट्रेडमार्क के लिए उपयोग किए जाने वाले ट्रेडमार्क ®,! ™ के रूप में हैं। एक पंजीकृत ट्रेडमार्क को ® से दर्शाया जाता है। एक ट्रेडमार्क आवेदन की तारीख से 10 वर्षों के लिए वैध होता है जिसे निर्धारित शुल्क के भुगतान पर आगे के वर्षो के लिए नवीनीकृत करवाया जा सकता है।

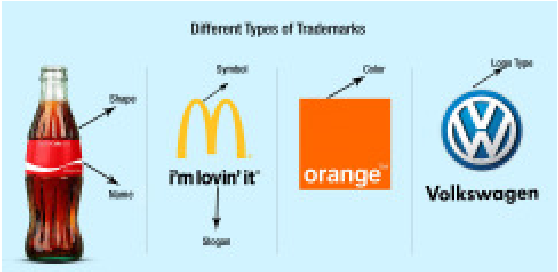

5.7.2. कॉपीराइट

साहित्यिक, संगीत, कलात्मक कार्यों जैसे गीत, संगीत स्कोर, कविता, पेंटिंग, मूर्तिकला, फिल्म, वास्तुकला, नक्शे, तकनीकी चित्र, कंप्यूटर कार्यक्रम, डेटा बेस आदि जैसी वस्तुओं के लिए कॉपीराइट प्रदान किए जाते हैं। कॉपी राइट के माध्यम से रचनाकारों को अपने किए गए कार्य के उपयोग करने या किसी अन्य व्यक्ति को उपयोग करने या अधिकृत करने के लिए निर्माता का अधिकार प्रदान किया जाता है। विभिन्न रूपों, प्रतिलिपि, मुद्रण, रिकॉर्डिंग, सार्वजनिक प्रदर्शन या उसका उपयोग निषिद्ध होता है। एक कॉपीराइट विचार या विषय के बजाय अभिव्यक्ति के मूर्त रूप की रक्षा करता है। कॉपीराइट के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रतीक © + नाम + वर्ष हैं, उदाहरण, © हिमालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2009. कॉपीराइट की अवधि लेखक के जीवनकाल और फिर लेखक की मृत्यु से कैलेंडर वर्ष के अंत से 50 वर्ष तक होती है। यह फिल्म और साउंड रिकॉर्डिंग के लिए 50 वर्ष और प्रकाशित संस्करण की टंकण व्यवस्था के लिए 25 वर्ष है।

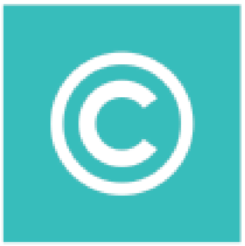

5.7.3 पेटेंट

पेटेंट को ''आविष्कारक के लिए एक संपत्ति का अधिकार'' के रूप में परिभाषित किया गया है, मालिक को ''दूसरों को बनाने, उपयोग करने, बिक्री के लिए पेशकश करने, बेचने या आविष्कार को आयात करने से रोकने का अधिकार प्रदान करता है।'' पेटेंट योग्य वस्तुओं में नई तकनीक या व्यावसायिक विधियों जैसे ऑब्जेक्ट या प्रक्रियाएं शामिल हो सकती हैं, लेकिन अधिक अमूर्त आइटम जैसे कि वेब साइट या विचार शामिल नहीं हैं। पेटेंट की शर्तें सभी प्रकार के आविष्कारों के लिए पेटेंट आवेदन करने की तिथि से 20 वर्ष हैं। पेटेंट अधिकार क्षेत्रीय हैं। कोई वैश्विक पेटेंट नहीं दिया जाता है।

5.7.4 डिजाइन

एक या अधिक दृश्य विशेषताओं के परिणामस्वरूप उत्पाद के समग्र स्वरूप की सुरक्षा के लिए डिजाइन अधिनियम, 2000 लागू किया गया है। दृश्य सुविधाएँ उत्पाद के आकार, विन्यास, पैटर्न और अलंकरण को समाहित करती हैं, लेकिन कार्यक्षमता में विस्तार नहीं करती हैं। एक डिजाइन में तीन-आयामी विशेषताएं शामिल हो सकती हैं, जैसे कि किसी लेख की आकृति या सतह, या दो-आयामी सुविधाएँ, जैसे पैटर्न, रेखाएँ या रंग। यहां तक कि हाथ से बुने हुए कालीनों और सूती बेड कवर जैसी पारंपरिक शिल्प वस्तुओं को भी सुरक्षा के लिए औद्योगिक डिजाइन के तहत पंजीकृत किया जा सकता है।

5.7.5 भौगोलिक संकेत

सामानों का भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 मूल के संकेत और अपीलों से संबंधित है। इसमें ऐसे संकेत होते हैं जिनका उपयोग ऐसे सामानों पर किया जाता है जिनकी एक विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति होती है और विशेष गुण, प्रतिष्ठा या विशेषताएं होती हैं जो मूल रूप से उस स्थान विशेष पर ही मिलती हैं। आमतौर पर, एक भौगोलिक संकेत में माल की उत्पत्ति के स्थान का नाम शामिल होता है जैसे देहरादून के बासमती चावल, दार्जिलिंग चाय आदि। इसलिए उत्पाद को कानूनों और अंतर्राष्ट्रीय समझौतों द्वारा संरक्षित किया जा सकता है क्योंकि वे भौगोलिक संकेतक के स्रोत हैं।

5.7.6 ट्रेंड सीक्रेट (व्यापार रहस्य)

एक व्यापार रहस्य एक सूत्र, प्रक्रिया, उपकरण, या अन्य व्यावसायिक जानकारी होती है जो कंपनियां व्यावसायिक प्रतिस्पर्धियों पर व्यापार लाभ देने के लिए निजी रखती हैं। आम व्यापार रहस्यों के बौद्धिक संपदा उदाहरणों में विनिर्माण प्रक्रियाएं, ग्राहक सूचियां, सामग्री, सिस्टम, बिक्री के तरीके, लॉन्च रणनीतियां और व्यावसायिक योजनाएं शामिल हैं। व्यापार रहस्य को सरकारी निकाय के साथ पंजीकृत नहीं करवाया जा सकता है। यह एक ऐसा तथ्य होता है जो कि सार्वजनिक रूप से ज्ञात नहीं होता है और व्यापार मालिकों द्वारा गोपनीयता बनाए रखने के लिए उचित कदम उठाएं जाते हैं।

5.9 बौद्धिक सम्पदा अधिकार (IPR)

आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि आईपीआर द्वारा आपके व्यवसाय को कैसे संरक्षित किया जा सकता है। अपने आईपी को सुरक्षित और संरक्षित रखना आपके व्यवसाय की भविष्य की सफलता के लिए आवश्यक होता है, इसलिए आपको अपने आईपी अधिकारों को समझना बहुत ही आवश्यक है और इस मामले में कानून आपकी निम्नलिखित मामलों में मदद कर सकते हैं:

i. दूसरे प्रतियोगियों के द्वारा उल्लंघन के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है और अंततः अदालतों में इसके उपयोग करने, बनाने, बेचने या आयात करने के आपके एकमात्र अधिकार को सुरक्षित रखता है।

ii. ये आपकी अनुमती के बिना दूसरों को उपयोग करने, बनाने, बेचने या आयात करने से रोकता है।

iii. इससे लाइसेंस देकर रॉयल्टी अर्जित की जा सकती है।

iv. रणनीतिक गठजोड़ के माध्यम से इस से फायदा उठाया जा सकता है

v. इसे बेचकर पैसा भी कमाया जा सकता है।

उल्लंघन की श्रेणी में निम्नलिखित आते है:

(क) लेखक/मालिक की अनुमति के बिना किसी भी प्रकार का पुन:उत्पादन, उपयोग, वितरण, प्रदर्शन आदि।

(ख) एक समानया काफी हद तक समान उत्पादन करना।

पाठगत प्रश्न 5.3

1. सही उत्तर चुनें :

कॉलम क	कॉलम ख
क) ©	क) पंजीकृत ट्रेडमार्क
क) TM	ख) कॉपीराइट
क) ®	ग) ट्रेडमार्क

2. बहुविकल्पीय प्रश्न:

(क) बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण महत्त्वपूर्ण है क्योंकि

i. नवाचार को बढ़ावा देना

ii. रचनात्मकता

iii. कल्पना

iv. सहानुभूति

(ख) वह अधिकार जो विचारों की अनूठी अभिव्यक्ति को संरक्षण देता है कहा जाता है :

i. ट्रेडमार्क

ii. पेटेंट

iii. कॉपीराइट

iv. उपरोक्त सभी

(ग) निम्नलिखित में से कौन-सा कॉपीराइट का एक उदाहरण है?

i. © हिमालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2009

ii. हिमालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, ©, 2009

iii. 2009, ©, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

iv. हिमालय पब्लिशिंग हाउस, ©, 2009, नई दिल्ली

(घ) निम्नलिखित में से कौन ट्रेडमार्क का एक उदाहरण है?

i. मेरा नाम

ii. लोगो

iii. प्रतीक

iv. उपरोक्त सभी

(ङ) एक पेटेंट का वर्णन करता है:

i. आविष्कार

ii. रचनात्मकता

iii. विचारों की अभिव्यक्ति

iv. डिजाइन

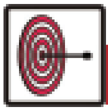

आपने क्या सीखा

- एक विचार एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण या आपका इरादा है जिसे एक मन की आंख या मानसिक छवि भी कहा जा सकता है। आमतौर पर, नए विचारों के स्रोत उपभोक्ताओं, मौजूदा उत्पादों और सेवाओं, वितरण चैनलों, (संघीय) सरकार, अनुसंधान और विकास होते हैं।
- रचनात्मकता का मतलब केवल अलग तरीके से विचार करना नहीं है। यह किसी समस्या के संभावित समाधान को तलाश करती है। रचनात्मकता अभ्यास और दीर्घकालिक रचनात्मक क्षमता के विकास के माध्यम से अनुभव के आधार पर सीखी जाती है।
- एक आविष्कार एक अद्वितीय या नए उपकरण, विधि रचना या ऐसी प्रक्रिया है जो आपको सामान बनाने या निर्मित करने की अनुमति देती है। यह पंजीकृत भी करवाई जा सकती है।
- नवाचार का अर्थ एक रचनात्मक आविष्कार का व्यावसायीकरण करना होता है, जो तब

होता है जब कोई व्यक्ति किसी मौजूदा उत्पाद, प्रक्रिया या सेवा में सुधार या महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

- मूल्यवर्धन का अर्थ है, व्यवसाय के अवसरों को पुन: प्राप्त करने के लिए मौजदू उत्पादों या सेवाओं में कार्यात्मक मूल्य, भावनात्मक मूल्य और अभिव्यंजक मूल्य के संदर्भ में कुछ सुविधाएं जोड़ना।
- बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) कानूनी अधिकार हैं जो औद्योगिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक या कलात्मक क्षेत्रों में बौद्धिक गतिविधि से उत्पन्न कृतियों और/या आविष्कारों की रक्षा करते हैं। सबसे आम आईपीआर में पेटेंट, कॉपीराइट, चिन्ह और व्यापार रहस्य शामिल हैं।

पाठांत प्रश्न

1. नए विचारों की पीढ़ी के स्रोत का नाम बताइए।
2. नवाचार को परिभाषित करें।
3. रचनात्मकता क्या है?
4. बौद्धिक संपदा क्या है?
5. कार्यात्मक मूल्य की व्याख्या करें।
6. मूल्यवर्धन से आपका क्या अभिप्राय है?
7. कॉपीराइट का उपयोग क्या है?
8. नवाचार के लाभों पर चर्चा करें।
9. नवाचार सामाजिक समस्याओं को हल करने में कैसे सहायक है? के बारे में बताएं।
10. विचार, आविष्कार और नवाचार में अंतर स्पष्ट करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. क. सही ख. असत्य ग. सही
2. क. उत्पादकता ख. मनोबल ग. सकल घरेलू उत्पाध, महानतम

5.2

1. क. सही ख. असत्य ग. असत्य

2. क. (iv) ख. (iv)

3. 1. ख 2. क 3. ग 4. ङ 5. घ

5.3

1. क. (ii) ख. (i) ग. (iii)

2. क. (i) ख. (iii) ग. (i) घ. (iv) (i)

करो और सीखो

1. आपके और आपके परिवार द्वारा उपयोग किए जाने वाले 10 उत्पादों को चुनें। उदाहरण के लिए, किताबें, लैपटॉप आदि उन्हें सूचीबद्ध करें और उनमें निहित बौद्धिक संपदा अधिकारों के चिह्न की पहचान करें।

क्र.सं.	*उत्पाद*	*ट्रेडमार्क*	*कॉपीराइट*	*पेटेंट*
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				
6.				
7.				

2. पांच सेवाओं और पांच उत्पादों को चुनें जो आपके परिवार और आप उपयोग करते हैं। उनकी सूची बनाकर उनमें रचनात्मकता को पहचानें।

अवधारणा नक्शे

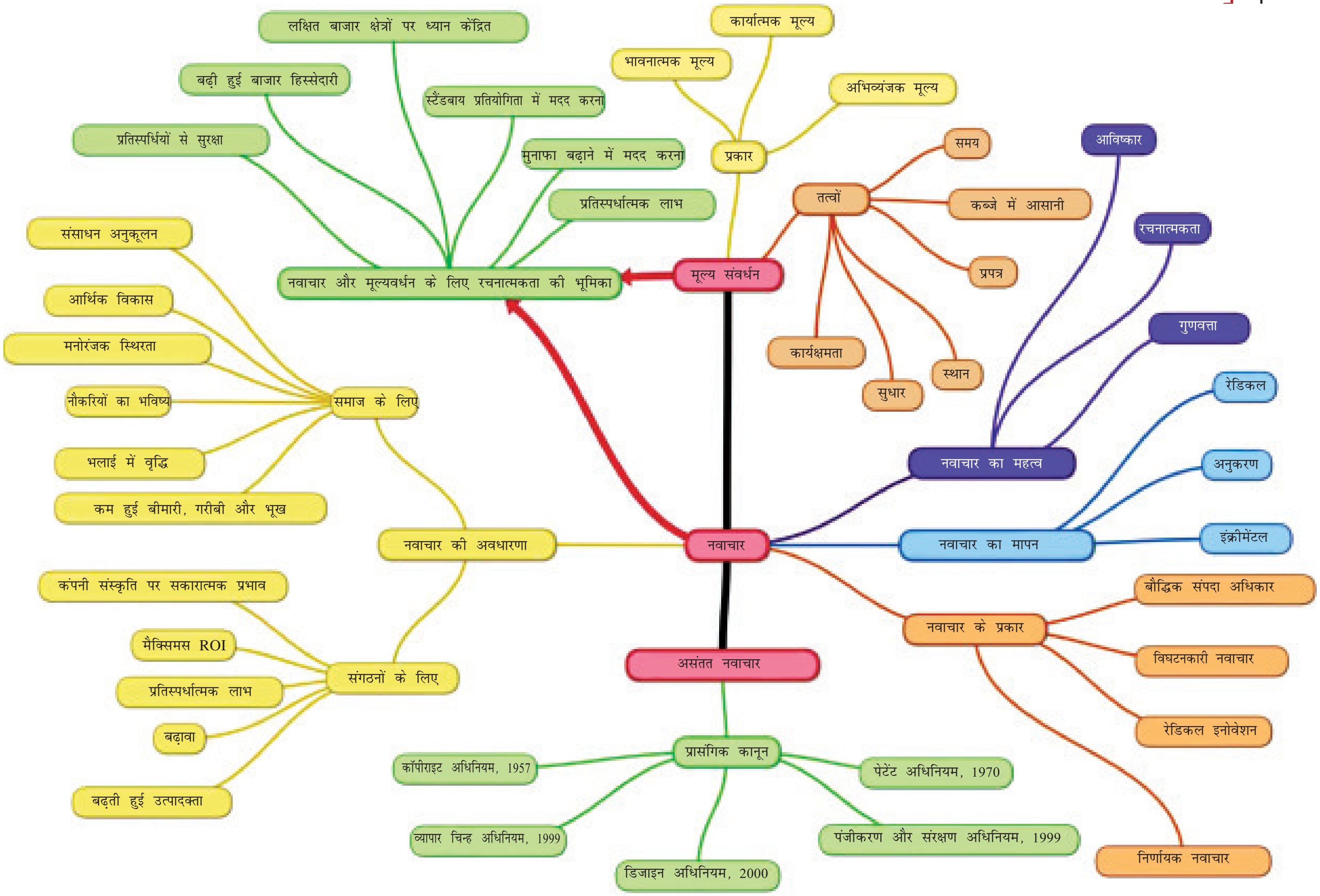
नवाचार
मूल्य संवर्धन
असंतत नवाचार
नवाचार और मूल्यवर्धन के लिए रचनात्मकता की भूमिका
लक्षित बाजार क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित
बढ़ी हुई बाजार हिस्सेदारी
स्टैंडबाय प्रतियोगिता में मदद करना
प्रतिस्पर्धियों से सुरक्षा
मुनाफा बढ़ाने में मदद करना
प्रतिस्पर्धात्मक लाभ
प्रकार
कार्यात्मक मूल्य
भावनात्मक मूल्य
अभिव्यंजक मूल्य
तत्वों
समय
कब्जे में आसानी
प्रपत्र
कार्यक्षमता
सुधार
स्थान
नवाचार का महत्व
आविष्कार
रचनात्मकता
गुणवत्ता
नवाचार का मापन
रेडिकल
अनुकरण
इंक्रीमेंटल
नवाचार के प्रकार
बौद्धिक संपदा अधिकार
विघटनकारी नवाचार
रेडिकल इनोवेशन
निर्णायक नवाचार
नवाचार की अवधारणा
समाज के लिए
संसाधन अनुकूलन
आर्थिक विकास
मनोरंजक स्थिरता
नौकरियों का भविष्य
भलाई में वृद्धि
कम हुई बीमारी, गरीबी और भूख
संगठनों के लिए
कंपनी संस्कृति पर सकारात्मक प्रभाव
मैक्सिमस ROI
प्रतिस्पर्धात्मक लाभ
बढ़ावा
बढ़ती हुई उत्पादक्ता
प्रासंगिक कानून
कॉपीराइट अधिनियम, 1957
व्यापार चिन्ह अधिनियम, 1999
डिजाइन अधिनियम, 2000
पेटेंट अधिनियम, 1970
पंजीकरण और संरक्षण अधिनियम, 1999

6

नवाचार और समस्या समाधानकर्ता के रूप में उद्यमी

पिछले अध्यायों में आपने सृजनात्मकता एवं नवाचार के विषय में अध्ययन किया है। आपको यह ज्ञात है कि उद्यमिता एक सृजनात्मक प्रक्रिया है जिसमें नए उत्पादों, प्रक्रियाओं, नए ज्ञान की खोज, विद्यमान उत्पादों तथा सेवाओं में सुधार एवं उत्पादों को कम संसाधनों के साथ नए एवं बेहतर स्वरूप में निर्मित्त करने के उपाय किए जाते हैं।

जब हम उपर्युक्त नवाचारों से सामाजिक समस्याओं का समाधान करते हैं तो इसे ''सामाजिक (सोशल) उद्यमिता'' कहा जाता है। ऐसे नवाचारों करने वाले उद्यमी को सामाजिक (सोशल) उद्यमी कहा जाता है। वे समाज के द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाईयों में अवसरों की ओर ध्यान देते हैं।

सामाजिक (सोशल) उद्यमी समाज के जीवन स्तर के मानकों में सुधार लाते हैं। उनका उद्देश्य मात्र लाभ कमाना नहीं अपितु समाज में परिवर्तन लाना होता है। वे समाज की बेहतरी और विशेषत: वंचित वर्ग की बेहतरी के लिए कार्य करते हैं।

दूसरे तथा तीसरे पाठ में आपने उद्यमी एवं उद्यमिता का विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया है। इस प्रकार अब आप उनकी गुणवत्ताओं एवं समाज तथा अर्थव्यवस्था में उनकी भूमिका का ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं। आइए अब हम सामाजिक (सोशल) उद्यमी की विशेषताओं एवं उनके महत्त्व का ज्ञान प्राप्त करते हैं और यह ज्ञात करते हैं कि वाणिज्यिक उद्यमियों की तुलना में वे कितने भिन्न हैं।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- सामाजिक समस्याओं के समाधान में नवाचारों की भूमिका का परीक्षण करते हैं; तथा
- विभिन्न क्षेत्रों में वास्तविक जीवन परिस्थितियों की व्याख्या करते हैं।

6.1 सामाजिक (सोशल) उद्यमी की विशेषताएँ

सामाजिक (सोशल) उद्यमियों द्वारा सांझा की जाने वाली विशेषताएं :

- **महत्वकांक्षी** : सामाजिक (सोशल) उद्यमी अत्यधिक महत्वकांक्षी होते हैं तथा वे यथास्थिति को स्वीकार नहीं करते अर्थात वे विश्व में परिवर्तन लाना चाहते हैं। उनमें सामाजिक समस्याओं एवं आवश्यकताओं के समाधान खोजने की ललक होती है
- **सामाजिक उत्प्रेरक** : सामाजिक (सोशल) उद्यमी सामाजिक समस्याओं को समझते हैं और वे उनके समाधान के अवसर खोजते हैं। वे समाज में परिवर्तकारी प्रभाव लाने की भूमिका में होते हैं।
- **नवाचार:** नवाचार में समस्याओं का समाधान शामिल है। सामाजिक (सोशल) उद्यमियों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं स्वच्छता जैसे अनेक क्षेत्रों में मूल्यवान समाधान खोजकर समाज के लिए समस्याओं का समाधान किया गया है।
- **सामाजिक मूल्यों के निर्माण की ओर ध्यान केन्द्रण:** वे सामाजिक मूल्यों के निर्माण के प्रति अत्यधिक उत्साहित होते हैं तथा वैयक्तिक अर्थलाभ के लिए कार्य नहीं करते हैं।
- **युक्ति कुशल** : स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए वे तत्काल उपलब्ध स्थानीय कौशल, साधनों, एवं संसाधनों का ही सक्रीय उपयोग नहीं करते अपितु अन्यों के साथ सहकारिता भी करते हैं।
- **उत्तरदायी** : वे कामचलाऊ समाधानों से संतुष्ट नहीं होते। वे अपने लाभग्राहियों के प्रति जवाबदेह होते हैं जिसके कारण वे कड़ी मेहनत करके लम्बे काल तक चलने वाले सुव्यवस्थित समाधान खोजते हैं।

6.2 सामाजिक (सोशल) उद्यमी एवं पारम्परिक/वाणिज्यिक उद्यमी के मध्य तुलना

सामाजिक (सोशल) उद्यमी पारम्परिक/वाणिज्यिक उद्यमियों से भिन्न होते हैं। सोशल उद्यमी के समक्ष लाभ कमाने का लक्ष्य नहीं होता अपितु वे समाज में बदलाव एवं उत्थान की लालसा रखते हैं। पारम्परिक उद्यमी, जैसा कि आपने अध्याय 2 में पढ़ा है, अवसरवादी होते हैं तथा वे अपने व्यावसायिक उद्यम से अधिकाधिक लाभ कमाना चाहते हैं। नीचे दी गई तालिका से आपको इनकी भिन्नताओं का ज्ञान प्राप्त हो सकता है:-

कारक	सोशल उद्यमी	पारम्परिक/वाणिज्यिक उद्यमी
लक्ष्य	सामाजिक समस्याओं को चिह्नित कर, उनके दीर्घकालिक समाधान करना	मांग (आवश्यकताओं) अर्थात अवसरों
प्रेरक शक्ति	सामाजिक मूल्यों का निर्माण करना एवं समाज में सकारात्मक बदलाव लाना	धन लाभ के अवसर निर्मित्त करके अपने लिए धन कमाना

प्रयोग में लाये जाने वाले संसाधन	स्थानीय संसाधनों, साधनों एवं कौशलों का उपयोग करके सामाजिक समस्याओं के निवारण के लिए नवाचार का प्रयोग	अपना व्यवसाय स्थापित करने के लिए सभी उपलब्ध संसाधनों एवं नवाचारों का उपयोग
प्रभाव	परिवर्तकारी एवं संरचनात्मक अग्रणी के रूप में	लेनदेन कर्त्ता के रूप में अग्रणी
सफलता का मापन	सामाजिक मूद्दों/मामलों में सुधार के प्रभाव के रूप में	वित्तीय सूचकों के रूप में
परिणाम	सामाजिक समस्याओं का दीर्घकालिक संपोषणीया (स्थायी) समाधान	ग्राहक संतुष्टि, ब्रांड, इमेज एवं लाभ

पाठगत प्रश्न 6.1

क. निम्नलिखित में सत्य अथवा असत्य बताएं:

1. सामाजिक (सोशल) उद्यमी लाभ के लिए कार्य करते हैं।
2. वाणिज्यिक उद्यमी लेनदेन युक्त क्रियाएं करते हैं।

ख. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

1. .... उद्यमी धन लाभ के अवसर निर्मित्त करके अपने लिए धन कमाते हैं
2. .... उद्यमी सामाजिक समस्याओं का दीर्घकालिक समाधान करते हैं

6.3 सामाजिक (सोशल) उद्यमिता के चरण

1. अपनी विशेषज्ञा एवं रूचि के अनुसार विभिन्न समस्याओं की ओर ध्यान केन्द्रित करके किसी एक का चयन करना।
2. मानवीय एवं अन्य साधनों, दोनों, के उपयोग से तकनीक एवं संसाधनों का उपयोग करके वैकल्पिक समाधान खोजना।
3. समस्या के निवारण के लिए यथासंभव अनेक विधियां खोजना।
4. सर्वाधिक प्रभावी समाधान का निर्धारण करना तथा संभाव्य व्यापार योजना के लिए उसे उपयोग में लाना।

सामाजिक (सोशल) उद्यमी स्थानीय संसाधनों, साधनों, तकनीक एवं कौशल का उपयोग करके सामाजिक समस्याओं के निवारण के उपाय तलाश करते हैं। वे सामाजिक हित के प्रसार के लिए समाज में अधिकतम बेहतरी लाने की प्रक्रियाएं करते हैं। अपनी सफलता को वे किए गए सुधारों के उस फैलाव से मापते हैं जो उन्होंने लोगों के जीवन में सफलतापूर्वक स्थापित किए हैं तथा वे कमाए गए लाभ से इसका मापन नहीं करते हैं।

6.4 सामाजिक समस्याओं के समाधान में नवाचारों की भूमिका

समाज के उत्थान के लिए आवश्यक सामाजिक समस्याओं का समाधान नवाचारों से किया जा सकता है। ऐसा इसलिए आवश्यक है क्योंकि ऐसा करने से सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए समाज की उत्प्रेरक क्षमता बढ़ती है। इससे एकसाथ मिलकर समस्याओं का समाधान करने के प्रभावी एवं टिकाऊ उपाय प्राप्त करते हैं। नए उत्पादों एवं सेवाओं का विकास करने में नई प्रौद्योगिकी का योगदान महत्त्वपूर्ण है जिसके कुशल उपयोग से समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। इस अध्याय में समाज की समस्याओं के बेहतर निवारण करने के कुछ जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं जिनसे यह समझा जा सकता है कि सामाजिक समस्याओं का समाधान कैसे संभव है और कैसे इन समस्याओं के समाधान से नव उद्यम व्यवसाय विचार निर्मित होते हैं।

6.5 कुछ कार्यक्षेत्रों के उद्यमियों के वास्तविक जीवन के उदाहरण

भारत अत्यधिक जनसंख्या वाला एक ऐसा विशाल देश है जिसकी आवश्यकताएं एवं अपेक्षाएं विविध प्रकार की हैं। यह एक ऐसा विकासशील देश है जिसके सम्मुख स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा, कृषि, पर्यावरण एवं अन्य अनेक क्षेत्रों की ढेरों समस्याएं व्याप्त हैं। भारत सरकार द्वारा अपनी नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से इन क्षेत्रों में सुधार लाने के उपाय किए जा रहे हैं परन्तु ये उपाय पर्याप्त नहीं हैं। इसमें सामाजिक उद्यमियों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि वे कुछ समस्याओं के सृजनात्मक समाधान प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्थिति के अनुरूप विकास करना एवं समाज के विकास के आड़े आने वाली विभिन्न सामाजिक समस्याओं के समाधान खोजना अत्यंत आवश्यक है। ऐसा करने से आर्थिक बेहतरी के साथ साथ समाज के वंचित वर्गों की सहायता भी की जा सकती है।

आपके लिए क्रियाकलाप

किन्हीं पाँच ऐसी समस्याओं को चिह्नित कीजिए जिनका सामना आप रोजमर्रा के जीवन में करते हैं। इनमें से किसी एक प्रमुख समस्या का चयन कीजिए। उस समस्या के संभावित समाधान तलाशिये और उसके समाधानों को क्रमवार लिखिए। अपने उत्तर को अपने दोस्तों के साथ सांझा कीजिए।

आगे दिये गये बिन्दुओं में एक अंतदृष्टि का वर्णन किया गया है जिससे यह ज्ञात होता है कि उद्यमियों द्वारा किस प्रकार सृजनात्मक समाधानों के उपयोग करके विभिन्न क्षेत्रों की कुछ समस्याओं का निवारण किया गया है। इसमें कृषि, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, स्वच्छता, परिवहन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं वस्त्र जैसे क्षेत्र शामिल किए गए हैं।

इस अध्याय में शामिल दृष्टांत अध्ययनों के अलावा अनेक अन्य ऐसे उदाहरण भी दिए गए हैं जिनका प्रभाव समाज पर हुआ है। इन दृष्टांत अध्ययनों का चयन मात्र विभिन्न क्षेत्रों के उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए किया गया है।

6.5.1 कृषि

ईकुटीर

के.सी. मिश्रा एक विख्यात अंवेषक एवं बंगलुरू में स्थापित ईकुटीर के संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। किसानों के लिए एक डिजीटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से ईकुटीर द्वारा एक वेबसाइट एवं एग्री सुइट के नाम से जानी जाने वाली एंड्रॉयड का सूत्रपात किया गया है जो किसानों का संपर्क मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं, बीजों एवं फर्टिलाइजरों की आपूर्ति करने वाले आपूर्तिकर्ताओं, बैंकों, निर्यातकों, ब्रांड वाले खुदरा व्यापारियों, बीमा कम्पनियों, माइक्रो फाइनेंस संस्थानों एवं खाद्य प्रसंस्करण इकाईयों के साथ करवाती है। इसके लिए उनके सम्मुख मुख्य समस्या ग्रामीण भारत की खराब इंटरनेट क्नेक्टिविटी के बावजूद ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कृषक हितेषी सेवा प्रदान करने का था।

छोटे उद्यमियों के प्रशिक्षित कर्मियों के विकेन्द्रीतकृत नेटवर्क के माध्यम से ईकुटीर द्वारा शोषित एवं विखंडित कृषि व्यवस्था का कायाकल्प एक ''सहयोगी एवं खेत से बिक्री'' मॉडल के रूप में किया गया। वे ग्राम पंचायत स्तर पर एप्प के उपयोग से किसानों को सहायता प्रदान करते हैं। वे किसान का जोखिम प्रोफाइल तैयार करने से लेकर मृदा परीक्षण, फसल नियोजन, बीजों तथा उर्वरकों की गुणवत्ता एवं मात्रा के चयन और आखिर में उत्पाद को बेचने में सहायता प्रदान करते हैं।

ईकुटीर द्वारा किसानों को टिकाऊ भूमि प्रबंधन, मृदा विश्लेषण, फसल सलाह पोषण तत्त्व प्रबंधन, फसल को बीमारियों से बचाने, आर्गेनिक खेती को प्रोत्साहित करने एवं सटीक कृषि से संबंधित आँकडे एवं सूचना प्रदान की जाती है जिससे एक अधिक टिकाऊ मॉडल का निर्माण संभव हो पाता है। इस प्लेटफॉर्म में छोटे किसानों को भुगतान करने एवं प्राप्त करने (लेनदेन) ऋण सुविधा एवं सरकार की लक्ष्यबद्ध अनुदानों को सीधे किसान तक पहुंचाने की सुविधा भी है।

वर्ष 2019 तक इस एप्प से भारत में 60,000, कम्बोडिया में 12,000 तथा नेपाल एवं बांग्लादेश में अनेक किसानों के जीवन प्रभावित हुए हैं एवं असंख्य सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना हो पाई है। इससे किसानों की आय में 60 प्रतिशत तक बढ़त हो पाई है, उपज लागत में 20 प्रतिशत की बचत तथा फसल के उत्पादन में 120 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

6.5.2 स्वास्थ्य सेवा

जयपुर फुट

जयपुट फुट, भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बीएमवीएसएस) की स्थापना मार्च, 1975 में श्री डी.आर. मेहता द्वारा की गई थी। मेहता जी एक गंभीर सड़क दुर्घटना के शिकार हुए थे जिससे उनके पैर में संदलन क्षति (क्रश इंजरी) हुई थी। डाक्टरों ने उन्हें पैर काटने का परामर्श दिया था जिससे उनका जीवन एवं अंगों को बचाया जा सका। इस दुर्घटना के कारण

टिप्पणी

मेहता जी को उठी समस्याओं का अहसास हुआ जिनका सामना विकलांग, विशेषत: वंचित वर्ग करते हैं। पांच माह तक इस पीड़ा का अनुभव करने से उनके मन में भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बीएमवीएसएस), जयपुर फुट संगठन की स्थापना का विचार उत्पन्न हुआ। जिससे गरीबों के पुनर्सुधार की ओर विशेष ध्यान देकर उन्हें कृत्रिम अंग प्रदान करने के उद्देश्य से अंतत: उन्होंने भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बीएमवीएसएस) की स्थापना करने का लक्ष्य ठान लिया था।

वर्ष 1968 में इसकी स्थापना के सात वर्ष पश्चात तक कठिनाई से 50 अंग ही लगाए जा सके थे। अब इनके द्वारा प्रतिवर्ष 16,000 से भी अधिक कृत्रिम अंग लगाए जाते हैं।

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बीएमवीएसएस) का मुख्यालय जयपुर में है तथा सम्पूर्ण भारत में 23 शाखाओं के अलावा इसे अंतर्राष्ट्रीय कवरेज प्राप्त है। इसके दो सहयोगी केन्द्र पाकिस्तान में, तीन फिलिपिन्स में हैं तथा कम्बोडिया में एक संयुक्त उद्यम कम्पनी है। इसके द्वारा 26 देशों में 50 से भी अधिक फिटमेंट कैम्प आयोजित किए जा चुके हैं तथा एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में स्वतंत्र कृत्रिम अंग फिटमेंट केन्द्र स्थापित करने में सहायता प्रदान की गई है।

अब जयपुर फुट, भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बीएमवीएसएस) विश्व में एक ऐसा सबसे बड़ा संगठन है जो 1.78 मिलियन विकलांगों को पुनर्सुधार सेवाएं प्रदान कर रहा है। इनके द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं के अंतर्गत रबड़-आधारित कृत्रिम पैर, कृत्रिम अंग, कैलिपर्स एवं अन्य सेवाएं तथा उपकरण मुफ्त प्रदान किए जाते हैं। कृत्रिम पैर का निर्माण पालियूरेथिन से किया जाता है जो लम्बे काल तक उपयोग में लाई जा सकती है तथा इसका उपयोग सरल है। इसकी यथोचित कीमत है, यह वाटरप्रूफ है, आसानी से फिट हो जाता है एवं इसका आसानी से निर्माण संभव है।

विकलांगों को विभिन्न सेवाएं प्रदान करने के अलावा भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बीएमवीएसएस) द्वारा अनुसंधान एवं विकास की ओर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है। इनके द्वारा स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, यूएसए; मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट औफ टैक्नालॉजी (एमआईटी), यूएसए; भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन एवं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), जोधपुर, मणिपाल यूनिवर्सिटी, जयुपर, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के साथ अनुसंधान एवं विकास के लिए सहभागिता की गई है। अनेक निजी कम्पनियों के साथ अनुसंधान के लिए अनुबंध करने के अलावा भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बीएमवीएसएस) को विभिन्न निगमों (कारपोरेट्स) से निधि सहायता भी प्राप्त हुई है।

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति एवं स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के स्टैनफोर्ड-बीएमवीएसएस जयपुर घुटना उत्पाद को टाइम्स मैगजिन यूएसए (23 नवंबर, 2009 अंक) में वर्ष 2009 में विश्व का 50वां सबसे उत्तम आविष्कार माना गया था। भगवान महावीर विकलांग सहायता

समिति को इनके द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सेवाओं के प्रति संयुक्त राष्ट्र संगठन की आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् द्वारा विशेष सलाहकार का दर्जा भी दिया गया है। भारत सरकार द्वारा भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति को अपनी सेवाएं जारी रखने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

पाठगत प्रश्न 6.2

सही विकल्प का चयन कीजिए:

1. जयपुर फुट द्वारा क्या सेवाएं दी जाती हैं:

   (क) कृत्रिम पैर

   (ख) कृत्रिम अंग

   (ग) कैलिपर्स

   (घ) उपर्युक्त सभी

2. ईकुटीर द्वारा किनके लिए प्लेटफॉर्म निर्मित्त किया गया है:

   (क) किसानों के लिए

   (ख) महिला बुनकरों के लिए

   (ग) रेहड़ी वालों के लिए

   (घ) गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के लिए

6.5.3 शिक्षा

एकल विद्यालय

एकल सामाजिक उन्नति के स्वप्न देखने वाले उन लोगों की कहानी है जिन्होंने देश के विभिन्न भागों से एकजुट होकर हाथ मिलाया है और ये वे लोग हैं जो विश्वास करते हैं कि स्थानिय समुदायों की सक्रिय भागीदारी से है परिवर्तन लाया जा सकता है तथा देश के दूरदराज के क्षेत्रों में ऐसे परिवर्तन शिक्षा के माध्यम से ही लाया जा सकता है।

EKAL VIDYALAYA
A PEOPLE'S MOVEMENT

राकेश कुमार पोपली (एक भारतीय परमाणु भौतिक वैज्ञानिक), आईआईटी से रजनीश अरोड़ा, महेश शर्मा तथा बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय से श्री अशोक भगत ने वर्ष 1983 में गुमला जिले (जो अब झारखंड में है) के बिशनपुर की यात्रा की थी तथा वहां उन्होंने जनजातिय क्षेत्र का विश्लेषण करने के लिए एक अध्ययन किया था। उनके अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ था कि शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिंक एवं आर्थिक असमानता जैसे कुछ ऐसे मामले हैं जो गहन चिंता

का कारण हैं। राकेश पोपली ने रजनीश अरोड़ा के साथ मिलकर इस क्षेत्र की शिक्षा आवश्यकताओं पर काम करना शुरू कर दिया और अंततः उन्हें स्थानीय समुदायों एवं बच्चों को पढ़ाने की एक अनौपचारिक विधि का निर्माण करने में सफलता मिल गई। इस एकल अध्यापक विद्यालय की स्थापना की नींव स्थापित हुई।

दूसरी तरफ वर्ष 1985 में एक सामाजिक कार्यकर्ता श्री श्याम जी गुप्ता द्वारा उड़ीसा के फुलवणी जिले के स्थानीय समुदायों में साक्षरता का सुनिश्चय करने के लिए **रात्रि विद्यालय** की अवधारणा के अंतर्गत प्रयास किए गए थे। गांवों में 400 रात्रि विद्यालयों की स्थापना की गई थी जिसमें बच्चों के साथ-साथ बड़ों ने भी भाग लेना प्रारंभ कर दिया था। वनयात्रा नामक इस मिशन के अंतर्गत श्री श्याम जी गुप्ता ने कोलकाता के कुछ प्रभावशाली परिवारों को समूहों में फुलबणी जिले की यात्रा के लिए प्रेरित किया था जिससे इनमें इन जनजातिय समुदायों के निवासियों द्वारा अनुभव की जा रही चुनौतियों के प्रति जागृति उत्पन्न की जा सके। यह मिशन बाद में ''फ्रेंड्स ऑफ ट्राइबल सोसायटी'' में विलयित हो गया था। श्याम जी गुप्ता का 'एकल विद्यालय मॉडल' का स्वप्न तब साकार हुआ जब उन्होंने शिक्षा के अपने इस अनौपचारिक मॉडल को निःस्वार्थ वैश्विक क्रियाओं के साथ जोड़ दिया जो आज एकल अभियान के नाम से जाना जाता है। एकल विद्यालयों का नियंत्रण एवं प्रबंधन ग्राम समितियों द्वारा किया जाता है।

एकल अध्यापक विद्यालय की अवधारणा झारखंड के गुमला जिले तथा उड़ीसा के रात्रि विद्यालयों में प्रदान की जा रही शिक्षा के अनुभवों से उत्पन्न हुई थी। इस अवधारणा की औपचारिक संकल्पना जून 1986 में गुमला में आयोजित एक सेमिनार में की गई थी जो जनजातीय ग्रामों के लिए साक्षरता के उपाय खोजने के लिए आयोजित किया गया था।

शिक्षा के अलावा **एकल के सर्वांगीण विकास के मॉडल** में ग्रामीण स्वास्थ्य, आर्थिक विकास, जीवनयापन एवं समृद्ध भारतीय परम्पराओं के संरक्षण पर भी बल दिया गया है। इन विद्यालयों में 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को मुफ्त, अनौपचारिक शिक्षा प्रदान की जाती है तथा ये रविवार के अलावा प्रतिदिन लगभग 3 घंटे खुलते हैं।

एकल के पांच परत वाले शिक्षा मॉडल में-बुनियादी शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल शिक्षा, सशक्तीकरण शिक्षा, विकास शिक्षा एवं आचार तथा मूल्य शिक्षा शामिल है जो ग्रामीण बच्चों में कार्यात्मक साक्षरता के मूल लक्ष्य के सुनिश्चय के लिए कार्य करती है। एकल विद्यालयों में राष्ट्रीय महत्व के मामलों के प्रति जागरूकता अभियान भी आयोजित किए जाते हैं जिसमें ग्रामीण समुदाय सूचना अधिकार अधिनियम (आरटीआई), वृक्षारोपण, बैंक खाते, स्वच्छता इत्यादि से संबंधित सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर पाते हैं।

ये विद्यालय सामान्यतः किसी चौपाल अथवा ग्राम के किसी प्रांगण अथवा अध्यापक के घर से संचालित होते हैं। महिला आचार्य (अध्यापक) को वरीयता दी जाती है जो खेल, गीत एवं नृत्य के माध्यम से सीखने को सुगम बनाती है। पाठ्यक्रम में पठन, लेखन, गणित, सामान्य ज्ञान, आधारभूत विज्ञान, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागृति, नैतिक शिक्षा, स्थानीय खेल एवं शिल्पकला आदि शामिल होते हैं।

अनेक कठिनाईयों एवं संसाधनों की कमी के बावजूद एकल विद्यालय के अंतर्गत किए गए प्रयासों से देश के सुदूर क्षेत्रों में लगभग एक लाख एकल विद्यालयों की स्थापना का मार्गप्रशस्त किया जा चुका है जिससे ग्रामीण साक्षरता, जागरूकता, स्वास्थ्य, सुरक्षा, आत्मनिर्भरता एवं साथ ही एकता की स्थापना हुई है।

6.5.4 स्वच्छता

सुलभ इंटरनेशनल

वर्ष 1973 में डॉ. बिंदेश्वर पाठक द्वारा समाज सेवी संगठन के रूप में सुलभ इंटरनेशनल की स्थापना की गई थी जो शिक्षा के माध्यम से मानव अधिकारों, पर्यावरणीय स्वच्छता, गैरपारम्परिक ऊर्जा स्रोतों, अपशिष्ट प्रबंधन एवं समाज सुधार के कार्यों को बढ़ावा देता है। डॉ. पाठक ने बिहार में एक रूढ़ीवादी परिवार में जन्म लिया था। जब वे बालक थे तब अनजाने में वे एक ऐसे समुदाय के व्यक्ति के सम्पर्क में आ गए थे जो शौचालयों की सफाई करता था। उनकी इस हरकत के लिए उनकी दादी ने न केवल उन्हें डांटा अपितु उन्हें गाय का गोबर खाने, गाय के मूत्र का सेवन करने पर भी बाध्य किया था और बाद में उनकी शुद्धि के लिए उन पर गंगा जल अर्थात् जल छिड़का था। इस घटना ने उनके बालक मन पर गहरी छाप छोड़ दी थी। वे इस प्रश्न का उत्तर करना चाहते थे कि क्यों किसी समुदाय के साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है जबकि उनकी देह एवं रक्त अन्यों के समान ही है। इस विचार से उन्होंने उनके लिए कुछ करने का फैसला लिया।

बड़े होने पर डॉ. पाठक ने हाथ से मैला ढोने के अमानवीय प्रथा का अध्ययन किया और इसके लिए कम लागत वाली शौचालय तकनीक के रूप में एक समाधान उपलब्ध करवाया। उनकी यही तकनीक अब सुलभ शौचालय व्यवस्था के नाम से लोकप्रिय है। अप्रैल, 2019 तक सुलभ शौचालय के अंतर्गत देश में 7,500 जन शौचालय स्थापित किए जा चुके हैं जिनका उपयोग प्रतिदिन 10 मिलियन से अधिक व्यक्ति करते हैं। डॉ. पाठक के अनुसार ''किसी को भी शौच के लिए बाहर नहीं जाना चाहिए तथा भारत के प्रत्येक घर में एक शौचालय अवश्य होना चाहिए''।

सुलभ शौचालयों से प्रतिवर्ष लगभग 500 करोड़ रुपए की उत्पत्ति होती है, सुलभ इंटरनेशनल 50,000 कर्मचारियों की सहायता से लगभग 8,500 जन शौचालयों की देखरेख कर रहा है। लगभग 10 लाख से अधिक हाथ से मैला ढोने वाले लोग सुलभ शौचालयों की मुख्य धारा से जुड़ चुके हैं तथा उनके बच्चों को अब बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए शिक्षा उपलब्ध हो पा रही है।

सुलभ शौचालयों को फर्मेन्टेशन (खमीरीकरण) संयंत्रों से जोड़कर बॉयोगैस के उत्पादन की एक अभिनव विधि का उपयोग भी किया जा रहा रहे हैं जिसकी संरचना उन्होंने स्वयं तीन दशक पूर्व की थी। उनकी संकल्पना सम्पूर्ण विश्व के विकासशील देशों में अब स्वच्छता का

पर्याय बन गई है। डॉ. पाठक की परियोजना का एक महत्त्वपूर्ण आकर्षण इस तथ्य में है कि गंध मुक्त बॉयो-गैस की उत्पत्ति के अलावा इस से स्वच्छ जल भी प्राप्त होता है जो प्रचुर फास्फोरस एवं अन्य ऐसे अवयवों से युक्त होता है जो जैविक खेती में खाद के रूप में अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उनका स्वच्छता आंदोलन साफ-सफाई को सुनिश्चित करता है और ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन को भी रोकता है।

उन्होंने जैव-ऊर्जा एवं जैव उर्वरक, द्रव्य एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, गरीबी उन्मूलन तथा हाथ से मैला ढोने की प्रक्रिया से मुक्त हुए कर्मियों के एकीकृत पुनर्वास कार्यक्रम जैसे कार्यों में भी अपना योगदान दिया है।

वर्ष 1996 में डा. पाठक द्वारा निर्मित तकनीक को इस्ताम्बुल में आयोजित हैबिटैट-।। सम्मेलन में **वैश्विक नगरीय उत्तम व्यवहार** घोषित किया गया था। संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक एवं सामाजिक परिषद ने सुलभ द्वारा प्रदान की गई सेवाओं मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से विशेष परामर्शी स्तर प्रदान किया है।

पद्मभूषण प्राप्त डा. पाठक को विश्व पर्यावरण दिवस, 2013 के अवसर पर पेरिस में आयोजित फ्रेंचसैनेट से **लिजेंड ऑफ प्लेनेट अवार्ड** जैसे अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गये हैं। यूएनडीपी की मानव विकास रिपोर्ट, 2013 में विश्व के 2.6 बिलियन लोगों के लिए सुलभ तकनीक को अपनाने, विशेषकर विकासशील देशों में जहां घरों में स्वच्छ शौचालयों की व्यवस्था नहीं है, की अनुशंसा की गई है। इस तकनीक का उपयोग अफगानिस्तान, नेपाल, दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका एवं लेटिन अमेरिका में किया जा रहा है।

पाठगत प्रश्न 6.3

क. यह बताईये कि नीचे प्रस्तुत तथ्य सही हैं अथवा गलत:-

1. एकल पाठ्यक्रम में विज्ञान एवं प्रौद्योगिक भी शामिल है।
2. सुलभ शौचालयों को फर्मेंटेशन संयंत्रों से जोड़कर बॉयोगैस की उत्पति का अभिनव विचार अभिनव विचार डी. आर. मेहता ने प्रस्तुत किया था।
3. सुलभ स्वच्छता की प्रक्रियाओं से साफ-सफाई का सुनिश्चय हो पाता है एवं ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को रोकता है।

ख. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

1. शिक्षा का एक अनौपचारिक मॉडल है।
2. डा. बिंदेश्वरपाठक की तकनीक को अब .... के नाम से जाना जाता है।

6.5.5 ऑटोमोबाइल ओला टैक्सी

भारत के अत्यधिक लोकप्रिय टैक्सी (कैब्स) समूह ओला टैक्सी (कैब्स) के संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी भावेश अग्रवाल ने आनलाइन ओला कैब्स (टैक्सी) की स्थापना

मुम्बई में की थी तथा अब वे भारत की सिलीकॉन वैली अर्थात बंगलौर में निवास कर रहे हैं। यह समूह अब यूनाइटेड़ किंगडम, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में भी अपना परिचालन कर रहा है।

वर्ष 2008 में आईआईटी-बी से स्नातक डिग्री प्राप्त करने के पश्चात माइक्रोसॉफ्ट रिसर्च इंडिया में सेवा से शुरूआत की थी। सेवा के दौरान वे बंगलौर से बांदीपुर के लिए अक्सर किराए पर कार मंगवाया करते थे। अनेक बार ऐसा होता था कि घर लौटते समय कार का ड्राइवर उन्हें रास्ते में ही उतार देने की धमकी के साथ रास्ते में ही कार रोक कर टैक्सी के किराए की सौदेबाजी करता था।

उनके उद्यमी मस्तिष्क ने सर्वसाधारण की समस्या के निवारण के उद्देश्य से इसका कोई समाधान खोजने का निश्चय किया। इस समस्या का सामना स्वयं करने के अलावा उन्होंने आगे इसके बारे में खोज भी की थी, जिससे उन्हें यह ज्ञात हुआ कि यह वास्तव में एक बड़ी समस्या है तथा अनेक यात्री ड्राइवरों के ऐसे झांसों के शिकार हुए हैं तथा इस समस्या के निवारण के लिए एक बेहतरीन गुणवत्ता वाली टैक्सी (कैब) सेवा होनी आवश्यक है। उनके माता पिता, जो इसे एक ''ट्रैवल एजेंट'' व्यवसाय मानते थे, के विरोध के बावजूद भी भावेश को कैब बुकिंग सेवा प्रारंभ करने में अनेक संभावनाएं दिखाई दे रही थी तथा इसी विचार से उन्होंने ''ओलाकैब्स'' (ओला टैक्सी) की स्थापना करने की ठान ली। एएनआई टैक्नोलॉजी के स्वामित्व वाली ओला भावेश अग्रवाल एवं अंकित भट्टी के सामूहिक प्रयासों से स्थापित हुई है। उनके द्वारा निर्मित एक सरल तकनीक से स्मार्टफोन का उपयोग करके कैब के स्वामियों का सम्पर्क यात्रियों से किया जा सकता है।

वे ''शून्य'' इन्वेंटरी अर्थात अपनी स्वयं की गाड़ियां न खरीदने के मॉडल को अपनाना चाहते थे और ऐसा वे करते भी रहे। ओला ने कभी भी अपनी कोई कार नहीं खरीदी है जबकि वे कार किराए पर देते हैं। ओला ने विभिन्न टैक्सी ड्राइवरों की एक श्रृंखला के साथ उनकी सेवाओं के लिए साझेदारी की है। ड्राइवरों को इंटीग्रेशन डिवाइस मुफ्त देने के अलावा उन्होंने प्रतिदिन एक ट्रिप पूरा करने की शर्त के साथ उन्हें किसी वेतन के बिना 5000 रुपए प्रतिदिन + टिप आदि से आकर्षित किया। ड्राइवर ओला से जुड़ने के लिए उत्साहित थे। इस प्रकार जब उनका उद्देश्य पूरा हो गया तो भुगतान की राशि आधी अर्थात 2500 रुपए प्रतिदिन और बाद में 750 रुपए प्रतिदिन कर दी गई थी जो टिप+वेतन के साथ यह शर्त थी कि कम से कम 10 ट्रिप कवर करने पर ही उन्हें प्राप्त हो सकेगा।

वर्ष 2014 तक 100 नगरों में 2,00,000 कारें जुड़ जाने से कंपनी का नेटवर्क अत्यंत विशाल हो गया थी और प्रतिदिन लगभग 1,50,000 बुकिंग की औसत से इसका भारत में बाजार हिस्सेदारी 60 प्रतिशत हो गयी थी। ओला ने अपने निवेशकों से 1 बिलियन से भी अधिक की उत्पत्ति की थी जिस का मूल्य आज 3.5 बिलियन डॉलर है। सब से सस्ती वातानुकूलित टैक्सी सेवा प्रदान करने का ओला का व्यवसाय आज भी जारी है।

6.5.6 सूचना प्रौद्योगिकी

इंफोसिस

इंफोसिस के संस्थापक एन. आर. नारायण मूर्ति को अक्सर भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी का जनक कहा जाता है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर से वर्ष 1969 में एम. टैक की डिग्री करने के पश्चात उन्होंने अनेक संगठनों में सेवा की है। वर्ष 1981 में मूर्ति द्वारा अपने पांच मित्रों, जो उन की तरह ही सॉफ्टवेयर व्यावसायिक थे, के साथ मिलकर इंफोसिस की स्थापना की थी। इंफोसिस आज प्रौद्योगिकी सेवाएं प्रदान करने वाली विश्व की अग्रणी कम्पनी है जो प्रारंभ से अंत तक सॉफ्टवेयर के उपयोग काल के दौरान पूर्णतः उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ अपने ग्राहकों को व्यावसायिक समाधान प्रदान करती है।

इंफोसिस द्वारा भारत से सूचना प्रौद्योगिकी की सेवाओं के निपुण वैश्विक डिजाइन मॉडल (जीडीएम) की अगुवाई की गई थी जिसने सूचना प्रौद्योगिकी के उद्योग में उपयोग में लाए जाने वाले पारम्परिक व्यवसाय का स्वरूप ही बदल दिया। इससे आउटसोर्सिंग का परिवर्तनवाद स्थापित हुआ जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था में बिलियन डालरों की प्राप्ति हुई और देश का कायाकल्प विश्व के एक ''बैक ऑफिस'' के रूप में हो गया। ग्लोबल डिजाइन मॉडल विश्वभर में आउटसोर्सिंग का एक मॉडल बन गया है जिसने वैश्विक परियोजना प्रबंधन के विज्ञान के निर्माण एवं महारत प्राप्ति में सहायता प्राप्त हो सकी है।

ग्लोबल डिजाइन मॉडल में विधिवत परिभाषित प्रक्रियात्मक दिशा निर्देश हैं जिसमें सूचना प्रवाह एवं दूरसंचार के महत्व पर बल दिया गया है। यह विभिन्न व्यवसाय समस्याओं एवं प्रमुख कौशल अंतरों में व्याप्त भिन्नताओं की पूर्ति करता है। ग्राहक को पारम्परिक डिलीवरी मॉडलों की तुलना में न्यून जोखिम के साथ इस मॉडल की सुदृढ़ता अवसरंचना एवं गुणवत्ता के मिश्रण से की गई है। इसका सिद्धांत कार्य का सम्पादन उत्तम स्वरूप में किए जाने पर आधारित है। इंफोसिस विश्वभर में अपने ग्राहकों को सेवाएं प्रदान कर रहा है तथा वर्तमान में यह 45 देशों में सेवाएं दे रहा है।

नारायण मूर्ति को भारत का सर्वाधिक सम्मानित पुरस्कार पद्म विभूषण (2008) तथा पद्मश्री (2000) प्रदान किया गया है। उनके अनुसार सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता एवं नीतिपरक अखंड़ता ही दीर्घ कालिक सफलता के प्रमाण चिह्न हैं एवं इंफोसिस में इसी आधारभूत विचारधारा के साथ कार्य करता है। इंफोसिस द्वारा सुशासन, निगमित संचालन एवं नीतिपरकता के नए मानक भी निर्धारित किए हैं।

6.5.7 वस्त्र

खादी इंडिया

स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत पश्चात भारत सरकार द्वारा भारतीय खादी एवं ग्रामोद्योग उद्योग बोर्ड की स्थापना की गई थी जो बाद में वर्ष 1957 में खादी ग्रामोद्योग (केवीआईसी) बन गया था। तब से खादी ग्रामोद्योग आयोग भारत में खादी उद्योग के विकास की दिशा में कार्यरत है।

Khadi INDIA

90 के दशक के प्रारंभ में ज्यों-ज्यों हम औद्योगिक फैशन को अपनाते जा रहे थे त्यों त्यों भारत का सिग्नेचर-फैब्रिक, खादी फैशन अभिव्यक्ति के रूप में भी अपनाने जाने लगा था। वर्ष 1989 में खादी ग्रामोद्योग द्वारा बम्बई में पहले खादी फैशन शो का आयोजन किया गया था जिसमें खादी के 80 से भी अधिक डिजाइन प्रस्तुत किए गए थे। वर्ष 1990 में रितु बेरी ने अपना सर्वप्रथम खादी संग्रह (क्लेक्शन) दिल्ली क्राफ्ट म्युज्यिम में आयोजित अपने विख्यात **''ट्री आफ लाइफ''** शो में प्रस्तुत किया था। बेरी, अब खादी ग्रामोद्योग की परामर्शदाता हैं तथा वे खादी को विश्व के नक्शे पर जगह दिलवाने के प्रयास कर रही हैं।

21वीं सदी के प्रारंभ के साथ साथ सब्यसाची, वेन्डेल रोड्रिक्स, राजेश प्रताप सिंह एवं अन्य विख्यात भारतीय डिजाइनरों ने मजबूत बनावट एवं सुविधा की अनुभूति देने वाले पर्यावरण अनुकूल (ईको फ्रेन्डली) वस्त्र के उपयोग से जुड़े प्रयोग किए और इसका उपयोग उच्च-फैशन परिधान के लिए करने के लक्ष्य के साथ इसमें निवेश करने की होड़ में वे भी शामिल हो गए।

आजादी का तानाबाना खादी की बिक्री, विशेषत 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'आर्थिक कायाकल्प के लिए खादी' का आह्वाहन करने के पश्चात से प्रतिवर्ष बढ़ रही है। कुल बिक्री, जो 2004 से 2013 के दौरान 914 करोड़ रुपए हुआ करती थी, बढ़कर 2014 में 1,081 करोड़ रुपए, 2017-18 में 2,510 करोड़ रुपए और वित्तीय वर्ष 2019 में सर्वाधिक उच्चतर 3,200 करोड़ रुपए हो गई थी।

वर्ष 2015 के पश्चात 375 नए खादी संस्थान स्थापित करने के पश्चात से खादी ग्रामोद्योग का औसत निर्यात 2004 से 2014 के 10 वर्ष के काल में 87.77 करोड़ रुपए से बढ़कर 133.28 प्रतिशत की विशाल बढ़ोतरी के साथ 2015-18 में 2014.75 करोड़ रुपए हो गया था। खादी ग्रामोद्योग के अपने कुल 18 बिक्री आउट लेट होने के अलावा राज्यों में स्थापित 8,062 खादी संस्थानों का स्वामित्व उनके पास है।

रेमण्ड जैसी कम्पनियों ने इससे 7.26 लाख मीटर ग्रे खादी वस्त्र को मंगाया है जबकि अरविन्द मिल्स ने अपने ब्रांड नाम से वस्त्र निर्माण करने एवं उनकी बिक्री के लिए लगभग एक मिलियन वर्ग मीटर खादी डेनिम की खरीद खादी संस्थानों से की है। खादी ग्रामोद्योग द्वारा कॉरपोरेट उपहार कूपन में संभावनाओं की खोज करके ओएनजीसी से 46 करोड़ रुपए, इंडियन

ऑयल कारपोरेशन से 43 करोड़ रुपये तथा ऑयल इंडिया के साथ 11 करोड़ रुपए का किया है और साथ ही सार्वजनिक क्षेत्र के अनेक उपक्रमों के साथ उनके कर्मचारियों के लिए एक निर्धारित अवधि में खादी खरीदारी के लिए उपयोग किए जाने वाले उपहार कूपन जारी करने से संबंधित व्यवस्था की गई है। मिलकर प्रयास करके राज्यों में 83,000 डॉकियों (पोस्टमैन) को खादी की वर्दी दिए जाने की व्यवस्था भी डाक विभाग के साथ की गई है।

पाठगत प्रश्न 6.4

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :-

1. .... ने यूनाइटेड किंगडम, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में अब अपने परिचालन प्रारंभ कर दिए हैं।
2. .... भारत में खादी उद्योग के विकास के लिए कार्यरत है।
3. .... विश्व में एक विख्यात प्रौद्योगिकी सेवा कम्पनी है।

6.6 निष्कर्ष

इन मामला अध्ययनों में इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि उद्यमी किस प्रकार कड़ी मेहनत करके अनेक लोगों के जीवन में सुधार लाते हैं। वे समस्याओं को मात्र निष्चेष्ट देखने के स्थान पर कार्रवाई करने में विश्वास रखते हैं। इस प्रकार वे दुनिया को बेहतर बनाते हैं।

आपने क्या सीखा

- सामाजिक (सोशल) उद्यमी मात्र धनार्जन के लिए कार्य नहीं करता है अपितु वह समाज में बदलाव लाता है तथा ऐसा कर के वह समाज के जीवन मानकों में सुधार लाने की प्रक्रियाएं करता है।
- सामाजिक (सोशल) उद्यमी में कुछ विशेष विशिष्टताएं होती हैं। वे महत्वाकांक्षी, नवोन्मेषी, युक्ति कुशल एवं उत्तरदायी होते हैं। वे सामाजिक मूल्यों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करके सामाजिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं।
- सामाजिक (सोशल) उद्यमी लाभ को अपना लक्ष्य बनाने के स्थान पर सामाजिक बदलाव एवं उत्थान को अपना लक्ष्य बनाते हैं जबकि पारम्परिक उद्यमी धन लाभ करके अपनी संपत्ति में संवर्धन करते हैं।
- सामाजिक (सोशल) उद्यमी विभिन्न समस्याओं की ओर ध्यान देकर उनमें से किसी एक का निर्धारण करता है। वह उनके वैकल्पिक समाधान की तकनीक एवं युक्ति तथा समस्या के समाधान खोज कर अत्यधिक प्रभावी समाधान के उपयोग से व्यवहार्य व्यवसाय योजना का निर्माण करता है।

- उद्यमियों ने सृजनात्मक समाधानों के उपयोग से समाज द्वारा अनुभव की जा रही अनेक समस्याओं का समाधान किया है। इन समस्याओं में खाद्य, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, स्वच्छता, परिवहन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं वस्त्र से संबंधित समस्याएं शामिल हैं।

पाठांत प्रश्न

1. सामाजिक (सोशल) उद्यमी की परिभाषा लिखिए एवं उनकी विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
2. सामाजिक (सोशल) उद्यमी किस प्रकार वाणिज्यिक उद्यमियों से भिन्न होते हैं?
3. ऐसे दो उद्यमियों के नाम लिखें जो सामाजिक उद्देश्यों के लिए कार्य कर रहे हैं उनके नाम लिखने के कारण बताएं तथा व्याख्या करें कि वे किस प्रकार लोगों के जीवन में सुधार ला पाये हैं।
4. किसी एक उद्यमी के नाम सहित किसी क्षेत्र में उसके योगदान का उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

क. 1. असत्य

2. सत्य

ख. 1. वाणिज्यिक

2. सामाजिक (सोशल)

6.2

1. क) उपर्युक्त सभी
2. क) किसान

6.3

(क) 1. असत्य 2. असत्य 3. सत्य

(ख) 1. एकल विद्यालय 2. सुलभ शौचालय व्यवस्था

6.4

1. 1. ओला (टैक्सी)
   2. खादी ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी)
   3. इंफोसिस

आपके लिए क्रियाकलाप

1. अब आप को यह ज्ञान हो गया है कि जीवन की वास्तविक समस्याओं का समाधान विभिन्न उद्यमी किस प्रकार करते हैं। अपने आसपास के क्षेत्र में कम से कम किसी एक समस्या की ओर ध्यान केन्द्रित करके यह सुझाव दें कि आप उसका समाधान किस प्रकार कर सकते हैं। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिये और यह ज्ञात कीजिये कि क्या उनके पास समस्या का कोई बेहतर समाधान है।

2. समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों में से उद्यमियों के नवोन्मेषों से संबंधित समाचार एकत्र करके उनकी प्रस्तुति कीजिए।

अवधारणा नक्शे

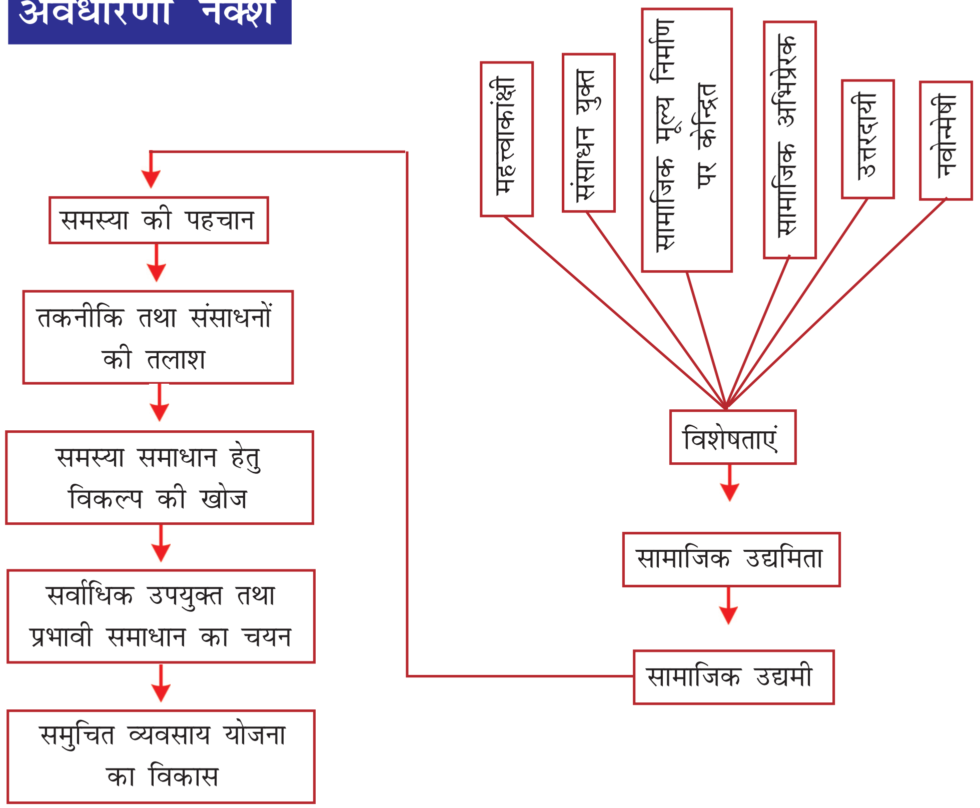

मॉड्यूल 3

उद्यमिता उत्प्रेरणा

अधिकतम अंक : 18 **अध्ययन घंटे : 45**

उद्यमिता उत्प्रेरणा में विभिन्न ऐसे कारक शामिल हैं जो उद्यमिता की ऐसी आंकाक्षाओं एवं क्रियाकलापों को प्रेरित करते हैं जिससे वे किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं। इस माड्यूल में उद्यमिता मूल्यों, दृष्टिकोण, उत्प्रेरणा एवं नैतिकता पर ध्यान केंद्रीत किया गया है। उत्प्रेरणा की विभिन्न अवधारणाओं का उल्लेख सफल उद्यमियों के मामला अध्ययनों (केस स्टडी) के साथ किया गया है।

अध्याय 7 उद्यमिता : मूल्य तथा दृष्टिकोण

अध्याय 8 उपलब्धि उत्प्रेरण

अध्याय 9 सफल उद्यमी

7

उद्यमिता : मूल्य तथा दृष्टिकोण

पिछले अध्याय में आपने सामाजिक समस्याओं के समाधान में नवाचारों की भूमिका का अध्ययन किया है तथा यह ज्ञात किया है कि हम किस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों की जीवंत स्थितियों का विवेचन कर सकते हैं। उद्यमियों को अपने स्वप्नों को साकार करने की प्रेरणा बाजार में उपलब्ध अपार संभावनाओं से प्राप्त होती है। उद्यमियों के दृष्टिकोण से ही उनके व्यवहार को आकार प्राप्त होता है। किसी उद्यमी के लिए अपने व्यावसायिक क्रियाकलापों के संपादन एवं मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं का सामना करने के प्रति अत्यधिक उत्प्रेरित होना आवश्यक है। संक्षेप में कह सकते हैं यह कि उद्यमी को नैतिक मूल्यों का अनुसरण अवश्य करना चाहिए। इस अध्याय में हम उद्यमिता उत्प्रेरण, मूल्यों एवं आचार नीति का अध्ययन करेंगे।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- उद्यमिता मूल्यों एवं दृष्टिकोणों की व्याख्या करते हैं;
- उत्प्रेरणा की आवश्यकता की व्याख्या करते हैं; तथा
- व्यापार में नैतिक मूल्यों का वर्णन करते हैं।

7.1 मूल्यों की अवधारणा

मूल्य वस्तुतः मूलभूत मान्यताएं अथवा आस्थाएं होती हैं जिनका चयन किसी व्यक्ति द्वारा अपनी कार्यप्रणाली में विशेष स्वरूप में अनुसरण के लिए किया जाता है। मिल्टन रोकियेच के अनुसार "मूल्य वे मान्यताएं होती हैं जो भिन्न-भिन्न स्थितियों में क्रियाओं एवं निर्णय निर्धारण के लिए उपयोग में लाई जाती हैं"। उदाहरण के तौर पर, प्रत्येक उद्यमी से अपने व्यवसाय से जुड़ी सूचना की प्रस्तुति सत्य एवं सही स्वरूप करने की प्रत्याशा की जाती है।

सरल अर्थों में मूल्य वैयक्तिक विशिष्टताएं हैं जिनका प्रभाव किसी व्यक्ति के व्यवहार पर होता है। मूल्यों से किसी समाज की अच्छी अथवा बुरी विचाराधाराएं बिलकुल उसी प्रकार से प्रस्तुत होती हैं जिस प्रकार से वे व्यवसाय किए जाने के लिए अपेक्षित व्यावसायिक क्रियाओं एवं व्यवसाय व्यवहारों सहित व्यवसाय के उद्देश्यों को परिभाषित करते हैं। उदाहरण के तौर पर मिलावटी सामान की बिक्री अथवा गलत मापन को अनुचित क्रिया माना जाता है।

मूल्य व्यवस्था के कारक

मूल्यों का ज्ञान सामान्यतः परिवार, शिक्षा, धार्मिक मान्यताओं एवं व्यक्ति के निवास के अन्य संस्थानों से प्राप्त होता है। चित्र 7.1 में दर्शाए गए अनुसार मूल्य वैयक्तिक कारकों, परिवेश कारकों मूल्य कारकों एवं साथ ही क्रियात्मक कारकों के सम्मिश्रण की प्रस्तुति करते हैं।

7.1.1 मूल्यों की विशेषताएँ

मूल्यों की आधारभूत विशेषताएं निम्नलिखित हैं :-

1. नैतिकता के मानकों की प्रस्तुति मूल्य व्यवस्था में प्रतिबिंबित होती है।
2. मान्यताओं के मूल्य प्रत्येक वैयक्तिक के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं।
3. मूल्य स्थिर होते हैं। किसी वैयक्तिक की मूल्य व्यवस्था को परिवर्तित करना कठिन होता है।
4. मूल्य किसी भी क्रियाकलाप की आचार संहिता की प्रस्तुति करते हैं।
5. मूल्यों से लोगों के दृष्टिकोण को समझने में सहायता मिलती है।
6. मूल्य किसी उद्यमी के निर्णयों को प्रभावित करते हैं।
7. मूल्यों से व्यवसाय आचरण भी परिभाषित होता है।

7.1.2 मूल्यों के स्रोत

किसी वैयक्तिक की मूल्य व्यवस्था विभिन्न स्रोतों से प्राप्त मूल्यों का सम्मिश्रण होती है। मूल्यों के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं:-

1. **पारिवारिक कारक :** परिवार मूल्यों का प्रथम स्रोत होता है। लोग अपने आधारभूत मूल्यों की प्राप्ति अपने परिवार से करते हैं। उदाहरण के तौर पर, बच्चों के पालन पोषण के तरीके।
2. **सामाजिक कारक :** व्यक्ति जिस समाज में रहता है उसका प्रभाव भी मूल्य व्यवस्था पर होता है। उदाहरण के तौर पर: विद्यालय में अनुशासन।

टिप्पणी

3. **वैयक्तिक कारक :** किसी व्यक्ति का वैयक्तित्व व्यक्ति की मूल्य व्यवस्था का प्रतिबिंब भी होता है। उदाहरण के तौर पर: बौद्धिकता स्तर।

4. **सांस्कृतिक कारक :** मूल्य, मान्यताएं एवं मापदंड प्रत्येक सांस्कृतिक संरचना के भाग हैं। ये सांस्कृतिक मूल्य एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी को हस्तांतरित होते हैं। उदाहरण के तौर पर अतिथियों का स्वागत करने की विधि।

5. **जीवन अनुभव :** किसी व्यक्ति के अनुभव भी उसके जीवन को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपनी क्रियाओं से सीखता है। उदाहरण के तौर पर 40 वर्ष के अनुभव वाले व्यक्ति की मूल्य व्यवस्था दो वर्ष का अनुभव प्राप्त व्यक्ति से भिन्न होती है।

7.2 उद्यमियों के आधारभूत मूल्य

किए गए अनुसंधानों से उद्यमियों के निम्नलिखित मूल्य प्रकाश में आते हैं :-

1. **सत्यनिष्ठा :** किसी भी उद्यम के लिए सभी स्टेकधारकों के प्रति सत्यनिष्ठा अत्यधिक अनिवार्य है। सत्यनिष्ठा न होने की स्थिति में उद्यमी बाजार में लम्बे समय तक नहीं टिक सकते हैं।

2. **विश्वसनीयता :** उद्यमी को अपने प्रत्येक व्यवहार में विश्वसनीय होना चाहिए। उत्पादों की गुणवत्ता, सेवा एवं निर्णय अनिवार्य रूप से विश्वसनीय होने चाहिए।

3. **सम्मान :** उद्यमी को सभी स्टेकधारकों का सम्मान करना चाहिए जो उसके ग्राहक, आपूर्तिकर्ता, निवेशक अथवा कर्मचारी कोई भी हो सकते हैं। किसी स्टेकधारक का अनादर करने से उद्यमी की साख एवं व्यावसायिक संव्यवहार प्रभावित हो सकता है। उद्यमी को अपने कार्य, समय एवं व्यापार से संबंधित लक्ष्यों का भी सम्मान करना चाहिए।

4. **दूरदर्शिता :** दूरदर्शिता की प्राप्ति शिक्षा एवं बौद्धिक ज्ञान से प्राप्त होती है। उद्यमी भावी जोखिमों का मूल्यांकन करने एवं तदनुसार योजना बनाकर व्यावसायिक क्रियाकलापों को अनिश्चितता से बचाव करने में सक्षम होना चाहिए।

5. **नवाचार एवं सृजनात्मकता :** उद्यमी दायरे से बाहर विचार करने में सक्षम होना चाहिए। किसी उद्यमी की सफलता का यह एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मूल्य है। इसमें नवविचार, परिवर्तनों का प्रबंधन, नव विचारों के उपयोग के दौरान अनिश्चितताओं से बचाव, मूल भाव की प्रस्तुति इत्यादि शामिल हैं।

6. **उत्कृष्ट निष्पादन :** उद्यमी को बाजार की प्रतिस्पर्धा में उत्तम निष्पादन करके अपना स्थान बनाना चाहिए। उद्यमी को अपनी गलतियों को स्वीकार करके उनमें सुधार करने चाहिए। अच्छे उद्यमी किसी कार्य को पूरा करने के लिए शार्टकट्स का उपयोग नहीं करते हैं क्योंकि गुणवत्ता का कोई भी शार्टकट नहीं है।

7. **स्वतंत्रता :** उद्यमी द्वारा स्वयं की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मूल्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मूल्य है। उद्यमी आत्मप्रेरित एवं स्वावलम्बी होते हैं।

पाठगत प्रश्न 7.1

नीचे दिये गये कथनों में से बताईये की क्या सही है और क्या गलत :

1. सत्यनिष्ठा एवं विश्वसनीयता किसी उद्यमी के आधारभूत मूल्य होते हैं।
2. मूल्यों की प्राप्ति समाज से नहीं होती है।
3. मूल्य आधारभूत मान्यताएं होती हैं।
4. व्यक्तित्व कारक, वातावरण कारक, मूल्य व्यवस्था एवं क्रिया कारक एक साथ मिलकर किसी व्यक्ति की मूल्य व्यवस्था का निर्माण करते हैं।

7.3 दृष्टिकोण की अवधारणा

दृष्टिकोण में मनोवैज्ञानिक विशेषताएं होती हैं जिनसे किसी व्यक्ति के व्यवहार का स्वरूप निर्मित्त होता है। स्चेरमरहार्न, ईटी अल ने दृष्टिकोण को किसी सकारात्मक अथवा नकारात्मक रूप में किसी को अथवा वातावरण की किसी वस्तु के प्रति झुकाव के साथ प्रतिक्रिया देने के रूप में वर्णित किया है। दृष्टिकोण से किसी स्थान, व्यक्ति, वस्तु एवं अन्य चीजों के प्रति सकारात्मक अथवा नकारात्मक भाव स्पष्ट होता है।

7.3.1 दृष्टिकोण की विशेषताएँ

1. प्रत्येक व्यक्ति के दृष्टिकोण से ही उसका व्यवहार निर्मित होता है।
2. दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक स्वरूप का होता है।
3. दृष्टिकोण मात्र किसी एक दिन में नहीं अपितु काफी लम्बे समय में धारण होता है।
4. दृष्टिकोण का प्रसार व्यापक होता है।

7.3.2 दृष्टिकोण के स्रोत

दृष्टिकोण के गुण विभिन्न प्रकार के स्रोतों से जुड़े हो सकते है :

1. **व्यक्तिगत अनुभव :** किसी व्यक्ति के गुण उसके वैयक्तिक अनुभव से संबंधित होते हैं। समान स्थितियों में किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण किसी दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से भिन्न हो सकता है। उदाहरण के तौर पर दो अधीनस्थों को अपने सुपरवाइजर के प्रति समान प्रकार के वैयक्तिक अनुभव हो सकते हैं। इस प्रकार प्रत्येक का व्यवहार अपने सुपरवाइजर के प्रति भिन्न प्रकार का होगा।
2. **साहचर्य :** प्रत्येक क्रिया का प्रभाव व्यक्ति के दृष्टिकोण पर होता है। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई कर्मचारी कार्य कुशल है तथा कम्पनी के कार्य कड़ी मेहनत से करता है तो उसके बॉस का व्यवहार उसके प्रति सकारात्मक होगा। अब मान लीजिए, कुछ समय

के पश्चात संगठन में एक नया कर्मचारी आता है तथा वह भी अत्यधिक मेहनती एवं कार्यकुशल है तो सुपरवाइजर का सकारात्मक व्यवहार नए कर्मचारी के साथ भी उसी प्रकार किया जाएगा।

3. **सामाजिक शिक्षण:** दृष्टिकोण की प्राप्ति परिवार, अध्यापकों एवं अनुभवी व्यक्तियों की संगत से भी होती है।

7.4 उद्यमी का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण से उद्यमिता के व्यवहार की रूपरेखा तैयार होती है। उद्यमी के लिए कुछ अनिवार्य दृष्टिकोणों का वर्णन नीचे दिया गया है :

1. **धैर्य:** उद्यमिता की क्रियाएं किसी एक दिन नहीं की जाती हैं। कभी कभार बाजार में अपनी जगह बनाने एवं ब्रांड की इमेज बनाने में काफी समय लग जाता है। उद्यमी को धैर्यवान होना चाहिए।
2. **सकारात्मकता:** उद्यमी के पास जोखिम का वहन करने एवं सकारात्मक बने रहने की क्षमता होनी चाहिए। सकारात्मक व्यवहार न केवल व्यापार के लिए अपितु उद्यम के उज्ज्वल भविष्य के लिए भी आवश्यक है।
3. **दृढ़ निश्चय:** उद्यमी को नियमित रूप से कड़ी मेहनत करके अपने व्यावसायिक लक्ष्य प्राप्त करने चाहिए।
4. **लचीलापन:** उद्यमिता कोई एक पुराना जीविका का विकल्प नहीं है, जिससे यह स्वभाविक है कि उद्यमियों को उद्यमिता के अपने चयन में अलग थलग होना पड़ सकता है। ऐसी स्थितियों में उद्यमियों को अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अत्यधिक लचीला होना चाहिए।
5. **कल्पना शक्ति:** उद्यमियों को दूरदर्शी माना जाता है। बाजार में उपलब्ध अवसरों के दोहन के लिए उद्यमी को अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग अवश्य करना चाहिए।
6. **परिवर्तनशीलता:** उद्यमी को उद्यमिता में होने वाले परिवर्तनों एवं बदलावों के प्रति स्वयं को परिवर्तनशील बनाने के सकारात्मक व्यवहार को अपनाना चाहिए।
7. **निष्पादन:** उद्यमी निष्पादक होते हैं। वे प्रत्येक प्रतिकूल परिस्थिति में भी कार्य करते है।
8. **नेटवर्किंग:** सामान्यत: उद्यमियों का सुदृढ़ नेटवर्किंग सर्कल होता है।
9. **आदर:** उद्यमियों का ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं, निवेशकों जैसे स्टेकधारकों के साथ सकारात्मक व्यवहार होता है। वे अपने स्टेकधारकों का सम्मान करते हैं।

पाठगत प्रश्न 7.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. दृष्टिकोण का स्रोत वैयक्तिक अनुभव, संगत तथा .... है।
2. दृष्टिकोण से प्रत्येक व्यक्ति का .... निर्मित्त होता है।
3. दृष्टिकोण एक प्रकार से .... विशिष्टता है।
4. उद्यमी को प्रत्येक .... का सम्मान करना चाहिए।

7.5 उत्प्रेरणा की अवधारणा

उत्प्रेरणा से किसी व्यक्ति में किसी क्रिया, जैसे कि कार्य, को करने के उत्पन्न उत्साह अभिप्रेत है। राबर्ट डबिन के अनुसार ''उत्प्रेरणा एक मिश्रित बल है जो किसी व्यक्ति को संगठन में कार्य प्रारंभ करने एवं कार्य में संलिप्त रहने का उत्साह निर्मित करता है।'' उत्प्रेरणा एक प्रकार की ऐसी क्रिया है जो किसी व्यक्ति को कार्यात्मक बनाती है एवं प्रारंभ किए गए कार्य को जारी रखने का उत्साह जागृत करती है।''

उत्प्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। किसी मानव के व्यवहार की सम्बद्धता उत्प्रेरणा से होती है। डाल्टन ई. मैकफारलैंड के अनुसार ''उत्प्रेरणा से प्रेरणा, सहज प्रवृत्ति, इच्छा, महत्वाकांक्षा, प्रयास अथवा निर्देशन, नियंत्रण की आवश्यकता अथवा मानव व्यवहार की व्याख्या अभिप्रेत है।''

उत्प्रेरणा की प्रक्रियाएं असंतुष्ट आवश्यकताओं की स्थिति से प्रारंभ होती हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति व्याकुल होता है तथा अपनी ऐसी आवश्यकताओं की पूर्ति के विविध उपाय तलाश करता है। अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के दौरान उसकी कुछ आवश्यकताएं और बढ़ जाती हैं। लक्ष्य की प्राप्ति होने अथवा न होने पर व्यक्ति अपने प्रयास करता रहता है। यह उसके सृजनात्मक अथवा विनाशकारी व्यवहार में प्रतिबिंबित होता है।

7.5.1 उत्प्रेरणा की विशेषताएं

1. **आत्मबोध :** उत्प्रेरणा सामान्यत: स्वयं से प्राप्त होती है। यह एक आत्मबोध है। इसका चित्रण किसी व्यक्ति के व्यवहार से होने के कारण उत्प्रेरणा का प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन कर पाना कठिन होता है।

2. **जटिल प्रक्रिया :** समान प्रकार के क्रियाकलाप करने पर भी किसी एक व्यक्ति की

उत्प्रेरणा किसी दूसरे व्यक्ति की उत्प्रेरणा से भिन्न होती है। उदाहरण के तौर पर दो फैशन डिजाइनरों का उत्प्रेरणा स्तर भिन्न होता है।

3. **अनवरत प्रक्रिया :** उत्प्रेरणा एक बार में की जाने वाली क्रिया नहीं होती है। लक्ष्य प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति को निरंतर उत्प्रेरित करने की आवश्यकता होती है।

4. **गतिशील प्रक्रिया :** जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताएं एवं लक्ष्य परिवर्तित होते हैं उसकी प्रकार उत्प्रेरणा का स्तर भी परिवर्तित होता है। उदाहरण : कोई विद्यार्थी कड़ी मेहनत करके संबंधित उद्योग में नौकरी प्राप्त कर लेता है। नौकरी का अनुभव प्राप्त करने के पश्चात वहीं व्यक्ति कड़ी मेहनत करके पदोन्नतियां एवं बेहतर जीवनशैली की अपेक्षा करता है।

5. **संतुष्टि से भिन्नता :** उत्प्रेरणा कुछ प्राप्त करने की इच्छा होती है। संतुष्टि की प्राप्ति वांछित लक्ष्य प्राप्त होने के पश्चात होती है।

7.5.2 उत्प्रेरणा का महत्त्व

उत्प्रेरणा प्रबंधन की जाने वाली एक महत्त्वपूर्ण क्रिया है। इसका निरंतर उपयोग सभी प्रबंधक अपने अधीनस्थों को उत्प्रेरित करने के लिए करते हैं। नीचे दिये गये कारक किसी क्रियाकलाप अथवा किसी स्तर के लिए महत्वपूर्ण उत्प्रेरण प्रदान करते हैं:-

1. **कार्य करने की इच्छा :** उत्प्रेरणा से कार्य करने की इच्छा जागृत होती है। संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए इसका उपयोग अनिवार्य है।

2. **कार्यकुशलता :** गैर-उत्प्रेरित कर्मी की तुलना में उत्प्रेरित कर्मी अधिक कुशलता से अपने कार्य करता है।

3. **सहयोग :** गैर-उत्प्रेरित कर्मी की तुलना में उत्प्रेरित कर्मी संगठनात्मक क्रियाकलापों में अधिक सहयोग देता है।

4. **श्रमिक अनुपस्थिति :** यदि कर्मी उत्प्रेरित होते हैं तो उनकी अनुपस्थिति भी कमी हो जाती है।

5. **उत्तम मानव संबंध :** ऐसा करने से संगठन के कर्मी उत्प्रेरित होते हैं जिससे कर्मचारियों के मध्य मनमुटाव में कमी आती है।

6. **शिकायतों में कमी :** उत्प्रेरित कर्मी सामान्यत: अपने काम की ओर ध्यान देते हैं और उनसे संबंधित शिकायतें करने के स्थान पर समस्याओं के समाधान खोजते हैं।

7. **अपव्यय में कमी :** उत्प्रेरित कर्मचारी लक्ष्यों को कुशलतापूर्वक प्राप्त करने एवं अधिक गुणवत्ता वाले उत्पाद निर्मित्त करने के प्रयास करते हैं। इससे कच्ची सामग्रियों का अपव्यय कम होता है।

7.6 उपलब्धि उत्प्रेरणा

उपलब्धि उत्प्रेरणा को उपलब्धि एवं उत्प्रेरणा दोनों शब्दों को अलग अलग करके समझा जा सकता है। उपलब्धि का अर्थ सफलता है जबकि उत्प्रेरणा से सफलता के लिए की जाने वाली मनोवैज्ञानिक क्रिया अभिप्रेत है। इस प्रकार उपलब्धि को सफलता की आवश्यकता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है अथवा लोग क्यों और किस प्रकार सफलता के लिए प्रयास करते हैं तथा किस प्रकार वे असफलता से अपना बचाव करते हैं:-

उत्प्रेरणा आपके लिए तब सहायक होती है जब तक :

- आपके लक्ष्य स्पष्ट हों।
- आपकी उपलब्धि संकल्पित हो।
- आप लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य करें।
- संभावित जोखिमों का पूर्वानुमान हो।
- अवसरों एवं बाधाओं का संज्ञान कर लिया हो।
- लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए धैर्य रखें।
- अड़चनों से बचाव के लिए अन्यों से सहायता प्राप्त करें।

7.7 मानव प्रेरणाएं

मानव प्रेरणाएं कुछ करने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रेरणा से मानव प्रगति करता है। उदाहरण के तौर पर यदि आप नृतक अथवा नृत्यांग्ना बनना चाहते हैं तो आपको नृत्य का अभ्यास करके नृत्य की कम से कम एक विधा में महारत प्राप्त करनी होगी। मानव प्रेरणाओं का विस्तृत वर्गीकरण नीचे दिया गया है:-

1. **जैविक प्रेरणाएं अथवा दैहिक प्रेरणाएं :** ये आधारभूत प्रेरणाएं हैं तथा इनकी आवश्यकता मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होती है। उदाहरण: भूख, प्यास। आपको अपनी प्यास बुझाने के लिए जल एवं भूख मिटाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है।

2. **मनोवैज्ञानिक अथवा सामाजिक प्रेरणाएं :** इनमें से अधिकांश की प्राप्ति परिवार, मित्रों, समाज समूहों इत्यादि से होती है। इनकी आवश्यकता की उत्पत्ति निम्नानुसार होती है:-

   i. सम्बद्धता की आवश्यकता के लिए।

   ii. शक्ति की आवश्यकता के लिए।

   iii. उपलब्धि की आवश्यकता के लिए।

3. **जिज्ञासा एवं अन्वेषण :** अधिक ज्ञात करने की जिज्ञासा एवं बेहतर तकनीकी की खोज करने से उत्प्रेरणा की शक्ति प्राप्त होती है।

7.8 उत्प्रेरणा एवं उद्यमिता

लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उद्यमियों को प्रेरित करने वाले कारक तथा गुण निम्नलिखित हैं।

1. **नवाचार :** नवाचारों एवं सृजनात्मकता से उद्यमी और अधिक कार्य करने के प्रति उत्प्रेरित होते हैं। उद्यमी सदैव परिवर्तनों को स्वीकार करने के प्रति तत्पर रहते हैं तथा वे समय की आवश्यकता के अनुसार स्वयं को ढाल लेते हैं।

2. **आत्मविश्वास :** उद्यमी गलतियों एवं असफलताओं से हतोत्साहित नहीं होते हैं। कठिनाईयों का सामना करने का आत्मविश्वास उनमें होता है तथा वे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अतिरिक्त प्रयास करते हैं।

3. **भविष्य के प्रति अनुकूलन :** उद्यमियों में आगे की सोचने और भविष्य के लिए योजना बनाने की प्रवृत्ति होती है। वे गलतियों से सबक सीखकर दीर्घकालिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उनमें सुधार करते हैं।

4. **उत्तरदेयता :** उद्यमी आवश्यक क्रियाकलापों के लिए अपने उत्तरदायित्व और अपनी क्रियाओं से उत्पन्न दोष स्वीकार करते हैं। साथ ही साथ वे अपने कार्य की सराहना की अपेक्षा भी करते हैं।

5. **फीडबैक :** उद्यमी अपनी क्रियाओं का निरन्तर फीडबैक प्राप्त करने के प्रयास करते हैं। ऐसा वे इसलिए करते हैं ताकि सुधार कार्रवाई समय सकें।

6. **सहनशीलता स्तर :** उद्यमियों का सहनशीलता स्तर काफी उच्च होता है। यदि योजनाएं सही ढंग से कार्य नहीं भी करती हैं तो अपनी सहनशीलता का स्तर बरकरार रखकर तदनुसार क्रियाएं करते हैं।

7. **लक्ष्य की प्राप्ति करने वाले :** उद्यमी अपनी उपलब्धियों से कभी संतुष्ट नहीं होते हैं। वे सदैव और बेहतर लक्ष्य प्राप्त करने के यत्न करते रहते हैं।

8. **संबंधों का रखरखाव :** उद्यमी सामान्यत: सभी स्टेकधारकों के साथ कायम रखते हैं। इससे वे उत्प्रेरित होते हैं तथा अपने संगठन में उत्तम योगदान दे पाते हैं।

9. **गतिशीलता :** उद्यमी अपनी भौगोलिक स्थितियों के प्रति चिंतित नहीं होते हैं। वे कार्य कुशलता एवं उच्चतर लाभ के लिए विभिन्न स्थलों पर अपनी क्रियाएं करते हैं।

पाठगत प्रश्न 7.3

नीचे दिये गये कथनों में से सत्य अथवा असत्य की पहचान कीजिए।

1. जैविक प्रेरणाएं, मनोवैज्ञानिक प्रेरणाएं एवं जिज्ञासा मानवीय प्रेरणाएं होती हैं।

2. उत्प्रेरणा से कार्यकुशलता एवं सहयोग में बढ़ोतरी होती है।

3. उत्प्रेरण आत्म बोध नहीं होता है।

4. उत्प्रेरणा एवं संतुष्टि की अवधारणा एक समान है।

5. उत्प्रेरण से आत्म विश्वास की उत्पति होती है।

7.10 व्यावसायिक आचार नीति

आचार नीति को आचरण नियमों अथवा चारित्रिक सिद्धांतों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। ये किसी भी समुदाय में स्वीकार्य अथवा अस्वीकार्य कृत्य होते हैं। व्यावसायिक आचार नीति सदाचार का विशेष अध्ययन है जो व्यवसायों, संस्थानों तथा उद्यमों के व्यवहार के लिए उपयोग में लाया जाता है। विभिन्न कानूनों में किसी व्यावसायिक क्रियाकलाप के संबंध में कम से कम आधारभूत आचार मानक होते हैं। कुछ समय कंपनियाँ अपनी साख एवं बाजार के उच्चतर मानकों के रखरखाव के लिए स्वयं अपनी आचार नीति का उपयोग कर रही हैं।

7.10.1 व्यावसायिक आचार नीति का संचलन करने वाले कारक

नीचे दिए गए कारकों से व्यावसायिक आचार नीति का संचालन होता है :

1. **विधिक फ्रेमवर्क :** पूर्व काल में आचार नीति का अनुसरण स्वेच्छा से होता था परन्तु अनेक गैर–आचार नीति परक व्यवहारों के कारण इसके लिए कानून व्यवस्था लागू करनी पड़ी थी। इन कानूनों में किसी संगठन द्वारा अनुपालन के लिए बुनियादी मानक निर्धारित किए गए हैं।

2. **सरकार का विनियामक फ्रेमवर्क :** सरकार द्वारा समय समय पर यह जांच की जाती है कि क्या व्यावसायिक संस्थान आचार नीति व्यवहारों का अनुसरण कर रहे हैं अथवा नहीं कर रहे हैं। सरकार द्वारा उत्पाद गुणवत्ता, वजन इत्यादि के संबंध में न्यूनतम बुनियादी मानक निर्धारित किए गए हैं। कम्पनियों द्वारा की जाने वाली अनुचित क्रियाओं के प्रति ग्राहकों में जागृति की उत्पति के लिए सरकार अभियान आयोजित करती है। उदाहरण : जागो ग्राहक जागो अभियान।

3. **निगमित आचार नीति नियमावली :** अनेक बार कम्पनियां अनुसरण के लिए स्वयं अपनी आचार नीति का निर्माण करती है। ऐसे मानक संगठन के सभी कर्मचारियों में अनुपालन के लिए वितरित किए जाते हैं।

4. **सामाजिक दायित्व :** सामाजिक दबावों से कम्पनियों की आचार नीति की संरचना अत्यधिक प्रभावित हुई हैं। उदाहरण के तौर पर : प्रसूति अवकाश।

5. **उद्यमों से संबंधित परिकल्पनाएं (दूरदृष्टि) एवं लक्ष्य :** किसी उद्यम की परिकल्पनाओं एवं लक्ष्यों से उसके व्यवसाय के आचार नीति मानक भी प्रभावित होते हैं। उदाहरण के तौर पर, टाटा अपने आचार नीति मानकों के लिए विख्यात है।

टिप्पणी

7.10.2 व्यावसायिक आचार नीति के लिए तर्कसंगत आधार

नीचे प्रस्तुत कारकों से प्रत्येक उद्यम की व्यावसायिक आचार नीति को बल मिलता है:

1. **व्यवसाय की उत्तरजीविता :** किसी संगठन के स्टेकधारक जब युक्त व्यवहार अपनाते हैं तो वह संगठन लम्बे समय तक चल नहीं पाता है। दूसरे शब्दों में, किसी भी संगठन की सफलता के लिए नीतिगत व्यवहारों का अनुपालन आवश्यक है।

2. **सामाजिक स्थिरता के लिए :** कोई भी उद्यम नीतिगत व्यवहारों का अनुसरण किए बिना किसी सामाजिक स्थिरता का निर्माण एवं स्थापना करने में सफल नहीं हो सकता है। सामाजिक स्थिरता से ही उद्यमों का विकास होता है जिससे समाज में आर्थिक एवं सामाजिक विकास करने में सहायता मिलती है।

3. **व्यावसायिक उद्देश्य :** व्यावसायिक उद्देश्यों का निर्माण आचारपूर्ण ढंग से किया जाना चाहिए तथा योजना में आचार नीति व्यवहारों का समावेश किया जाना चाहिए। इससे संगठन को स्वयं अपने लिए दीर्घकाल तक विकास करने एवं स्थापित होने में सहायता प्राप्त होती है।

4. **जन संरक्षण :** किसी व्यवसाय का प्रभाव अनेक लोगों पर पड़ता है। उद्यमों द्वारा नीति सम्मत व्यवहारों का अनुसरण करके दुर्व्यवहारों के प्रति जनसाधारण का बचाव किया जा सकता है।

5. **व्यावसायिक अनुकुलता :** समाज में स्वीकृति के लिए आचार पूर्ण व्यवहारों का अनुसरण करके उद्यम स्वयं अपनी ही सहायता करते हैं।

7.11 उद्यमिता एवं व्यावसायिक आचार व्यवहार

नीचे प्रस्तुत कारकों से प्रत्येक उद्यम की व्यावसायिक आचार नीति को बल मिलता है :

1. **मूलभूत मानव आवश्यकताएं :** उद्यमों का आचार पूर्ण व्यवहार मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। सभी उद्यमों को आचार पूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

2. **साख :** आचार पूर्ण व्यवहार करने वाले उद्यमों की साख समाज में अधिक होती है। अनाचरण युक्त व्यवहार की तुलना में लोग आचार पूर्ण व्यवहार करने वाले उद्यमों की क्रियाओं एवं उत्पादों पर भरोसा करते हैं।

3. **समन्वय :** आचार युक्त मानकों का अनुसरण करने वाला उद्यम अपने कर्मचारियों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं इत्यादि के साथ बेहतर समन्वय कर सकता है।

4. **निर्णय निर्धारण :** आचार पूर्ण व्यवहार किसी उद्यम के लिए निर्णय निर्धारण में सहायक होते हैं। नैतिकता से ही यह ज्ञात हो पाता है कि क्या सही है और क्या गलत है।

5. **लाभ :** आचार पूर्ण व्यवहार करने वाले उद्यम लाभ अर्जित करने वाले उद्यम भी बन सकते हैं। आचार पूर्ण व्यवहार उद्यमों की बाजार साख बनाने में सहायक होते हैं। इससे किसी भी फर्म की दीर्घकालिक उत्तरजीविता हो सकती है।

पाठगत प्रश्न 7.4

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

1. व्यावसायिक आचार व्यवहार मूलभूत .... आवश्यकता है।
2. व्यावसायिक आचार व्यवहार की आवश्यकता व्यवसाय के .... लिए अपेक्षित है।
3. व्यावसायिक आचार व्यवहार .... के दायित्वों से प्रभावित होते हैं।
4. आचार व्यवहार .... सिद्धांत हैं।

आपने क्या सीखा

- मूल्य आधारभूत ऐसी मान्यताएं अथवा धारणाएं होती हैं जिनके प्रभाव से किसी अन्य स्वरूप में किए जाने वाले आचरण के स्थान पर विशिष्ट स्वरूप का आचरण करने को वरीयता दी जाती है।
- मूल्यों का प्रमुख स्रोत पारिवारिक कारक, सामाजिक, कारक, वैयक्तिक कारक, सांस्कृतिक कारक एवं जीवन अनुभव होते हैं।
- उद्यमियों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले प्रमुख मूल्य सत्यनिष्ठा, विश्वसनीयता, प्रत्येक के लिए सम्मान, नवाचार एवं सृजनात्मकता, उत्कृष्ट निष्पादन एवं स्वतंत्रता है।
- आचार-व्यवहार में मनोवैज्ञानिक विशेषताएं होती हैं जिनसे किसी व्यक्ति के व्यवहार का स्वरूप निर्मित्त होता है। आचार व्यवहार के प्रमुख स्रोत वैयक्तिक अनुभव, संगत एवं समाज से प्राप्त सीख हैं।
- उद्यमियों की प्रमुख विशेषता उनका धैर्य, सकारात्मकता, धीरज, लोचकता, कल्पना शक्ति, परिवर्तन, निष्पादन, नेटवर्किंग एवं सम्मान है।
- कार्य के प्रति किसी व्यक्ति का उत्साह उत्प्रेरणा है। उत्प्रेरणा की मूलभूत विशिष्टताएं आत्म बोध, जटिल, निरंतर एवं गतिबोधक प्रक्रिया हैं।
- उत्प्रेरण से कार्य के प्रति इच्छा, कार्यकुशलता, सहयोग, श्रमिकों की उपस्थिति में कमी, उत्तम मानव संबंध, शिकायतों में कमी तथा अपव्यय में कमी होती है।
- प्रमुख मानव प्रेरणाएं जैविक अथवा शारीरिक प्रेरणाएं, मनोवैज्ञानिक अथवा सामाजिक प्रेरणाएं एवं जिज्ञासाएं होती हैं।
- किसी उद्यमी को उत्प्रेरित करने वाले कारक नवाचार, आत्म-विश्वास, उत्तरदेयता, फीडबैक, सहिष्णुता स्तर, लक्ष्य, संबंध एवं संचलन है।

- व्यावसायिक आचार व्यवहार को व्यावसायिक क्रियाकलापों में आचार अथवा चारित्रिक सिद्धांतों के नियम के रूप में परिभाषित किया गया है। व्यावसायिक आचार व्यवहार को संचलित करने वाले प्रमुख कारक सरकार के विधिक फ्रेमवर्म, विनियामक फ्रेमवर्क, निगमित आचार व्यवहार नियमावलियां, सामाजिक दायित्व एवं उद्यम दृष्टिकोण एवं लक्ष्य हैं।
- व्यावसायिक आचार व्यवहार मानव की मूलभूत आवश्यकताओं, साख, समन्वय, निर्णय निर्धारण एवं लाभ के लिए आवश्यक है।

पाठांत प्रश्न

1. मूल्यों को परिभाषित कीजिए। इसके स्रोत क्या हैं?
2. मूल्यों में किसी उद्यमी की भूमिका का वर्णन कीजिए।
3. आचार व्यवहार की परिभाषा प्रस्तुत करें। इसके स्रोत क्या हैं?
4. आचार व्यवहार से किस प्रकार उद्यम का व्यवहार निर्मित्त प्राप्त होता है?
5. उत्प्रेरणा एवं इसकी विशिष्टताओं को परिभाषित कीजिए।
6. उत्प्रेरणा के महत्त्व का वर्णन प्रस्तुत कीजिए।
7. किसी उद्यमी के संबंध में उत्प्रेरणा की भूमिका का वर्णन प्रस्तुत कीजिए।
8. व्यावसायिक आचार व्यवहार से आपको क्या ज्ञात हुआ है?
9. व्यावसायिक आचार व्यवहार का संचलन करने वाले विभिन्न कारकों की व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।
10. किसी उद्यमी के व्यावसायिक आचार व्यवहार की भूमिका विवरण विस्तार से प्रस्तुत कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1) सत्य 2) असत्य 3) सत्य 4) सत्य

7.2

1) सामाजिक अध्ययन 2) व्यवहार 3) मनोवैज्ञानिक 4) स्टेकधारक

7.3

1) सत्य 2) सत्य 3) असत्य 4) असत्य 5) सत्य

7.4

1) मानव 2) उत्तरजीविता 3) सामाजिक 4) चारित्रिक

क्रियाकलाप

किन्हीं पांच उद्यमों, उनकी मूल्य व्यवस्था एवं आचार व्यवहारों की सूची तैयार कीजिए।

अवधारणा नक्शे

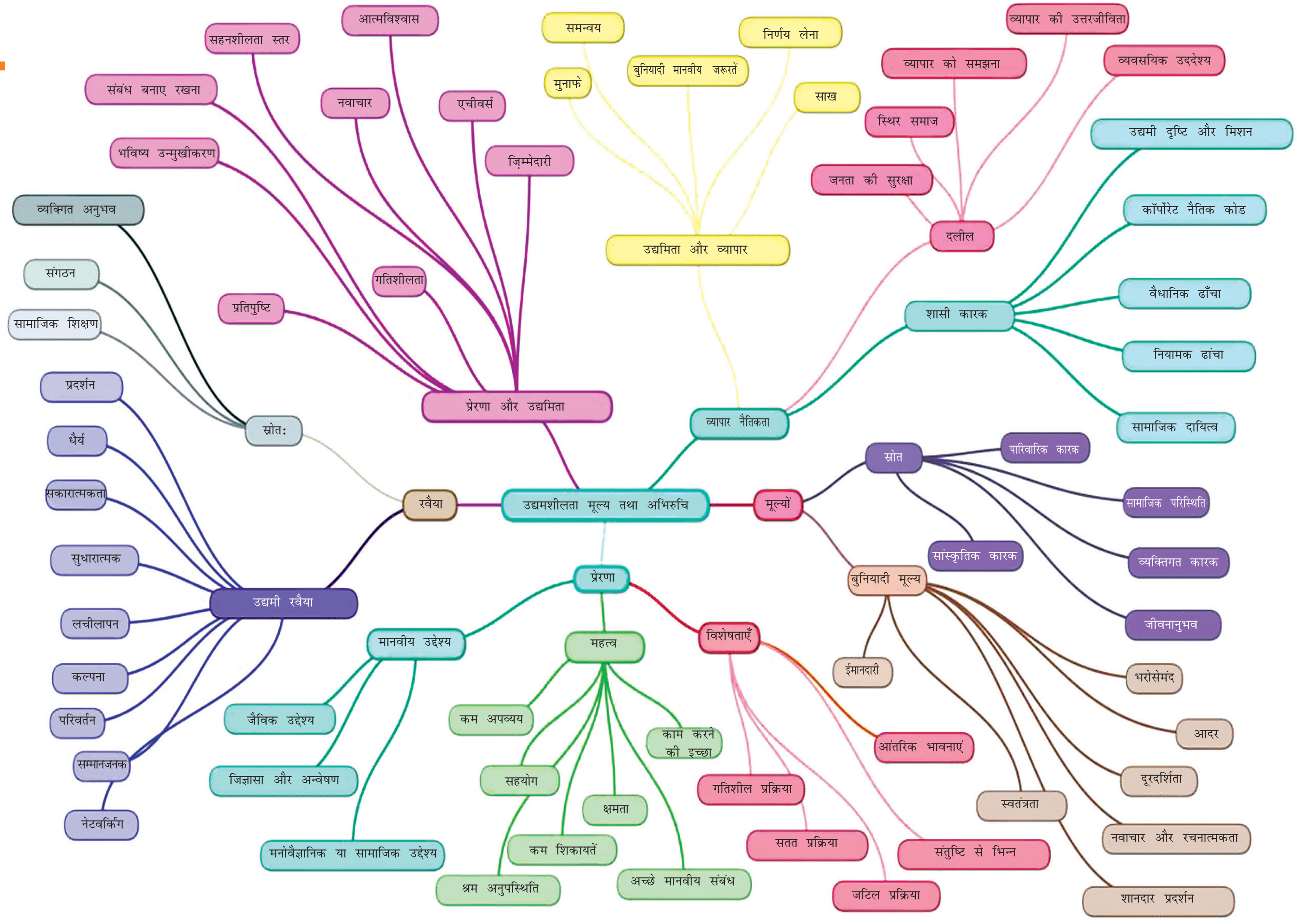
उद्यमशीलता मूल्य तथा अभिरुचि
प्रेरणा और उद्यमिता
सहनशीलता स्तर
आत्मविश्वास
संबंध बनाए रखना
नवाचार
एचीवर्स
भविष्य उन्मुखीकरण
जिम्मेदारी
गतिशीलता
प्रतिपुष्टि
उद्यमिता और व्यापार
समन्वय
मुनाफे
बुनियादी मानवीय जरूरतें
निर्णय लेना
साख
व्यापार नैतिकता
दलील
व्यापार की उत्तरजीविता
व्यापार को समझना
व्यवसयिक उददेश्य
स्थिर समाज
जनता की सुरक्षा
शासी कारक
उद्यमी दृष्टि और मिशन
कॉर्पोरेट नैतिक कोड
वैधानिक ढाँचा
नियामक ढांचा
सामाजिक दायित्व
मूल्यों
स्रोत
पारिवारिक कारक
सामाजिक परिस्थिति
सांस्कृतिक कारक
व्यक्तिगत कारक
जीवनानुभव
बुनियादी मूल्य
ईमानदारी
भरोसेमंद
आदर
दूरदर्शिता
स्वतंत्रता
नवाचार और रचनात्मकता
शानदार प्रदर्शन
रवैया
स्रोत:
व्यक्तिगत अनुभव
संगठन
सामाजिक शिक्षण
उद्यमी रवैया
प्रदर्शन
धैर्य
सकारात्मकता
सुधारात्मक
लचीलापन
कल्पना
परिवर्तन
सम्मानजनक
नेटवर्किंग
प्रेरणा
मानवीय उद्देश्य
जैविक उद्देश्य
जिज्ञासा और अन्वेषण
मनोवैज्ञानिक या सामाजिक उद्देश्य
महत्व
कम अपव्यय
सहयोग
क्षमता
काम करने की इच्छा
कम शिकायतें
श्रम अनुपस्थिति
अच्छे मानवीय संबंध
विशेषताएँ
आंतरिक भावनाएं
गतिशील प्रक्रिया
सतत प्रक्रिया
संतुष्टि से भिन्न
जटिल प्रक्रिया

8

उपलब्धि उत्प्रेरण

पिछले अध्याय में आपने उत्प्रेरण के अर्थ एवं उनकी विशिष्टताओं का अध्ययन किया है। इस अध्याय में आपको उत्प्रेरण की अवधारणाओं एवं सिद्धांतों के संबंध में और अधिक जानकारी प्रदान की जाएगी।

कुछ लोग अधिक सफल कैसे हुए हैं? किस प्रकार कुछ कर्मचारी अन्यों की तुलना में अपना काम करने में आनन्द प्राप्त करते हैं? इनका उत्तर से संबंधित तथ्यों का अध्ययन आपने पिछले अध्याय में किया है। कुछ व्यक्ति कार्य के प्रति अधिक रूचि रखते हैं क्योंकि वे पर्याप्त रूप से उत्प्रेरित होते हैं।

सफल उद्यमी बनने के लिए आपको न केवल आत्म प्रेरणा की आवश्यकता है अपितु आपके पास अन्यों को उत्प्रेरित करने की क्षमता भी होनी चाहिए। यहां तक कि अत्यधिक सफल उद्यमियों को पर्याप्त उत्प्रेरणा के बिना प्रतिस्पर्धी वातावरण से स्वयं को जोड़ने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। उत्प्रेरित उद्यमी एवं उनके उत्प्रेरित समूह एक सफल संगठन का रूप धारण करते हैं। वित्तीय एवं मनोवैज्ञानिक उत्प्रेरणा के बिना किसी कार्य का अर्थ अपने उत्तरदायित्वों एवं कार्य को नकारना है। तथापि, कुछ लोग काम करते हुए भी अपने काम, काम के घंटों एवं उससे प्राप्त होने वाली आय से संतुष्ट नहीं होते हैं। कोई भी विवेकशील व्यक्ति ऐसी स्थिति में उत्प्रेरणा की अवधारणा के बारे में प्रश्न पूछेगा क्योंकि इस मामले में कर्मचारी उत्प्रेरित हुए प्रतीत नहीं हो रहे हैं। एक बार देखने से ऐसा प्रतीत हो सकता है कि वे उत्प्रेरित नहीं हैं परन्तु उनकी आवश्यकताएं होती है जिनकी पूर्ति उनके लिए अपेक्षित उत्प्रेरण का कार्य करके काम के प्रति उनका लगाव बढ़ा सकती है। आपको उत्प्रेरक के रूप में आवश्यकताओं की तारतम्यता के बारे में आगे बताया जाएगा। इसी प्रकार, आंतरिक अथवा बाह्य उत्प्रेरणा से कोई उद्यमी किसी उद्यम को करके उसमें सफलता प्राप्त कर सकता है। उसकी उत्प्रेरणा अधिक धन अर्जित करने की इच्छा, शक्ति प्राप्त करने की आंकाक्षा अथवा मात्र इस कारण से भी उत्पन्न होती है कि उसे किसी प्रकार की कुछ सम्बद्धता की अपेक्षा है। आप इस अध्याय में उत्प्रेरण से संबंधित आवश्यकता के सिद्धांत का अध्ययन भी करेंगे।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- उत्प्रेरण के सिद्धांतों का वर्गीकरण करते हैं;
- उपलब्धि उत्प्रेरण का वर्णन करते हैं; और
- आत्मसुधार के लिए उत्प्रेरक सिद्धांतों का वर्णन करते हैं।

8.1 उत्प्रेरण का अभिप्राय

उत्प्रेरणा शब्द की उत्पति 'प्रेरणा' शब्द से हुई है जिसका अर्थ किसी क्रिया को करने अथवा न करने से संबंधित कोई 'उद्देश्य' अथवा विचार अथवा प्रोत्साहन है। उत्प्रेरणा सकारात्मक अथवा नकारात्मक भी हो सकती है। सकारात्मक उत्प्रेरण से व्यक्ति अथवा कर्मचारी प्रेरित होते हैं। नकारात्मक उत्प्रेरण से व्यक्ति को अवांछित व्यवहार में संलिप्तता के प्रति हतोत्साहित होते हैं। नकारात्मक उत्प्रेरण से व्यक्ति अवांछित प्रवृत्ति अथवा व्यवहार में संलिप्त नहीं होते हैं।

8.2 उत्प्रेरणा की परिभाषा

राबर्ट डबिन के अनुसार ''उत्प्रेरणा एक मिश्रित बल है जो किसी व्यक्ति को संगठन में कार्य प्रारंभ करने एवं कार्य में संलिप्त रहने का उत्साह निर्मित करता है।'' उत्प्रेरणा एक प्रकार की ऐसी क्रिया है ''जो किसी व्यक्ति को कार्यात्मक बनाती है एवं प्रारंभ किए गए कार्य को जारी रखने का उत्साह जागृत करती है।''

मामोरिया के अनुसार ''उत्प्रेरणा किसी लक्ष्य अथवा प्रतिफल को प्राप्त करने के लिए ऊर्जा को विस्तारित करने की स्वेच्छा है। यह वह शक्ति है जो निष्क्रिय ऊर्जाओं को सक्रिय करती है तथा व्यक्ति को क्रिया को क्रियाशील करती है। यह वह प्रक्रिया है जो किसी संगठन के मनुष्यों में क्रिया के प्रति उत्साह जागृत करने का कार्य करती है।''

बफर्ड, बेडेयन एवं लिन्डनर के शब्दों में, ''उत्प्रेरण किन्हीं विशिष्ट, अपूर्ण आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिए एकाग्र स्वरूप में व्यवहार करने की पूर्वानुकूलता है।'' वुडवर्थ के अनुसार ''उत्प्रेरणा किसी व्यक्ति की वह स्थिति होती है जिसमें वह लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विशेष प्रकार का व्यवहार करता है।''

8.3 वित्तीय एवं गैर-वित्तीय उत्प्रेरण

उत्प्रेरणा के उन स्वरूपों को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है जो किसी उद्यम अथवा कर्मचारियों को उत्प्रेरित करते हैं। सही उत्प्रेरणा का निर्धारण करके उद्यम अपने कर्मचारियों को संतुष्ट कर सकते हैं तथा दीर्घकाल के लिए उत्प्रेरित कर सकते हैं। उत्प्रेरणा के दो प्रमुख वर्गों में वित्तीय उत्प्रेरणा एवं गैर-वित्तीय उत्प्रेरणा शामिल है जिनके बारे में हम विस्तार से नीचे चर्चा कर रहे हैं:-

उत्प्रेरणाएं

वित्तीय उत्प्रेरणाएं	गैर - वित्तीय उत्प्रेरणाएं
वेतन / मजदूरी	प्रतिष्ठा / स्तर
भत्ते	सेवा सुरक्षा
अनुलाभ	संगठनात्मक वातावरण
बोनस	मान्यता
लाभ सहभाजन	व्यावसायिक उन्नति के अवसर
सह-भागीदारी	महत्वपूर्ण कार्य
उपदान	कर्मचारियों की सहभागिता

8.3.1 वित्तीय उत्प्रेरणाएं

वित्तीय उत्प्रेरणाएं कर्मचारियों को उत्प्रेरित करने एवं कार्य के प्रति उनकी लग्न बढ़ाने के लिए प्रदान किए जाने वाले मौद्रिक लाभ होते हैं। वित्तीय उत्प्रेरणाएं मुख्यत: मूलभूत उत्प्रेरणाएं हैं परन्तु कुछ समय के पश्चात जब उनकी मौद्रिक आवश्यकताएं अत्यधिाक संतुष्ट हो जाती हैं तो कर्मचारी इनसे उत्प्रेरित नहीं होते हैं। वित्तीय उत्प्रेरणाएं निम्नलिखित प्रकार की होती हैं:-

वेतन/मजदूरी : अधिकांश कर्मचारियों के लिए यह उनके कार्य का मूलभूत उद्देश्य हैं। वे वेतन अथवा मजदूरी की एवज में अपनी सेवाएं प्रदान करने के लिए तत्पर होते हैं। वेतन अथवा मजदूरी का भुगतान सामान्यत: मासिक रूप में निर्धारित अंतराल पर किया जाता है परन्तु कुछ मामलों में यह दैनिक आधार पर होता है।

भत्ते : भत्ते वह मौद्रिक लाभ होते हैं जो कर्मचारी अथवा कामगार को वेतन के अलावा दिए जाते हैं। भत्तों का भुगतान कर्मचारी द्वारा किए जाने वाले विशेष व्ययों की पूर्ति के लिए किया जाता है। भत्तों में मकान किराया भत्ता, मंहगाई भत्ता, एवं यात्रा भत्ता शामिल होता है।

अनुलाभ : ये गैर-मौद्रिक लाभ होते हैं जो सामान्यत: कुछ वर्गों के कर्मचारियों एवं कुछ अन्य कर्मचारियों को प्रदान किए जाते हैं। अनुलाभ वे लाभ हैं जो कुछ कर्मचारी अपने रोजगार के कारण प्राप्त करते हैं। उदाहरण के तौर पर, किसी कर्मचारी को रोजगार के दौरान नियोजक द्वारा अनुरक्षित किराया मुक्त आवास प्रदान करना अथवा उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने जाने के लिए कार प्रदान करना।

बोनस : यह भी एक मौद्रिक लाभ है जो सामान्यत: कर्मचारियों को किसी एक नियत अंतराल अथवा किन्हीं विशेष लक्ष्यों की प्राप्ति होने पर दिया जाता है। सामान्यत: बोनस का भुगतान नकद किया जाता है। कुछ नियोजक दिवाली बोनस जैसे पारम्परिक बोनस का भुगतान भी करते हैं।

लाभ सहभाजन : लाभ सहभाजन का अर्थ कर्मचारियों के साथ, उनके वेतन के अलावा, लाभ के किसी एक नियत प्रतिशत का सहभाजन करना है। लाभ सहभाजन बोनस से अलग होता है। किसी वर्ष विशेष में लाभ न कमाए जाने पर भी कर्मचारियों को उत्प्रेरित करने एवं प्रसन्न करने के लिए बोनस का भुगतान किया जाता है परन्तु संगठन द्वारा किसी वर्ष विशेष में लाभ अर्जित करने की स्थिति में ही लाभ का सहभाजन प्रोत्साहन के तौर पर कर्मचारियों के साथ किया जाता है।

सह-भागीदारी : सह-भागीदारी लाभ सहभाजन से आगे की एक क्रिया है। सह-भागीदारी के अंतर्गत कर्मचारियों को व्यवसाय में साझेदार अथवा सदस्य मान लिया जाता है। कामगारों के साथ न केवल लाभ का सहभाजन किया जाता है अपितु उन्हें स्वामित्व भी दिया जाता है। इसके अलावा, वे संगठन के नियंत्रण एवं प्रबंधन में भी भागीदारी करते हैं।

उपदान : उपदान को इस प्रकार समझा जा सकता है कि नियोजक द्वारा कर्मचारी को इसका भुगतान संगठन को सेवा प्रदान करने के लिए चुकता किया जाता है। सामान्यतः उपदान का भुगतान कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति के समय किया जाता है।

8.3.2 गैर-वित्तीय उत्प्रेरणाएं

गैर वित्तीय उत्प्रेरण सहायक उत्प्रेरण होते हैं जो तब उपयोग में लाए जाते हैं जब उद्यम में कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के प्रति वित्तीय उत्प्रेरण अधिक सहायक नहीं होते हैं। सामान्यतः ऐसे उत्प्रेरण उद्यम में पद क्रम के अनुसार नियोजित उच्च स्तर के कर्मचारियों को प्रदान किए जाते हैं। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:-

प्रतिष्ठा : प्रतिष्ठा अथवा स्तर संगठन में स्थिति से प्राप्त होता है। इस प्रकार के उत्प्रेरक ऐसे कर्मचारियों के संबंध में बेहतर कारगर होते हैं जो तुलनात्मक रूप से उच्च पद स्तर पर होते हैं तथा जिनकी मूलभूत भौतिक आवश्यकताएं पूर्ण हो चुकी होती हैं। पदक्रम में उच्च स्तर पर काम करने वाले कर्मचारी मौद्रिक लाभों से अपेक्षाकृत कम प्रभावित होते हैं। तथापि, सामाजिक एवं सम्मान की आवश्यकताएं उनके लिए अच्छी उत्प्रेरणा होती है।

सेवा सुरक्षा : सेवा सुरक्षा का अर्थ सेवा में स्थायित्व होना है। अपनी नौकरी खो बैठने से चिंतित कर्मचारी संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति उत्प्रेरित नहीं हो पाते हैं। ऐसे कर्मचारी अपनी उत्तम क्षमताओं के साथ अपने कार्य नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार, जिस कर्मचारी को अपनी सेवा के कार्यकाल की निश्चितता होती है तथा जिसे नौकरी खोने का भय नहीं होता है, वे उच्चतर उत्प्रेरित होते हैं एवं लग्न से कार्य करते हैं।

संगठनात्मक वातावरण : यह संगठन में व्याप्त वातावरण अथवा संस्कृति के संबंध में लागू होता है। किसी संगठन में परस्पर विरोधी संस्कृति में कार्य करने की तुलना में कर्मचारियों किसी संगत वातावरण में कार्य करने के प्रति अधिक उत्प्रेरित होते हैं। संगत कार्य वातावरण का यहां अर्थ अपने सुपरवाइजरों, अधीनस्थों एवं सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध स्थापित होना है।

मान्यता : प्रत्येक कर्मचारी संगठन में अपना स्थान बनाना चाहता है। इस प्रकार कर्मचारियों द्वारा किए जाने वाले प्रयासों को स्वीकृति प्रदान करने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने से उनका उत्साह सुदृढ़ एवं प्रबल हो सकता है।

व्यावसायिक उन्नति के अवसर : प्रत्येक कर्मचारी संगठन में प्रगति चाहता है तथा यदि उन्हें विकास के कोई अवसर प्रतीत नहीं होते हैं तो वे संगठन से बाहर हो सकते हैं। इस प्रकार संगठन में उन्हें व्यावसायिक उन्नति के अवसर प्रदान करना अत्यावश्यक है। व्यावसायिक उन्नति योजना के लिए पदोन्नति एक सरल विधि है।

महत्वपूर्ण कार्य : महत्वपूर्ण कार्य भी कर्मचारियों के लिए उत्प्रेरणा की भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि महत्वपूर्ण कार्यों का सम्बद्ध महत्व अधिक होता है। इससे कर्मचारियों को ऐसा प्रतीत होता है कि वे बेहतर भूमिका का निर्वाह, बेहतर अधिकारों एवं उत्तरदायित्वों से सम्पन्न एवं स्वतंत्र निर्णय लेने वाले पद पर कार्य कर रहे हैं।

कर्मचारियों की सह-भागीदारी : लक्ष्यों के निर्माण में भागीदारी करने वाला कर्मचारी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भी बेहतर प्रयास करता है। कर्मचारियों के सहयोग से स्थापित लक्ष्यों से उन्हें सम्बद्ध करने से वे काफी उत्प्रेरित होते हैं तथा लक्ष्यों की प्राप्ति होने पर उन्हें संतुष्टि मिलती है।

पाठगत प्रश्न 8.1

यह बताएं कि नीचे प्रस्तुत विवरण में से क्या सत्य अथवा असत्य है:

1. उत्प्रेरणा नकारात्मक अथवा सकारात्मक दोनों ही प्रकार की हो सकती है।
2. उत्प्रेरण की प्रक्रिया मात्र एक बार की जाती है।
3. अनुलाभ कर्मचारियों को दिए जाने वाले मौद्रिक लाभ होते हैं।
4. व्यावसायिक उन्नति के अवसर गैर वित्तीय उत्प्रेरणा हैं।
5. उत्प्रेरणा से लक्ष्य उन्मुख व्यवहार निर्मित्त होता है।

8.4 उत्प्रेरणा के सिद्धांत

उद्यमियों से उद्यम के लिए भिन्न संसाधनों के निर्माण की अपेक्षा की गई है। ऐसे संसाधान मुख्यत: दो प्रकार के हो सकते हैं : मानव संसाधान एवं गैर-मानव संसाधान। मानव एवं गैर-मानव संसाधनों में मुख्य अंतर यह है कि गैर-मानव संसाधनों के लिए पूंजी निवेश की आवश्यकता पड़ती है जिससे इनका उपयोग तभी से प्रारंभ किया जा सकता है जब उद्यमी इनका भुगतान करने के लिए तत्पर होगा। मानव संसाधनों के लिए न केवल पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है अपितु इसके लिए अपेक्षित कौशल, क्षमता एवं कार्य करने की इच्छा की आवश्यकता भी होती है। जहां एक ओर क्षमता एवं कार्य कौशल की प्राप्ति शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से की जा सकती है वहीं कार्य करने की इच्छा की प्राप्ति केवल उत्प्रेरण से ही प्राप्त हो सकती है। वित्तीय अथवा गैर-वित्तीय उत्प्रेरणाओं से प्राप्त होने वाली उत्प्रेरणा के बारे में हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं परन्तु उत्प्रेरक द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली जिस निश्चयकारी क्षमता का उपयोग किया जाना है उसका निर्धारण अनुभव से एवं स्थिति के

टिप्पणी

आधार पर ही किया जा सकता है। मैक्कल्लैंड एवं मास्लो ने ऐसी स्थितियों का समावेश औपचारिक तौर पर उत्प्रेरण सिद्धांतों में करने का प्रयास किया है:-

8.4.1 मैक्कल्लैंड का सिद्धांत

डेविड मैक्कल्लैंड ने तीन आवश्यकताओं का मॉडल निर्मित किया है। उन्होंने मानव आवश्कताओं को तीन भागों में विभाजित किया है जबकि मास्लो ने आवश्यकताओं की तारतम्यता के सिद्धांत में आवश्यकताओं का वर्गीकरण पांच भागों में किया है। मैक्कल्लैंड के सिद्धांत में उत्प्रेरणा की प्राप्ति तीन प्रकार की आवश्यकताओं से होने के संबंधा में विचार किया गया है, इसी के बारे में हम यहां चर्चा कर रहे हैं :-

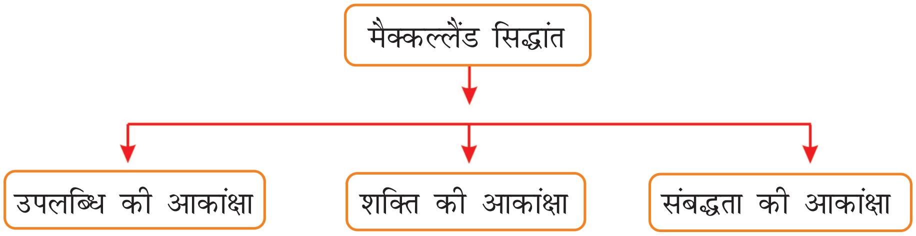

1. **उपलब्धि की आकांक्षा :** अन्यों की तुलना में कुछ बेहतर एवं कार्यकुशल ढंग से कार्य करने की ललक। उपलब्धि की उच्चतर अपेक्षा करने वाले लोग अपने लक्ष्यों की सम्बद्धता मानसिक संतुष्टि से कर लेते हैं तथा इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वैयक्तिक ध्यान देते हैं। परन्तु उपलब्धि की ऐसी ललक प्रत्येक व्यक्ति में नहीं हो सकती है तथा सांस्कृतिक कारक भी आवश्यकता के स्तर को प्रभावित कर सकते हैं। मैक्कल्लैंड का यह मानना है कि उपलब्धि की उच्चतर ललक वाले लोग कार्य को बेहतर ढंग से करने की कसौटी पर अन्यों से अपनी तुलना करते हैं। वे चुनौतीपूर्ण कार्य करना चाहते हैं और अपने निष्पादन में सुधार के लिए त्वरित फीडबैक प्राप्त करना पसंद करते हैं। इसके अलावा, ऐसे व्यक्ति स्वाभाविक रूप से लक्ष्योन्मुख होते हैं तथा यह आवश्यक नहीं होता कि उनमें आर्थिक फल प्राप्त करने की आकांक्षा भी हो।

2. **शक्ति की आकांक्षा:** शक्ति की आकांक्षा अन्यों पर नियंत्रण करने की इच्छा से प्रतिबिंबित होती है। यह दूसरों पर हावी होने एवं व्यक्तियों को निर्देशित करने में सक्षम होने की इच्छा होती है। शक्ति की आकांक्षा वाले लोग अन्यों पर हावी होकर प्रसन्न होते हैं तथा वे प्रतिष्ठा प्रदान करने वाले कार्यों को वरीयता देते हैं। शक्ति की उच्चतर आकांक्षा को संस्थानिक शक्ति एवं वैयक्तिक शक्ति की आवश्यकता में वर्गीकृत किया जा सकता है। वैयक्तिक शक्ति की अत्यधिाक आकांक्षा करने वाले व्यक्ति ऐसी शक्ति का उपयोग वैयक्तिक लाभ के लिए करते हैं जबकि संस्थानिक शक्ति की आकांक्षा वाले लोग ऐसी शक्ति का उपयोग संगठन की बेहतरी के लिए करते हैं।

3. **सम्बद्धता की आंकाक्षा :** सम्मान प्राप्त करने एवं लोगों के बीच लोकप्रिय होने की आकांक्षा को सम्बद्धता की आकांक्षा कहा जाता है। सम्बद्धता की उच्च आकांक्षा करने वाले लोग किसी प्रकार की प्रतिस्पर्धा के स्थान पर अधिक संसक्त एवं सहयोग वाली स्थिति को वरीयता देते हैं। सम्बद्धता की उच्च आकांक्षा वाले व्यक्ति आपसी वैयक्तिक सम्पन्नता को बनाए रखने एवं सुदृढ़ करने के लिए लोगों के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को आंतरिक संतुष्टि तब प्राप्त होती है जब वे अन्यों के साथ सम्बद्धता स्थापित कर लेते हैं परन्तु ऐसी सम्बद्धता कभी कभार लक्ष्य की प्राप्ति की प्रक्रिया को पूरा करने में बाधा बन सकती है।

8.4.2 मास्लो का आवश्यकताओं की तारतम्यता का सिद्धांत

आवश्यकता की तारम्यता के सिद्धांत के निर्माण का श्रेय अब्राहम एच मास्लो को प्राप्त है जिन्होंनें इस आवश्यकता आधारित सिद्धांत का निर्माण किया है। मास्लो ने आवश्यकताओं पर आश्रित उत्प्रेरणा के प्रक्रियाबद्ध तालमेल की व्याख्या की है। असंख्य आवश्यकताओं वाला कोई भी मनुष्य अपनी संतुष्टि के लिए अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति से पूर्व अपनी कुछ आवश्यकताओं को चुनकर पहले उनकी पूर्ति करना पसंद करता है। इस प्रकार अत्यधिक महत्व वाली आवश्यकता की ओर पहले ध्यान दिया जाता है तथा उसके पश्चात अपेक्षाकृत कम महत्व वाली आवश्यकताओं की पूर्ति से संतुष्टि प्राप्त की जाती है। मास्लो के अनुसार उत्प्रेरण की यह प्रक्रिया उस मान्यता से प्रारंभ होती है जिनकी आवश्यकता की पूर्ति के प्रति व्यक्ति का व्यवहार निर्देशित है। मास्लो ने यह अवधारणा भी प्रस्तुत की है कि आवश्यकताएं कभी पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं होती हैं। एक आवश्यकता की पूर्ति के पश्चात दूसरी आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है। इन आवश्यकताओं वरीयता के अनुसार क्रमबद्ध किया जा सकता है क्योंकि जब कोई आवश्यकता संतुष्टि के पश्चात उत्प्रेरण का कारक नहीं रहती है तो उसका स्थान कोई अन्य आवश्यकता (आवश्यकताएं) प्राप्त कर लेती हैं। आवश्यकताओं की तारतम्यता के इस सिद्धांत को नीचे चार्ट के माध्यम से समझाया गया है:

आत्म-संतोष की आवश्यकताएं
अहं पूर्ति की आवश्यकताएं
सामाजिक आवश्यकताएं
संरक्षा एवं सुरक्षा की आवश्यकताएं
भौतिक आवश्यकताएं
संतुष्टि का क्रम भौतिक आवश्यकताओं से आत्म-संतोष की ओर बढ़ रहा है।

1. **भौतिक आवश्यकताएं :** भोजन, आश्रय, वस्त्र, वायु एवं जल जैसी ये आवश्यकताएं मनुष्य की उत्तरजीविता से संबंधित हैं। उत्प्रेरणा सिद्धांत के लिए ये आवश्यकताएं प्रारंभ बिंदु हैं।

2. **संरक्षा एवं सुरक्षा की आवश्यकताएं :** प्रत्येक कोई अपने जीवन के आर्थिक स्तर को बनाए रखने के लिए किसी एक स्तर की सुरक्षा चाहता है। संरक्षा की आवश्यकता में भौतिक एवं आर्थिक संरक्षा शामिल है। भौतिक आवश्यकताएं बीमारियों एवं दुर्घटना से संरक्षा जबकि आर्थिक संरक्षा आय एवं वृद्धावस्था के लिए किए जाने वाले प्रावधानों से संबंधित है।

3. **सामाजिक आवश्यकताएं :** मानव एक सामाजिक पशु है। वह अपने भावों के सहभाजन, अपने मत एवं विचारों के विनियम, अपनी प्रसन्नताओं एवं दु:ख के संबंध में संवाद करना चाहता है। इस प्रकार, जैसे ही प्रथम दो आवश्यकताएं पूरी हो जाती है तो हम किसी प्रकार का साहचर्य ढूंढना प्रारंभ कर देते हैं।

4. **अहं तुष्टि की आवश्यकताएं:** अहं तुष्टि की आवश्यकताएं दो प्रकार की होती हैं। ये आंतरिक अथवा बाह्य स्वरूप में स्थापित होती हैं। आंतरिक अभिविन्यास वाली आवश्यकताओं में आत्म-विश्वास, ज्ञान एवं क्षमता शामिल होती है जबकि बाह्य अभिविन्यास वाली आवश्यकताएं किसी स्तर अथवा प्रतिष्ठा के ऐसे भाव से संबंधित होती हैं जो कोई व्यक्ति किसी / अपनी स्थिति के प्रभाव से प्राप्त करना चाहता है।

5. **आत्म-संतोष की आवश्यकताएं :** इस आवश्यकता की पूर्ति जीवन के एक ध्येय के रूप में पूरी की जाती है। इस आवश्यकता की संतुष्टि प्राप्त होने पर मनोवैज्ञानिक संतोष मिलता है। चार आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने के पश्चात मनुष्य की इच्छा किसी वैयक्तिक उपलब्धि के लिए जागृत होती है।

पाठगत प्रश्न 8.2

नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित विकल्प का चयन करें :

1. मैक्कल्लैंड ने अपने उत्प्रेरण सिद्धांत में कितनी नीचे दी गई संख्या में से कितनी आवश्यकताओं का निर्धारण किया है :

   क) 1 ख) 2

   ग) 3 घ) 4

2. निम्नलिखित में से कौन सी आवश्यकता तारतम्यता के सिद्धांत के अनुसार आवश्यकता नहीं है?

   क) भौतिक आवश्यकताएं ख) सम्मान की आवश्यकताएं

   ग) स्वच्छता कारक घ) अहं तुष्टि की आवश्यकताएं

8.5 अधिकार नियंत्रण

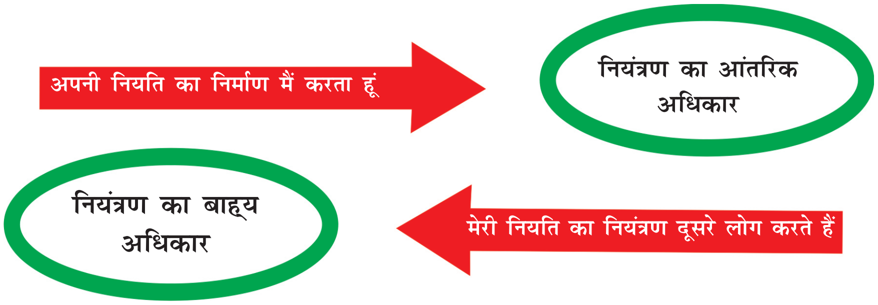

अधिकारिता के नियंत्रण का प्रसार किसी व्यक्ति की इस मान्यता पर आधारित होता है कि वह अपने जीवन में की गई क्रियाओं से प्राप्त होने वाले परिणामों का नियंत्रण कर सकता है। किसी व्यक्ति को अपने आंतरिक अधिकारों अथवा बाह्य अधिकारों पर नियंत्रण प्राप्त हो सकता है। आंतरिक अधिकारों पर नियंत्रण करने वाले व्यक्ति ऐसा मानते हैं कि वे अपनी नियति का निर्माण स्वयं करते हैं। अपने जीवन में अपने कृत्यों के परिणाम के रूप में उत्पन्न होने वाली स्थिति के प्रति वे आस्था रखते हैं। दूसरी तरु, बाह्य अधिकारिता नियंत्रण वाले व्यक्ति स्वयं अपनी क्रियाओं के स्थान पर बाह्य कारकों को दोष देते हैं अथवा उनकी सराहना करते हैं। अधिकारिता नियंत्रण की अवधरणा को एक सरल उदाहरण के माधयम से समझा जा सकता है। मान लीजिए कोई व्यक्ति किसी जीर्ण रोग से पीड़ित है तथा डाक्टर ने उसे कुछ दवाएं लेने एवं स्वास्थ्यकारक जीवनशैली अपनाने तथा कुछ व्यायाम करने का परामर्श दिया है। अब, जब एक माह के पश्चात वह व्यक्ति कुछ बेहतर एवं स्वस्थ हो जाता है। अब यदि वह व्यक्ति व्यायाम एवं विधिवत जीवनशैली के उपयोग के लिए स्वयं की सराहना करता है तो इसे आंतरिक अधिकारिता का नियंत्रण कहा जा सकता है क्योंकि वह व्यक्ति परिणामों का लाभ स्वयं को दे रहा है। यदि वह व्यक्ति डाक्टर द्वारा किए गए सही उपचार एवं सुझाए गए भोजन की सराहना करता है तो इसे रोगी को बाह्य अधिकारिता पर नियंत्रण प्राप्त होना माना जा सकता है।

उपलब्धि उत्प्रेरणा

नीचे प्रस्तुत चित्र में आंतरिक अधिकारिता नियंत्रण एवं बाह्य अधिकारिता नियंत्रण के बीच की भिन्नताओं का चित्रण किया गया है।

आपका अधिकारिता नियंत्रण क्या है	
मेरे कारण कार्यों का सम्पादन होता है।	ऐसा कुछ नहीं है जो मैं अपने भविष्य के लिए कर सकता हूं
देखो मैं क्या कर सकता हूं।	मैं अपने भविष्य का निर्धारण कर सकता हूं।
मैं अपने भविष्य का निर्धारण कर सकता हूं।	ऐसा सब कुछ मेरे साथ ही क्यों होता है।

आंतरिक अधिकारिता नियंत्रण	अधिकारिता का बाह्य नियंत्रण
आपके कारण कार्यों का संपादन होता है	आपके साथ घटने वाली क्रियाएं

8.6 एसडब्ल्यूओटी विश्लेषण / आत्म विश्लेषण

SWOT के विश्लेषण का श्रेय अल्बर्ट हम्फरे को प्राप्त है जिन्होंने अनेक उच्च संगठनों के डेटा का संग्रह करके स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में ये कारण ज्ञात करने के उद्देश्य से अनुसंधान किया था कि संगठनात्मक योजनाएं असफल क्यों हो जाती हैं।

उनके अनुसंधान का परिणाम प्रारंभ में SOFT (Satisfactory , Opportunity, Fault एवं Threat अर्थात संतोषप्रदत्ता, अवसर, अपूर्णता एवं आशंका) के रूप में परन्तु अंततः इसे SWOT का नाम दिया गया।

SWOT विश्लेषण व्यक्तियों अथवा संगठनों में Strengths,Weaknesses, Opportunities एवं Threats (शक्ति, अशक्ति, अवसर एवं आशंका) के संज्ञान पर आधारित एक तकनीक है। यहां हम व्यक्तियों के संबंध में SWOT विश्लेषण पर चर्चा करके यह ज्ञात करेंगे कि व्यक्ति अपनी शक्ति, अशक्ति, अवसर एवं आशंका (Strengths,Weaknesses, Opportunities एवं Threats) का संज्ञान करने के लिए इस तकनीक का उपयोग कैसे कर सकते हैं? किस विधि से कोई अवसरों को पहचान कर उनका दोहन कर सकता है एवं आशंकाओं को संज्ञान में लेकर उनसे अपना बचाव कर सकता है?

SWOT विश्लेषण की सहायता से हम किसी एक की अन्यों पर प्रतिस्पर्धी श्रेष्ठता की पहचान कर सकते है। शक्तियों एवं अशक्तियों की उत्पति आंतरिक रूप से होती है तथा अवसरों एवं आशंकाओं का संज्ञान बाह्य रूप से किया जा सकता है। इसमें से सर्वोत्तम की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को आंतरिक कारकों एवं बाह्य कारकों के मध्य उपयुक्तता का निर्माण करना चाहिए। SWOT कुछ नहीं है यह मात्र तकनीक में उपयोग लाई गई चार शक्तियों के प्रथमाक्षर हैं जिनके बारे में नीचे चर्चा की गई है :

शक्तियां : किसी व्यक्ति की अन्यों पर श्रेष्ठता होना है।

अशक्तियां : किसी व्यक्ति की अन्यों के साथ संबध में अलाभकर स्थिति होना है।

अवसर : ये वो शक्तियां हैं जिनका व्यक्ति दोहन कर सकता है अथवा लाभ उठा सकता है।

आशंका : यह व्यक्ति के लिए समस्याएं उत्पन्न करती हैं।

किसी व्यक्ति के संबंध में SWOT विशेषण का लाक्षणिक चित्रण नीचे प्रस्तुत किया गया है:

शक्तियां :

1. अन्यों पर मेरी लाभप्रद स्थितियां क्या हैं?
2. वे कौन से कार्य हैं जो मैं अन्यों से बेहतर कर सकता हूं?
3. अन्यों से बेहतर कौन सा कौशल और संसाधन मेरे पास हैं?
4. क्या प्राधिकार प्राप्त व्यक्तियों के साथ मेरे कोई सम्पर्क हैं?
5. अन्यों को मुझमें कौन सी शक्तियां दिखाई देती हैं?

अशक्तियां :

1. अन्यों के साथ संबंधों में मेरी प्रतिस्पर्धात्मक अशक्तियां क्या हैं?
2. मेरी घातक विशिष्टताएं क्या हैं?
3. अन्यों को मुझमें कौन सी अशक्तियां दिखाई देती हैं?
4. क्या मुझे अपने कौशल और अपनी शिक्षा में संवर्धन करना चाहिए?

SWOT

अवसर :

1. कोई व्यक्ति अपना स्थान छोड़ रहा है जो मुझे प्राप्त कर लेना चाहिए।
2. कौन सी नई विधियां मेरी सहायता कर सकती हैं?
3. दूसरे लोग क्या गलतियां कर रहे हैं?
4. कुछ मामलों के लिए मेरे पास कौन से संभावित समाधान हो सकते हैं?
5. कौन सा अतिरिक्त अनुभव मैं प्राप्त कर सकता हूं?

आशंका :

1. वे कौन सी बाधाएं हैं जो मुझे आगे नहीं बढ़ने दे रही हैं?
2. क्या मैं बदलाव अथवा विकास से आशंकित हूं?
3. क्या कोई व्यक्ति मुझे चुनौती दे रहा है?
4. क्या मैं परेशान हूं अथवा मैं सृष्टजनात्मक कार्य नहीं कर सकता?

सैद्धांतिक रूप से SWOT विश्लेषण करना सरल प्रतीत हो रहा है परन्तु ऊपर प्रस्तुत उदाहरणों से यह भी देखा गया है कि किसी व्यक्ति द्वारा प्रभावी SWOT विश्लेषण किया जा सकता है। SWOT विश्लेषण / आत्म विश्लेषण से विश्वनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए अनेक तथ्यों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। ध्यान दिए जाने वाले कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं:-

1. अपने प्रति सत्य प्रस्तुति करें। अपनी शक्तियों के संबंध में अधिक आंकाक्षा नहीं की जानी चाहिए और न ही स्वयं के बारे में अनावश्यक न्यून अनुमान आंकने चाहिए।
2. यह ध्यान रखना चाहिए कि SWOT विश्लेषण एक प्रकार का तुलनात्मक विश्लेषण है जिसका अर्थ यह है कि यह सदैव किसी अन्य के साथ संबद्धता के लिए किया जाता है। कोई ऐसा जो आपका प्रतिस्पर्धी हो।
3. आपके प्रतिस्पर्धी को भी जो अवसर उपलब्ध हैं वे अवसर आपके लिए उपयोगी नहीं होते। तदनुसार, विश्लेषण करने के दौरान विशिष्ट अवसरों को ही शामिल किया जाना चाहिए। यही नियम आशंकाओं के लिए भी लागू होता है। समान आशंका को विशिष्ट आशंका नहीं माना जाना चाहिए।
4. किसी प्रकार का अतिरेक अथवा न्यून विश्लेषण मत करें।

पाठगत प्रश्न 8.3

नीचे प्रत्येक प्रश्न के संबंध में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित विकल्प का चयन करें :

1. आंतरिक अधिकारिता नियंत्रण का अर्थ यह है कि

   क) कोई भी मेरी नियति का नियंत्रण नहीं कर सकता है

   ख) मैं अपनी नियति का नियंत्रण कर सकता हूं।

   ग) मेरे माता पिता मेरी नियति का नियंत्रण करते हैं।

   घ) मेरे मित्र मेरी नियति का नियंत्रण करते हैं।

2. SWOT मॉडल में निम्नलिखित शामिल नहीं है

   क) अशक्ति

   ख) अवसर

   ग) शक्ति

   घ) व्यवसाय

3. अपनी खराब आदतों अथवा घातक विशेषताओं के संबंध में SWOT के अंतर्गत विचार करना

   क) अपनी शक्ति

   ख) अपनी अशक्ति

   ग) अवसर

   घ) आशंकाएं

आपने क्या सीखा

- उत्प्रेरणा से उत्साह की उत्पति होती है जिसका अर्थ किसी उद्देश्य अथवा विचार अथवा किसी प्रोत्साहन से किसी क्रिया को करना अथवा न करना है।
- यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो सकारात्मक अथवा नकारात्मक भी हो सकती है।
- कोई व्यक्ति वित्तीय तथा/अथवा गैर-वित्तीय उत्प्रेरणा से उत्प्रेरित हो सकता है।
- किसी कर्मचारी को उत्प्रेरित करने के लिए आवश्यक उत्प्रेरण का स्वरूप व्यक्ति की स्थिति एवं स्तर पर निर्भर है।
- उत्प्रेरणा के दो सिद्धांत हैं। मैक्कलैंड का तीन आवश्यकताओं वाला सिद्धांत तथा मास्लो का आवश्यकताओं की तारम्यता का सिद्धांत।

- मैक्कलैंड ने तीन आवश्यकता मॉडल प्रस्तुत किए हैं जो उपलब्धि की आवश्यकता, शक्ति की आवश्यकता तथा संबद्धता की आवश्यकता पर आधारित हैं।
- मास्लो के आवश्यकताओं की तारतम्यता वाले सिद्धांत में आवश्यकताओं के पांच वर्ग : भौतिक आवश्यकताएं, संरक्षण एवं सुरक्षा आवश्यकताएं, सामाजिक आवश्यकताएं, अह्म तुष्टि की आवश्यकताएं एवं आत्म-संतुष्टि की आवश्यकताएं, में विभाजित किया गया है।
- अधिकारिता नियंत्रण का विस्तार वह विस्तार है जिसमें व्यक्ति ऐसा मानने लगता है कि वह जीवन में प्राप्त होने वाले परिणामों का नियंत्रण कर सकता है।
- SWOT विश्लेषण एक तकनीक आधारित विश्लेषण है जिसमें किसी व्यक्ति अथवा संगठन की शक्तियों, अशक्तियों, अवसरों एवं आशंकाओं पर विचार किया जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. किस प्रकार उत्प्रेरणा सकारात्मक अथवा नकारात्मक, दोनों, प्रकार की हो सकती है?
2. कालेज से हाल ही में नए नए भर्ती हुए कर्मचारी के लिए कौन से उत्प्रेरण उत्तम हो सकते हैं?
3. क्या किसी संगठन में उच्च स्तर पर कार्यरत कर्मचारियों को वित्तीय अथवा गैर-वित्तीय उत्प्रेरणा से उत्प्रेरित किया जाना चाहिए?
4. लाभ सहभाजन अथवा सह-भागीदारी में से कौन सा उत्प्रेरण उत्तम है और क्यों है?
5. संरक्षा तथा आत्म तुष्टि की आवश्यकताओं की तारतम्यता में से संतुष्टि का पहला स्तर कौन सा है?
6. अधिकारिता नियंत्रण क्या है? किस प्रकार अधिकारिता नियंत्रण प्राप्त कोई व्यक्ति बाह्य अधिकारिता नियंत्रण प्राप्त किसी व्यक्ति से भिन्न होता है?
7. आप आत्म विश्लेषण के लिए विश्लेषण को एक टूल के रूप में उपयोग करने की व्याख्या कैसे करेंगे?
8. किन्ही भी दो वित्तीय अथवा गैर-वित्तीय उत्प्रेरणाओं का वर्णन करें।
9. मैक्कलैंड के सिद्धांत की व्याख्या करें।
10. आवश्यकताओं की तारतम्यता के सिद्धांत के अनुसार अन्य आवश्यकताओं की तुलना में कोई एक आवश्यकता अधिक महत्वपूर्ण होती है। मास्लो के आवश्कताओं की तारम्यता के सिद्धांत के संबंध में पिरामिडनुमा संरचना की सहायता से इस तथ्य की व्याख्या करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. सत्य 2. असत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. सत्य

8.2

1. (ग) 2. (ख)

8.3

1. (ख) 2. (घ) 3. (ख)

आपके लिए क्रियाकलाप

1. अपना स्वयं का SWOT विश्लेषण करके अपनी शक्तियों, अशक्तियों, अवसरों एवं आशंकाओं की सूची तैयार करें। आप विश्लेषण के लिए स्वयं अपना परीक्षण कर सकते हैं।
2. मास्लो के सिद्धांत का एक पोस्टर डिजाइन करें तथा उसमें अपने पंसदीदा उद्यम के उदाहरणों का उल्लेख करें।

अवधारणा नक्शे

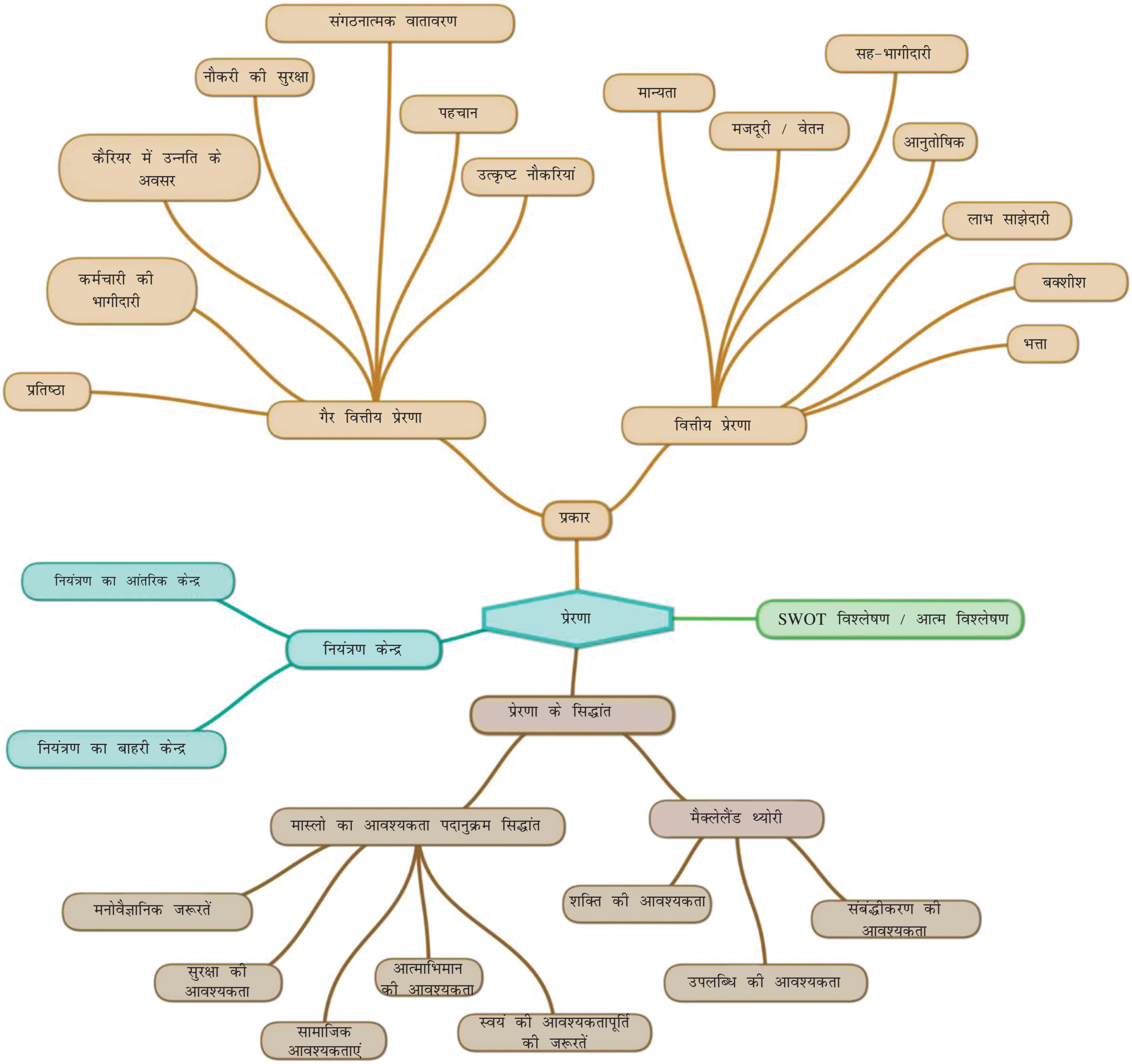
संगठनात्मक वातावरण
नौकरी की सुरक्षा
पहचान
कैरियर में उन्नति के अवसर
उत्कृष्ट नौकरियां
कर्मचारी की भागीदारी
प्रतिष्ठा
गैर वित्तीय प्रेरणा
मान्यता
सह-भागीदारी
मजदूरी / वेतन
आनुतोषिक
लाभ साझेदारी
बक्शीश
भत्ता
वित्तीय प्रेरणा
प्रकार
प्रेरणा
SWOT विश्लेषण / आत्म विश्लेषण
नियंत्रण का आंतरिक केन्द्र
नियंत्रण केन्द्र
नियंत्रण का बाहरी केन्द्र
प्रेरणा के सिद्धांत
मास्लो का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत
मैक्लेलैंड थ्योरी
मनोवैज्ञानिक जरूरतें
सुरक्षा की आवश्यकता
आत्माभिमान की आवश्यकता
सामाजिक आवश्यकताएं
स्वयं की आवश्यकतापूर्ति की जरूरतें
शक्ति की आवश्यकता
संबंद्धीकरण की आवश्यकता
उपलब्धि की आवश्यकता

9

सफल उद्यमी

पिछले पाठ में आपने उद्यमियों के बारे में यह ज्ञान प्राप्त किया है कि वे अत्यधिक उत्प्रेरित व्यक्ति होते हैं जो सदैव किसी भी जोखिम का वहन करने के लिए और अवसरों की खोज के लिए तत्पर रहते हैं। सामान्यत:, जिसे कोई व्यक्ति एक समस्या अथवा कोई बाधा मानता है वह उद्यमी के लिए कोई संभावित समाधान खोजने का एक अवसर होती है। ऐसा भी कहा जाता है कि इसके विचार उद्यमियों के मन में उत्पन्न होते हैं क्योंकि वे इसके प्रति काफी उत्सुक रहते हैं एवं निरंतर अवसरों की खोज में लगे रहते हैं।

इस पाठ में भिन्न पृष्ठभूमि वाले अत्यधिक सफल उद्यमियों के संबंध में मामला अध्ययन किए गए हैं। इनसे आप यह समझ पाएंगे कि जब किसी उद्यमी के सम्मुख कोई कठिनाई आती है तो वह उसका दबाव महसूस नहीं करता है; इसके बजाए वे ऐसी कठिनाईयों के निवारण के लिए समाधान की खोज में लग जाते हैं। इससे न केवल उनमें आत्मविश्वास जागृत होता है अपितु वे अपने आसपास के लोगों के लिए भी सुधार क्रियाएं कर पाते हैं। इस प्रकार, उद्यमी कड़ी मेहनत करके स्वयं को सुदृढ़ बनाने के साथ साथ समाज को भी सुदृढ़ करते हैं।

सफल उद्यमियों के मामला अध्ययन से पूर्व आइए, हम यह ज्ञात करते हैं कि सफल उद्यमियों की विशेषताएं क्या होती हैं। आपको उद्यमी के लक्षणों का ज्ञान प्राप्त हो गया है। (संदर्भ पाठ-2)

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- उद्यमियों की सफल जीवन कथाओं में से निष्कर्ष प्राप्त करते हैं; तथा
- समाज की विचारधारा एवं विषमताओं में सुधार के उपाय सुझाने हैं।

टिप्पणी

9.1 सफल उद्यमियों की विशिष्टताएं

- **आत्म प्रेरित**

  उद्यमी अपनी उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए अत्यधिक उत्प्रेरित होते हैं। इस उत्प्रेरणा से

- **सफल उद्यमी**

  वे स्वयं अपने द्वारा स्थापित अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। वे अपने कार्यों के सफल निष्पादन के प्रति निश्चिंत होते हैं तथा अपने विचारों एवं क्रियाओं के संबंध में कभी भी किसी अन्य के विचारों से प्रभावित नहीं होते हैं।

- **सृजनात्मकता**

  उद्यमियों की सोच सृजनात्मक होती है। इससे वे अन्यों को साधारण प्रतीत होने वाली स्थितियों में भी अवसर खोज लेते हैं। वे अपरिचित क्षेत्रों में कार्य करते हैं और ऐसी परियोजनाओं को स्वीकार करते हैं जिनमें उनके वांछित क्षेत्र के लिए अनूठे समाधान उन्हें मिल सकें।

- **यथास्थिति को अस्वीकार करना**

  सफल उद्यमी यथास्थिति अर्थात कार्यों के विद्यमान स्तर को स्वीकार नहीं करते हैं। उनमें समस्याओं को मात्र शांत होकर देखते रहने और उनके संबंध में शिकायत करने के स्थान पर उनमें बदलाव लाने की लालसा होती है। वे समस्याओं का समाधान खोजने में विश्वास रखते हैं।

- **अटल उत्साह**

  उद्यमियों के आत्मविश्वास का स्तर काफी उच्च होता है वे अत्यधिक आशावादी होते हैं। किसी समस्या अथवा किसी कार्य का संज्ञान करने के पश्चात वांछित परिणाम को प्राप्त करने के लिए अपने कौशल एवं विचारों के साथ जुट जाते हैं और उन्हें फलीभूत होता देखना चाहते हैं। उनमें परियोजना एवं उत्पादन की उपयोज्यता के बारे में लोगों को प्रभावित करने की क्षमता भी होती है। उनकी अटलता उन्हें कड़ी मेहनत के लिए प्रोत्साहित करती है और वे उत्तम प्रयास करते हैं।

- **मुक्त विचारधारा**

  उद्यमियों की विचारधारा मुक्त होती है और उनमें किसी भी स्थिति अथवा परिस्थिति में अवसरों को प्राप्त करने का भाव होता है और उनकी यही विचारधारा निरंतर प्रबल होती जाती है। उनमें अपने आसपास सब कुछ देखने की क्षमता होती है तथा इसी से वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर लेते हैं।

- **श्रवण क्षमता**

  उद्यमी न केवल अन्य लोगों को सुनते हैं कि वे क्या कह रहे हैं परन्तु वे यह भी समझते

हैं कि लोग कहना क्या चाह रहे हैं। वे बहुत अच्छे श्रोता होते हैं और अवधारणाओं का उपयोग वे अपने उद्यम की बेहतरी के लिए करते हैं।

- **जवाबदेही एवं वचनबद्धता**

उद्यमी जिन क्रियाओं का उत्तरदायित्व अपने हाथ में लेते हैं उसके परिणामों के प्रति वे पूरी तरह से तैयार होते हैं। सफल उद्यमियों की दीर्घकालिक वचनबद्धताओं को उनकी उत्तम गुणवत्ता माना गया है। वे महीनों तक गहन ध्यान केन्द्रित करने में सक्षम होते हैं तथा अपनी क्रियाओं के प्रति वे स्वयं को जवाबदेह मानते हैं।

- **सत्यनिष्ठा**

सर्वाधिक मूल्यवान गुणवत्ता जो किसी उद्यमी मे होती है वह यह है कि वे अपनी साख का निर्माण पूर्ण सत्यनिष्ठा से करने के लिए लालायित होते हैं। सफल उद्यमी अपने प्रति विश्वास रखने वाले अनेक लोगों पर आश्रित होते हैं जो उनके साथ कार्य करने के लिए तत्पर हैं, उनके उद्यम के उत्पादों और सेवाओं के प्रति विश्वास रखते हैं तथा कठिन समय में भी निष्ठावान रहते हैं। व्यापार की दीर्घकालिक सफलता का आधार विश्वास होता है।

पाठगत प्रश्न 9.1

1. यह बताएं कि नीचे प्रस्तुत विवरण में से क्या सत्य अथवा असत्य है:

   1) सफल उद्यमियों की विचारधारा मुक्त होती है।

   2) सफल उद्यमी यथास्थिति को स्वीकार नहीं करते हैं।

   3) अन्यों का सुनना सफल उद्यमियों का स्वभाव नहीं होता है।

   4) सफल उद्यमी सृजनात्मक होते हैं।

9.2 मामला अध्ययन (केस स्टडी)

इस पाठ में उल्लेख किए गए मामला अध्ययनों के अलावा अनेक ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं जो समाज में व्याप्त हैं। चयन किए गए मामला अधययन मात्र भिन्न पृष्ठभूमि वाले अत्यधिक सफल उद्यमियों के उदाहरण प्रस्तुत करने के उद्देश्य के लिए हैं।

9.2.1 पहली पीढ़ी के उद्यमी

रमेश बाबू

जीवन में कभी भी किसी को इतना कुछ प्राप्त नहीं हो सकता जितना रमेश को प्राप्त हुआ है जो कभी नाई हुआ करते थे परन्तु आज उनके पास राल्स रॉयस गाड़ी है। वे मात्र सात वर्ष के थे जब बंगलौर में उनके नाई पिता उनके लिए केवल एक नाई की दुकान छोड़कर संसार से विदा हो गए थे। रमेश बाबू की माता नाई की दुकान नहीं चला सकती थी इसलिए उनकी माता ने यह दुकान पांच रूपए प्रतिदिन के किराए पर दे दी और स्वयं अपने बच्चों के लालन पोषण के लिए खाना पकाने के काम करने लग गई।

अपने जीवन में मात्र एक दिन के भोजन की व्यवस्था करने के भाव के साथ साथ जब वे बड़े हो रहे थे तो वे यह निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें अपनी पढ़ाई आगे करनी चाहिए या फिर परिवार की आय बढ़ाने के लिए अपनी माता की सहायता करनी चाहिए।

अपनी माता के दबाव से जब रमेश प्री-यूनिवर्सिटी स्तर की पढ़ाई कर रहे थे तो उन्होंने इलैक्ट्रानिक्स में डिप्लोमा प्राप्त कर लिया था, उनके पिता की दुकान तब भी थोड़ा सा किराया कमा रही थी।

वर्ष 1989 में उन्होंने अपना खुद का सैलुन खोलने का निर्णय लिया और उसका नाम इनर स्पेस रखा। रमेश सदैव अपनी खुद की कार होने का स्वप्न देखा करते थे तथा इसी से प्रेरित होकर उन्होंने मारूती ओमनी खरीदी और उसके किराए पर देना शुरू कर दिया। उनकी उत्कंठा अब कार-रेंटल व्यवसाय में सफलता हासिल करने की दिशा में मुड़ गई थी।

सरकार द्वारा पर्यटन सेक्टर को बढ़ावा दिए जाने के पश्चात उन्होंने वर्ष 2004 में 'रमेश टूर्स एंड ट्रैवल्स' के नाम से लक्जरी कार किराए पर देने एवं सैल्फ-ड्राइव व्यापार प्रारम्भ किया। तब से अपने व्यापार का विस्तर वे निरंतर कर रहे हैं।

वे कहते हैं कि ''मैंने अपनी कारें इंटेल तथा अन्य स्थानीय छोटे ग्राहकों को किराए पर देने से शुरूआत की थी। सब कुछ ठीक चलने लगा तो हिम्मत करके अपनी पहली ई-क्लास मर्सिडिज खरीद ली।'' ऐसा इसलिए किया क्योंकि उस समय में कोई भी टैक्सी रेंटल सर्विस लक्जरी कारें किराए पर नहीं देती थी, यहां तक बड़े ग्राहकों तक को।

इसके पश्चात रमेश ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। अनेक राजनीतिज्ञ एवं बॉलीवुड के स्टार्स उनके ग्राहक हैं। उनके पास 75 लक्जरी कारों का बेड़ा है जिसमें मर्सिडिज, बीएमडब्ल्यू, ऑडी, पांच एवं 10 सीटों वाली लक्जरी वैन एवं सबसे आकर्षक एक रॉल्स रायस है। वे अपनी

गाडियाँ किराए पर प्रतिदिन 1,000 रूपए के न्यून किराए पर दिया करते थे जो अब 50,000 रूपए तक बढ़ गए हैं।

रमेश आज भी समय निकालकर प्रतिदिन अपनी नाई की दुकान पर जाते हैं तथा कोलकाता एवं मुम्बई में उनके अनेक पक्के ग्राहक हैं।

9.2.2 युवा उद्यमी

मार्क जुकेरबर्ग

मार्क जुकेरबर्ग का जन्म 14 मई, 1984 को न्यूयार्क में एक पूर्ण शिक्षित परिवार में हुआ था, जिसमें उन्होंने बहुत छोटी आयु में कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के प्रति अपनी रूचि जागृत की थी। 12 वर्ष की आयु में, जुकेरबर्ग ने जुकनैट के नाम से एक मैसेजिंग प्रोग्राम का निर्माण किया था जो उन्होंने अपने पिता के डेंटल व्यवसाय के लिए इंटर आफिस संचार व्यवस्था के लिए तैयार किया था। उनमें सफलता के संकेत भांपकर उनके माता पिता ने उनके लिए एक कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग शिक्षक की व्यवस्था कर दी थी जबकि वे अभी हाई स्कूल में ही थे।

स्नातक होने के पश्चात जुकेरबर्ग ने हावर्ड यूनिवर्सिटी में प्रवेश प्राप्त किया। कैम्पस में कम्प्यूटर प्रोग्रामर के रूप में मार्क जुकेरबर्ग बहुत जल्दी लोकप्रिय हो गए थे। कैम्पस में अपनी लोकप्रियता के आधार पर जुकेरबर्ग ने हावर्ड के विद्यार्थियों को आपस में क्नेक्ट करने के लिए एक सोशल नेटवर्किंग साइट बनाने के उद्देश्य से अपने कुछ मित्रों का सहयोग प्राप्त किया। यह साइट जून 2004 में ''फेसबुक'' के नाम से लाइव हुई थी। बस अब जुकेरबर्ग ने उस दौरान फेसबुक से नाम से कहे जाने वाले अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए कॉलेज छोड़ दिया। वर्ष 2004 के अंत तक फेसबुक के यूजर्स की संख्या एक मिलियन हो गई थी।

यूजर्स की बढ़ती हुई विशाल संख्या से अनेक पूंजी उद्यमियों का ध्यान आकर्षित हुआ जिससे जुकेरबर्ग को वर्ष 2005 में सिलिकॉन वैली से बाहर आना पड़ा। फेसबुक को अपना उद्यम पूंजी निवेश एस्सेल पार्टनर्स से प्राप्त हुआ था जिन्होंने 12.7 मिलियन डालर का निवेश किया था।

वर्ष 2005 के अंत तक फेसबुक ने अपने दरवाजे अन्य स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए खोल दिए जिससे वेबसाइट के यूजर्स की संख्या 5.5 मिलियन हो गई। वर्ष 2005 के पश्चात से फेसबुक को याहू तथा माइक्रोसार्फट जैसी अनेक अधिग्रहण आफर प्राप्त हुई हैं, अनेक कानूनी पचड़े हुए हैं, परन्तु इसके यूजर्स का डेटा बेस काफी बढ़ गया है।

30 अक्तूबर, 2019 को कम्पनी ने सितम्बर, 2019 के लिए अपने दैनिक सक्रिय यूजर्स का औसत 1.62 बिलियन रिपोर्ट किया जबकि मासिक सक्रिय उपयोक्ताओं की कुल संख्या 2.45 बिलियन थी। 30 जनवरी, 2020 की स्थिति के अनुसार कम्पनी का बाजार अंशभाग 598

बिलियन डालर था। जुकेरबर्ग के पास 375 मिलियन फेसबुक शेयर एवं कम्पनी में 60 प्रतिशत वोटिंग अधिकार प्राप्त है। मार्क ने अपनी पहली उपलब्धि तब हासिल की थी जब वे मात्र 19 वर्ष के थे। लांच के पश्चात के कुछ ही वर्षों में फेसबुक विश्व भर में सर्वाधिक उपयोग में लाया जाने वाला सोशल मीडिया प्लेटफार्म बन गया था। आज, फेसबुक निरंतर विकास कर रहा है तथा इसमें हजारों लोग काम कर रहे हैं। असंख्य लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत जुकरबर्ग की अपनी सम्पति 29 जनवरी, 2020 को 78 बिलियन अमेरिकी डालर होने का अनुमान लगाया गया है तथा एक उद्यमी के रूप में वे निरंतर प्रगति कर रहे हैं।

9.2.3 महिला उद्यमी

ज्योति नायक

लिज्जत पापड़ ब्रांड के नाम से लोकप्रिय श्री महिला गृह उद्योग महिलाओं की शक्ति का प्रतीक है। इसकी शुरूआत 15 मार्च, 1959 को सात महिलाओं के समूह द्वारा गिरगॉम, बम्बई, अब मुम्बई, के भवन की एक छत पर की गई थी। श्री महिला गृह उद्योग की अध्यक्ष ज्योति नायक ने यह बताया है कि उन्होंने अपने व्यापार की शुरूआत मात्र 80 रूपए से की थी और पापड़ के चार पैकटों का उत्पादन किया था। अपने दृढ़ निश्चय के साथ वे अपना काम कर रही थी। समय के साथ-साथ इस समूह का व्यापार भी बढ़ता चला गया। पापड़ के अलावा इन्होंने मसाला, आटा, चपाती, अप्पलम एव डिर्टेजेंट जैसे अनेक उत्पादों की रेंज भी बढ़ा दी है।

शुरूआत में इस संस्थान को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था, इसके सदस्यों में व्याप्त विश्वास एवं धैर्य की शक्ति को अनेक परीक्षाएं भी देनी पड़ी थी। यह समूह आत्मनिर्भरता की नीति का अनुसरण करता है तथा कभी भी किसी प्रकार की धन सहायता प्राप्त नहीं की गई है। वे स्वैच्छिक दान भी स्वीकार नहीं करती हैं।

गुणवत्ता के सिद्धांत के प्रति सजग यह संस्थान अपने इसी सिद्धांत से मार्गदर्शन प्राप्त करके अपने उत्पादन कर रहा है। लिज्जत फल फूल रहा है तथा आज इसे एक सफल संगठन माना जाता है।

अपने सभी स्टेकधारकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले महिलाओं की इस सहकारिता संगठन से अनेक शिक्षाएं प्राप्त की जा सकती है। पिछले 60 वर्षों से अपने मूल्यों के प्रति अडिग लिज्जत अपने कार्य निर्बाध रूप से कर रहा है, इसके सदस्य अच्छा लाभ कमा रहे हैं, एजेंटों का अपना अच्छा भाग मिल रहा है तथा ग्राहकों को अच्छे मूल्य पर गुणवत्ता का आश्वासन प्राप्त हो रहा है और साथ ही समाज को विभिन्न कारणों से इस सगठन द्वारा दिए जाने दान के लाभ प्राप्त हो रहे हैं। यह सब सभी क्रियाकलापों में गांधीनुमा सरलता को अपनाने से संभव हो पाया है।

घरों में लिज्जत अब पापड़ का पर्याय बन गया है। यह अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संगठन है। इसके द्वारा

43,000 महिला सदस्यों से भी अधिक व्यक्तियों के जीवन में उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करके एक क्रांति लाई गई है। इनके व्यापार परिणाम काफी उत्कृष्ट हैं तथा 2018 में इनकी वार्षिक बिक्री 800 करोड़ रूपए से अधिक हुई है।

9.2.4 दिव्यांग (PwD) उद्यमी

राधाम्बिका एस.

राधाम्बिका एस तब दो साल की थीं जब उन्हें पोलियो हो गया था। ऐसा होने उन्होंने अपने स्वप्नों को साकार करने का कार्य रोका नहीं था। आगे जाकर उन्होंने एक ऐसी कम्पनी का निर्माण किया जो भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए कम्पोनेंट्स का निर्माण कर रही है। 10वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उन्होंने केन्द्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अंतर्गत व्यावसायिक पुनर्वास केन्द्र(वीआरसी) के एक पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त किया। पाठ्यक्रम पूरा करने के पश्चात उन्हें भारतीय अंतरिक्षण अनुसंधान संगठन (आईएसआरओ) में एक विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया था। मुम्बई में आयोजित इस प्रशिक्षण ने उनके जीवन को बिल्कुल बदल दिया था।

राधाम्बिका ने वर्ष 1983 में केरल राज्य के तिरूवनंतपुरम नगर में सिवावासु इलैक्ट्रानिक्स इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की थी। उनकी कम्पनी भारत के राकेटों के दिक्कचालन एवं दिशानिर्देशन के लिए सहायक इलैक्ट्रानिक कंपोनेंट्स का निर्माण करती है। आईएसआरओ को वे उपकरणों की आपूर्ति वर्ष 1987 में आगुमेंटिड सेटेलाइन लांच व्हीकल (एएसएलवी) के प्रथम लांच से, उसके पश्चात भारत के प्रथम चन्द्र मिशन, चंद्रयान-1 के लिए वर्ष 2007 में, मंगलयान के माधयम से मंगल ग्रह के लिए भारत के प्रथम प्रयास के लिए 2013 में, तथा हाल ही में एचवाईएसआईएस (''शार्प आई'') को होस्ट करने के पोलर सेटेलाइन लांच व्हीकल के लिए उपकरणों की आपूर्ति कर रही हैं। इस प्रकार से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान द्वारा किए जाने वाले लांच में राधाम्बिका की मूल्यवान कारीगरी का योगदान है।

उनका स्वप्न टीमवर्क, अनुभव, निष्पादन, वैयक्तिक धयान एवं अंतर्राष्ट्रीय मानकों का अनुपालन करके भारत का अग्रणी वैमानिक उत्पाद निर्माण संगठन का निर्माण करना है। उनकी कम्पनी ने वैमानिक उत्पादों की मांग में संभावित बढ़त को विचार में लेकर व्यापारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए योजनाएं तैयार कर ली हैं।

सिवावासु की काफी लम्बी, फलदायक एवं सफल सम्बद्धता अपने ग्राहकों के साथ है। आईएसआओ के साथ साथ वे गोदरेज, एचसीएल एवं इंडस टेकसाइट जैसे ग्राहकों को अपने मूल्यवान इलैक्ट्रानिक उत्पादनों की आपूर्ति कर रही हैं।

750 से भी अधिक महिलाओं, उनमें से कुछ दिव्यांग तथा कुछ वंचित परिवारों से हैं, को सिवावासु में प्रशिक्षण देकर उन्हें व्यावसायिक रूप से कार्यकुशल बनाया गया है। अनेकों ने अपने घर बसा लिए हैं और कुछ अभी कार्य कार्य कर रही हैं तथा कुछ ने यहां से आगे अपना स्वयं का उद्यम प्रारंभ कर लिया है।

राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद द्वारा **विश्व दिव्यांगता दिवस, 2018** के अवसर पर राधाम्बिका को **दिव्यांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण के लिए उत्तम नियोक्ता** के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। राधाम्बिका ने अपना जीवन अन्यों, विशेषत: दिव्यांग महिलाओं, के सशक्तिकरण के लिए समर्पित किया है तथा उन्होंने लोकोमोटर, श्रवण, सेरेब्रल पाल्सी, बौद्धिक, वाक् एवं विविध दिव्यांगता वाले सैंकड़ों दिव्यांग व्यक्तियों को प्रशिक्षण प्रदान किया है।

पाठगत प्रश्न 9.2

निम्नलिखित का मिलान करें :

1. मार्क जुकेरबर्ग	(क) केरल
2. राधाम्बिका	(ख) लिज्जत
3. रमेश बाबू	(ग) फेसबुक
4. ज्योति नाय	(घ) नाई

9.2.5 खाद्य उद्यमी

कॉंग कारा

फिकारालिन वांगशोंग अर्थात कॉंग कारा के नाम से जानी जाने वाली वे एक महिला उद्यमी हैं जिन्हें खाद्य प्रस्संकरण में विशेषज्ञता प्राप्त है। कॉंग कारा चार बच्चों की मां हैं और खाद्य प्रस्संकरण की विधि विरासत में उन्हें अपनी मां से मिली थी जो आचार बनाने में काफी माहिर थी। शुरू-शुरू में वे अचार अपने घर में उपयोग के लिए बनाया करती

थी। उनके बच्चों, मित्रों एवं पड़ोसियों को उनका आचार काफी पसंद आता था।

इस प्रकार मिलने वाले प्रोत्साहनों से प्रेरित होकर उन्होंने खाद्य प्रस्संकरण व्यापार करने का निर्णय लिया। सफलता की सीढ़ी चढ़ते हुए हुए उन्होंने वर्ष 1988 में खाद्य एवं पोषण विभाग द्वारा आयोजित दो सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। बाद में उन्होंने कृषि उद्यान विभाग से 2005 में तथा फ्रूट गार्डन, शिलांग से 2006 में तथा अनेक विभागों से प्रशिक्षण प्राप्त किया।

कॉंग कारा के अटल निश्चय, समर्पण, कड़ी मेहनत एवं भाग लिए गए प्रशिक्षणों से बेहतर हुए व्यावसायिक कौशल के बल पर उन्होंने अपना खुद का – कारा फ्रेश फूड्स के नाम से एक प्रोस्सेएिग यूनिट स्थापित कर लिया। ऋण के तौर उन्हें वित्तीय सहायता प्राप्त हुई थी जिससे अपने व्यापार का विस्तार किया। उनके उत्पादों की विशाल रेंज में आचार युक्त खाद्य पदार्थों एवं स्थानीय उपलब्ध फलों का शुमार है। यह उद्यम स्थानीय उपलब्धा फलों के जूस का निर्माण भी करता है। कुछ सालों में उन्होंने किसानों के साथ लाभकारी एवं अच्छे संबंध भी स्थापित कर लिए हैं जिससे उन्हें उनके उत्पादों की प्राप्ति होती है। उनके काम में स्वच्छता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और कॉंग कारा सफाई एवं आचार निर्माण से पूर्व सभी पदार्थों को सुखाने की ओर विशेष धयान देती हैं। कॉंग कारा पैकेजिंग के लिए प्लास्टिक पाऊच एवं प्लास्टिक जार की खरीद क्रमश: मुम्बई एवं गुवाहाटी से करती हैं। उनका उद्यम लगभग 25 प्रतिशत से 30 प्रतिशत लाभ के साथ काम कर रहा है।

अपने तेजी से बढ़ रहे व्यापार के चलते उन्हें अपने उत्पादों को मेघालय सरकार द्वारा प्रदर्शिनियों में प्रस्तुत करने के अनेक अवसर प्राप्त हुए हैं। उन्हें नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भी अपने उत्पाद प्रदर्शित करने का अवसर मिला है। इसके अलावा, एक योजना के अंतर्गत मुख्य मंत्री द्वारा उन्हें जेएम बेकरी के बंगलौर में आयोजित एक माह के बेकरी प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए भी नामित किया गया था।

एक जिम्मेदार उद्यमी होने के नाते कॉंग कारा आर्थिक कठिनाईयों से जूझ रही अन्य महिलाओं की सहायता भी करती हैं तथा वे कुछ अन्य उद्यमिता क्रियाकलाप भी करना चाहती हैं। उन्होंने खुद विभिन्न संस्थानों के विद्यार्थियों एवं खाद्य प्रस्संकरण में रूचि रखने वाले महत्वाकांक्षी उद्यमियों को प्रशिक्षण दिए हैं। मेघालय इंस्टीट्यूट आर्फ एन्टरप्रेनरशिप के प्रशिक्षण कार्यक्रमों से भी वे जुड़ी हुई हैं। वास्तव में, कॉंग कारा फुड प्रोस्सेसिंग यूनिट में कारा मार्टिन लूथर क्रिश्चयन यूनिवर्सिटी एवं सैंट एंथोनी कॉलेज, शिलांग जैसे संस्थानों के विद्यार्थियों को इंटरनशिप भी प्रदान कर रही हैं।

कॉंग कारा ने स्वयं की भागीदारी, वर्ष 2015 में, मिलियम विलेज, ईस्ट खासी हिल्स में एन्टरप्राइज फैसिलिटेशन सेंटर (ईएफसी) के साथ स्थापित कर ली है। उनके कार्य को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा मान्यता दी गई है जिसके लिए उन्हें वर्ष 2010 में उत्तम उद्यमिता पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल द्वारा नई दिल्ली में प्रदान किया गया था।

टिप्पणी

9.2.6 सामाजिक उद्यमी

चेतना गाला सिन्हा

कुछ लोग अन्याय होता देखकर अपने आपको असहाय समझने लगते हैं क्योंकि इसके लिए वे कुछ भी नहीं कर पाते हैं। परन्तु नहीं, एक अति विनम्र महिला चेतना गाला सिन्हा, जो अपनी दृष्टढ़ता एवं संवेदना के लिए जानी जाती हैं, ऐसा नहीं करती हैं। उनका जन्म मुम्बई में हुआ और वहीं पल कर वे बड़ी हुईं।

जब वे कालेज में पढ़ती थीं तो उन्होंने यह निश्चय किया कि उन्हें समाज में कुछ बदलाव लाने चाहिए। अपने राजनैतिक प्रयासों से उनकी भेंट अपने पति, विजय सिन्हा, से हुई जो महासवाड़, महाराष्ट्र के किसान नेता थे। वर्ष 1987 में जब वे अपने पति के गांव में आईं तो उन्हें घर में शौचालय न होने की जानकारी नहीं थी। अगली सुबह उन्हें घर के पिछवाड़े में जाने और अपने साथ सूअरों को हड़काने के लिए एक छड़ी ले जाने के लिए कहा गया। तब उन्होंने यह निर्णय लिया कि कि इस गांव में कुछ बदलाव लाए जाने बहुत जरूरी हैं। वे सक्रिय होकर शौचालय बनाने और बिजली लाने की प्रक्रिया में जुट गई थी। विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्यों के लिए वे अब भी कार्य कर रही हैं।

बाद में, कुछ महिलाओं ने उनसे सम्पर्क करके सहायता मांगी। वे बचत खाता खोलना चाहती थी परन्तु उनकी बचत काफी कम होने के कारण बैंक उनका खाता नहीं खोल रहे थे। उन्होंने उनकी सहायता एक सहकारी बैंक की स्थापना के माध्यम से करने का लिया। भारतीय रिजर्व बैंक में जब उन्होंने एक सहकारी बैंक खोलने का आवेदन प्रस्तुत किया तो उनका आवेदन रद्द कर दिया गया था क्योंकि महिलाएं पढ़ लिख नहीं सकती थी। ऐसा होने पर वह अत्यधिक उत्साही महिलाएं रूकी नहीं, उन्होंने साक्षर होने का निर्णय लिया। छः माह के पश्चात वे सिन्हा के साथ भारतीय रिजर्व बैंक के अधिकारियों से दिल्ली में मिली और अधिकारियों को यह समझाया कि वे ब्याज का आकलन मौखिक रूप से कर सकती हैं। ऐसा होने पर सहकारी बैंक के लिए अनुमति मिल गई और इससे वर्ष 1997 में देश में ग्रामीण महिलाओं के लिए मन देशी महिला सहकारी बैंक नाम से प्रथम बैंक की स्थापना हुई। इस बैंक की स्थापना 7,08,000 रूपए की कार्यशील पूंजी के साथ की गई थी जिसकी उत्पति इसके 1,335 सदस्यों से हुई थी। वर्ष 2017 तक इसमें 3,10,000 महिला खाता धारक हो गए थे जिनमें से 84,000 ऋण प्राप्त करने वाले थे। इस बैंक की स्थापना से महिलाओं को सफल उद्यमी बनने के प्रति आर्थिक संबल एवं भावात्मक प्रोत्साहन मिला है। महासवाड़ में अपनी एक शाखा होने के पश्चात मन देशी की कार्यशील पूंजी अब 150 करोड़ रूपए है तथा महाराष्ट्र में इसकी सात शाखाएं हैं।

सिन्हा ने एक समान प्रकार के संगठन, मन देशी फाउंडेशन की स्थापना भी की है जो पश्चिम महाराष्ट्र में पशु कैम्प, बिल्डिंग चैक डैम्स, रेडियो स्टेशन चलाने तथा खेल प्रतिभाओं की खोज करने जैसे सामुदायिक प्रयासों के आयोजन का एक प्लेटफार्म है। वित्त सहायता प्रदान करने के अलावा यह फाउंडेशन बिजनेस स्कूल के माध्यम से वित्तीय एवं व्यावसायिक साक्षरता भी प्रदान करता है। महिलाओं को मोनोपोली जैसे-

खेलों से युक्त माड्यूलों के माध्यम से बचत, निवेश, बीमा एवं ऋण के बारे में जानकारी दी जाती है। व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करके महिलाएं अपने व्यापार स्थापित कर रही हैं तथा उनका संचालन एवं विकास कर रही हैं। महिलाओं को फास्ट फूड सेंटर, होम बेकरी, बकरी पालन, मेंहदी उपयोग एवं कौशल के व्यापार भी सिखाए जा रहे हैं। मन देशी ने फल्टन, महाराष्ट्र में निम्बर एग्रीक्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट के साथ साझेदारी करके महिलाओं को बकरियों के टीकाकरण एवं कृत्रिम वीर्यारोपण के लिए भी प्रशिक्षित किया जा रहा है, यह वह कार्य है जो अब तक केवल पुरूष किया करते थे। वर्ष 2014 से 2017 तक के तीन वर्षों में लगभग 21 प्रशिक्षित बकरी डाक्टरों ने 8,000 से अधिक बकरियों का टीकाकरण किया है तथा 50 गांवों, जहां का मूल व्यवसाय बकरी पालन है, में 3,000 से अधिक बकरियों का कृत्रिम वीर्यारोपण किया है।

अपना व्यापार करने की इच्छुक ग्रामीण महिलाओं को अक्सर अपने परिवारों से सहयोग नहीं मिलता है। मन देशी उन्हें एक ऐसी सहायक संरचना प्रदान कर रहा है जो उनमें सफलता के प्रति उत्साह एवं आत्मविश्वास का संचार करती है। सामुदायिक रेडियो का उपयोग महिला उद्यमियों की प्रेरणाप्रद कहानियों के सहभाजन के लिए किया जा रहा है जिससे उनके परिवारों को महिलाओं के समर्थन के प्रति प्रोत्साहित किया जा सके।

अनेक महिलाओं के लिए जिन्हें 59 वर्षीय सिन्हा अथवा भाभीजी, *इस नाम से उन्हें स्नेहपूर्वक बुलाया जाता है,* ने प्रेरणा दी है, एक प्रतिरूप हैं जिन्होंने सूक्ष्म उद्यमी आंदोलन के माध्यम से इस क्षेत्र की लाखों ग्रामीण महिलाओं का सशक्तीकरण किया है। सिन्हा के अनुसार, महिलाओं में व्याप्त संभावनाएं न केवल स्वयं अपने लिए कुछ करने की अपितु वे अपने परिवार के लिए भी काफी कुछ कर सकती है। विजय प्राप्ति के लिए सिन्हा के पांच मूलमंत्र : उत्कंठा, धैर्य, दृष्टढ़ता, श्रवण एवं विनम्रता हैं।

9.2.7 ग्रामीण उद्यमी

मनसुख भाई प्रजापति

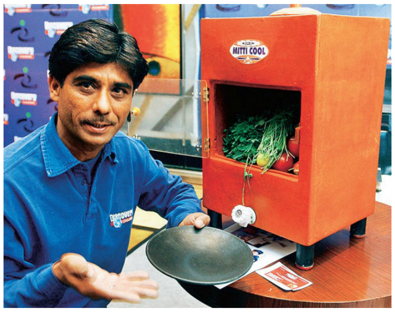

मनसुख भाई, एक पारम्परिक मिट्टी शिल्पकार, अपनी उल्लेखनीय पर्यावरण मित्र एवं किफायती आविष्कार पारम्परिक मिट्टी से निर्मित एवं नवोपाय की श्रेणी में आने वाले विख्यात उत्पाद मिट्टीकूल के लिए जाने जाते हैं। गुजरात में आए भुकंप से हुए काफी नुकसान के पश्चात उनके मन में मिट्टी से फ्रिज बनाने का एक विचार उपजा था।

फ्रिज के अलावा उन्होंने नॉन स्टिक अर्थन तवा, अर्थन थर्मस फ्लास्क इत्यादि जैसे कई आविष्कार किए हैं।

उन्होंने अपनी कम्पनी का पंजीकरण वर्ष 1990 में करवाया था तथा वर्ष 1995 में उन्हें नैरोबी, केन्या से वाटर फिल्टरों के लिए ढेरों निर्यात आर्डर प्राप्त हुए थे। इसके पश्चात उन्होंने 'मिट्टीकूल' के ट्रेडमार्क का पंजीकरण वर्ष 2001 में करवा लिया था।

वर्ष 2001 में प्रलयंकारी भुकंप में मनसुख को काफी अधिक नुकसान झेलना पड़ा था। उनका अधिकांश स्टॉक नष्ट हो गया था तथा जो कुछ बचा था कच्छ में भुंकप पीड़ितों में वितरित कर दिया गया था।

फरवरी, 2001 में गुजरात के दैनिक समाचार पत्र संदेश में "गरीबी का फ्रिज टूट गया" शीर्षक के साथ एक समाचार प्रकाशित हुआ था जिसके साथ एक टूटा हुआ वाटर फिल्टर दर्शाया गया था।

इस घटना ने मनसुखभाई को कड़ी मेहनत करने की प्रेरणा दी थी जिससे उन्होंने ग्रामीण उपभोक्ताओं के लिए फ्रिज का निर्माण किया था। वर्ष 2002 में उन्होंने जीआईएएन (ग्रासरूट्स इनोवेशन आग्युमेंटेशन नेटवर्क) के साथ काम करना शुरू किया जहां से उन्हें अपने उत्पादन के विकास के लिए काफी सहायता प्राप्त हुई।

मिट्टीकूल फलों एवं सब्जियों के मूल स्वाद को सरंक्षित रखता है, इसके लिए बिजली की आवश्यकता नहीं होती है तथा कूलिंग के लिए यह अर्थन पॉट्स के सिद्धांत के अनुसार कार्य करता है तथा तदनुसार इससे किसी प्रकार की आवधिक लागतें जुड़ी हुई नहीं हैं। जीआईएएन द्वारा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन (एनआईडी), अहमदाबाद के सहयोग से फ्रिज के डिजाइन में सुधार किए गए। सेंटर फार इंडिया एंड ग्लोबल बिजनेस, जज बिजनेस स्कूल, यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज, यू.के. द्वारा मई, 2009 में आयोजित एक सम्मेलन में भी मिट्टीकूल के उत्पाद प्रदर्शित किए गए थें। मनसुखभाई ने जीआईएएन के सहयोग से कम्पनी तथा एक आनलाइन पोर्टल (www.mitticool.in) की स्थापना भी की है।

मनसुखभाई द्वारा एनआईएफ – इंडिया के साथ परामर्श करके 1 एवं 2 लिटर क्षमता वाले अर्थन थर्मस फ्लास्क का निर्माण भी किया जा रहा है। उन्होंने जीआईएएन तथा एनआईफ – इंडिया के सहयोग से फ्यूचर ग्रुप के साथ गठबंधन भी किया है तथा उनके उत्पाद बिग बाजार के अनेक आउटलेटों पर बेचे जा रहे हैं।

पाठगत प्रश्न 9.3

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. .... मिट्टी से निर्मित एक फ्रिज है जिसके लिए बिजली की आवश्यकता नहीं होती है।

2. कॉंग कारो .... तैयार करती थी जो उनके बच्चों एवं सबंधियों को काफी पसंद आते थे।

3. .... को समस्याओं का समाधान करने वाला माना जाता था तथा उन्होंने अपने पहले कम्प्यूटर साफ्टवेयर का निर्माण 13 वर्ष की आयु में किया था।

II. यह बताएं कि नीचे प्रस्तुत विवरण में से क्या सत्य अथवा असत्य है:

1. कॉंग कारा ने कारा फ्रेश फुड्स नाम से अपने स्वयं के प्रोस्सेसिंग यूनिट की स्थापना की थी।

2. बिल गेट्स ने एडोब नामक साफ्टवेयर कम्पनी की स्थापना की थी।

3. मिट्टीकूल एक नॉन-स्टिक अर्थन तवा है जिसका आविष्कार मनसुख भाई प्रजापति ने किया है।

4. चेतना गाला सिन्हा ने समाज में व्याप्त दोषों को दूर करने के लिए अनेक अनथक कार्य किए हैं।

आपने क्या सीखा

- हमने सफल उद्यमियों में व्याप्त विभिन्न विशिष्टताओं का अधययन किया है जिसमें मुख्यत: आत्म प्रेरणा, सृजनात्मकता, यथास्थिति को स्वीकार न करने तथा धैर्य के साथ निरंतर कार्य करने, मुक्त विचारधारा, अच्छी श्रवण शक्ति, जवाबदेही एवं सत्यनिष्ठा का वर्णन किया गया है।

- बिल गेट्स, चेतना गाला सिन्हा, ज्योति नाइक, मार्क जुकेरबर्ग, राधाम्बिका एस एवं मनसुख भाई प्रजापति जैसे विभिन्न प्रसिद्ध एवं सफल उद्यमियों की सफलताओं के बारे में चर्चा की गई है। हम सभी सफल उद्यमियों में समान प्रकार की विशिष्टताएं देख सकते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. सफल उद्यमियों की किन्हीं पांच विशिष्टताओं का वर्णन करें।
2. बिल गेट्स की किन्हीं दो विशेषताओं का वर्णन करें।
3. चेतना गाला सिन्हा ने किस प्रकार ग्रामीण महिलाओं की सहायता की?
4. मनसुख भाई प्रजापति की सफलता की कहानी का वर्णन करें।
5. आपने लिज्जत पापड़ के मामला अध्ययन से क्या सीखा है?
6. राधाम्बिका की संकल्पना का वर्णन करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1

(1) सत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) सत्य

9.2

1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (ख)

9.3

I. 1. मिट्टीकूल

2. अचार

3. बिल गेट्स

II. 1. सत्य

2. असत्य

3. असत्य

4. सत्य

अवधारणा नक्शे

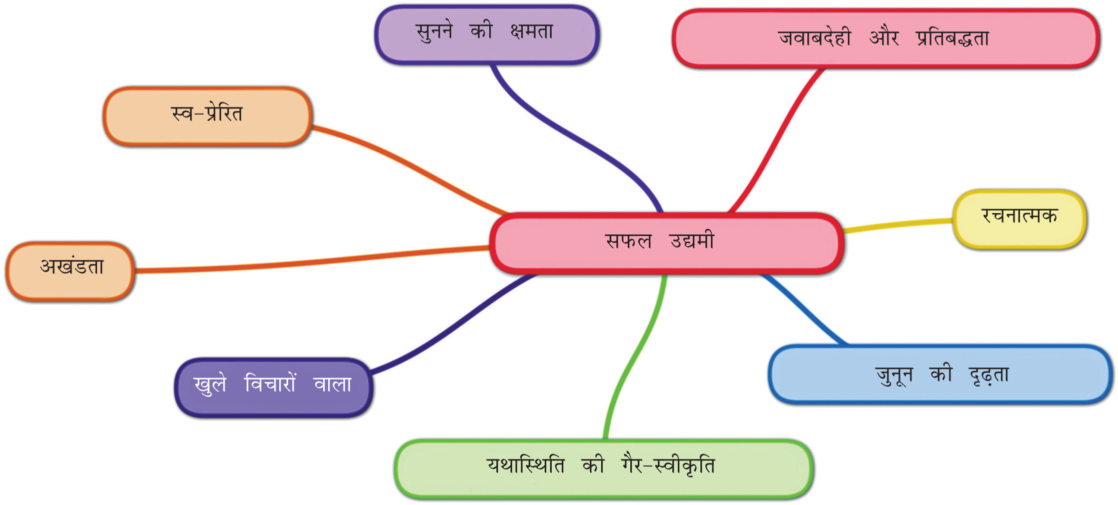

मॉड्यूल 4

उद्यमिता अवसर

अधिकतम अंक : 25 **अध्ययन के घंटे : 45**

एक उद्यमी को व्यवसाय के अवसरों की पहचान कर पाने में बहुत तेज होना चाहिए। इस मॉड्यूल में एक विचार को उद्यम में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इसको पढ़कर आप विचारोत्पत्ति की तकनीकों, एक उद्यम स्थापित करने हेतु उठाये जाने वाले कदम तथा उद्यम शुरु करने के लिए संसाधन जुटाने में सक्षम होंगे।

अध्याय 10 विचारोत्पत्ति

अध्याय 11 उद्यम की स्थापना

अध्याय 12 संसाधन एकत्रण

10

विचारोत्पत्ति

पिछले पाठ में हमने सफल उद्यमियों की विशिष्टताओं, कुछ महत्वपूर्ण उद्यमियों की उपलब्धियों तथा समाज की मानसिकता एवं तार्किक शून्यता के बारे में चर्चा की है। इस पाठ में थोड़ा और आगे विचार आवश्यकताओं, इच्छाओं तथा मांग के मध्य भिन्नताओं को ज्ञात करेंगे तथा आपको यह भी बताया जाएगा कि किस प्रकार कोई उद्यमी विचारों की उत्पति करके उसे खुशहाल व्यवसाय में परिवर्तित करता है।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप :

- आवश्यकता, इच्छा एवं मांग के अंतर का विशलेषण करते हैं;
- विचारोत्पत्ति की विभिन्न विधियों की रूपरेखा का ज्ञान प्राप्त करते हैं;
- व्यवहार्य व्यापार विचारों की व्याख्या करते हैं; तथा
- व्यवसाय विचारों को उद्यम की स्थापना में परिवर्तित करने की विधि का विवरण प्रस्तुत करते हैं।

10.1 आवश्यकताओं की परिभाषा

आवश्यकता से हमारा अर्थ अपेक्षा से है जो स्वस्थ मानव जीवन के लिए अत्यधिक आवश्यक है। यह न केवल वैयक्तिक होती हैं अपितु सांस्कृतिक एवं सामाजिक अपेक्षाएं भी होती हैं जो मानव की उत्तरजीविता के लिए आवश्यक होती हैं। इसका वर्णन ए.एम.मास्लो द्वारा आवश्यकताओं की तारतम्यता के स्वयं द्वारा प्रस्तुत सिद्धांत में किया है। (अधिक जानने के लिए पाठ 8 देखें)

प्राचीन काल में मानव की मूलभूत आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा और मकान हुआ करती थी। समय के साथ साथ शिक्षा एवं स्वास्थ्य इसका अंतरग भाग बन गया है क्योंकि इससे जीवन

की गुणवत्ता में सुधार आता है। यह किसी व्यक्ति की प्रथम प्राथमिकताएं हैं क्योंकि इससे मानव स्वस्थ रहता है। तदनुसार, आवश्यकताओं को समय पर संतुष्ट न किए जाने पर हम बीमार हो सकते हैं अथवा हमारी मृत्यु भी हो सकती है।

इच्छा

इच्छा, एक प्रकार से पसंद, आकांक्षा है जो कोई व्यक्ति पूरी कर पाता है अथवा पूरी नहीं कर पाता है। सभी इच्छाएं, महत्वकांक्षाएं एवं मानवीय लक्ष्य अर्थशास्त्र में मानवीय इच्छा के रूप में जाने जाते हैं। वह इच्छा जो किसी वस्तु अथवा सेवा से पूरी हो सकती है उसे आर्थिक इच्छा कहा जाता है। आप इच्छाओं का वर्गीकरण नीचे प्रस्तुत विस्तृत वर्गों के अंतर्गत कर सकते हैं:-

(क) **आवश्यकताएं** :- ये भोजन, पानी कपड़ा, मकान इत्यादि सहित जीवन यापन एवं उत्तरजीविता के लिए अत्यंत अनिवार्य हैं। यदि कोई गाड़ी ड्राइवर दोपहर के भोजन के लिए रोटी और सब्जी खरीदता है तो यह इस वर्ग के दायरे में आती हैं।

(ख) **सुविधा** : इसे अनिवार्य अथवा तत्काल आवश्यकता नहीं कहा जा सकता है। सुविधाएं वह इच्छा होती हैं जो मानव को सुविधा अथवा संतुष्टि प्रदान करती हैं। पंखा, फर्निशड मकान, विशेष अवसरों के लिए कपड़े इस वर्ग के अंतर्गत आते हैं। आइए, हम गाड़ी ड्राइवर के उदाहरण को आगे बढ़ाते हैं। यदि वह अच्छी कमाई करता है तो वह अधिक मंहगा खाना खाएगा, इसे सुविधा कहा जाता है।

(ग) **विलासिता:** इसके अंतर्गत वे वस्तुएं आती हैं जिनसे मानव को आनन्द एवं समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। विलासिता के कुछ उदाहरणों के अंतर्गत कार, डायमंड ज्वैलरी, मंहगे डिजाइनर कपड़े, तथा एयर कंडीशनर आते हैं।

समझने के लिए कुछ उदाहरण :

- *हाथ में घड़ी होना एक आवश्यकता है परन्तु मंहगी ब्रांडेड घड़ी होना एक इच्छा है।*
- *समोसा खाना एक आवश्यकता हो सकती है परन्तु इसे किसी रेस्टोरेंट में बैठकर खाना इच्छा है।*
- *फोन होना एक आवश्यकता है परन्तु अत्यधिक महंगा मोबाइल होना एक इच्छा है।*

इस अवधारणा के संक्षेपण के लिए आइए, हम यह मान लेते हैं कि इच्छाएं समाज एवं आसपास के वातावरण के अनुसार आकार प्राप्त करती हैं। जब आपकी किसी ऐसे उत्पाद को खरीदने की इच्छा होती है जो हमारी उत्तरजीविता के लिए आवश्यक नहीं है तो उसे इच्छा कहा जाता है। इस प्रकार इच्छा आवश्यकता के पूर्णत: विपरीत है जो कि उत्तरजीविता के लिए आवश्यक होती है।

हमें यह ज्ञात है कि मनुष्य की इच्छाएं असीमित हैं जबकि धन अथवा इच्छाओं की संतुष्टि के माध्यम सीमित हैं। इस प्रकार किसी व्यक्ति की सभी इच्छाएं पूरी नहीं हो सकती हैं तथा इसके लिए उन्हें विकल्प अपेक्षित होते हैं। बुद्धिमता से व्यय करना अथवा बचत करने के उद्देश्य

टिप्पणी

से प्रत्येक व्यक्ति आवश्यकता एवं इच्छा के मध्य अंतर को ज्ञात करना चाहता है। ऐसा किसी ऐसे उद्यमी के लिए भी आवश्यक है ।

मांग

किसी उपभोक्ता की किसी उत्पाद के प्रति अत्यधिक इच्छा को मांग नहीं कहा जा सकता है। *मांग* का संदर्भ किसी उपभोक्ता की किसी माल अथवा सेवा की खरीद के प्रति उत्सुकता एवं क्षमता के लिए है। यदि कोई ग्राहक इच्छुक है तथा अपनी आवश्यकता एवं इच्छा के अनुसार खरीद के लिए सक्षम है तो उसे व्यक्ति की मांग अथवा इच्छा माना जा सकता है। मान लीजिए, आपके पास दो विकल्प हैं, आप स्मार्ट फोन खरीदें या फिर कोई बेसिक फोन खरीदें, किसी साप्ताहिक बाजार से कपड़े खरीदें अथवा किसी स्टोर अथवा मॉल से ब्रांडेड कपड़े खरीदें। स्मार्ट फोन खरीदने अथवा ब्रांडेड कपड़े खरीदना दूसरे विकल्पों की तुलना में काफी मंहगा होता है।

स्मार्ट फोन खरीदना किसी एक व्यक्ति की आवश्यकता हो सकती है तथा दूसरों के लिए यह इच्छा हो सकती है। हम स्मार्ट फोन खरीदना चाहते हैं, परन्तु प्रश्न यह है कि, कैसे खरीदें? यदि हमारे पास स्मार्ट फोन खरीदने के लिए काफी पैसा है तो इसका अर्थ यह है कि हमने अपनी इच्छा / आवश्यकता को मांग में परिवर्तित कर दिया है।

तो इस प्रकार इच्छा और मांग के मध्य मूल अंतर आंकाक्षा है। वे लोग जो अपनी आकांक्षा वाले उत्पाद का व्यय कर सकते हैं वे अपनी इच्छा को मांग में परिवर्तित कर रहे हैं। आवश्यकताएं, इच्छाएं एवं मांग आपस में संबंधित हैं।

वास्तविक विश्व में सीमित साधानों से इस प्रकार की पसंद साधनों का उत्तम उपयोग करके मानवीय आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को संतुष्ट किया जाता है। ये आवश्यकताएं एवं इच्छाएं मांग में तब परिवर्तित होती हैं जब आप में इसे पूरा करने के साधानों के साथ आकांक्षा भी हो।

आवश्यकता/ इच्छा ⟶ तत्परता ⟶ क्षमता (धन) ⟶ मांग

यदि कोई ग्राहक इच्छुक है और अपनी आवश्यकता अथवा इच्छा को पूरी करने में सक्षम है, तो इसका अर्थ मांग की उत्पति होना है।

आवश्यकताएं	• अभाव की स्थिति • भौतिक – रोटी, कपड़ा, मकान, सुरक्षा, जल • सामाजिक – सम्बद्धता एवं लगाव • वैयक्तिक – ज्ञान एवं आत्म अभिव्यक्ति
इच्छाएं	किसी ग्राहक की किसी ऐसे उत्पाद के प्रति आकांक्षा को इच्छा कहते हैं जो उसकी उत्तरजीविता के लिए आवश्यक नहीं है। इस प्रकार

	उत्तरजीविता के लिए अनिवार्य आवश्यकता की तुलना में इच्छा पूर्णतः विपरीत है।
मांग	यदि कोई ग्राहक इच्छुक है और अपनी आवश्यकता अथवा इच्छा को पूरी करने में सक्षम है, तो इसका अर्थ ऐसी आवश्यकता अथवा इच्छा के प्रति मांग होना है।

तुलना का आधार	आवश्यकताएं	इच्छाएं
अर्थ	आवश्कताओं का अर्थ किसी व्यक्ति की बुनियादी अपेक्षा है जो उत्तरजीविता के लिए पूरी की जानी अनिवार्य हैं।	इच्छाएं माल एवं सेवाओं के लिए होती हैं जो कोई व्यक्ति अपने लिए चाहता है।
प्रकृति	सीमित	असीमित
प्रस्तुति	आवश्यकता	इच्छा
उत्तरजीविता	अनिवार्य	अनावश्यक
परिवर्तन	प्रत्येक समय समान रहती है	समय के साथ परिवर्तित हो सकती है
पूर्ति न होना	ऐसा होने से बीमारी अथवा मृत्यु तक हो सकती है	निराशा होती है

आवश्यकताएं, इच्छाएं एवं मांग अलग अलग शक्तियां हैं जो संतुष्टि के लिए क्रियाएं करने पर बाध्य करती हैं। यदि आवश्यकताओं की पूर्ति समय पर नहीं होती है तो किसी व्यक्ति की उत्तरजीविता संकट में आ सकती है जबकि इच्छा पूरी न होने पर व्यक्ति उसकी लालसा कर सकता है क्योंकि इनके पूर्ण न होने पर व्यक्ति की उत्तरजीविता में कोई बदलाव नहीं होता है।

आवश्यकताओं को इच्छाओं से उनके महत्व के आधार पर अलग से पहचाना जा सकता है। इस प्रकार क्या इच्छित है और क्या अपेक्षित है के मध्य अंतर किया जा सकता है तथा इसके अनुसार इच्छा की पूर्ति करने से, यदि आप पूर्ति करने में सक्षम हैं, यह मांग में परिवर्तित हो जाती है।

पाठगत प्रश्न 10.1

नीचे दिये गये वाक्यों में से सत्य अथवा असत्य की पहचान कीजिए :

क) आवश्यकताएं, इच्छाएं तथा मांग एक ही एवं समान प्रकार की होती हैं।

ख) इच्छाएं, जब पूरी नहीं होती हैं तो किसी व्यक्ति की उत्तरजीवित में संकट आ जाता है।

ग) आवश्यकताएं केवल भौतिक नहीं होती अपितु इसमें व्यक्ति की सामाजिक सुरक्षा एवं सांस्कृतिक आवश्यकताएं भी शामिल होती हैं।

घ) आवश्यकताएं असीमित होती हैं जबकि इच्छाएं सीमित होती हैं।

ङ) मोबाइल फोन होना प्रत्येक के लिए आवश्यकता है।

च) मंहगे ब्राँड् के जूते खरीदना इच्छा है।

10.2 विचारोत्पत्ति क्या है?

''सृजनात्मक सोच से विचार उत्पन्न होते हैं। विचार से परिवर्तन निर्मित होते हैं''-

– *बारबरा जॉनस्ज किविच्ज*

विचार नवोपाय के स्रोत होते हैं। सुधार के लिए किसी प्रकार के परिवर्तन करने के उद्‌देश्य से नव विचारों की उत्पति आवश्यक है। अधिकांश विचारों की उत्पति अपने आसपास के क्षेत्र, संस्कृति, अनुभव की जा रही समस्याओं तथा अनुभवों से ही होती है। विचार मूर्त अथवा अमूर्त, संरचित अथवा गैर-संरचित तथा जोखिमपूर्ण अथवा संकुचित हो सकते हैं। यह तो सही है कि विचार मात्र से ही नवोपाय नहीं किए जा सकते हैं, इसके लिए विचारों को फलीभूत करने के उद्‌देश्य से प्रक्रियाबद्ध प्रबंधन करना पड़ता है। विचारों की उत्पति मात्र उनकी उत्पति की मात्रा से नहीं होती है अपितु विचारों की गुणवत्ता की ओर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक होता है।

10.2.1 विचारोत्पत्ति और इसका महत्व

विचार उत्पति का वर्णन सृजन, निर्माण की प्रक्रिया एवं साररूपी, यथार्थ अथवा दृश्यात्मक विचारों के रूप में किया गया है। विचार प्रबंधन की कीप का यह अग्र सिरा है तथा इसके अंतर्गत कथित अथवा वास्तविक समस्याओं तथा अवसरों के संभावित समाधानों पर विचार किया जाता है। उदाहरण के तौर पर शहनाज हुसैन ने स्किन समस्याओं पर विचार किया था जिससे वह भारत में हर्बल कास्मेटिक्स के बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठान की स्थापना कर सकी थीं। यह रतन टाटा की कल्पना थी जिसके परिणामस्वरूप भारत के मध्यम वर्ग के परिवारों के लिए किफायती कार नैनो की उत्पति संभव हो सकी। मुल्की रघुनंदन श्रीनिवास कामथ ने एक सरल प्रश्न के साथ एक सृजनात्मक विचार प्रस्तुत किया था कि ''यदि आइसक्रीम में फलास्वादन हो सकते हैं तो इसके स्थान पर इसमें वास्तविक फल क्यों नहीं हो सकते''। इसी विचार के परिणामस्वरूप लिची, चीकू, श्रीफल, नारियल, अंजीर जैसे ताजा फलों से नेचुरल आइसक्रीम बनने लग गई।

जैसा कि बताया गया है कि किसी सुधार को करने के लिए विचार पहला कदम होता है। किसी कार्य में कठिनाई होने अथवा किसी समस्या का समाधान न कर पाने की स्थिति में व्यक्ति के मन में नव विचार उत्पन्न होते हैं।

10.3 विचारों का महत्व

- सम्बद्ध रहें।
- अपने संगठन के लिए सकारात्मक परिवर्तन करें।
- संभवत: आपके संगठन का लक्ष्य आपकी और आपकी टीम की कार्य कुशलता में सुधार लाना है अथवा आपको नव विचारों से अपने उत्पाद बेहतर करने चाहिए।
- आपके लक्ष्यों अथवा आपके भिन्न प्रकार के विचारों की ओर कोई ध्यान दिए बिना, हमारा उद्देश्य **आपकी परिचालन विधियों में सुधार लाना है।**
- बड़े पैमाने पर **अर्थशास्त्र** विकासोन्मुख नवविचारों एवं वृद्धितर समृद्धि पर निर्भर करता है। नवोपायों से नई प्रौद्योगिकियां एवं व्यवसाय निर्मित्त होते हैं जिनसे लोगों को नई नौकरियां मिलती हैं।

अत: इस प्रकार नवोपाय मात्र विचारों से ही उत्पन्न नहीं होते हैं, ये संतुलन का महत्वपूर्ण अंग हैं क्योंकि किसी एक कारण से ही दूसरा कारण उत्पन्न होता है।

10.4 विचारोत्पत्ति के उपकरण एवं विधियां

विचारोत्पति की अनेक विधियां होती हैं। इन विधियों के उपयोग से विचारों की उत्पति की जा सकती है।

10.4.1 गहन विचार

इस विधि का अर्थ किसी विषय / समस्या के विभिन्न घटकों पर मस्तिष्क के उपयोग अथवा गहन विचार से विधियां ज्ञात करना है। गहन विचार करने से सामान्यत: किसी विषय / समस्या के निवारण के लिए उत्पन्न विचार संक्षिप्त हो जाते हैं। इस विधि के प्रभावी उपयोग के लिए निम्नलिखित चार मूल सिद्धांतों का पालन किया जाना चाहिए:

1) यथासंभव अधिक से अधिक विचार उत्पन्न करें।

2) सृजनात्मक एवं कल्पनाशील बनें।

3) पूर्व विचारों को विस्तारित अथवा मिश्रित करें।

4) अन्यों के विचारों की आलोचना का विश्लेषण करें।

किसी विशिष्ट समस्या (विचार) से संबंधित अनेक विचारों पर ध्यान केन्द्रित करके अनेक प्रकार के समाधानों पर विचार करने की आवश्यकता पड़ती है। किसी विचार का कोई मूल्यांकन नहीं होता है। लोग अपने विचार मुक्त रूप से किसी आलोचना के भय के बिना प्रस्तुत कर सकते हैं। गहन विचार सामान्यत: 5 से 10 व्यक्तियों के समूह में किया जाता है।

भारत सरकार का एक राष्ट्रीय स्तर का संस्थान अपने संकाय को गहन विचार के एक दो दिव्सीय सत्र में ऐसे विचारों की उत्पति के लिए हिमाचल प्रदेश में स्थित एक रिजोर्ट में ले गया था कि उनके संस्थान को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व प्राप्त करने, सुर्खियों में आने अथवा मान्यता प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए? इससे सात प्रमुख विचार उत्पन्न हुए जिनमें भारतीय प्रबंधान संस्थान (आईआईएम) द्वारा आयोजित विभिन्न विषय के संकाय विकास कार्यक्रम के अंतर्गत प्रारंभ नए पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिए युवा संकाय सदस्यों का नामांकन करने जैसे सुझाव दिए गए थे।

10.4.2 ध्यान केन्द्रण समूह

इस समूह में भिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले 6 से 12 सदस्य हो सकते हैं। इनका गठन किसी नए उत्पाद के विचार जैसे किसी विशेष विषय के लिए किया जाता है। इस समूह में मुक्त गहन विचार के लिए एक मध्यस्थ होता है। अन्य सदस्यों से प्राप्त होनी वाली टिप्पणियां समूह चर्चा को संतुलित करती हैं तथा बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप नए उत्पादों के निर्माण के विचार उत्पन्न होते हैं। विचारों की उत्पति के दौरान विचारों की गहनता देखी जाती है तथा अत्यधिक सर्वश्रेष्ट विचार का उपयोग उद्यम के लिए किया जाता है।

10.4.3 अंतर-विश्लेषण

किसी समूह के लिए अपनी वर्तमान स्थिति को स्थापित करने तथा भावी वांछित स्थिति को प्राप्त करने के लिए अंतर विश्लेषण अत्यधिक उपयोगी उपकरण है? अंतर विश्लेषण से कमियां ज्ञात करना एवं संज्ञान में लिए गए अंतरों को भरने के लिए आवश्यक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त हो पाता है। अंतर विश्लेषण का उपयोग कैसे करें :

क. समूह के साथ कार्य करते हुए भविष्य के लिए वांछित स्थिति का संज्ञान करें। (किसी भी ऐसी प्रक्रिया का उपयोग करें जिससे समूह द्वारा भविष्य के लिए वांछित स्थिति ज्ञात की जा सके)

ख. समूह में भविष्य के संबंध में हुई चर्चा के प्रतिफल के संदर्भ में वर्तमान स्थिति पर चर्चा करें।

ग. अंतरों पर ध्यान केन्द्रित करें - समूह के सदस्यों से दो-दो व्यक्तियों के समूह में यह चर्चा करने के लिए कहें कि (क) वर्तमान स्थिति एवं वांछित भावी स्थिति में क्या अंतर हैं (ख) प्रमुख बाधाएं क्या हैं।

घ. दो-दो व्यक्तियों के समूह से 'अंतरों से संबंधित विचार प्रस्तुत करने के लिए कहें और उन्हें दो मूल फ्लिप चार्टों के मध्य एक फ्लिप चार्ट पर दर्शाएं।

ङ. संज्ञान में लिए अंतरों के संबंध में जब पूरा समूह एकमत हो जाता है तो अंतरों को समूह के मध्य बराबर बराबर विभाजित किया जाता है तथा वे एक साथ मिलकर समस्या का समाधान खोजते हैं।

च. अनुंशसाओं एवं कार्रवाई योजनाओं के संबंध में समूह के सदस्यों की एक और बैठक आयोजित करें।

छ. समूह से संज्ञान में ली गई योजनाओं के लिए अनुमोदन प्राप्त करें एवं कार्रवाई योजनाओं का अनुसरण करने के लिए खाका तैयार कर लें।

10.4.4 विपरीत (रिवर्स) विचार विमर्श

यह एक ऐसी विधि है जिससे आपको अपने व्यवसाय की दीर्घकालिक लंबित धारणाओं का समाधान ज्ञात करने में सहायता मिल सकती है। यदि आपके मतानुसार, आपका समूह किसी पारम्परिक विचार स्थिति से आगे नहीं बढ़ पा रहा है तथा दायरे से बाहर के असंभव प्रतीत होने वाले विचार प्रस्तुत कर रहा है तो विचार के लिए यह एक उपयोगी उपकरण है। यह एक चक्रसाध्य, चुनौतियों को सामान्य स्वरूप में विचार में लेने जैसे कि मैं अपनी समय बद्धता का सुनिश्चय कैसे कर सकता हूँ?, क्या मैं ऐसा कुछ कर सकता हूं कि कोई विद्यार्थी परीक्षा के लिए देर से न पहुंचे? जैसी अपनाई गई प्रक्रियाओं को विपरीत करने की विधि है। नकारात्मक चुनौतियों की प्रक्रियाएं तीव्र होती हैं जिससे वांछित परिणाम स्पष्ट रूप में प्राप्त हो पाते हैं। ऐसा इसलिए कि यह उपाय खोजने की एक कुछ अलग ही प्रकार की विधि है।

अक्सर, उत्तम समाधान किसी सीधी विधि की प्रक्रिया करने से प्राप्त नहीं हो पाता है। तथापि, हमारे मस्तिष्क की बनावट कुछ ऐसी है कि विपरीत विचार करने से भी हमें अपने प्रश्नों के सामान्य उत्तर प्राप्त हो जाते हैं।

इस प्रकार से विचार करने से आप सामान्य से बिलकुल उलट स्वरूप में विचार करते हैं। किन्हीं गैर पारम्परिक समाधानों को प्राप्त करने के लिए आप पश्चगामी विचार भी कर सकते हैं।

10.4.5 ब्रेनस्ट्रोम अर्थात गहन विचार कार्ड

यह आपके किसी परिवर्तित अथवा आपके द्वारा वर्तमान में अनुभव की जा रही समस्याओं के संबंध में दर्जनों नए उपाय खोजने के लिए एक उपयोगी उपकरण है। ब्रेनस्ट्रोम कार्ड से आपको समाज, नई प्रौद्योगिकी, एवं आपके व्यवसाय से संबंधित विनियमों जैसे बाह्‌य कारकों पर विचार करने में सहायता मिलती है। इस प्रक्रिया से आप थोड़ा प्रयास करके अनेक नए विचार उत्पन्न कर सकते हैं। तथापि, अनेक विचार साध्य नहीं होने पर भी यह उपकरण काफी लाभकारी है।

10.4.6 समरूपी (एनॉलोगी) विचार

यह किसी एक समस्या के समाधान के लिए किसी स्रोत से प्राप्त सूचना का उपयोग किसी अन्य समस्या के समाधान के लिए उपयोग में लाई जाने वाली विधि है। अक्सर किसी एक

समस्या अथवा अवसर के समाधान का उपयोग किसी अन्य समस्या के समाधान के लिए लिया जाता है। उदाहरण के लिए समरूपी विचार का उपयोग किसी सफल व्यवसाय के विश्लेषण से उसकी सफलता के सिद्धांत का संज्ञान करके और फिर उसी सिद्धांत का उपयोग अपने व्यवसाय में करके किया जाता है। यह नए विचार की उत्पति के लिए अप्रयास उपयोग की जाने वाली विधि है जिसका अनेक स्टार्ट-अप्स द्वारा उपयोग किया जा चुका है।

10.4.7 समानुभूति उपयोक्ता अनुसंधान

इस विधि के अंतर्गत उद्यमियों को अपने संभावित ग्राहकों की रोजमर्रा की आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। ऐसा करके ग्राहकों का प्रोफाइल तैयार किया जा सकता है तथा विशिष्ट प्रकार के उत्पाद प्रारंभ किए जा सकते हैं। जो उसी प्रकार है जैसे खाद्य उत्पाद निर्मात्ता कंपनियों द्वारा भारत में ग्राहकों की आवश्यकताओं को विचार में लेकर क्षेत्र विशिष्ट उत्पाद प्रारंभ किए हैं।

ऊपर उल्लेख की गई विधियां नव विचारों की उत्पति की विधियां हैं। नव विचारों की उत्पति के अन्य विकल्प उपदेशक परामर्श, दिन में स्वप्न देखना, ट्रिगर सेशन एवं स्वयं अनुभव करने के उपाय हैं।

ओयो रूम्स के संस्थापक रितेश अग्रवाल ने प्रारंभ में ओ रैवल स्टे के नाम बजट यात्रा के क्षेत्र में शुरूआत की थी। ओ रैवल भारत में ब्रेड एवं ब्रेकफास्ट सेवाएं प्रदान करने वाला समूह था। उन्होंने वहनीय एवं अच्छे बजट वाले कमरों के महत्व को संज्ञान में लिया और ओ रैवल को फिर से ओयो रूम्स (ऑन यूअर रूम्स) के नाम से लॉंच कर दिया। इस उद्यम को सफलता मिली क्योंकि विचारों के समामेलन से उन्हें लाभकारी अवसर प्राप्त हुए थे।

10.5 मामला अध्ययन : चुनौतियों को अवसरों में परिवर्तित करना

नीलकमल, फर्नीचर उत्पादों में एक अग्रणी नाम है, ने सामाजिक उद्यमिता आधार वाली एक अमेरिकी कम्पनी वैल्लो के साथ सहकार्यता करके एक नए उत्पादन - नीलकमल - वैल्लो वाटर व्हील को लांच किया है। यह एक नवोपाय युक्त पेंटेट उत्पाद डिजाइन है जो भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में जल की उपलब्धता को सरल बनाने एवं बढ़ाने के उद्देश्य से डिजाइन किया गया है।

एक बिलियन से अधिक महिलाएं एवं कन्याएं प्रतिदिन घंटों मेहनत करके पानी का भारी बोझ ढोकर अपने घर लाती हैं। सिर पर पानी ढोने की इस प्रथा के परिणामस्वरूप कमर, गर्दन एवं आंखों में दर्द, रीढ़ की हड्डी की वक्रता जैसे जटिल रोग उत्पन्न हुए हैं जिनसे शिशु जन्म के दौरान मृत्यु तक होने की आशंका रहती है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 20 लीटर जल की आवश्यकता की अनुशंसा की गई है परन्तु जल के संग्रह से जुड़ी चुनौतियों के कारण अधिकांश ग्रामीण उपभोक्ताओं की प्रतिदिन पहुंच पांच लीटर तक हो पाती है। जल संग्रह के लिए व्यय किया जाने वाला समय, शारीरिक मेहनत एवं स्वास्थ्य की सम्बद्धता सभी परिवारों को निर्धानता के चक्र में ढकेल रहा है।

नीलकमल - वैल्लो वाटर व्हील एक प्रकार का ड्रम है जो 50 लीटर जल का वहन कर सकता

है तथा इसमें जल का परिवहन लम्बी दूरी तक सुविधा से लुढ़काकर (रोल करके) किया जा सकता है। वाटर व्हील टिकाऊ है, आसानी से उपयोग करके समय एवं मेहनत बचाई जा सकती है। इससे महिलाओं एवं युवा कन्याओं को अन्य उत्पादक कार्यों में समय का सदुपयोग करने में मदद मिलेगी। अमेरिकी प्रौद्योगिकी का मिश्रण नीलकमल की विशेषज्ञता के साथ करने एवं अखिल भारतीय वितरण नेटवर्क के उपयोग से उनका लक्ष्य सम्पूर्ण भारत में लगभग 250 मिलियन ग्रामीण उपभोक्ताओं के बाजार की सेवा करके प्रत्येक घर के लिए सुरक्षित जल की पहुंच सरल बनाना है। इसके लिए उनके द्वारा समानुभूति अनुसंधान आधारित तकनीक का उपयोग किया गया है।

वाटर व्हील नीलकमल के नए सामाजिक प्रभाव समाधान का फ्लैगशिप उत्पाद है; उत्पाद का डिजाइन ग्रामीण के उत्थान एवं अवसंरचना में सुधार के उद्देश्य से किया गया है। इस श्रेणी में आने वाले अन्य उत्पादों में अल्ट्रा-लो-व्हील शौचालय, स्कूल डैस्क एवं अपशिष्ट निपटान बिन हैं। नीलकमल इन उत्पादों का प्रसार वहनीय मूल्य पर अपने विस्तारित वितरण नेटवक्र के माध्यम से देश भर में करना चाहती है।

पाठांत प्रश्न 10.2

नीचे दिये गये वाक्यों में से सत्य अथवा असत्य वाक्यों की पहचान कीजिये:

क) विचार उत्पति की केवल एक विधि है।

ख) गहन विचार के अंतर्गत किसी एक समस्या के समाधान के लिए अनेक प्रकार के समाधानों पर विचार करना पड़ता है।

ग) यदि गहन विचार के दौरान लोग अपने विचार उन्मुक्त रूप से प्रस्तुत कर सकें तो आलोचना का भय नहीं होता है।

घ) ध्यान केन्द्रण समूह को विस्तार से चर्चा के लिए मध्यस्थ की सुविधा प्रदान नहीं की जाती है।

ङ) अंतर विश्लेषण के कार्य अकेले करके वर्तमान स्थिति एवं वांछित भविष्य की स्थिति के मध्य अंतरों के संबंध में चर्चा की जाती है।

च) नीलकमल द्वारा हैल्लो के साथ सहकार्यता की गई है।

छ) संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रति व्यक्ति 20 लीटर जल की अनुशंसा की गई है परन्तु जल संग्रहण से जुड़ी चुनौतियों के कारण अधिकांश ग्रामीण उपभोक्ताओं को मात्र 10 लीटर जल प्रतिदिन प्राप्त हो पाता है।

10.6 आपके नए व्यवसाय विचार के लिए नौ चरणों का व्यवहार्यता परीक्षण

''मुझे यह पता है कि यदि मैं सफल नहीं हुआ तो मुझे दु:ख होगा परन्तु मुझे यह भी पता है कि यदि मैं प्रयास नहीं करूंगा तो मुझे पछताना पड़ेगा।''

– जैफ बेजोस, अमेजन के संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

व्यापार का विचार एक प्रकार का आवेगी विचार होता है, जो बार बार उत्पन्न होता है और कभी भी फीका नहीं पड़ता है। बहुत सारे विचार हैं जो लोगों के सामने आते हैं जिन्होंने उन्हें अपना 'यूरेका' का पल दिया होता है। किसी एक दिन ये विचार मात्र विचार नहीं रहते अपितु इनकी कोई ऐसी विशिष्टता हो जाती है जो धन की आवश्यकता अनुभव करती है। परन्तु इसकी विशिष्टता यह नहीं है जो समग्र निष्पादन तथा व्यवहार्यता के स्थान पर धन को आकर्षित करती है। इस प्रकार व्यापार के विचार को बाजार में पूर्ण व्यवस्थापित व्यापार के रूप में स्थापित होने से पूर्व एक विशिष्ट परीक्षण से गुजरना पड़ता है।

यदि आपके पास किसी एक नए व्यवसाय के लिए कोई महान विचार है, लेकिन यह ज्ञात नहीं है कि प्रारंभ कहां से करना है, तो हम आपके परीक्षण के लिए नौ-चरणीय व्यवहार्यता परीक्षा करके यह ज्ञात करेंगे कि क्या यह आपका विचार आपकी लागतों को कवर करने और लाभ कमाने के लिए पर्याप्त धन कमा सकेगा अथवा नहीं। पाठ 11 में इसके संबंध में विस्तार से चर्चा की गई है।

10.6 विचारों का व्यावसायिक संभावना के रूप में परिवर्तन

प्रेरणा से आप व्यवसाय के लिए प्रतिभाशाली विचार उत्पन्न कर पाते हैं, लेकिन आप अपने मस्तिष्क में किसी नैपकिन की तरह तह बंधे हुए अपने विचार को साकार कैसे कर सकते हैं? यह पहले भी किया जा चुका है। अधिकांश कंपनियां ऐसा एक अनोखा मार्ग अपनाती हैं, जो आसानी से दोहराया नहीं जा सकता है। तथापि, कुछ आधारभूत उपाय हैं जो प्रत्येक नए उद्यमी को अपने विचार को साकार बनाने के लिए करते होते हैं। अपने विचार को एक कामकाजी व्यवसाय में बदलने के लिए इन आठ उपायों का उपयोग करें।

10.6.1 यह ज्ञात करें कि क्या समस्या हल हो रही है

जब आप किसी कंपनी को उसके मुख्य कार्य से विमुख करते हैं, तो आपको लगेगा कि आपने समस्या का समाधान कर लिया है। शुरू-शुरू में आप अपने विचार पर और इससे प्राप्त होने वाले समाधान पर ध्यान केंद्रित करते हैं। कई उद्यमी समाधान का दावा तो करते हैं परन्तु यह स्पष्ट नहीं हो पाता कि वे किस विशिष्ट समस्या का समाधान कर रहे हैं?

उदाहरण के लिए, जैसे कि अमेजन ने समाधान खोजा और कैसे एक समय में महंगा और असुविधाजनक समझा जाने वाला आज ई-कॉमर्स बन गया है जिसके पास आज ब्रिक एंड मोर्टार की प्रतिस्पर्धा से भी अधिक की तुलना में अधिक ग्राहक और बिक्री है।

निचली पंक्ति : सभी सफल कंपनियां, उत्पाद, या सेवाएं प्रदान करके अपनी ग्राहकों की किसी एक समस्या का समाधान करती हैं।

10.6.2 अपना बाजार खोजें

अपने आदर्श उपयोगकर्ता का चित्र अपने मस्तिष्क में बनाएं। यह, यह ज्ञात करने का प्रथम उपाय है कि ग्राहकों की अपार भीड़ में आपका मन कहां आकर रूकता है। प्रत्येक का स्वभावं अलग-अलग होता हैं और उनकी आवश्यकताएं भी अलग अलग होती है, परन्तु एक ही समस्या का सामना प्रत्येक कोई कर रहा होता है। आप बस यह पता लगाएं कि आपका समाधान बाजार में और लोगों के जीवन में कहां फिट होगा।

असफल होने वाले स्टार्ट-अप की सबसे बड़ी गलती यह होती है कि वे लोगों को समझ नहीं पाते हैं कि उन्हें किस प्रकार के उत्पाद अथवा सेवाओं की आवश्यकता है। यदि आपका कोई विचार आपके श्रोताओं को लुभा नहीं पाता है तो इसके लिए बाजार को दोष न दें। इसके स्थान पर आपको यह ज्ञात करना चाहिए कि उन्हें क्या लुभावना लग सकता है अथवा ऐसा क्या है जो उससे अलग हो, जो उनके पास पहले से ही है। यही आपका समाधान है, लेकिन इसे इस तरह से देखने के लिए सही लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

10.6.3 अपना समर्थन खोजें

''क्या आपने कभी इस ओर ध्यान दिया है कि केवल एक व्यक्ति द्वारा कितने सफल स्टार्ट-अप स्थापित किए गए थे?''

यह प्रश्न स्टार्ट-अप के इनक्यूबेटर और वाई कॉम्बिनेटर के सह-संस्थापक पॉल ग्राहम ने तब पूछा था, जब वे स्टार्ट-अप की उन गलतियों को समाधान कर रहे थे जो अंत में विफलता का स्वरूप धारण कर लेती हैं।

व्यापार में साझेदार होने के अनेक लाभ हैं, विशेषकर, जब आप पहली बार शुरू कर रहे हैं। वे आपके समर्थन की क्रिया कर सकते हैं तथा वे आपके विचारों के लिए एक प्रकार से समर्थक बोर्ड का काम कर सकते है और अन्यों के सम्मुख ऐसे प्रमाण प्रस्तुत करने के कार्य कर सकते हैं कि आपके पास वास्तव में अच्छे विचार हैं। इसके स्थान पर एक दल के बजाए अन्य उद्यमियों के साथ संबंध रखने से आपको अमूल्य ज्ञान मिलेगा। अनुभवी उद्यमियों को खोजें और उनके साथ बातचीत करें। उनके मस्तिष्क की ठाह पाने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी क्योंकि वे स्वयं ही अपने बारे में बात करना चाहते हैं। ऐसा करने से आपको वे यह बता सकते हैं कि उन्होंने अपने व्यापार को शुरू करने से क्या सीखा है और क्या अनुभव प्राप्त किए हैं।

10.6.4 प्रथम चरण में वित्तीय मॉडल एवं योजना का निर्माण

अब आपने अपना बाजार अनुसंधान कर लिया है, अब आपको यह पता लगाना होगा कि क्या यह आर्थिक रूप से करना संभव है। एक बॉटम-अप वित्तीय मॉडल बनाएं जो इस बात पर

ध्यान केंद्रित कर सके कि आप अपने उत्पाद अथवा सेवा से किसी व्यक्ति का ध्यान कैसे आकर्षित कर सकते हैं और कैसे उसे बेच सकते हैं। ऐसा करने से आपको यह ज्ञात हो सकेगा कि आपका व्यवसाय कैसे कार्य करेगा।

फिर, अपने अनुमानों को सत्यापित करने के लिए, एक और वित्तीय मॉडल बनाएं जो ''टॉप-डाउन'' है, जो आपके बाजार के आकार की जांच करके यह ज्ञात करता है कि लाभ प्राप्त करने के लिए आपको किन लक्ष्यों पूरा करना है।

एक बार जब आप अपने वित्तीय मॉडल से संतुष्ट हो जाते हैं, तो अपने व्यवसाय के पहले चरण की योजना बनाना शुरू कर दें। यह योजना सरल है: अपने विचारों को बाहर निकालें। अपनी टीम और अपने उपदेशक के साथ चर्चा करने के लिए अपने मिशन, उद्देश्य, सफलता की कुंजी, लक्ष्य बाजार, प्रतिस्पर्धात्मक लाभ और बुनियादी रणनीतियों का खाका तैयार करें। ऐसा करने से सभी एक एक करके अगले चरण को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।

10.6.5 अपनी पूंजी के स्रोत ज्ञात करें

उद्यमी आम तौर पर केवल पैसे के लिए शुरूआत नहीं करते हैं, लेकिन व्यवसाय को वास्तविक स्वरूप प्रदान करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। धन के कुछ प्राप्य स्रोतों में से अपने धन का उपयोग, अपने प्रिय लोगों (मित्र एवं परिवार) के धन का उपयोग, क्रेडिट कार्ड अथवा ऋण का उपयोग किया जा सकता है। आपको जिस राशि की आवश्यकता होती है, उसके आधार पर, एक अधिक सहायक स्रोत कोई एंजेल निवेशक और उद्यम पूंजीपति भी हो सकते हैं जो मुनाफे के थोड़े से हिस्से की आशा से आपके निर्णय निर्धारण में थोड़ा फेरबदल करके आपके मिशन को सहारा देने की ताक में लगे होते हैं।

आप जिस भी स्रोत का चयन उपयोग करने अथवा उसे अपना लक्ष्य बनाने अथवा विचार में लेने के लिए करेंगे उनमें से प्रत्येक के साथ कोई न कोई पारितोषित अथवा जोखिम अवश्य जुड़ा होगा।

10.6.6 न्यूनतम व्यवहार्य उत्पाद (एमवीपी) का निर्माण करें

न्यूनतम व्यवहार्य उत्पाद (एमवीपी) से आपको अपने विचार को साकार रूप प्रदान करने के लिए जिस फीडबैक की आवश्यकता होती है वह आपको प्राप्त हो जाता है। यदि आप कुछ ऐसा बनाएंगे जिसकी किसी भी ग्राहक को कोई आवश्यकता नहीं है तो उसका कोई लाभ नहीं होगा।

न्यूनतम का अर्थ ''मूल'' होना आवश्यक नहीं है। मुद्दा यह नहीं है कि हमें किसी एक उत्पाद का न्यूनतम निर्माण करना है अपितु मुद्दा यह है कि हमें किसी ऐसे उत्पाद का निर्माण करना है जो पहले से ही बढिया (व्यवहार्य) है, परन्तु फिर भी उसमें और सुधार किए जा सकते हैं। ऐसा ही होता है जब प्रारंभिक उपयोग करने वाले ग्राहक स्वयं आगे बढ़कर, यदि उन्हें उत्पाद पसंद आया होता है, बदलाव के लिए कहते हैं और इससे आपको अपने उत्पाद को और बेहतर बनाने के लिए फीडबैक प्राप्त होते हैं।

10.6.7 अपना केन्द्र बिन्दु ज्ञात करें

आपके शुरुआती उपभोक्ताओं से एकत्रित फीडबैक से आपको यह पता चल पाता है कि आपके ग्राहक आपसे क्या आशाएं करते हैं और अपने उत्पाद के प्रति आपको क्या प्रतिक्रिया प्राप्त हो सकती है। इससे आपको यह भी पता लग सकता है कि उनका फीडबैक आपकी आशाओं एवं योजनाओं की तुलना में पूरी तरह से भिन्न है।

इससे आपको अपने व्यवसाय मॉडल का ''केन्द्र बिन्दु'' तैयार हो सकता है अथवा इससे आपके व्यवसाय मॉडल का मौलिक स्वरूप बदल सकता है। दिशा परिवर्तन का अर्थ पूरी तरह से नाकामयाब होना नहीं है, अपितु ऐसा होने से आपका बचाव ऐसी नाकामयाबी से होता है जो घटित हो सकती थी। केन्द्र बिन्दु का अर्थ यह नहीं है कि आपने जो सीखा है वह सब व्यर्थ है, अपितु इसका अर्थ आपको अपनी सीख को नई दिशा

प्रदान करना है। आप किसी गंतव्य के लिए किसी एक मार्ग पर जा रहे हैं और कहीं खो गए हैं। केन्द्र बिन्दु का अर्थ मात्र आपके लिए किसी एक नए मार्ग का निर्माण करना है।

10.6.8 सकारात्मक बनें

ऐसा कहा जाता है कि विपदा के समय प्रेम की आवश्यकता अधिक होती है। अपने व्यवसाय के साथ किसी भी विपदा जुड़ी न होने का सुनिश्चय कर लें। मन में होने वाले संदेह अथवा शंकाएं आपको कोई भी जोखिम उठाने नहीं देंगे। लोग आपके विचारों और आपके व्यापार के बारे में शंका करेंगे परन्तु यदि आपको ऐसी शंकाओं से निपटने की अपनी क्षमता पर विश्वास नहीं है तो वे मात्र आपके मन में नकारात्मकता का संचार कर रहे हैं। जब आप नकारात्मकता के भाव को त्याग कर सकारात्मकता को अपनाते हैं तो आपकी कोई भी गलती अथवा मार्ग की कोई भी बाधा आपके लिए आसान हो जाती है। इन दोनों का कोई अर्थ नहीं होता है। किसी संवहनीय व्यापार का गठन करने की आपकी प्रक्रिया अन्य प्रक्रियाओं की तरह भिन्न नहीं हो सकती है, इसका कारण यह है कि इसमें सफलता प्राप्त होने की कोई भी गारंटी नहीं होती है। आप अब अपने विचारों का उपयोग करके यह ज्ञात कर सकते हैं कि ये कैसे कार्य करते हैं। यदि पहली बार आपको सफलता प्राप्त नहीं होती है तो फिर प्रयास करें और तब तक करते रहें जब तक आप सफल नहीं हो जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 10.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :-

क) अंततः मात्र विचार अथवा उनकी विशिष्टता से ही निधियाँ आकर्षित नहीं होती है परन्तु उसमें .... एवं .... का भी समग्र योगदान होता है।

ख) सभी सफल कम्पनियां, उत्पाद अथवा सेवाएं अपने .... की उपयोज्यता समस्या का अंत करके बढ़ाते हैं।

ग) यह ज्ञात करें कि कैसे आपका .... बाजार अथवा लोगों के जीवन में अपनी जगह बना सकता है।

घ) .... आपकी सहायक है, यह आपके विचारों के लिए समर्थक बोर्ड का काम करते हैं और लोगों को ऐसे प्रमाण उपलब्ध करवाते हैं कि आपके पास *वास्तव में* अच्छा विचार है।

ङ) जब आप अपने .... से संतुष्ट हो जाते हैं तो आपको अपने व्यापार के पहले चरण की योजना का निर्माण करना चाहिए।

च) निधियों की प्राप्ति के कुछ स्रोत ...., ज्ञात लोगों (मित्र तथा परिवार) से धन प्राप्त करना, क्रेडिट कार्ड, अथवा ऋण हैं।

छ) लोग आपके विचार तथा आपके व्यवसाय के बारे में प्रश्न करेंगे, परन्तु यदि उन्हें आपकी क्षमताओं से निपटने की शक्ति पर विश्वास नहीं है तो वे आप में .... का संचार कर रहे हैं।

निष्कर्ष

इस अध्याय में हमने यह जाना कि कोई उद्यमी किस प्रकार आवश्यकताओं एवं इच्छाओं में अंतर ज्ञात करके उन्हें लोगों की आवश्यकता में परिवर्तित कर सकता है जो अंततः मांग का स्वरूप धारण कर लेती हैं। किसी उद्यमी को सफल बनने के लिए मूल रूप से विचारोत्पति, व्यवहार्य की जांच और अंततः अवसर तलाश करने होते हैं। इस प्रकार विचारों को उपलब्ध डेटा, बाजार विशेषताओं एवं प्रतिस्पर्धी की क्रियाओं के आधार पर अवसरों में परिवर्तित किया जा सकता है।

आपने क्या सीखा

- आवश्यकताओं का अर्थ वे अपेक्षाएं हैं जो किसी मानव के स्वस्थ जीवन के लिए अत्यधिक आवश्यक होती हैं। ये न केवल वैयक्तिक होती हैं अपितु ये मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक अपेक्षाएं होती हैं जो किसी मानव की उत्तरजीविता के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

- इच्छा एक प्रकार से पसंद होती है, जिसे कोई व्यक्ति पूरी कर लेता है अथवा पूरी नहीं कर पाता है। मानव की सभी इच्छाएं, आकांक्षाएं अथवा लक्ष्य अर्थशास्त्र में मानवीय इच्छाओं के रूप में जानी जाती हैं। कोई इच्छा जो किसी वस्तु अथवा सेवा से संतुष्ट होती है उसे आर्थिक इच्छा कहा जाता है।

- मांग से उपभोक्ताओं की किसी वस्तु अथवा सेवा की वांछित मात्रा में खरीद करने की इच्छा तथा क्षमता अभिप्रेत है।

- आवश्यकताएं एवं इच्छाएं भिन्न होती हैं। आवश्यकताएं सीमित होती हैं जबकि इच्छाएं असीमित होती हैं, आवश्यकता से अनिवार्यता अभिप्रेत है जबकि इच्छाओं का अर्थ आकांक्षाएं हैं। आवश्यकताएं उत्तरजीविता के लिए अनिवार्य होती हैं जबकि इच्छाएं अनिवार्य नहीं होती हैं।

- विचारोत्पति का वर्णन सृष्टि, निर्माण एवं भाव सम्प्रेषण, साकार अथवा दृश्य विचार के रूप में किया गया है। यह विचार प्रबंधन की कीप का अग्र सिरा होता है तथा संभाव्य समाधानों को साकार रूप देने अथवा वास्तविक समस्याओं अथवा अवसरों को विचार में लेता है।

- विचारोत्पति के लिए सम्बद्ध रहना, अपने संगठन में सकारात्मक परिवर्तन होते हुए देखना, अपने उत्पादों को बेहतर बनाने के लिए कार्यकुशलता में सुधार लाना, अपनी परिचालन क्रियाओं में सुधार लाना, विकास की दिशा में नवोपाय करना शामिल है।

- विचारोत्पति के उपकरण गहन विचार, विपरीत गहन विचार, मस्तिष्क लेखन, अंतर विश्लेषण इत्यादि हैं।

- गहन विचार तकनीक का अर्थ मस्तिष्क अथवा गहन विचार से किसी मामले / समस्या के विभिन्न घटकों पर विचार करना है। गहन विचार सामान्यतः मामले / समस्या के समाधान के लिए उत्पन्न हुए विचारों की संख्या को न्यून कर देता है।

- समूह ध्यान केन्द्रण सामान्यतः भिन्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बद्ध छः से बारह लोगों द्वारा किया जाता है। उनका गठन किसी विशेष मामले जैसे कि नए उत्पाद विचार पर ध्यान केन्द्रण के लिए किया जाता है।

- किसी समूह द्वारा अपनी वर्तमान स्थिति का संज्ञान करने और भावी स्थिति की स्थापना के लिए अंतर विश्लेषण एक उपयोगी उपकरण है।

- यह एक ऐसी विधि है जिससे आपको अपने व्यवसाय की दीर्घकालिक लंबित धारणाओं का समाधान ज्ञात करने में सहायता मिल सकती है।

- ब्रेनस्ट्रोम कार्ड आपके किसी परिवर्तित अथवा आपके द्वारा वर्तमान में अनुभव की जा रही समस्याओं के संबंध में दर्जनों नए उपाय खोजने के लिए एक उपयोगी उपकरण है।

- एनॉलॉगी विचार एक समस्या के समाधान के लिए किसी स्रोत से प्राप्त सूचना का उपयोग किसी अन्य समस्या के समाधान के लिए उपयोग में लाई जाने वाली विधि है।

- समानुभूति उपभोक्ता अनुसंधान के अंतर्गत उद्यमियों को अपने संभावित ग्राहकों की रोजमर्रा की आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिया जाना अपेक्षित है।

- विचारों का व्यवसाय अवसरों में परिवर्तन। किसी समाधान की जाने वाली समस्या को खोजें, अपना बाजार खोजें, अपने लिए सहायता की खोज करके वित्तीय मॉडल का निर्माण करते हुए अपनी निधियों के स्रोत खोजें, न्यूनतम व्यवहार्य उत्पाद का निर्माण करें, अपना केन्द्र बिंदु खोजें और सकारात्मक बने रहें।

पाठांत प्रश्न

1) आवश्यकताओं, इच्छाओं और मांग के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए।

2) (क) गहन विचार (ख) अंतर विश्लेषण के संबंध में लघु टिप्पणियां लिखिये।

3) कृपया बताएं कि आप अपने विचारों को व्यवसाय अवसरों में किस प्रकार परिवर्तित कर सकते हैं।

4) विचारोत्पति के लिए किन उपकरणों एवं विधियों का उपयोग करना अपेक्षित है?

5) विचारोत्पति की अवधारणा क्या है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

(1) गलत (2) गलत (3) सही (4) गलत (5) गलत (6) गलत

10.2

(1) गलत (2) सही (3) सही (4) गलत (5) गलत (6) गलत (7) गलत

10.3

(i) समग्र निष्पादन एवं व्यवहार्यता के स्थान पर

(ii) ग्राहक समस्या

(iii) समाधान

(iv) व्यापार साझेदार

(v) वित्तीय मॉडल

(vi) स्वयं निधियन

(vii) नकारात्मकता का संचार

टिप्पणी

करें और सीखें

ऐसे कार्यों की सूची तैयार करें जिसके दो कॉलमों के अंतर्गत आवश्यकताएं एवं इच्छाएं शीर्षक हों। क्या आप ऐसी वस्तुओं की सूची तैयार कर सकते हैं जिनकी आपको इच्छा है परन्तु आपने उन्हें अपनी आवश्यकता मान लिया है।

अवधारणा नक्शे

11

उद्यम की स्थापना

अब आपको उद्यमिता के बारे में सब कुछ ज्ञात है। यह किसी उद्यम के निर्माण अथवा उद्यमी बनने के अवसर तथा लाभ अर्जित करने की प्रक्रिया है। उद्यम क्या है? विभिन्न प्रकार के उद्यम क्या होते हैं? किसी उद्यम को स्थापित करने की प्रक्रिया क्या है? उद्यम का पंजीकरण कैसे किया जाता है? इन सब विषयों पर इस पाठ में चर्चा की जायेगी।

अधिगम के प्रतिफल

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप :

- विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक उद्यमों की व्याख्या करते हैं;
- संक्षिप्त परियोजना रिपोर्ट की व्यवहार्यता का विशलेषण करते हैं;
- संक्षिप्त परियोजना रिपोर्ट तैयार करते हैं; और
- विधिक अनुपालन एवं पंजीकरण की औपचारिकताओं की रूपरेखा तैयार करते हैं।

11.1 उद्यम स्थापित करने की प्रक्रिया

उद्यम एक व्यावसायिक प्रक्रिया अथवा व्यवसाय प्रयोजन अथवा ऐसी कोई अन्य स्थापना होती है जो ग्राहक की मांग की पूर्ति के लिए उत्पादन अथवा माल अथवा सेवाओं की पूर्ति की क्रियाएं करती है, इसके बारे में आगे अध्याय 13 में विस्तार से चर्चा की गई है।

किसी उद्यम को स्थापित करने की पूर्ण प्रक्रिया किसी नवोपाय युक्त व्यवसाय विचार को ऐसी वास्तविक परियोजना में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है जो दीर्घकाल में लाभ अर्जित कर सके। किसी उद्यम की स्थापना करना इतना सरल नहीं है जितना प्रतीत होता है। इसके अंतर्गत अनेक प्रतिबद्धताएं, धैर्य, उचित योजना का निर्माण एवं आपके मस्तिष्क में तैयार किसी खाके को वास्तविक उद्यम में परिवर्तित करने की प्रक्रियाएं होती हैं।

किसी दृढ़ निश्चयी उद्यमी किसी भी व्यापार परियोजना की सफलता का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। किसी उद्यम को स्थापित करने के लिए उचित परियोजना का निधरिण किया जाना अत्यंत आवश्यक है। ऐसा करने के लिए एक प्रक्रियाबद्ध व्यवहार्यता अध्ययन, परियोजना प्रोफाइल का निर्माण, रणनीतिक योजना, कम्पनी के संघटक के संबंध में निर्णय निर्धारण, परियोजना रिपोर्ट का निर्माण, संबंधित विभागों में पंजीकरण करवाना एवं क्लीयरेंस प्राप्त करना, संसाधनों को एकत्र करना, निधियां प्राप्त करना तथा परियोजना का अंतिम क्रियान्वयन करना अपेक्षित होता है। प्रदान की जाने वाले उत्पाद/सेवा के आधार पर परियोजना व्यवहार्य अध्ययन करना और उसके आधार पर उत्पाद प्रोफाइल तैयार करना अपेक्षित होता है। परियोजना के प्रकार के आधार पर उद्यम के उचित स्वरूप, स्थल, निवेश के उचित स्वरूप का निर्धारण अपेक्षित होता है। इस अध्याय में हम किसी उद्यम को स्थापित करने के लिए विभिन्न घटकों के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

किसी उद्यम की स्थापना
↓
यथोचित स्वरूप के संगठन का चयन
↓
व्यवहार्यता अध्ययन
↓
परियोजना रिपोर्ट का निर्माण
↓
संबंधित विभागों पंजीकरण तथा विधिक क्लीयरेंस प्राप्त करना
↓
संसाधनों को एकत्र करना
↓
वित्त प्राप्त करना
↓
परियोजना का अंतिम निष्पादन करना

11.2 उद्यम के स्वरूप

किसी उद्यम की स्थापना के लिए उद्यमी को परियोजना के प्रारंभिक चरण में उद्यम के संघटन के बारे में निर्णय लेना पड़ता है। किसी उद्यम के स्वरूप भिन्न प्रकार के होते हैं जिन्हें उद्यमी द्वारा अपनी वांछित परियोजना के चयन के आधार पर चुना जा सकता है। परियोजना के सफल निष्पादन के लिए उद्यम के सबसे अनुकूल रूप का चयन महत्त्वपूर्ण है। आइए कुछ विस्तृत श्रेणियों के उद्यमों पर चर्चा करें।

11.2.1 संगठनों के प्रकार

1. एकल स्वामित्व

किसी उद्यम का सबसे प्राचीन एवं सरलतम स्वरूप एकल स्वामित्व है। इसे एकल व्यापारी या केवल पूर्ण स्वामित्व के रूप में भी जाना जाता है। इस प्रकार की व्यापार इकाई, जिसका स्वामित्व एवं संचालन किसी एक व्यक्ति द्वारा किया जाता है तथा उसका 100 प्रतिशत स्वामित्व और मुनाफा तथा इसी प्रकार निर्णय लेने का अधिकार स्वामी को प्राप्त होना है। एकल स्वामित्व के मामले में स्वामी और व्यवसाय के बीच कोई विधिक प्रधानता नहीं होती है। कोका-कोला, एप्पल, गूगल, अमेजन और डिजनी जैसी अनेक कंपनियों ने एकल स्वामित्व के रूप में शुरुआत की थी और बाद में विशाल कॉरपोरेशन (बड़ी कंपनियों) के रूप में परिवर्तित हो गए।

एकल स्वामित्व अपनी सरलता, आसानी से स्थापित होने की क्षमता और तुलनात्मक रूप से कम प्रारंभिक लागतों के कारण व्यापार का एक लोकप्रिय व्यवसाय स्वरूप है। एकल स्वामी को केवल अपने स्थानीय लाइसेंस की प्राप्ति के लिए अपना नाम पंजीकृत करवाना होता है तथा उसके पश्चात वह अपना व्यापार तुरंत प्रारंभ कर सकता है। एकमात्र स्वामित्व के लिए कराधान की औपचारिकता भी बहुत आसान है क्योंकि व्यवसाय के दौरान उत्पन्न आय केवल मालिक की व्यक्तिगत आयकर दर पर होती है जिसमें कोई बड़ी रिपोर्टिंग आवश्यकता नहीं होती है।

एकल स्वामित्व के प्रमुख आकर्षण

क. एकल स्वामित्व

ख. फर्म की कोई अलग विधिक कम्पनी इकाई नहीं होती है।

ग. असीमित दायित्व

घ. एक व्यक्ति द्वारा नियंत्रण

ङ. अविभाजित जोखिम

2. साझेदारी वाली फर्म

व्यावसायिक इकाई का आकार और परिचालन का दायरा बढ़ने के साथ साथ व्यवसाय के लिए और अधिक धन की आवश्यकता प्रतीत होने लगती है जो कि किसी एकल व्यक्ति की क्षमता में नहीं होती है। व्यक्तियों के समूह संगठन की जरूरतों को पूरा करने के लिए साझेदारी करने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा सकते हैं। उद्यम के रूप में साझेदारी किसी एकल व्यक्ति की व्यवसाय के लिए आवश्यक अधिक पूंजी, बेहतर प्रबंधकीय कौशल और विशेषज्ञता की आवश्यकता जैसी सीमाओं का समाधान हो पाता है।

पार्टनरशिप एक्ट, 1932 में साझेदारी की परिभाषा इस प्रकार की गई है– "उन व्यक्तियों के बीच का संबंध जो सभी के लिए या उनमें से किसी के द्वारा किए गए व्यवसाय के मुनाफे को साझा करने के लिए सहमत हुए हैं"। दूसरे शब्दों में, साझेदारी संगठन का एक स्वरूप है जिस में दो या दो से अधिक व्यक्ति स्वामित्व और इस प्रकार व्यवसाय इकाई में उत्पन्न लाभ या हानि को साझा करते हैं। साझेदारी समझौता करने वाले व्यक्तियों को भागीदार कहा जाता है।

कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 464 के अनुसार, सरकार द्वारा निर्धारित संख्या के अनुसार अधिकतम भागीदार 100 हो सकते हैं। तथापि, कंपनी (विविध), नियमावली, 2014 के नियम 10 के अनुसार, वर्तमान में सदस्यों की अधिकतम संख्या 50 है।

साझेदारी एकल स्वामित्व फर्म के विस्तार के परिणाम स्वरूप या साझेदारी फार्म बनाने के लिए हाथ मिलाने के लिए दो या दो से अधिक लोगों के बीच एक समझौते के परिणाम स्वरूप अस्तित्व में आ सकती है।

साझेदारी फर्म की मुख्य विशेषताएं

क. दो या अधिक व्यक्ति साझेदारी समझौता करते हैं, जिन्हें साझेदार के रूप में जाना जाता है।

ख. एक लिखित या मौखिक समझौता

ग. इसके विधिक पहलू भारतीय भागीदारी अधिनियम, 1932 द्वारा शासित हैं। परस्पर सहमति से एक साथ जुड़ने को साझेदारी कहा जाता है।

ङ. साझेदारों के असीमित दायित्व

च. फर्म की कोई अलग विधिक इकाई नहीं

3. सीमित देयता भागीदारी फर्म

साझेदारी फर्म का एक पारंपरिक रूप असीमित देयता की समस्या से ग्रस्त है। साझेदारी फर्मों की देयताएं उनकी व्यक्तिगत संपत्ति तक विस्तारित हैं। ऐसी स्थिति अधिकांश उद्यमियों के लिए नियमित भागीदारी फर्मों के संदर्भ में अवांछनीय स्थिति है। इन मुद्दों के समाधान के लिए भारत सरकार द्वारा जनवरी 2009 में संगठन का एक नया स्वरूप पारित किया गया है, सीमित देयता भागीदारी अधिनियम, 2008 के तहत सीमित देयता भागीदारी को शासित किया जाता है।

सीमित देयता भागीदारी या एलएलपी संगठन का एक मिश्रित स्वरूप है, जिसमें पारंपरिक साझेदारी फर्म और कंपनी दोनों की विशेषताएँ शामिल हैं। यह एक वैकल्पिक कॉर्पोरेट व्यवसाय स्वरूप है जो कम अनुपालन लागत पर भागीदारों को सीमित देयता का लाभ प्रदान करता है। एलएलपी एक कानूनी इकाई है, जो अपनी संपत्ति की पूर्ण सीमा के लिए उत्तरदायी है। तथापि, इसके भागीदारों की देनदारियां सीमित हैं। इसके अलावा, कोई भी भागीदार फर्म में अन्य भागीदारों के स्वतंत्र या अनधिकृत कार्यों के लिए उत्तरदायी नहीं होता है। इस प्रकार, एलएलपी में वैयक्तिक साझेदारों को किसी अन्य साझेदार के गलत व्यावसायिक निर्णयों या कदाचार से उत्पन्न देनदारियों से बचाए रखने की व्यवस्था की गई है।

सीमित देयता भागीदारी फर्म की मुख्य विशेषताएं

क. यह एक कॉर्पोरेट निकाय है जिसकी अपनी अलग कानूनी इकाई है

ख. यह पारंपरिक रूप से साझेदारी के विपरीत स्थायी उत्तराधिकार के लाभ प्रदान करना है

ग. यह सीमित देयता भागीदारी अधिनियम, 2008 द्वारा शासित है। इसके अलावा, भागीदारी अधिनियम, 1932 इसके संबंध में लागू नहीं है।

घ. इसके संघटन के लिए न्यूनतम दो व्यक्ति होने चाहिए। तथापि, साझेदारी फर्म के विपरीत, अधिकतम सदस्यों की कोई सीमा नहीं है।

ङ. साझेदार के दायित्व सीमित माने जाते हैं

च. साझेदारों की आपसी सहमति से सीमित दायित्व साझेदारी हो सकती है।

4. संयुक्त स्टॉक कंपनी

संगठन का यह स्वरूप व्यवसायों के स्वामित्व और साझेदारी स्वरूपों में व्याप्त दोषों को दूर करने के लिए विकसित किया गया था। मुनाफा कमाने के उद्देश्य से व्यवसाय का संचालन करने के लिए एकत्रित व्यक्तियों के समूह को संयुक्त स्टॉक कंपनी या संघ माना गया है। व्यक्तियों के पास कंपनी में स्वामित्व वाले शेयरों की पूंजी का एक संयुक्त स्टॉक होता है। ये शेयर/स्टॉक समूह की सहमति के बिना सदस्यों द्वारा हस्तांतरणीय किए जा सकते हैं।

किसी संयुक्त स्टॉक कंपनी का गठन कंपनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत किया जा सकता है। एक पंजीकृत कंपनी को एक अलग कानूनी इकाई के रूप में शामिल किया जाता है, जिसमें एक अलग नाम, सामान्य मुहरें और व्यक्तिगत शेयरधारिता अथवा सदस्यों की सीमित देयता के साथ स्थायी उत्तराधिकार प्राप्त होता है। एक स्वतंत्र कानूनी इकाई के रूप में, संयुक्त स्टॉक कंपनी को एक कृत्रिम कानूनी व्यक्ति का दर्जा प्राप्त है, जिसका अर्थ है कि यह किसी अन्य पार्टी पर मुकदमा कर सकता है या उसके नाम पर मुकदमा किया जा सकता है।

संयुक्त स्टॉक कंपनी के प्रकार

1. **प्राइवेट कंपनी :** कोई प्राइवेट कंपनी एक ऐसी कंपनी है जिसकी संगम अनुच्छेद (आर्टिकल ऑफ एसोसिएशन) में किए गए निर्धारण के अनुसार एक लाख रुपये या इससे अधिक की चुकता पूँजी होती है। हालांकि कंपनी संशोधन अधिनियम (2015) में न्यूनतम चूकता पूंजी की आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया है। प्राइवेट कंपनी बनाने के लिए कम से कम दो सदस्य होने चाहिए। अधिकतम सीमा 200 सदस्यों की है। साथ ही, ये सदस्य अपने शेयरों को स्थानांतरित करने के अपने अधिकारों, यदि कोई हो, में प्रतिबंधित हैं। कोई प्राइवेट कंपनी, कंपनी के शेयरों या डिबेंचर में अंशदान के लिए जनता को आमंत्रित नहीं कर सकती है।

2. **सार्वजनिक (पब्लिक) कंपनी :** सार्वजनिक (पब्लिक) कोई भी ऐसी कंपनी होती है, जो

क. प्राइवेट कंपनी नहीं है।

ख. किए गए निर्धारण के अनुसार जिसकी न्यूनतम पाँच लाख रुपये और उससे अधिक की चुकता पूंजी है।

ग. जो किसी ऐसी कंपनी की एक सहायक कंपनी है जो एक प्राइवेट कंपनी नहीं है। किसी सार्वजनिक कंपनी के गठन के लिए कम से कम सात सदस्यों की

आवश्यकता होती है। आवश्यकता होने पर इसमें आम जनता को अपने शेयरों और डिबेंचर में अंशदान के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। अपने शेयरों को हस्तांतरित करने के लिए सदस्यों पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है।

11.2.2 कम्पनी के स्वरूप का विकल्प

किसी संभावित उद्यमी को अपने व्यवसायिक विचार को सर्वोत्तम संभव तरीके से संज्ञान में लेने वाले संगठन की पहचान करने के लिए विभिन्न प्रकार के विश्लेषण करने चाहिए। व्यवसाय इकाई की स्थापना के समय चयन करना पड़ता है। चयन का निर्धारण अनेक कारकों को विचार में रखकर किया जा सकता है।

क. व्यवसाय की प्रकृति

ख. आकार और परिचालन का प्रसार

ग. पूंजी अपेक्षाएं

घ. प्रोमोटर द्वारा वांछित नियंत्रण की डिग्री

ङ. स्वामियों में जोखिम एवं अनिश्चितता का वहन करने की डिग्री

च. स्वामियों द्वारा वांछित उद्यम का जीवन काल

पाठगत प्रश्न 11.1

यह बताएं कि नीचे प्रस्तुत विवरण में से क्या सत्य अथवा असत्य है–

1. किसी उद्यम की स्थापना के लिए पहला क्रियाकलाप व्यवहार्यता अध्ययन है।
2. एकल स्वामित्व व्यवसाय का स्वामित्व एवं संचालन किसी एक व्यक्ति अथवा एकल व्यापारी द्वारा किया जाता है।
3. शत प्रतिशत स्वामित्व और मुनाफा और साथ निर्णय लेने का प्राधिकार एकल स्वामी को प्राप्त होता है।
4. एकल स्वामित्व वाली फर्म के स्वामी की कानूनी पहचान स्वामी से भिन्न होती है।
5. दो या अधिक व्यक्ति जब साझेदारी समझौता करते हैं, तो उन्हें साझेदार के रूप में जाना जाता है।
6. एक साझेदारी फर्म में, भागीदारों की संख्या के लिए कोई अधिकतम सीमा नहीं है।
7. सीमित देयता भागीदारी या एलएलपी संगठन का एक संकर रूप है जिसमें पारंपरिक साझेदारी फर्म और कंपनी दोनों की विशेषताएं शामिल हैं।

8. एक संयुक्त स्टॉक कंपनी मुनाफा कमाने के सामान्य उद्देश्य से व्यवसाय का संचालन करने के लिए एकत्रित व्यक्तियों का एक समूह है।

9. एक संयुक्त स्टॉक कंपनी की अपने स्वामियों के लिए कोई अलग कानूनी पहचान नहीं है।

10. सार्वजनिक कंपनी के गठन के लिए कम से कम सात सदस्यों की आवश्यकता होती है।

11. एक सार्वजनिक कंपनी यदि आवश्यक हो, तो शेयर और डिबेंचर की सदस्यता के लिए आम जनता को आमंत्रित कर सकती है।

11.3 व्यवहार्यता अध्ययन

व्यवहार्यता अध्ययन एक व्यवस्थित विश्लेषण है जिसके अंतर्गत किसी विशेष व्यापार विचार के संभावित समाधानों को खोजना और उनक प्रलेखन करना शामिल है। व्यवहार्यता अध्ययन यह जांचने के लिए किया जाता है कि व्यावसायिक योजना सुलभ तकनीक के अनुकूल है अथवा नहीं है। दूसरे शब्दों में, यह प्रस्तावित व्यावसायिक विचार का विश्लेषण और मूल्यांकन है अथवा क्या यह तकनीकी रूप से संभव है।

यदि यह ऐसा है, तो विचार का अगला मुद्दा यह है कि क्या यह लाभदायक होगा? व्यवहार्यता अध्ययन में एक लक्षित बाजार विश्लेषण, तकनीकी विश्लेषण, वित्तीय विश्लेषण, आर्थिक विश्लेषण और व्यावसायिक व्यवहार्यता विश्लेषण किया जाना शामिल है।

1. **बाजार व्यवहार्यता विश्लेषण :** बाजार व्यवहार्यता विश्लेषण के अंतर्गत संभावित बाजार और बाजार अंशभाग, बाजार में विकास की संभावनाओं एवं प्रतिस्पर्धियों की स्थिति जैसे बाजार कारकों को विचार में लिया जाता है। बाजार की व्यवहार्यता का मूल्यांकन करने के लिए बाजार सर्वेक्षण सबसे लोकप्रिय विधि है। बाजार व्यवहार्यता अध्ययन में उत्पादन की बाजार लागत और उत्पादन की समग्र लागत, बिक्री मूल्य और मुनाफे, बाजार की मांग, लक्ष्य बाजार, बाजार हिस्सेदारी आदि की प्रकृति का विश्लेषण किया जाना शामिल है।

2. **तकनीकी व्यवहार्यता विश्लेषण :** तकनीकी व्यवहार्यता विश्लेषण परियोजना की तकनीकी व्यवहार्यता का विश्लेषण किए जाने से संबंधित है। इस अध्ययन में, भूमि, भवन, परिवहन, कच्चे माल की उपलब्धता, स्थानीय फायदे और नुकसान, तकनीकी जानकारी का मूल्यांकन, श्रम शक्ति की आवश्यकता और परियोजना अनुसूची जैसी अवसंरचनात्मक सुविधाओं की समीक्षा करने का प्रयास किया जाता है।

3. **वित्तीय व्यवहार्यता विश्लेषण :** इसके अंतर्गत परियोजना के निष्पादन में समापित जोखिम और अनिश्चितता का आकलन किया जाता है। इस विश्लेषण का उद्देश्य परियोजना की वित्तीय व्यवहार्यता का आकलन करने के लिए कुछ उपाय निकालना है। व्यवहार्यता रिपोर्ट में अपेक्षित कर कानूनों, लागू कर कानूनों के अनुसार कराधान की

देनदारियों, प्राथमिकता वाले उद्योगों के लिए आयकर छूट, पिछड़े क्षेत्रों के लिए प्रोत्साहन, अपेक्षित उद्योग के अनुरूप अपेक्षित मूल्यह्रास आदि को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

4. **वाणिज्यिक व्यवहार्यता विश्लेषण :** वाणिज्यिक व्यवहार्यता के अंतर्गत विश्लेषण परियोजना की व्यवस्था के वाणिज्यिक पहलुओं का मूल्यांकन किया जाता है। इस विश्लेषण में संयंत्र और मशीनरी की व्यवस्था प्रक्रिया, कच्चे माल के आपूर्तिकर्ताओं के चयन की प्रक्रिया, संयंत्र के लिए उपयुक्त स्थान और परियोजना के अन्य वाणिज्यिक पहलुओं की भी जांच की जा सकती है।

5. **आर्थिक विश्लेषण :** आर्थिक विश्लेषण में लागत और लाभ विश्लेषण के संदर्भ में परियोजना का मूल्यांकन शामिल है। यह व्यापार विचार के मूल्यांकन का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। यह परियोजना की दक्षता निर्धारित करने की प्रक्रिया है। इसे लागत विश्लेषणओं कहा जाता है।

11.4 परियोजना रिपोर्ट का निर्माण

परियोजना एक अस्थायी, अद्वितीय और यथार्थवादी व्यापार विचार है है जिसे एक व्यवहार्य और निष्पादित की जा सकने वाली योजना में परिवर्तित किया जाता है। पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के स्वरूप की प्राप्ति के लिए यह समयबद्ध होता है। जोखिम और अनिश्चिता किसी परियोजना के अभिन्न अंग होते हैं। सभी परियोजनाओं को अपने जीवन काल में विभिन्न चरणों से गुजरना पड़ता है। इन चरणों का मोटे तौर पर वर्गीकरण, संकल्पना चरण, परिभाषा चरण, योजना और आयोजन चरण, कार्यान्वयन चरण और क्लीन-अपचरण के रूप में किया जाता है।

परियोजना रिपोर्ट एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जिससे परियोजना के मूल का खाका प्रस्तुत होता है। यह प्रक्रिया के दौरान की जाने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का संक्षेपण करता है। इस रिपोर्ट से प्रभावी निर्णय लेने और बाजार से धन प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होती है। परियोजना की रिपोर्ट में व्यावसायिक विचार मूल्यांकन और परियोजना मूल्यांकन के लिए आवश्यक सभी प्रासंगिक जानकारी शामिल हैं। इस प्रकार, परियोजना रिपोर्ट तैयार करना उद्यमी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह अनिवार्य रूप से दो महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करना है।

क. उद्यम की दिशा का वर्णन करने वाले वाली स्पष्ट रूपरेखा की प्रस्तुति

ख. संभावित ऋणदाताओं और निवेशकों को आकर्षित करने के लिए

भारतीय नीति आयोग परियोजना रिपोर्ट की तैयारी के लिए विधिवत दिशा-निर्देश प्रदान करता है। परियोजना रिपोर्ट में मोटे तौर पर प्रस्तावित परियोजना के निम्नलिखित पक्ष शामिल होते हैं:-

परियोजना रिपोर्ट की विषय वस्तु

1. **सामान्य जानकारी :** परियोजना रिपोर्ट में उस उद्योग का संक्षित विश्लेषण होना चाहिए जिससे वह सम्बद्ध है। इसमें प्रस्तावित इकाई के प्रकार, उसके आकार, कंपनी प्रोफाइल, उत्पाद/सेवा प्रोफाइल, कंपनी के संघटन आदि से संबंधित विवरण भी होना चाहिए।

2. **उत्पाद प्रोफाइल :** यह खंड उत्पाद के बुनियादी विनिर्देश और विशेषताओं की प्रस्तुति के लिए है। इसमें उत्पाद का विवरण होना चाहिए जैसे उत्पाद/सेवा का नाम, उत्पाद/सेवा का प्रकार, उपलब्ध प्रकार, उत्पाद/सेवा का संक्षिप्त विवरण आदि।

3. **प्रमोटर प्रोफाइल :** इसमें प्रमोटरों का विवरण होता है जैसे उनका नाम, आयु, शैक्षिक योग्यता, पता, संपर्क विवरण आदि।

4. **परियोजना विवरण :** परियोजना की रिपोर्ट में उस परियोजना का संक्षिप्त विवरण होना चाहिए जिसमें उद्यमी काम करना चाहता है। इसमें एक संक्षिप्त व्यवहार्यता रिपोर्ट, परियोजना के लिए चुनी गई प्रौद्योगिकी/प्रक्रिया का संक्षिप्त विवरण, परियोजना की क्षमता, उत्पादन का अपेक्षित स्तर आदि शामिल हैं।

5. **यूनिट का स्थान :** परियोजना में यूनिट के सटीक स्थान जैसे विवरण शामिल होना चाहिए, चाहे संपत्ति पट्टे पर हो अथवा स्व-स्वामित्व वाली और लाभकारी स्थल पर स्थित होता।

6. **बाजार सर्वेक्षण :** परियोजना रिपोर्ट का यह भाग प्रोमोटरों द्वारा लक्षित बाजार समूह की खोज के बारे में है, जिसका उद्देश्य उत्पाद/सेवा के प्रति लक्षित ग्राहक समूह की प्रतिक्रिया का विश्लेषण करना है।

7. **निधि की आवश्यकता :** परियोजना रिपोर्ट में आवश्यक धन का विवरण होना चाहिए। इसमें निधियों की मात्र और एवं कार्यशील पूंजी, सावधि पूंजी, निधियों के स्रोत की पहचान इत्यादि शामिल है।

8. **अन्य परिचालन आवश्यकताएं :** परियोजना रिपोर्ट के इस भाग में अन्य सभी घटक शामिल हैं जिन्हें पिछले घटकों में शामिल नहीं किया गया है जैसे कच्चे माल की लागत, मानव संसाधनों की आवश्यकता और अन्य परिचालन लागत।

परियोजना के रिपोर्ट के घटक	
सामान्य सूचना	**उत्पाद प्रोफाइल**
• उद्योग विश्लेषण	• उत्पाद का नाम
• यूनिट प्रोफाइल	• उत्पाद विवरण
• यूनिट प्रकार	• प्रकार
• यूनिट का संघटन	• वैरिएंट (प्रकार)

प्रोमोटर प्रोफाइल	**परियोजना प्रोफाइल**
• नाम • आयु • शैक्षणिक अर्हता • संपर्क विवरण	• संक्षिप्त व्यवहार्यता जांच • प्रौद्योगिकी/प्रक्रिया • विवरण • परियोजना क्षमता • उत्पाद स्तर
यूनिट की स्थिति	**बाजार सर्वेक्षण**
• सटीक लोकेशन • स्वामित्व स्वरूप • स्थल की स्थिति के लाभ (यदि कोई हो)	• सवेक्षण निष्कर्ष
निधियन अपेक्षाएं	**परिचालनात्मक अपेक्षाएं**
• निधियन हेतु संज्ञान किए गए स्रोत • अपेक्षित निधियों की मात्रा	• कच्ची सामग्री लागत • जनशक्ति अपेक्षाएं • अन्य परिचालन लागतें

पाठगत प्रश्न 11.2

कृपया बताएं कि निम्नलिखित कथनों में से क्या सत्य अथवा क्या असत्य है–

1. व्यवहार्यता अध्ययन एक व्यवस्थित विश्लेषण है जिसमें किसी विशेष व्यापार विचार के संभावित समाधानों को खोजना और उनका प्रलेखन करना शामिल है।
2. किसी परियोजना की तकनीकी व्यवहार्यता का विश्लेषण तकनीकी विश्लेषण के साथ किया जाता है।
3. व्यापार योजना सुलभ तकनीक के अनुकूल है या नहीं, यह ज्ञात करने के लिए वित्तीय विश्लेषण आवश्यक है।
4. वाणिज्यिक व्यवहार्यता विश्लेषण परियोजना की व्यवस्था के वाणिज्यिक पहलुओं का मूल्यांकन करता है।
5. आर्थिक विश्लेषण में लागत और लाभ विश्लेषण के संदर्भ में परियोजना का मूल्यांकन शामिल नहीं होता है।
6. परियोजना रिपोर्ट प्रभावी निर्णय लेने और बाजार से धन की प्राप्ति में मदद करती है।

7. परियोजना रिपोर्ट में उस परियोजना की संक्षिप्त परन्तु पूरी प्रोफाइल होनी चाहिए जिसके लिए उद्यमी संव्यवहार करना चाहता है।

11.5 नए व्यवसाय की स्थापना के लिए विधिक अनुपालन

जिन विधिक अपेक्षओं का अनुपालन किया जाना अपेक्षित होता है वे उस संगठन के स्वरूप पर निर्भर करता है जिसे उद्यमी द्वारा चुना गया है। संगठन का प्रत्येक स्वरूप उनके संबंधित भारतीय कानूनी अधिनियमों द्वारा शासित है। इस तरह के कानूनी अनुपालन के संबंध में संक्षिप्त विवरण नीचे प्रस्तुत किया गया है।

11.5.1 पंजीकरण प्राप्त करना

एकल स्वामित्व में बहुत अधिक कानूनी औपचारिकताएं नहीं हैं। सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) सामान्यत: विभिन्न सुविधाओं और प्रोत्साहनों को प्राप्त करने के लिए स्थानीय/जिला उद्योग केंद्र के साथ पंजीकरण करने का चयन करते हैं। यदि इसमें एक से अधिक लोग शामिल हैं, तो साझेदारी फर्म स्थापित करने का विकल्प चुन सकता है। इन फर्मों में, साझेदारों की व्यक्तिगत संपत्ति को भी उत्तरदायी माना जाता है क्योंकि उनकी देयताएं असीमित होती हैं। इस प्रकार, इसमें जोखिम व्याप्त हो सकते हैं। तथापि, साझेदारी फर्म भारतीय भागीदारी अधिनियम, 1932 और साझेदारी अनुबंध के नियम और शर्तों से युक्त साझेदारी विलेख द्वारा शासित होता है।

अक्सर, विशाल पूंजी की आवश्यक और प्रबंधकीय घटकों के साथ सीमित देयता भागीदारी (एलएलपी) या एक संयुक्त स्टॉक कंपनी, जो भी लागू हो, की स्थापना करना सरल होता है। सीमित देयता भागीदारी (एलएलपी) सीमित देयता भागीदारी (एलएलपी) अधिनियम, 2008 के अंतर्गत नियंत्रित है, जबकि कंपनियों का पंजीकरण कंपनी पंजीयक (आरओसी) के कार्यालय में किया जाता है और सहकारी संस्थाओं को सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार के साथ पंजीकृत किया जाता है। भारत में कंपनियां कंपनी अधिनियम 2013 द्वारा शासित हैं।

तथापि, चुने गए किसी भी उद्यम के स्वरूप के बावजूद, संबंधित विभागों से कई तरह की मंजूरी और अनुमोदन प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।

11.5.2 आवेदन औपचारिकताएं

उद्यम के पंजीकरण के लिए आवेदन का एक निर्धारित प्रारूप होता है जिसमें पूरा विवरण विधिवत भरा जाता है तथा इसकी प्रस्तुति निम्नलिखित दस्तावेजों के साथ की जाती है:-

क. अनतिम पंजीकरण प्रमाण पत्र (पीआरसी) की एक प्रति

ख. विस्तृत परियोजना रिपोर्ट

ग. शैक्षिक योग्यता, अनुभव और अन्य जानकारों के समर्थन में प्रमाणित प्रतियां, जो विभिन्न प्रकार की इकाईयों के लिए लागू हैं।

घ. लागू बयाना जमा राशि

11.5.3 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) का पंजीकरण (उद्योग आधार ज्ञापन)

उद्योग आधार ज्ञापन (यूएएम) एक-पृष्ठ पंजीकरण फॉर्म है, जो एक प्रकार से स्व-घोषणा का प्रारूप है, जिसके तहत एमएसएमई अपने अस्तित्व, बैंक खाता विवरण, प्रमोटर/स्वामी के आधार कार्ड विवरण और अन्य-न्यूनतम आवश्यक जानकारी का स्व-प्रमाणन करता है। उद्योग आधार ज्ञापन भरने के लिए कोई शुल्क नहीं है। उद्योग आधार ज्ञापन जमा करवाने के पश्चात ईमेल के माध्यम से उद्योग आधार नम्बर (यूएएन) भेज दिया जाता है।

यह एक सरलीकृत सरकारी पंजीकरण पोर्टल है जो एक मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र के साथ एक यूनिक संख्या प्रदान करता है जिससे लघु/मध्यम व्यापार का प्रमाणन होता है।

उद्योग आधार पंजीकरण प्रक्रिया

1. आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं: उद्योग आधार पंजीकरण पोर्टल
2. अपनी व्यक्तिगत जानकारी दर्ज करें, इसमें आपके नाम के साथ 12 अंकों के आधार नंबर की आवश्यकता होती है और ''ओटीपी को मान्य और जेनरेट करें'' पर क्लिक करें। आपको अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर पर ओटीपी प्राप्त होगा पोर्टल पर ओटीपी दर्ज करें और अपनी संबंधित सामाजिक श्रेणी का चयन करें।
3. उद्यम के बारे में वितरण भरें।
4. पत्राचार विवरण भरें।
5. कैरी-फॉरवर्ड जानकारी भरें।
6. बैंक विवरण भरें।
7. विनिर्माण इकाई होने अथवा सेवा इकाई होने से संबंधित अपने उद्यम के वर्गीकरण का विकल्प चुनें।
8. कुल निवेश का विवरण दें।
9. जिला उद्योग केंद्र का चयन करें और घोषणा को स्वीकार करें।

टिप्पणी

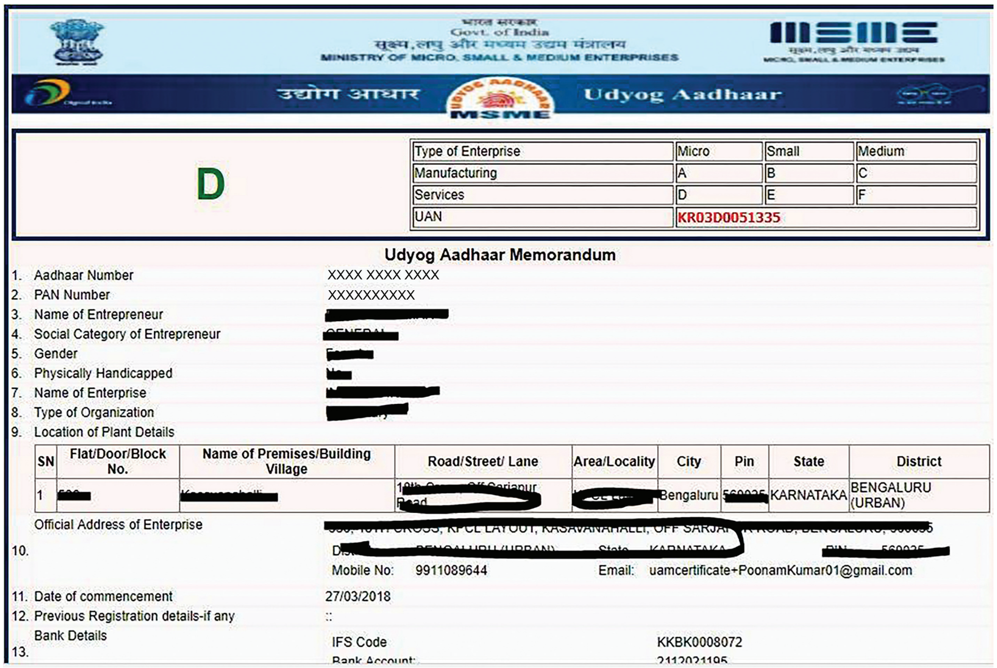

भारत सरकार
Govt. of India
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय
MINISTRY OF MICRO, SMALL & MEDIUM ENTERPRISES

उद्योग आधार — Udyog Aadhaar

D

Type of Enterprise	Micro	Small	Medium
Manufacturing	A	B	C
Services	D	E	F
UAN	KR03D0051335		

Udyog Aadhaar Memorandum

1. Aadhaar Number — XXXX XXXX XXXX
2. PAN Number — XXXXXXXXXX
3. Name of Entrepreneur — [redacted]
4. Social Category of Entrepreneur — [redacted]
5. Gender — [redacted]
6. Physically Handicapped — [redacted]
7. Name of Enterprise — [redacted]
8. Type of Organization — [redacted]
9. Location of Plant Details

SN	Flat/Door/Block No.	Name of Premises/Building Village	Road/Street/ Lane	Area/Locality	City	Pin	State	District
1	[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]	Bengaluru	[redacted]	KARNATAKA	BENGALURU (URBAN)

10. Official Address of Enterprise — [redacted]
Mobile No: 9911089644 Email: uamcertificate+PoonamKumar01@gmail.com

11. Date of commencement — 27/03/2018
12. Previous Registration details-if any — ::
13. Bank Details — IFS Code: KKBK0008072; Bank Account: 2112021195

उद्योग आधार ज्ञापन के लिए अपेक्षित दस्तावेज

क) व्यवसाय के स्वामी का नाम और आधार संख्या (आधार कार्ड के अनुसार)

ख) अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग सामाजिक श्रेणी के लिए प्रमाण के रूप में आवश्यक दस्तावेज

ग) आपके संगठन या उद्यम का नाम

घ) आपके उद्यम का पूर्व पंजीकरण विवरण

ङ) आपके स्वामित्व के संगठन का प्रकार

च) वर्तमान पता और खाता विवरण

छ) एनआईसी कोड या राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण कोड

ज) आपके संगठन में कार्यरत कामगारों की कुल संख्या

झ) आपकी फर्म की वर्तमान गतिविधियाँ

ञ) उद्यमी की ईमेल आईडी और मोबाइल नंबर

ट) पैन नम्बर तथा उद्यमी द्वारा संगठन में किया गया कुल निवेश

पाठगत प्रश्न 11.3

1. उन दस्तावेजों का उल्लेख करें जो किसी उद्यम का पंजीकरण करवाने के लिए निर्धारण प्रारूप में आवेदन के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं।

2. उद्योग आधार ज्ञापन के लिए अपेक्षित चार दस्तावेज कौन से हैं।

आपने क्या सीखा

- एक उद्यमशीलता की स्थापना के लिए व्यवस्थित व्यवहार्यता अध्ययन, परियोजना प्रोफाइल तैयार करना, रणनीतिक योजना, इकाई के संघटन का निर्णय लेने, परियोजना रिपोर्ट तैयार करना, संबंधित विभागों से पंजीकरण और क्लीयरेंस प्राप्त करना, संसाधन जुटाना, निधि प्राप्त करना और परियोजना का अंतिम कार्यान्वयन शामिल होता है।
- व्यापारिक संगठनों के मुख्यत: चार स्वरूप हैं। एकल स्वामित्व, साझेदारी, सीमित देयता भागीदारी और संयुक्त स्टॉक कंपनियां।
- एकल स्वामित्व संगठन का सबसे सरल और पुराना रूप है। इसे केवल एक एकमात्र व्यापारी के रूप में पूर्ण स्वामित्व के लिए भी जाना जाता है। यह व्यवसाय इकाई का एक स्वरूप है जिसका संचलन एक व्यक्ति के स्वामित्व में किया जाता है।
- साझेदारी संगठन का एक स्वरूप है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति स्वामित्व साझा एवं व्यवसाय इकाई में उत्पन्न लाभ या हानि साझा करते हैं।
- साझेदारी समझौते करने वाले व्यक्तियों को भागीदार कहा जाता है।
- सीमित देयता भागीदारी या एलएलपी संगठन का एक संकर रूप है जिसमें पारंपरिक साझेदारी फर्म और कंपनी दोनों की विशेषतएं शामिल हैं। यह एक वैकल्पिक कॉर्पोरेट व्यवसाय रूप है जो कम अनुपालन लागत पर भागीदारों को सीमित देयता का लाभ प्रदान करता है।
- मुनाफा कमाने के उद्देश्य से व्यवसाय का संचालन करने के लिए एकत्रित व्यक्तियों के समूह को संयुक्त स्टॉक कंपनी या संघ माना गया है। व्यक्तियों के पास कंपनी में स्वामित्व वाले शेयरों की पूंजी का एक संयुक्त स्टॉक होता है।
- व्यवहार्यता अध्ययन एक व्यवस्थित विश्लेषण है जिसके अंतर्गत किसी विशेष व्यापार विचार के संभावित समाधानों को खोजना और उनका प्रलेखन करना शामिल है। व्यवहार्यता अध्ययन यह जांचने के लिए किया जाता है कि व्यावसायिक योजना सुलभ तकनीक के अनुकूल है अथवा नहीं है।
- व्यवहार्यता अध्ययन में एक लक्षित बाजार विश्लेषण, तकनीकी विश्लेषण, वित्तीय

विश्लेषण, आर्थिक विश्लेषण और व्यावसायिक व्यवहार्यता विश्लेषण किया जाना शामिल है।

- परियोजना एक अस्थायी, अद्वितीय और यथार्थवादी व्यापार विचार है जिसे एक व्यवहार्य और निष्पादित की जा सकने वाली योजना में परिवर्तन किया जाता है। पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के स्वरूप की प्राप्ति के लिए यह समयबद्ध होता है।
- परियोजना रिपोर्ट एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जिससे परियोजना का मूल खाका प्रस्तुत होता है। यह प्रक्रिया के दौरान जाने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का संक्षेपण करता है। इस रिपोर्ट से प्रभावी निर्णय लेने और बाजार से धन प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होती है।
- जिन विधिक अपेक्षाओं का अनुपालन किया जाना अपेक्षित होता है वे उस संगठन के स्वरूप पर निर्भर करता है जिसे उद्यमी द्वारा चुना गया है। संगठन का प्रत्येक स्वरूप उनके संबंधित भारतीय कानूनी अधिनियमों द्वारा शासित है।
- उद्योग आधार ज्ञापन (यूएएस) एक-पृष्ठ पंजीकरण फॉर्म है, जो एक प्रकार से स्व-घोषणा का प्रारूप है, जिसके तहत एमएसएमई अपने अस्तित्व, बैंक खाता विवरण, प्रमोटर/स्वामी के आधार कार्ड विवरण और अन्य न्यूनतम आवश्यक जानकारी का स्व-प्रमाणन करता है।
- उद्योग आधार ज्ञापन भरने के लिए कोई शुल्क नहीं है।
- उद्योग आधार ज्ञापन सरकारी पंजीकरण पोर्टल है जो एक मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र के साथ एक यूनिक संख्या प्रदान करता है जिससे लघु/मध्यम व्यापार का प्रमाणन होता है।

पाठांत प्रश्न

1. उद्यम की स्थापना की प्रक्रिया को संक्षिप्त में समझाइए।
2. व्यापारिक संगठनों के विभिन्न स्वरूपों की सूची बनाइये।
3. संगठन के उपयुक्त स्वरूप को चुनने के समय ध्यान में रखे गए विभिन्न मानदंडों का वर्णन करें।
4. व्यवहार्यता अध्ययन से आप क्या समझते हैं? विस्तार से व्याख्या कीजिए।
5. परियोजना रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं?
6. परियोजना रिपोर्ट की सामग्री को संक्षेप में बताइये।
7. संगठन का पंजीकरण करने के लिए उद्यमी से किन कानूनी औपचारिकताओं की अपेक्षा की जाती है?

8. आवेदन पत्र के साथ प्रस्तुत किए जाने वाले आवश्यक विभिन्न दस्तावेजों को सूचीबद्ध कीजिए।

9. निम्नलिखित के संबंध में संक्षिप्त नोट लिखिए:

क. एकल स्वामित्व ख. साझेदारी फर्म ग. सीमित देयता भागीदारी

घ. संयुक्त स्टॉक कंपनी ड. प्राइवेट कंपनियां च. सार्वजनिक होल्डिंग कंपनियां

10. निम्नलिखित व्यवहार्यता विश्लेषण मानदंडों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए:

- तकनीकी व्यवहार्यता विश्लेषण
- वित्तीय व्यवहार्यता विश्लेषण
- वाणिज्यिक व्यवहार्यता विश्लेषण
- आर्थिक विश्लेषण

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

1. असत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. सत्य 6. असत्य

7. सत्य 8. सत्य 9. असत्य 10. सत्य 11. सत्य

11.2

1. सत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. असत्य 6. सत्य 7. सत्य

11.3

1. क. अनंतिम पंजीकरण प्रमाण पत्र (पीआरसी) की एक प्रति

   ख. विस्तृत परियोजना रिपोर्ट

   ग. शैक्षिक योग्यता, अनुभव और अन्य जानकारी के समर्थन में प्रमाणित प्रतियां, जो विभिन्न प्रकार की इकाईयों के लिए लागू हैं।

   घ. लागू बयाना जमा राशि

2. क) व्यवसाय के स्वामी का नाम और आधार संख्या (आधार कार्ड के अनुसार)

   ख) अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति और ओबीसी श्रेणी के लिए प्रमाण के रूप में आवश्यक दस्तावेज

   ग) आपके संगठन या उद्यम का नाम

   घ) आपके उद्यम का पूर्व पंजीकरण विवरण

टिप्पणी

उद्यम की स्थापना

करें और सीखें

अपने आसपास के स्थानीय संगठनों के विभिन्न स्वरूपों का संज्ञान करें और उनके साथ निष्पादित की जाने वाली विभिन्न कानूनी औपचारिकताओं पर चर्चा करें और यह ज्ञात करें कि उन्होंने स्थानीय अधिकारियों से कैसे क्लीयरेंस प्राप्त की है।

अवधारणा नक्शे

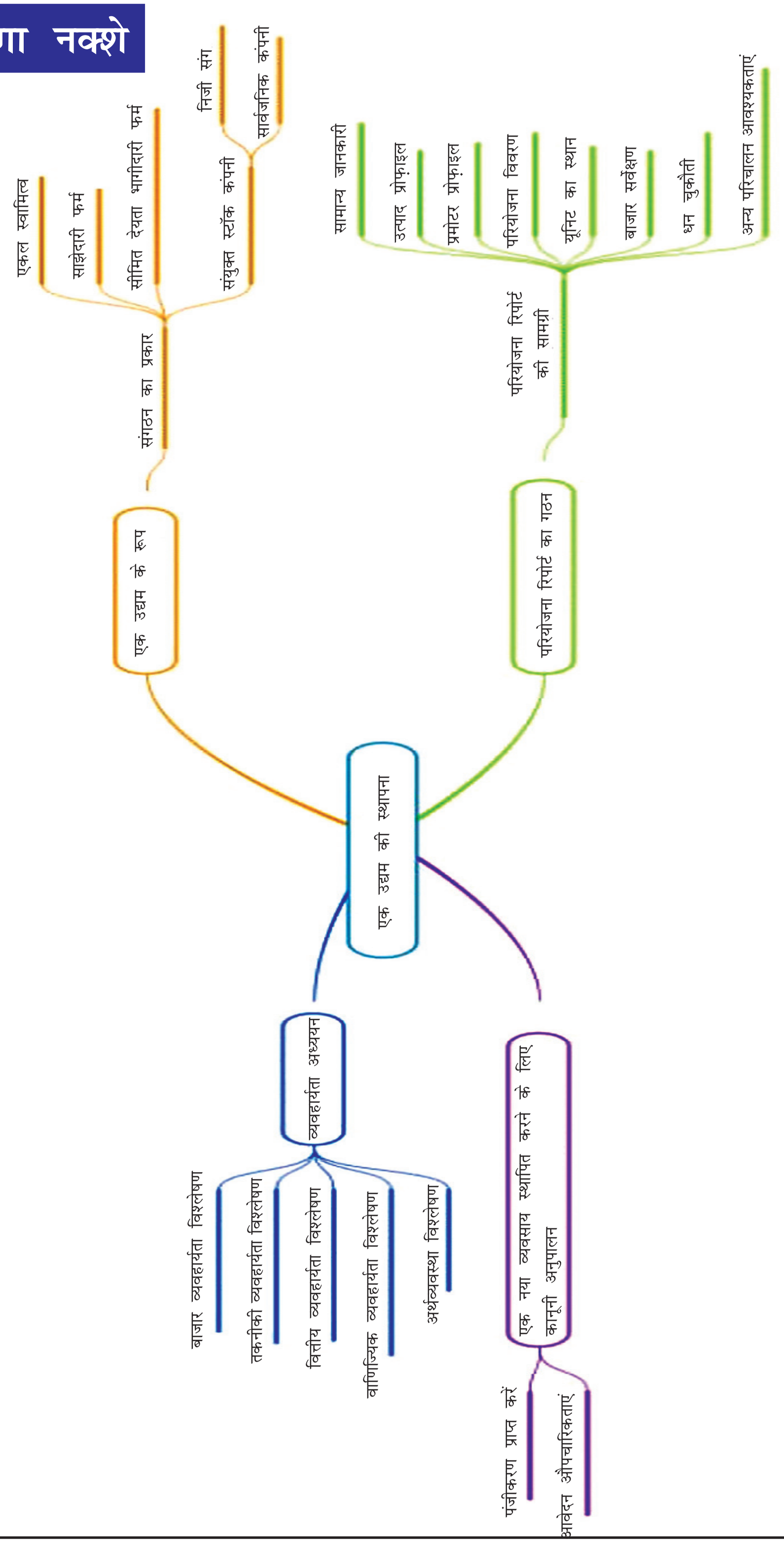

12

संसाधन एकत्रण

अब आपको यह ज्ञात हो गया कि उद्यमिता संगठनों के स्वरूप विभिन्न प्रकार के होते हैं जिनमें से आप अपने व्यापार विचार की उपयुक्तता और पंजीकरण प्राप्त करने की विधि के अनुसार चयन कर सकते हैं। एक बार जब सभी अनुपालन पूरे हो जाते हैं और क्लीयरेंस मिल जाती है, तो आप अपने लाभदायक व्यवसाय को शुरू करने के लिए लगभग तैयार हो जाते हैं।

किसी उद्यम को स्थापित करने की प्रक्रिया के लिए यह स्मरण रहे कि मात्र दस लाख डॉलर के व्यापार विचार की उत्पत्ति, परियोजना की व्यवहार्यता विश्लेषण का सफल संचालन, एक उचित विश्लेषण परियोजना रिपोर्ट तैयार करके, सभी आवश्यक कानूनी औपचारिकताओं को पूरा कर लेना और क्लीयरेंस प्राप्त कर लेने से ही सफल उद्यमी बनने की प्रक्रिया पूरी नहीं होती है। अनेक और ऐसे प्रश्न हैं जिन की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। जैसे, व्यवसाय संचालन शुरू करने के लिए विभिन्न संसाधनों की आवश्यकता की पूर्ति आप कैसे करेंगे? आप उन्हें कहां पा सकते हैं? कार्यस्थल पर आप उन्हें कैसे जुटा सकते हैं? अपनी परियोजना में निधि निवेश आप कैसे कर सकते हैं? आपके लिए कौन से विभिन्न संसाधन उपलब्ध हैं? इत्यादि।

इस अध्याय में हम इन प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करने की विधियां और साधनों के बारे में विचार करेंगे।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- व्यवसाय उद्यम के लिए अपेक्षित संसाधनों का वर्गीकरण करते हैं;
- व्यवसाय के लिए संसाधनों के एकत्रण की विधियों का वर्णन करते हैं; और
- निधियन के विभिन्न स्रोतों की पहचान करते हैं।

12.1 व्यवसाय संसाधन

व्यवसाय संसाधनों के प्रकार			
धन	जनशक्ति	मशीन	सामग्री

एक नए व्यवसाय की स्थापना एक उद्यमी के लिए एक बड़ी चुनौती हो सकती है। इसे शुरू करने के लिए बहुत सारे प्रयासों, धन और समय की आवश्यकता होती है। संभावित उद्यमी को व्यवसाय योजना को यथार्थवादी इकाई में बदलने के लिए धन, बाजार अनुसंधान, तननीकी विश्लेषण बढ़ाने में काफी अधिक समय व्यतीत करना पड़ता है। एक बार जब ये अध्ययन हो जाते हैं, और पंजीकरण प्रक्रिया पूरी हो जाती है, तो उद्यम को अस्तित्व में लाने के लिए एक उद्यमी को संसाधन जुटाने पर ध्यान देना चाहिए। आइए हम यह ज्ञात करते हैं कि ये संसाधन क्या हैं :

- धन : वित्तीय संसाधन
- जनशक्ति : मानव संसाधन
- मशीन : भौतिक संसाधन
- सामग्री : कच्ची सामग्री
- विधि

अगले अध्याय में हम इसके संबंध में विस्तार से अध्ययन करेंगे और इनके एकत्रण की विधि यां ज्ञात करेंगे।

12.2 संसाधनों का एकत्रण

संसाधन जुटाने का अर्थ किसी संगठन के लिए नए एवं अतिरिक्त संसाधनों की प्राप्ति के लिए सभी क्रियाकलापों का समन्वयन करना है। इसके अंतर्गत उद्यम से बाह्य संसाधनों का एकत्रण भी किया जाना शामिल है। मौजदू संसाधनों का उत्तम उपयोग करने को भी संसाधनों को जुटाने का प्रभावी उपाय माना गया है। ऐसा अक्सर नए व्यवसाय विकास के लिए किया जाता है। एकत्रण का स्पष्टीकरण पांच माध्यम से समझाया जा सकता है, जो कि निम्नलिखित हैं :

1. धन: वित्तीय संसाधन

यह सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन है और इसे अन्य संसाधन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पहले व्यवस्थित किया जाना चाहिए। यहां तक कि व्यवसाय के सबसे बुनियादी स्वरूप के पंजीकरण और बाजार योग्य उत्पाद की प्रक्रिया की इनपुट के लिए निधियां अपेक्षित होती हैं। वित्तीय संसाधनों को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किया जा सकता है, जैसे कि स्वामी की निधि, परिवार और मित्रों से धन प्राप्त करना, उधार पर लिया गया ध न आदि। इन स्रोतों को मोटे तौर पर उनके जीवन काल के आधार पर दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

क. दीर्घकालिक वित्तीय स्रोतों की सामान्यत: अचल संपत्ति खरीदने और इक्विटीफंड, प्रेफ्रेंस शेयर, लाभांश, दीर्घकालिक बैंक ऋण, सार्वजनिक जमा आदि जैसी न्यूनतम कार्यशील पूंजी को बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

ख. अल्पकालिक वित्तीय स्रोतों का उपयोग व्यापार ऋण, अल्पावधि बैंक ऋण इत्यादि जैसी अल्पकालिक निधि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जाता है।

इस प्रकार, संसाधनों का नियोजन पूरी तरह से व्यावसायिक वित्तीय आवश्यकताओं की प्रकृति पर निर्भर करता है।

2. जनशक्ति : मानव संसाधन

वित्त के पश्चात, यह सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन है जो अन्य संसाधनों का उपयोग करता है। प्रत्येक संगठन की सफलता काफी सीमा तक नियोजित मानव संसाधन के कौशल एवं उनकी क्षमता पर निर्भर करती है। इस प्रकार, मानव संसाधन नियोजन निर्णय सावधानी से लिए जाने चाहिए। किसी कार्य के लिए कर्मचारियों की सही संख्या एवं सही प्रकार के कर्मचारियों का निर्धारण करना एक दुश्कर कार्य है जो उद्यमी को इस वर्ग के अंतर्गत करना होता है। इसके अंतर्गत पदानुक्रम में कुशल एवं अकुशल कर्मचारी भी शामिल होते हैं।

एक मजबूत टीम किसी उद्यम की सफलता का बुनियादी वाहक होती है। सबसे उपयुक्त टीम के चयन के लिए अनेक आंतरिक एवं बाह्य स्रोत उपलब्ध होते हैं। उदाहरण के तौर पर रोजगार कार्यालय, ठेकेदार, समाचार पत्रों के वर्गीकृत खंड में विज्ञापन इत्यादि। मानव संसाधन प्रबंधन यह कार्य निम्नलिखित घटकों को विचार में लेकर करता है:-

- कुल जनशक्ति की आवश्यकता
- अपेक्षित प्रमुख कौशल का निर्धारण
- प्रशिक्षण और विकास की आवश्यकता
- मानव संसाधन जुटाने के लिए विधिक अनुपालन
- भविष्य की मांग का अनुमान

3. सामग्री

सामग्री के बिना, मानव संसाधन का कोई उपयोग नहीं है। सकारात्मक सोच वाले प्रत्येक संगठन को यह ज्ञात है कि किसी भी व्यवसाय या सेवा के लिए आवश्यक सामग्री की आवश्यकता जनशक्ति के उपयोग से पहले की जानी अपक्षित होती है। उदाहरण के तौर परसीमेंट कारखाने में चूना पत्थर की प्रतीक्षा कर रहे श्रमिकों के पास आपूर्ति आने तक कोई कार्य करने के लिए नहीं होता है। सप्लाई चेन के कार्य करने वालों का विकास इसी व्यवस्था से हुआ है और वे अब व्यापार प्रबंधन का एक बहुत ही उपयोगी और प्रभावी अंग बन गए हैं।

टिप्पणी

4. **मशीन : भौतिक संसाधन**

आवश्यक धन और मानव संसाधन प्राप्त करने के पश्चात उद्यमी को भौतिक संसाधनों जैसे भूमि और भवन, संयंत्र और मशीनरी, फर्नीचर और जुड़नार, और कच्चे माल की प्राप्ति करनी होती है। प्रत्येक उद्यमी को व्यावसायिक संसाधनों की खरीद और इसकी स्थिरता के लिए एक उपयुक्त प्रक्रिया को डिजाइन और विकसित करना चाहिए। संसाध न जुटाने का यह घटक महंगा हो सकता है क्योंकि इसमें कार्यस्थल की आवश्यकताओं को स्थापित करने के लिए भारी निवेश की आवश्यकता होती है। भौतिक संसाधन जुटाने की प्रक्रिया विकास मोटे तौर पर व्यावसायिक संरचना की जरूरतों पर निर्भर करती है।

कुछ व्यवसायों के लिए मोबाइल ऐप प्रोग्रामर जैसे अधिक भौतिक संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती है, जबकि चीनी उद्योग, तेल रिफाइनरियों आदि जैसी कुछ विनिर्माण इकाइयों को विशाल भौतिक संसाधन निवेश की आवश्यकता होती है। इसके अलावा भौतिक संसाधनों की मात्रा संगठन के आकार पर भी निर्भर करती है। फर्म जितनी बड़ी होगी आवश्यकता उतनी ही उच्च होगी और ऐसा इसके विपरीत भी है। उदाहरण के लिए अमेजन और वालमार्ट माल गोदामों, भंडारों तथा मानव संसाधन कार्यस्थलों के संदर्भ में भौतिक संसाधनों पर अधिक आश्रित होते हैं क्योंकि वे उद्योग के सबसे बड़े व्यापारिक दिग्गजों में से एक हैं।

जहां तक भौतिक संसाधनों को जुटाने के तरीकों का सवाल है, उद्यमी को कोई भी खरीदारी करने से पहले उसकी आवश्यकता का वास्तविक आकलन कर लेना चाहिए। एक बार विश्लेषण करने के बाद आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक साधारण खरीद की जा सकती है। भौतिक संसाधन जुटाने के लिए निम्नलिखित कारकों को विचार के लिए शामिल किया जा सकता है:-

- अवसंरचना
- भूमि और भवन
- संयंत्र एवं मशीनरी
- तकनीकी जानकारी
- फ्रेंचाइज
- पट्टा करार अथवा अधिग्रहण
- फर्नीचर व जुड़नार

5. **विधि**

यह व्यवसाय संसाधनों की महत्त्वपूर्ण विधियों में से एक है। विधि को कार्य करने के लिए डिजाइन की गई गतिविधियों के अनुक्रम के रूप में परिभाषित किया गया है। सेवा

उद्योग में शामिल विधियों में से किसी सेवा सृजन, डिजाइन, बिक्री और वितरण के लिए आवश्यक कार्यों की श्रृंखला के साथ-साथ व्यावसायिकलक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अवसंरचना से निर्मित व्यवस्था अपेक्षित होती है। तकनीकी जानकारी, व्यापार रहस्य, व्यापार प्रक्रियाएं कुछ सर्वज्ञात विधियां हैं।

निधियों के एकत्रण की प्रक्रिया

निधियों का संज्ञान | संसाधनों की प्राप्ति | संसाधनों का उपयोग

पाठगत प्रश्न 12.1

1. एकत्रण की पांच विधियों का उल्लेख कीजिए :
2. .... को अक्सर नया उद्यम विकास कहा जाता है।
3. .... तथा .... व्यवसाय संसाधनों की सर्वज्ञात विधियां हैं।

12.3 निधियों के स्रोत

अपने व्यवसाय को शुरू करने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों का उपयोग करें। इस खंड में, हम धन के विभिन्न स्रोतों पर चर्चा करेंगे, जहां से अपनी फर्म के लिए वित्त एकत्र कर सकते हैं। निधियों के स्रोतों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1. धन अथवा निधियों के पारंपरिक स्रोत
2. धन अथवा निधियों के आधुनिक स्रोत

निधियों के स्रोत	
निधियों के प्रारंपरिक स्रोत	निधियों के आधुनिक स्रोत
• स्वामी की निधि	• एंजेल निवेश निधियां
• परिवार एवं मित्रों से प्राप्त धन	• इंक्यूबेटर निधियां
• ऋणदाताओं से प्राप्त निधियां	• उद्यम पूँजी
	• प्राइवेट इक्विटी निधि

1. निधियों के पारंपरिक स्रोत

क. स्वामी निधि : यह धन है प्रारंभिक स्रोतों में से एक है जो अभी भी प्रचलन में हैं। व्यवसाय शुरू करते समय, उद्यमी इसमें निवेश करने वाला पहला व्यक्ति होता

टिप्पणी

है। ऐसी निधियां या तो नकद रूप में होती हैं या परिसंपत्तियों से प्राप्त होती हैं। इससे बाह्य निवेशकों या बैंकों को परियोजना के लिए दीर्घकालिक प्रतिबद्धता और जोखिम लेने की क्षमता का प्रमाण प्राप्त होता है।

ख. **मित्रों और परिवार द्वारा वित्त पोषण :** यह उद्यमी के पति/पत्नी, माता-पिता, मित्रों और परिवार से उधार लिया गया धन है। पूंजी निवेश का यह रूप बैंकों और अन्य बाहरी निवेशकों से प्राप्त पेशे से ऋण माना जाता है।

जब व्यापार बढ़ने लगता है या लाभ का हिस्सा बढ़ता है तो उधार चुकाया दिया जाता है। तथापि, वित्तपोषण का यह विकल्प वैकल्पिक है, लेकिन उद्यमी को यह ध्यान रखना चाहिए कि रिश्तेदार के पास अपेक्षा से कम पूंजी हो सकती है, अथवा वे संगठन में अन्य चीजों के साथ मालिकाना हक की आंकाक्षा कर सकते हैं।

ग. **साहूकार/गैर-संस्थानिक निधियां :** धन जुटाने का यह स्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों या उन क्षेत्रों में अधिक प्रचलित है, जहां संस्थानिक ऋण प्रणाली अभी तक विकसित नहीं हुई है। अक्सर, यह निधियों के अन्य संस्थानिक स्रोतों की तुलना में अधिक समय कुशल होती है। तथापि, ब्याज की दर बहुत अधिक है। भारतीय रिजर्व बैंक के साथ समन्वय से भारत सरकार इस गैर-संस्थानिक बाजार से छुटकारा पाने के लिए प्रत्येक संभव उपाय कर रही है।

इस प्रकार, स्थानीय साहूकार या गैर-संस्थानिक ऋण माध्यम से उधार लेना कभी-कभी महंगा पड़ सकता है। इसलिए, उद्यमी को यह तथ्य ध्यान में रखना चाहिए और इस स्रोत के माध्यम से मध्यम अवधि या दीर्घकालिक धन उधार नहीं लेना चाहिए।

2. धन के आधुनिक स्रोत

क. एंजेल निवेश निधियां

एंजेल इन्वेस्टर्स शब्द उच्चारण पहली बार सेंटर फॉर वेंचर रिसर्च के संस्थापक विलियम टजेल ने किया था, उन्होंने उद्यमियों द्वारा धन एकत्रण किए जाने के संबंध में न्यूहैम्पशायर विश्वविद्यालय से अपना अध्ययन पूरा किया था। एंजेल निवेशक छोटे स्टार्ट-अप या उद्यमों में निवेश करते हैं। उनके निवेश सामान्यत: नई स्टार्ट-अप कंपनियों में परिवर्तनीय ऋण या स्वामित्व इक्विटी के बदले में किए गए शुरुआती इक्विटी निवेश जैसे होते हैं। एंजेल निवेशक को ''एक व्यक्ति जो छोटे स्टार्ट-अप या उद्यमिता में निवेश करता है'' के रूप में परिभाषित किया गया है। एन्जिल्स ऐसी उच्च निवल सम्पत्ति वाले व्यक्ति हैं जो अपनी व्यक्तिगत निधि का स्टार्ट-अप में निवेश करते हैं। एंजेल निवेशकों द्वारा प्रदान की जाने वाली पूंजी उद्यमिता फर्म के प्रारंभिक विशाल व्यय की पूर्ति के लिए वन-टाइम निवेश अथवा फर्म की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं में सहायता के लिए धन

का ऑन-गोइंग इंजेक्शन हो सकती हैं। कुछ एंजेल निवेशक क्राउड फंडिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से निवेश करते हैं।

ज्यादातर, एंजेल निवेशक स्वयं ही अपनी निवेश योग्य पूंजी, उद्योग सम्बद्ध अनुसंधानों के सहभाजन, तथा लाभप्रदत्ता के अवसरों के अन्य प्रमुख संसाधनों को पूल करने के लिए एक एंजेल समूह या एंजेल नेटवर्क में खुद को व्यवस्थित कर लेते हैं। चूंकि ऐसे नेटवर्क अच्छी मात्रा में अनुसंधान और विश्लेषण से समृद्ध हैं, इसलिए वे अपने पोर्टफोलियों की कंपनियों को परामर्श भी प्रदान करते हैं। एंजेल निवेशक अक्सर अनुभवी उद्यमी होते हैं, जो किसी नई कंपनी के मूल्यवान सलाहकार बन सकते हैं। एन्जिल्स, अक्सर अपने व्यक्तिगत फंडों के निवेश के बदले उद्यम में स्वामित्व हिस्सेदारी लेते हैं। कंपनी की हिस्सेदारी की ऐसी बिक्री को ''निजी प्लेसमेंट'' कहा जाता है।

ख. इन्क्यूबेटर्स

पाठ 16 में हम इन्क्यूबेटरों की अवधारणा का विस्तार से अध्ययन करेंगे। अभी के लिए, हम अपना विश्लेषण नवोदित स्टार्ट-अप और नए व्यावसायिक उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान तक ही सीमित रखते हैं।

इन्क्यूबेटरों की अवधारणा का उपयोग पहली बार संयुक्त राज्य अमेरिका में किया गया था जब जोसफ मनक्यूसो ने न्यूयार्क में बाटाविया औद्योगिक केंद्र खोला था। 1980 के दशक तक, यह यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप में विस्तारित हो गया था। यह एक व्यवसाय इन्क्यूबेटर कंपनी है जो प्रबंधन प्रशिक्षण, किफायती कार्यालय स्थान और अन्य भौतिक अवसंरचना, साझा कार्यालय, विपणन सहायता अथवा वित्तीय सहायता के रूप में विकास सेवाएं प्रदान करके स्टार्ट-अप और नए उद्यमियों को विकास प्रक्रिया में सहायता प्रदान करती है।

डल्फ ने व्यावसायिक इन्क्यूबेटरों की परिभाषा ''एक ऐसे संगठन के रूप में की है जो नई फर्मों की जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यापार विकास सेवाओं और लचीली शर्तों पर छोटे स्थान उपलब्ध करता है। बिजनेस इनक्यूबेटरों द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के पैकेज को नए उद्यम की सफलता और विकास दर को बढ़ाने को विचार में लेकर डिजाइन किया जाता है, इस प्रकार यह आर्थिक विकास पर प्रभाव अधिकतम होता है।''

बिजनेस इनक्यूबेटर्स किसी सफल उद्यम को शुद्ध व्यापार विचार से प्रत्येक सहायता प्रदान करते हैं और व्यावसायिक जीवनचक्र के विभिन्न चरणों में परामर्श देते हैं। वित्तीय सहायता इन महत्त्वपूर्ण समर्थनों में से एक है। इस तरह, व्यापार इनक्यूबेटर्स अपने जीवनचक्र के विभिन्न चरणों में सहायता प्रदान करके नए व्यावसायिक उद्यम के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत के संदर्भ में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग जैसे नए इनक्यूबेटर स्थापित करने में भागीदारी के लिए विभिन्न विभाग और एजेंसियां हैं। अटल इनोवेशन मिशन के तहत नीति आयोग ने इन एजेंसियों को बिजनेस इन्क्यूबेटरों की स्थापना के लिए धन उपलब्ध कराने का संकल्प लिया है। कुछ जाने-माने बिजनेस इन्क्यूबेटर्स निम्नलिखित हैं :

- 2011-12 में स्थापित सीड फन्ड्स।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी उद्यमिता पार्क, आईआईटी खड़गपुर में सन् 1989 में स्थापित एक प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर है।
- 2011 में स्थापित एंजेल प्राइम लोकेशन, एजेटैप एंड हैकर अर्थ भारत में प्रमुख स्टार्ट-अप हैं।
- भारत सरकार और गुजरात सरकार के सहयोग से 2002 में आईआईएम अहमदाबाद द्वारा एक अनुसंधान संस्थान के रूप में स्थापित सेंटर ऑफ इनोवेशन इनक्यूबेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप 2007 में एक पूर्ण ऊष्मायन केंद्र में परिवर्तित हो गया है।
- वर्ष 2008 में स्थापित, नोएडा, उत्तर प्रदेश में स्थित एमिटीइनोवेशन इनक्यूबेशन, भारतीय विश्वविद्यालयों के संदर्भ में अग्रणी अवधारणा है।

ग. उद्यम पूंजी

उद्यम पूंजी ऐसे व्यक्तियों और फर्मों से पूंजी जुटाने की प्रक्रिया है जो उच्च विकास और उच्च जोखिम वाली फर्मों में निवेश करते हैं। यह दीर्घकालिक वित्त का स्रोत है, नए स्टार्ट-अप व्यवसायों और छोटे व्यवसायों में निवेश करने वाले निवेशक, इस विश्वास के साथ निवेश करते हैं कि उनके पास दीर्घकालिक विकास क्षमता है। उद्यम पूंजी सामान्यतः निवेशकों, निवेश बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों से प्राप्त होती है। ऐसा निवेश मौद्रिक रूप अथवा तकनीकी या प्रबंधकीय विशेषज्ञता के रूप में हो सकता है। दूसरे शब्दों में, उद्यम पूंजी लंबी अवधि की स्थिर पूंजी है जो उच्च क्षमता और विकास-उन्मुख स्टार्ट-अप कंपनियों को प्रदान की जाती है।

उद्यम पूंजी निधियन उन निवेशकों के लिए एक जोखिमपूर्ण हो सकती है, जो स्टार्ट-अप में निवेश करते है, लेकिन उच्चतर जोखिम वाली परियोजनाओं को विचार में लेते हुए इसमें औसत लाभ से अधिक संभावनाएं होती हैं। उद्यम पूंजी में निवेश के लिए क्षेत्रविशेष क्षेत्रविशेष (डोमेन) ज्ञान और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। पूंजी जुटाने का यह स्वरूप ऐसे स्टार्ट-अप्स के बीच लोकप्रिय है जिनकी पूंजी बाजार तक पहुंच नहीं होती है, अथवा जो डिबेंचर जारी करके बैंक ऋण और धन नहीं जुटा पाते हैं।

यह स्मरण रहे, कि उद्यम पूंजीपतियों को फर्म में हिस्सेदारी मिलती है और इसलिए फर्म द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण निर्णयों में उनका योगदान होता है। तथापि, उद्यम पूंजी को बढ़ाना कठिन है और यह सभी प्रकार के उद्यमों के लिए आदर्श विकल्प नहीं हो सकता है। इसलिए उद्यमी को इस स्रोत से धन जुटाने से पहले अच्छी तरह से शोध करने और दो बार सोचने की आवश्यकता है।

उद्यम पूंजीपति द्वारा अपनी निधियों के नियोजन के लिए महत्वपूर्ण निवेश मानदंड निम्नलिखित हैं :

- प्रबंधन टीम
- प्रौद्योगिकी और उत्पाद
- स्वामित्व उत्पाद अथवा सेवा
- सीमा मापन क्षमता और बाजार

भारत में कुछ लोकप्रिय उद्यम पूंजीपति निम्नलिखित हैं:

- एस्सेल पार्टनर्स
- ब्लमवेंचर्स
- सिकोइया कैप्टिल इंडिया
- आईडीजी वेंचर्स
- सैफ पार्टनर
- कलारी कैप्टिल

घ. निजी इक्विटी निधियां

निजी इक्विटी निधि का सामूहिक निवेश योजना है। यह सामान्यत: 10 वर्षों के कार्यकाल के साथ एक सीमित देयता भागीदारी अनुबंध है, जो वार्षिक नवीकरण के साथ किया जाता है। दूसरे शब्दों में, निजी इक्विटी एक वैकल्पिक निवेश वर्ग है और इसमें ऐसी पूंजी होती है जो सार्वजनिक एक्सचेंज मार्केट में सूचीबद्ध नहीं होती है। इसमें ऐसी निधियां और निवेशक शामिल हैं जो सीधे निजी कंपनियों में निवेश करते हैं।

निजी इक्विटीफंड निवेशक कंपनी के बाद के चरणों में निवेश करते हैं। वे आम तौर पर फर्म के परिचालन क्रियाकलापों में रुचि लेते हैं और उन्हें बेहतर बनाने में मदद करते हैं। निजी इक्विटीफंड एक विशिष्ट निजी इक्विटीफर्म के निवेश पेशेवरों द्वारा उत्पनन और प्रबंधित किया जाता है।

भारत में 100 से अधिक निजी इक्विटीफंड हैं। वरिष्ठ सहयोगी, भारत विकल्प; प्रिंसिपल, गाजकपिटल; वरिष्ठ विश्लेषक, कैपवेंट, टीवीएस कैपिटल, और भारत फंड एडवाइजर भारत में कुछ उभरती निजी इक्विटी फर्मों में से कुछ हैं।

मामला अध्ययन (केश स्टड़ी) : वरिष्ठ सहयोगी, इंडिया आल्टर्नेटिव्स, पीई फर्म, भारत वरिष्ठ सहयोगी, इंडिया आल्टरनेटिव्स एक स्थापित निजी इक्विटीफंड है, जिसमें परामर्शी फर्मों, निजी इक्विटी, कॉर्पोरेट वित्तीयन, बैंकिंग आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवी सदस्यों की टीम हैं। कंपनी के बोर्ड में विशेषज्ञ कार्य करते है जो गवर्नेंस, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और निधि उत्पत्ति के क्षेत्रों के विशेषज्ञ हैं।

इंडिया आल्टर्नेटिव्स इक्विटी और ऋण आवश्यकताओं, दोनों के लिए, समग्र समाधान प्रदान करता है। वे उद्यमियों की सहायता करके उनके व्यवसायों को आईपीओ के लिए तैयार करते हैं और प्रमुख व्यवसाय चालकों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रमोटरों के साथ सहयोग करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आमतौर पर मूल्य में असमान वृद्धि होती है।

इंडिया आल्टर्नेटिव्स किसी व्यवसाय का अधिग्रहण करने अथवा क्रय करने और मौजूदा व्यवसायों में निवेश करने के लिए संव्यवहार करता है। निवेश का आकार 10 करोड़ रुपए से 80 करोड़ रुपए के बीच रहता है।

कंपनी कृषि पूंजियों, वस्त्र, परिधान और सहायक उपकरण, जूते, होम फर्निशिंग, रेस्तरां और बार, कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, घरेलू उत्पाद, सौंदर्य और स्वास्थ्य, उन्नत चिकित्सा प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, औद्योगिक वस्तुओं, स्वास्थ्य सेवा प्रौद्योगिकी एवं शिक्षा जैसे असम्बद्ध क्षेत्रों में निवेश को लक्ष्यबद्ध करती है।

व्यावसायिक मॉडल के आकर्षण, प्रबंधकीय प्रोफाइल की शक्ति और अनुभव, वर्तमान राजस्व और भविष्य के राजस्व में वृद्धि और इसके चालक, लाभप्रदता, मूल्यांकन आकर्षण, ब्रांड नाम और उच्चतर आरओसीई से युक्त बाजार के नेतृत्व की स्थिति की परिसम्पतियां इस फर्म द्वारा प्रेक्षण किए जाने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण महत्त्वपूर्ण निवेश मानदंड हैं।

निजी इक्विटी निधि के लाभ

1. इसमें फर्मों को निधि के अन्य प्रारंपरिक तरीकों यानी उच्च जोखिम वाले बैंक ऋण, अथवा सार्वजनिक एक्सचेंजों की सूची के विपरीत अधिक रोकड़ प्रवाह प्राप्त हो पाता है।
2. कुछ विशिष्ट निजी इक्विटी नव विचारों की प्रस्तुति करती है और प्रारंभिक चरणों में निधियां प्रदान करती है।

निजी इक्विटी निधि के नुकसान

1. फर्म बंद होने की स्थिति में होल्डिंग को भुना पाना कठिन हो सकता है।
2. कंपनी के शेयरों के मूल्य खरीदारों और विक्रेताओं के बीच आपसी बातचीत से तय होते हैं न कि बाजार की मांग और आपूर्ति की शक्ति से, जिससे अक्सर होल्डिंग का अवमूल्यन होता है।

इस प्रकार, ये वित्त के विभिन्न स्रोत हैं जिन्हें उद्यमी उपलब्धता, पहुंच और संरचनात्मक आवश्यकताओं के आधार पर उद्यम के लिए चुन सकता है। निधि उत्पन्न होने और विभिन्न

अन्य संसाधन जुटाए जाने के बाद उद्यमी पूर्व चरणों प्रस्तावित व्यावसायिक परियोजना शुरू करने के लिए तैयार होता है।

पाठगत प्रश्न 12.2

कृपया बताएं कि नीचे प्रस्तुत विवरण में से क्या सत्य अथवा असत्य है :-

1. उद्यम पूंजी दीर्घकालिक वित्त का एक स्रोत है।
2. निजी इक्विटी फंड सार्वजनिक एक्सचेंज मार्किट्स में सूचीबद्ध होती हैं।
3. तुलनात्मक रूप से निजी इक्विटी निधियन समापन के समय भुनाना आसान होता है।
4. उद्यम पूंजी निवेश मौद्रिक स्वरूप में अथवा तकनीकी या प्रबंधकीय विशेषज्ञता के रूप में हो सकता है।
5. बिजनेस इनक्यूबेटर्स किसी सफल उद्यम को शुद्ध व्यावसायिक विचार से पर्याप्त सहायता प्रदान करते हैं और व्यावसायिक जीवनचक्र के विभिन्न चरणों में परामर्श देते हैं।
6. एन्जिल्स अक्सर अपने व्यक्तिगत फंडों के निवेश के बदले उद्यम में स्वामित्व हिस्सेदारी लेते हैं।
7. बिजनेस इनक्यूबेटर केवल व्यवसायों और उद्यमियों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करता है।
8. व्यवसाय शुरू करते समय, उद्यमी इसमें निवेश करने वाला पहला व्यक्ति होता है।
9. उद्यम के प्रबंधकीय निर्णयों में उद्यम पूंजीपतियों का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है।
10. निजी इक्विटी निधि प्रबंधन कंपनियां सीधे निजी फर्मों में निवेश करती हैं।
11. एंजेल के निवेशक छोटे स्टार्ट-अप या उद्यमियों में निवेश करने से बचते हैं।

आपने क्या सीखा

- एक नए व्यवसाय की स्थापना किसी उद्यमी के लिए एक बड़ी चुनौती हो सकती है। इसके लिए बहुत सारे प्रयासों, धन और समय की आवश्यकता होती है।
- संसाधनों के एकत्रीकरण में उद्यम के बाहर से संसाधनों का संचय और साथ ही मौजूदा संसाधनों का सबसे अच्छा उपयोग करने के लिए प्रभावी उपाय करने होते है। संसाधन जुटाने को अक्सर ''नया व्यापार विकास'' कहा जाता है।
- वित्तीय संसाधन अन्य संसाधनों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन है और इसे अन्य संसाधन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पहले

व्यवस्थित किया जाना चाहिए। यहां तक कि व्यवसाय के सबसे बुनियादी स्वरूप के पंजीकरण और बाजार योग्य उत्पाद की प्रक्रिया की इनपुट के लिए निधियां अपेक्षित होती हैं।

- मानव संसाधन सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन है जो अन्य संसाधनों का उपयोग करता है। प्रत्येक संगठन की सफलता काफी सीमा तक नियोजित मानव संसाधन के कौशल एवं उनकी क्षमता पर निर्भर करती है।
- सबसे उपयुक्त टीम के चयन के लिए अनेक आंतरिक एवं बाह्य स्रोत उपलब्ध होते हैं। उदाहरण के तौर पर रोजगार कार्यालय, ठेकेदार, समाचार पत्रों के वर्गीकृत खंड में विज्ञापन इत्यादि।
- प्रमुख शैक्षिक संसाधन ग्रहण करना उद्यमी के लिए काफी लाभकारी हो सकता है। प्रतिस्पर्धा को समझने और उद्योग का गहन ज्ञान प्राप्त करने से, उद्यमी जल्दी और सही निर्णय लेने में सक्षम हो सकता है।
- शैक्षिक संसाधन व्यावसायिक व्यापार संघों के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं जो उनके उद्योग, उनके स्थानीय चैंबर ऑफ कॉमर्स, साथ ही साथ छोटे व्यवसाय प्रशासन के माध्यम से तैयार किए जाते हैं।
- निधियों के स्रोतों को मोटे तौर पर दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है : निधियों के पारंपरिक स्रोत और निधियों के आधुनिक स्रोत।
- स्वामी की व्यक्तिगत निधियां धन के प्रारंभिक स्रोतों में से एक है जो अभी भी प्रचलन में हैं। व्यवसाय शुरू करते समय, उद्यमी इसमें निवेश करने वाला पहला व्यक्ति होता है। ऐसी निधियां या तो नकद रूप में होती हैं या परिसंपत्तियों से प्राप्त होती हैं।
- उद्यमी के पति/पत्नी, माता-पिता, मित्रों और परिवार से उधार लिया गया धन पेशे से ऋण माना जाता है।
- एंजेल निवेशक को ''एक व्यक्ति जो छोटे स्टार्ट-अप या उद्यमिता में निवेश करता है'' के रूप में परिभाषित किया गया है। एन्जिल्स ऐसी उच्च निवल सम्पति वाले व्यक्ति हैं जो अपनी व्यक्तिगत निधि का स्टार्ट-अप में निवेश करते हैं।
- एन्जिल्स, अक्सर अपने व्यक्तिगत फंडों के निवेश के बदले उद्यम में स्वामित्व हिस्सेदारी लेते हैं। कंपनी की हिस्सेदारी की ऐसी बिक्री को ''निजी प्लेसमेंट' कहा जाता है।
- व्यापार इनक्यूबेटर एक ऐसा संगठन है जो नई फर्मों की जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यापार विकास सेवाओं और लचीली शर्तों पर छोटे स्थान उपलब्ध करता है।
- बिजनेस इनक्यूबेटरों द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के पैकेज को नए उद्यम की सफलता और विकास दर को बढ़ाने को विचार में लेकर डिजाइन किया जाता है, इस प्रकार यह आर्थिक विकास पर प्रभाव अधिकतम होता है।
- उद्यमपूंजी ऐसे व्यक्तियों और फर्मों से पूंजी जुटाने की प्रक्रिया है जो उच्च विकास और

उच्च जोखिम वाली फर्मों में निवेश करते हैं। यह दीर्घकालिक वित्त का स्रोत है, नए स्टार्ट-अप व्यवसायों और छोटे व्यवसायों में निवेश करने वाले निवेशक, इस विश्वास के साथ निवेश करते हैं कि उनके पास दीर्घकालिक विकास क्षमता है।

- निजी इक्विटीफंड निवेशक कंपनी के बाद के चरणों में निवेश करते हैं। वे आमतौर पर फर्म के संचालन गतिविधियों में रुचि लेते हैं और उन्हें बेहतर बनाने में मदद करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. संसाधनों का एकत्रण क्या है?
2. दीर्घकालिक वित्तपोषण स्रोतों को परिभाषित कीजिए।
3. अल्पकालिक वित्तपोषण स्रोतों को परिभाषित कीजिए।
4. फर्म के लिए उपर्युक्त मानव संसाधन जुटाने के स्रोतों का नाम बताइए?
5. मानव संसाधन जुटाने की प्रक्रिया के दौरान ध्यान में रखे गए विभिन्न पहलुओं का चर्चा कीजिए।
6. शैक्षिक संसाधन संचय की प्रक्रिया के दौरान ध्यान में रखे गए विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कीजिए।
7. भौतिक संसाधन जुटाने की प्रक्रिया के दौरान ध्यान में रखे गए विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कीजिए।
8. बौद्धिक संसाधनों को परिभाषित कीजिए।
9. एंजेल के निवेश की अवधारणा की व्याख्या करें। भारत में कुछ प्रसिद्ध एंजेल निवेशकों के नाम बताइये।
10. एक उद्यमी को उपलब्ध वित्त के विभिन्न पारंपरिक स्रोतों के बारे में बताइये।
11. उद्यम पूंजी की अवधारणा को वित्त के स्रोत के रूप में स्पष्ट कीजिए।
12. क्या आपको लगता है कि इन दिनों इन्क्यूबेटर्स वित्त के सबसे प्रचलित स्रोत हैं? इनक्यूबेटर्स द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं पर कुछ प्रकाश डालें।
13. इनक्यूबेटर्स के क्या कार्य हैं? भारत में उद्यमों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करने वाले कुछ इन्क्यूबेटर्स का नाम बताइए।
14. वित्त के स्रोत के रूप में निजी इक्विटी की व्याख्या कीजिए। वित्त के स्रोत के रूप में निजी इक्विटीफंड का विवेचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. धन, जनशक्ति, सामग्री, मशीन, विधि
2. संसाधन जुटाना
3. भूमि और भवन
4. तकनीकी जानकारी, व्यापार रहस्य।

12.2

1. असत्य	2. असत्य	3. असत्य	4. सत्य
5. असत्य	6. सत्य	7. सत्य	8. असत्य
9. असत्य	10. सत्य	11. सत्य	

अवधारणा नक्शे

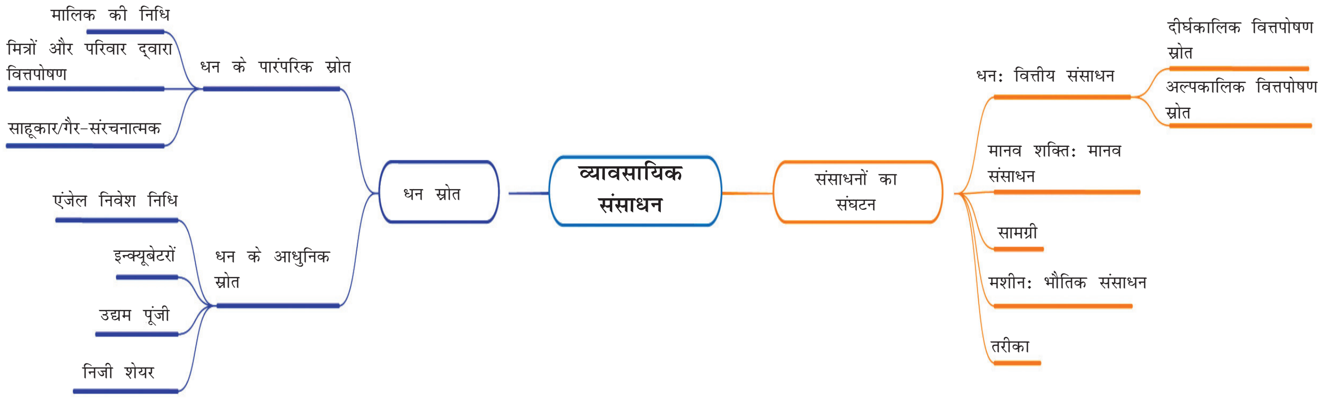

पाठ्यक्रम 5

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा उद्यमिता परितंत्र

अधिकतम अंक : 25

अध्ययन के घंटे : 45

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम हमारे देश में सकल विकास दर (जीडीपी) और रोजगार सृजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस पाठ्यक्रम में उद्यमी सहायता परितंत्र को शामिल किया गया है। शिक्षार्थी सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमिता, प्रमुख स्टेकधारकों, उद्यम स्थापित करने के लिए सरकार से प्राप्त सहायता को समझने में सक्षम होंगे।

अध्याय 13 सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई)

अध्याय 14 किससे, किसके लिए सम्पर्क करें

अध्याय 15 उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं

अध्याय 16 उष्मायन (इंक्यूबेशन) एक : परिचय

अध्याय 17 ई-संसाधन

13

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई)

किसी भी ग्रामीण क्षेत्र, कस्बे या किसी नगर की सड़कों से गुजरते हुए, आपने कुछ औद्योगिक संयंत्रों, उद्यमों और व्यावसायिक दुकानें देखी होंगी। उदाहरण के लिए, गुप्ता फर्नीचरशॉप प्रा. लिमिटेड, श्री साईकूरियर सर्विसेज, ज्योति क्लॉथमर्चेंट्स, ओम गणेश ब्रिक्स यूनिट, एक्सवाईजेड सीमेंट कंपनी लिमिटेड इत्यादि। इन नामों का आखिर अर्थ क्या है? क्या आपने कभी इसके बारे में जानने की कोशिश की है? इस तरह के प्रत्येक उद्यम में किसी प्रकार की व्यावसायिक प्रक्रिया होती है। आप देखेंगे कि कुछ कर्मचारी विनिर्माण संयंत्रों में काम कर रहे हैं और कुछ फ्रंट ऑफिस में सेवाएं दे रहे हैं। वे उद्यम और व्यावसायिक फर्में या तो विनिर्माण या सेवाएं प्रदान कर रही हैं।

आइए, व्यापार, उद्यम, फैक्टरी, निर्माण एवं सेवा सेक्टर, तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के बारे में विस्तार से अध्ययन करते हैं।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- व्यापार, उद्यम, फैक्टरी, निर्माण एवं सेवा सेक्टर की व्याख्या करते हैं;
- विभिन्न प्रकार की व्यवसाय इकाईयों की पहचान एवं उनके पंजीकरण की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं;
- निर्माण एवं सेवा सेक्टर में अंतर करते हैं; और
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की अवधारणा का वर्णन करते हैं।

13.1 व्यापार, फैक्टरी एवं उद्यम

13.1.1 आर्थिक विकास के लिए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों का महत्त्व

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम अनेक विकसित और विकासशील देशों में आर्थिक विकास के आधार स्तंभ हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम को भारत के लिए ''विकास का इंजन'' कहा जाता है। रोजगार के अवसर उत्पन्न करने के मामले में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों में देश के विकास में प्रमुख भूमिका निभाई है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम ने 50 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार दिया है, विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाया है, क्षेत्रीय विषमताओं को दूर किया है, धन के वितरण को संतुलित किया है, और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में योगदान दिया है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र का जीडीपी में हिस्सा 8% है।

सरकार ने देश के सकल घरेलू उत्पाद में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र के 29 प्रतिशत योगदान को 50 प्रतिशत तक बढ़ाने और इससे वर्तमान में 11.1 करोड़ के मुकाबले कम से कम 15 करोड़ लोगों को रोजगार प्राप्त होने का सुनिश्चय करने की योजना बनाई है।

वर्ष 1977, 1980, 1990, 1998, 2005 और 2013-14 में अब तक छह आर्थिक जनगणनाएं की जा चुकी हैं। छठी आर्थिक जनगणना (2013) में 58.5 मिलियन प्रतिष्ठान परिचालनात्मक पाए गए थे, जिनमें से 34.8 मिलियन प्रतिष्ठान (59.48%) ग्रामीण क्षेत्रों में और लगभग 23.7 मिलियन प्रतिष्ठान (40.52%) शहरी क्षेत्रों में स्थित थे। नेशनल नमूना सर्वेक्षण (एनएसएस) के 73वें राउंड के अनुसार गैर-निगमित गैर-कृषि उद्यम निर्माण, व्यवसाय एवं अन्य सेवा के क्षेत्र में हैं, भारत में 633.92 लाख सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम हैं तथा उनमें से केवल 4000 उद्यम ही बड़े उद्योग हैं।

13.1.2 व्यवसाय

एक मानवीय आर्थिक क्रियाकलाप है जो लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण से संबंधित है। व्यवसाय निजी स्वामित्व में हो सकते हैं, लाभ न कमाने के उद्देश्य वाले अथवा राज्य के स्वामित्व वाले हो सकते हैं।

13.1.3 फैक्टरी

कारखाना अधिनियम, 1948 के अनुसार, फैक्टरी का अर्थ ऐसा कोई परिसर है जिसमें किसी भाग अथवा स्थान पर कोई भी निर्माण प्रक्रिया की जा रही है, अथवा जिसमें सामान्यत:–

- बिजली के उपयोग से, बशर्ते कि वहां 50 या उससे अधिक कामगार काम कर रहे हों या पूर्ववर्ती बारह महीनों के किसी भी दिन काम कर रहे हों, अथवा
- बिजली की सहायता के बिना, बशर्ते कि वहां 100 या उससे अधिक कामगार काम कर रहे हों अथवा पूर्ववर्ती 12 महीनों के किसी भी दिन काम कर रहे हों और बशर्ते यह भी कि ऐसे परिसर के किसी भी हिस्से में बिजली की सहायता से निर्माण कार्य न किया जा रहा हो।

13.1.4 उद्यम

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास अधिनियम 2006 (एमएसएमई अधिनियम) में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों में प्रोत्साहन एवं विकास तथा प्रतिस्पर्धा संवर्धन की व्यवस्था की गई है। अधिनियम में उद्यम, विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के लिए उपर्युक्त परिभाषाएँ प्रदान की गई हैं।

सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यम अधिनियम, 2006 के अनुसार, उद्यम का अर्थ एक औद्योगिक उपक्रम या व्यावसायिक कम्पनी अथवा अन्य कोई ऐसा प्रतिष्ठान है, जो किसी भी विधि से, किसी भी उद्योग के लिए उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम 1951 की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट किसी भी उद्योग से संबंधित है अथवा किसी सेवा या सेवाओं को प्रदान करने या प्रदान कराने की क्रियाएं कर रहा है।

निर्माण उद्यम

निर्माण अथवा माल के उत्पादन की प्रक्रिया

सेवा उद्यम

सेवाएं प्रदान करने की प्रक्रिया

सामान्यत: उद्यम के पंजीकरण की बात आते ही लोग भ्रमित हो जाते हैं। उद्यम एक कंपनी या स्व-स्वामित्व या साझेदारी फर्म या सहकारी स्वरूप में गठित हो सकता है। ऐसे गठन सम्बद्ध सरकारी कानूनों और प्रक्रियाओं के अंतर्गत किए जाते हैं।

13.2 व्यवसाय संरचना/उद्यम के प्रकार

आइए भारत में उपलब्ध व्यावसायिक संरचनाओं के स्वरूप देखें और समझें। यहाँ उनमें से कुछ की सूची दी गई है :

13.2.1 एकल स्वामित्व

एकल स्वामित्व एक ऐसा व्यवसाय है जिसका स्वामित्व, प्रबंधन और नियंत्रण किसी एक व्यक्ति द्वारा किया जाता है। यह भारत में व्यापार के सबसे सामान्य रूपों में से एक है, जिसका उपयोग छोटे व्यवसायों के लिए किया जाता है। तथापि, एकल स्वामी को किसी विशिष्ट पंजीकरण की आवश्यकता नहीं होती है, फिर भी उसे अपने व्यवसाय के कार्य को सुचारू रूप से करने के लिए कुछ पंजीकरण प्राप्त कर लेने चाहिए। लघु एवं मध्यम, दुकान और स्थापना अधिनियम लाइसेंस और जीएसटी जैसे पंजीकरण करवा लेने चाहिए।

टिप्पणी

- **लघु मध्यम उद्यम/उद्योग आधार के रूप में पंजीकरण करना :** उद्योग आधार बारह अंकों की विशिष्ट पहचान संख्या है जो भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा छोटे और मध्यम उद्यमों के लिए प्रदान की जाती है। इसे व्यापार के लिए आधार के रूप में भी जाना जाता है। आप स्वयं को लघु और मध्यम उद्यम (एसएमई) के रूप में एमएसएमई अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत करवा सकते हैं। आवेदन इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। तथापि, एसएमई के रूप में पंजीकृत होना अनिवार्य नहीं है, यह विशेष रूप से व्यवसाय के लिए ऋण लेने के समय, अत्यधिक फायदेमंद है। सरकार एसएमई के लिए विभिन्न योजनाएं चलाती है जहां ऋण रियायती दर पर प्रदान किए जाते हैं।

- **दुकान और स्थापना अधिनियम लाइसेंस :** यह लाइसेंस सभी स्थानों पर अनिवार्य नहीं है, लेकिन स्थानीय कानूनों के अनुसार इसे प्राप्त करना आवश्यक है। यह नगरपालिकाओं या स्थानीय निकायों द्वारा जारी किया जाता है और इसे कर्मचारियों की संख्या के आधार पर जारी किया जाता है।

- **वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी पंजीकरण) :** यदि आपका वार्षिक कारोबार 20 लाख रुपए से अधिक है, तो आप जीएसटी के तहत पंजीकृत करवा सकते हैं। इसके अलावा, यदि आप ऑनलाइन व्यापार (अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि के माध्यम से बिक्री) कर रहे हैं, तो आपके लिए जीएसटी नंबर प्राप्त करना आवश्यक है।

13.2.2 भागीदारी/सीमित दायित्व भागीदारी

साझेदारी फर्म एक ऐसा संगठन होता है जिसका गठन लाभ कमाने के उद्देश्य से व्यवसाय चलाने के लिए दो या अधिक व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। ऐसे समूह के प्रत्येक सदस्य को भागीदार के रूप में जाना जाता है और सामूहिक रूप से साझेदारी फर्म के रूप में जाना जाता है। यदि आप अपना व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, तो आपको इसे भारतीय भागीदारी अधिनियम, 1932 के तहत पंजीकृत करवाना होगा।

विकल्प के रूप में आप सीमित दायित्व भागीदारी का चयन कर सकते हैं। सीमित देयता भागीदारी (एलएलपी) का निगमन करने के लिए न्यूनतम संख्या 2 है। सीमित दायित्व भागीदारी के भागीदारों की अधिकतम संख्या पर कोई ऊपरी सीमा नहीं है। भागीदारों में, न्यूनतम दो नामित साझेदार होने चाहिए जो व्यक्ति होंगे, और उनमें से कम से कम एक भारत में निवासी होना चाहिए। नामित भागीदारों के अधिकारों और कर्तव्यों को सीमित दायित्व भागीदारी समझौते द्वारा नियंत्रित किया जाता है। वे सीमित दायित्व भागीदारी अधिनियम 2008 के सभी प्रावधानों और सीमित दायित्व भागीदारी समझौते में निर्दिष्ट प्रावधानों के अनुपालन के लिए प्रत्यक्ष जिम्मेदार होते हैं।

अगर आप सीमित दायित्व भागीदारी के अंतर्गत व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, तो आपको इसे रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज के जरिए सीमित दायित्व भागीदारी अधिनियम, 2008 के अंतर्गत पंजीकृत करवाना होगा।

एकल स्वामित्व का अर्थ किसी एक व्यक्ति द्वारा एक उद्यम स्थापित करना है। भागीदारी का अर्थ दो या दो से अधिक भागीदारों द्वारा उद्यम स्थापित करना है, इसे भागीदारी अधिनियम 1932 या सीमित दायित्व भागीदारी अधिनियम 2008 के तहत पंजीकृत हो सकता है।

13.2.3 कम्पनी

कंपनी का अर्थ कंपनी अधिनियम, 2013 के अंतर्गत गठित और पंजीकृत इकाई है। इस अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत एक व्यक्ति कंपनी (ओपीसी) अथवा प्राइवेट लिमिटेड अथवा पब्लिक लिमिटेड कंपनियों को कंपनी कहा जाता है।

कंपनी क्या है?

कंपनी एक विधिक इकाई है जो व्यावसायिक रूप से या औद्योगिक उद्यम में संलिप्तता से और संचालित करने के लिए व्यक्तियों के समूह द्वारा बनाई जाती है।

- ***एक व्यक्ति कंपनी (ओपीसी) :*** इसे हाल ही में वर्ष 2013 में प्रारंभ किया गया है, यदि केवल एक प्रमोटर या स्वामी है तो ओपीसी, किसी कंपनी को प्रारंभ करने की सबसे उत्तम विधि है। यह एकल-स्वामी को अपना काम करने में सक्षम बनाता है और ऐसा होते हुए भी यह निगमित संरचना के अंतर्गत आती है।

- ***प्राइवेट लिमिटेड (पीएलसी) :*** कानून की नजर में एक कंपनी को उसके संस्थापकों से अलग कानूनी इकाई माना जाता है। इसमें शेयरधारक (स्टेकधारक) और निदेशक (कंपनी अधिकारी) होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को कंपनी का कर्मचारी माना जाता है।

- ***पब्लिक लिमिटेड कंपनी (पीएलसी) :*** पीएलसी सदस्यों का एक स्वैच्छिक संघ है जिसे कंपनी कानून के तहत शामिल किया जाता है। इसका एक अलग कानूनी असितत्व है और इसके सदस्यों की देयता उन शेयरों तक ही सीमित है, जो उनके पास हैं।

13.2.4 सहकारी समिति

सहकारी समिति संयुक्त स्वामित्व वाले उद्यम के माध्यम से आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए स्वेच्छा से स्वायत्त संगठन के रूप में कार्य करता है। सहकारी समिति से तात्पर्य है एक सहकारी समिति जो इस अधिनियम 1950 या किसी राज्य/प्रांसगिक अधिनियम के अंतरगत पंजीकृत हो।

कंपनी अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत कंपनी के व्यवसाय में निवेश करने वाले कई शेयरधारक हो सकते है।

शेयरधारक

महिला डेयरी सहकारी समिति सहकारिता अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत है और सभी समान विचारधारा वाली महिलाओं को अपने स्वयं के और नियंत्रित सहकारी समिति का प्रबंधन करने के लिए सम्मिलित करती हैं

व्यवसाय उद्यम का पंजीकरण :

व्यवसाय पंजीकरण	किस अधिनियम के अंतर्गत	पंजीकरण कार्यालय
एकल स्वामित्व		
भागीदारी फर्म	भागीदारी अधिनियम, 1932	पंजीकरण कार्यालय (राज्य सरकार)
	सीमित दायित्व भागीदारी अधिनियम 2008	पंजीकरण कार्यालय (राज्य सरकार)
कम्पनी, एक व्यक्ति कम्पनी, प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी, पब्लिक लिमिटेड कम्पनी	कम्पनी अधिनियम, 2013	कम्पनी पंजीयक (केन्द्र सरकार)
सहकारी समिति	सहाकारिता अधिनियम, पारस्परिक सहायता समर्थित	सहकारिता पंजीयक

पाठगत प्रश्न 13.1

सत्य अथवा असत्य कथनों की पहचान कीजिए।

1) विनिर्माण क्षेत्र और सेवा क्षेत्र दोनों समान हैं।
2) स्वामित्व फर्म एक उद्यम है।
3) सहकारी समिति भी एक उद्यम है।
4) उद्यम का अर्थ किसी भी सेवा या सेवाओं को प्रदान करने या प्रदान करने के लिए माल का निर्माण या उत्पादन है।
5) कारखाना एक उद्यम है।

टिप्पणी

13.3 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की परिभाषा

एमएसएमई या लघु से मध्यम उद्यम वास्तव में क्या है, यह इस पर निर्भर करता है कि इसकी परिभाषा कौन कर रहा है। देश के आधार पर, कर्मचारियों की संख्या, वार्षिक बिक्री, संपत्ति या इनमें से किसी भी संयोजन के आधार पर उद्यम के आकार को वर्गीकृत किया जा सकता है। यह भिन्न उद्योगों में भी भिन्न हो सकता है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में लघु एवं मध्यम उद्यमों की प्रमुख भागीदारी है। अधिकांश देशों में छोटे से लेकर मध्यम उद्यम (एमएसएमई) बड़े पैमाने पर कारोबार करते हैं।

13.3.1 भारत में सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यमों की परिभाषा

वर्ष 2006 में सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास अधिनियम के अस्तित्व में आने के 14 वर्ष पश्चात आत्मनिर्भर भारत पैकेज में सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यम की परिभाषा में 13 मई, 2020 को संशोधन की घोषणा की गई थी। इस घोषणा के अनुसार,

- सूक्ष्म विनिर्माण और सेवा इकाइयों में निवेश की 1 करोड़ की सीमा बढ़ाकर 5 करोड़ रूपए परिभाषित किया गया है।
- लघु यूनिट की सीमा बढ़ाकर 10 करोड़ रूपए के निवेश तथा 50 करोड़ की टर्नओवर की गई है। इसी प्रकार, मध्यम इकाई के लिए 20 करोड़ रूपए के निवेश एवं 100 करोड़ रूपए की टर्नओवर बढ़ाई गई है।
- भारत सरकार ने 1 जून 2020 को सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यम परिभाषा में आगे संशोधन करने का निर्णय लिया गया था। मध्यम उद्यमों के लिए, निवेश की सीमा अब बढ़ाकर 50 करोड़ रूपए तथा टर्नओवर को बढ़ाकर 250 करोड़ रूपए कर दिया गया है।

(i) ***सूक्ष्म उद्यम***- जहां संयंत्र और मशीनरी अथवा उपकरण में किया गया निवेश एक करोड़ रुपये से अधिक नहीं है और टर्नओवर पांच करोड़ रुपये से अधिक नहीं है;

(ii) ***लघु उद्यम***- जहां संयंत्र और मशीनरी अथवा उपकरण में किया गया निवेश दस करोड़ रुपये से अधिक नहीं है और टर्नओवर पचास करोड़ रुपये से अधिक नहीं है;

(iii) ***मध्यम उद्यम***- जहां संयंत्र और मशीनरी अथवा उपकरण में किया गया निवेश पचास करोड़ रुपये से अधिक नहीं है और टर्नओवर दो सौ पचास करोड़ रुपये से अधिक नहीं है।

13.3.2. निवेश एवं टर्नओवर की परिभाषा

निवेश : व्यापार में कुछ लाभ की आशा से धन निर्धारित करने के लिए (वैयक्तिक धन अथववा बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों से ऋण)

टर्नओवर : व्यापारछूट, करों और उत्पन्न राशि पर आधारित किसी अन्यकर की कटौती के बाद वस्तुओं और सेवाओं के प्रावधान से प्राप्त राशि।

	निवेश (करोड़ में)	टर्न ओवर (करोड़ में)
सूक्षम उद्यम	1	5
लघु उद्यम	10	50
मध्यम उद्यम	50	250

13.3.3 विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र की परिभाषा

"**विनिर्माण प्रक्रिया**" का अर्थ ऐसी कोई प्रक्रिया है जो :

i. निर्माण, फेरबदल करने, मरम्मत करने, अलंकरण करने, परिष्करण करने, पैंकिंग करने, ऑयलिंग, धोने, सफाई करने, तोड़ने, ध्वस्त करने अथवा अन्यथा किसी वस्तु के उपचार करने या उसे अंगीकार करने के लिए की गई हो; अथवा

ii. जो पदार्थ उपयोग, बिक्री, परिवहन, वितरण अथवा निपटान के लिए आशित हो; अथवा

iii. ऑयल पम्प करने, जल, सिवेज, अथवा अन्य किसी अन्य पदार्थ के लिए हो; अथवा

iv. बिजली उत्पन्न करने, ट्रांसफार्म करने अथवा ट्रांसमिट करने; अथवा

v. प्रिंटिंग, पत्र प्रेस द्वारा प्रिंटिंग, लिथोग्राफी, फोटोग्रेवयर या मुद्रण प्रकार की कम्पोजिंग के लिए हो अथवा

vi. अन्य समान प्रक्रियाओं या जिल्दसाजी; (अथवा)

vii. जहाजों या वैसल्स का निर्माण, पुनर्निर्माण, मरम्मत, पुन:अनुकूलन, परिष्करण अथवा तोड़ने; अथवा कोल्डस्टोरेज में किसी वस्तु का संरक्षण अथवा भंडारण करने के लिए हो।

"सेवा क्षेत्र"

सेवा क्षेत्र मूर्त वस्तुओं को प्रदान करने के स्थान पर सेवाएं प्रदान करता है। इसके क्रियाकलापों में सेवा क्षेत्र में खुदरा, बैंक, होटल, रियल एस्टेट, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक देखभाल, कंप्यूटर सेवाएं, मनोरंजन, मीडिया, संचार, बिजली, गैस और जल आपूर्ति की सेवाएं सेवा शुल्क भुगतान आधार/व्यवसाय स्वरूप में प्रदान की जाती हैं।

13.3.4 निर्माण एवं सेवा क्षेत्र में अंतर

मूर्त	अमूर्त
एक ही प्रकार की।	विविध प्रकार की।
उत्पादन एवं वितरण को खपत से अलग किया गया है।	उत्पादन एवं वितरण तथा खपत की प्रक्रियाएं साथ साथ चलती हैं।

कोई वस्तु	कोई क्रियाकलाप अथवा प्रक्रिया
प्रमुख मूल्य फैक्टरी में संसाधित किए जाते हैं।	प्रमुख मूल्यों का उत्पादन क्रेता-विक्रेता के मध्य परस्पर क्रियाओं से होता है।
उत्पादन प्रक्रिया में ग्राहकों का योगदान नहीं होता है।	ग्राहक उत्पादन में योगदान देते हैं।
भंडारण किया जा सकता है।	भंडारण नहीं किया जा सकता।
स्वामित्व का अंतरण।	स्वामित्व का अंतरण नहीं।

उद्योग आधार पंजीकरण- सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार

केंद्र सरकार - उद्योग आधार // udyogaadhaar.gov.in)

उद्योग आधार एक सरकारी पंजीकरण है जिसके अंतर्गत मान्यता प्रमाणपत्र और लघु अथवा मध्यम व्यवसायों या उद्यमों को प्रमाणित करने के लिए एक यूनिक संख्या प्रदान की जाती है। इस सुविधा के पीछे केंद्र सरकार का उद्देश्य एक ऐसी विधि को प्रारंभ करना है जिसके उपयोग से भारत में मध्यम या लघु स्तर के व्यवसायों या उद्योगों को उनके आधार कार्ड नंबर के माध्यम से सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यमों के अंतर्गत पंजीकृत उद्यमियों तक अधिकतम लाभ प्रदान करने की सुविधा सरकार को प्राप्त हो सके। इकाई का स्वामी, निदेशक या स्वामित्व धारक, जो कोई इकाई अथवा उद्यम का एकल स्वामित्व धारक हो, सीमित दायित्व भागीदारी हो, प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी अथवा कुछ भी हो, को 12 अंकों का आधार नम्बर प्रदान किया जाता है। उनके पास सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यम पंजीकरण प्रक्रिया के दौरान मान्यता प्रमाण पत्र होना चाहिए।

निर्माण प्रक्रिया - सीमेंट उद्योग

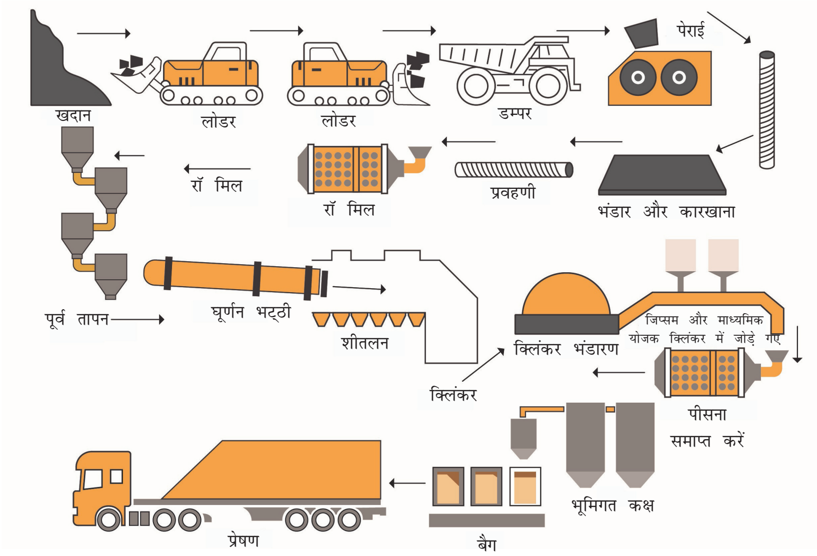

सीमेंट निर्माण प्रक्रिया का संक्षिप्त वर्णन

i. **क्रशिंगसेक्शन :** कच्चे माल मुख्य रूप से चूना पत्थर, योजक आदि को अलग-अलग क्रशर में क्रश करके उन्हें संबंधित सिलोस में स्वचालित रूप से भंडारण किया जाता है।

ii. **भंडारण और अनुरूपता :** टेबल फीडरों के उपयोग से वांछित अनुरूपता के अनुसार विभिन्न प्रकार की कच्ची सामग्रियां सिलोस से निकालकर उन्हें रॉ मिल में पहुंचा दिया जाता है।

iii. **रॉमिलिंग :** कच्ची पिसान का निर्माण करने के लिए कच्चे मिक्स को वांछित शुद्धता के अनुरूप बॉल मिल में रखा जाता है, और समरूप करने के लिए ले जाया जाता है।

iv. **सम्मिश्रण और समरूपण :** कच्ची पिसान का सम्मिश्रण साइलों में समान आकार में किया जाता है, और भट्ठे में डालने के लिए भंडारण साइलो में स्वचालित रूप से संग्रहित किया जाता है।

v. **पैलेटाइजिंग और ज्वलन :** कच्ची पिसान को जलाने के लिए भट्ठे में चार्ज किया जाता है। डिस्चार्ज के बाद क्लिंकर को गहरे बाल्टी एलीवेटर के माध्यम से क्लिंकर यार्ड में संग्रहीत किया जाता है।

vi. **क्लिंकर/जिप्सम कर्शिंग, भंडारण और आनुपातन :** क्लिंकर और जिप्सम को स्टोर करने के बाद हॉपर में संग्रहीत किया जाता है और टेबल फीडरों की मदद से वांछित अनुपात में निकाला जाता है और सीमेंट मिल हॉपर में पहुंचाया जाता है।

vii. **सीमेंट मिलिंग :** सीमेंट बनाने के लिए सीमेंट मिल में क्लिंकर, जिप्सम और फ्लाई ऐश मिक्स ग्राउंड है।

viii. **भंडारण और पैकिंग :** सीमेंट साइलो और वातित, परीक्षण और प्रेषण के लिए पैक में संग्रहीत किया जाता है।

सेवा **सेक्टर-कोरियर डिलीवरी** **सेवाएं**

	i. मर्चेंट या खुदरा ग्राहक विदेश अथवा देश में शिपमेंट भेजने और फोन के माध्यम से वितरण का अनुरोध करने की योजना बनाते हैं। ईमेल या वेब बुकिंग।
	ii. ग्राहक सेवा शिपमेंट ऑर्डर लेता है और कूरियर व्यक्ति को शिपमेंट को पिक-अप करने की सूचना देने के लिए सिस्टम को अपडेट करता है।
	iii. आईटी प्रणाली से प्राप्त सूचना के अनुसार कूरियर शिपमेंट को क्लेक्ट अथवा पिक करता है और सफलतापूर्वक पिकअप रिकार्ड करके माल गोदाम जाता है।

टिप्पणी

	vi. मालगोदाम में, शिपमेंट की तात्कालिकता एवं गंतव्य के आधार पर छंटाई की जाती है। ग्राहक रियल टाइम आधार पर शिपमेंट को ट्रैक कर सकता है।
	v. परिचालक प्रत्येक कोरियरबॉय को उनके जोन कवरेज के आधार पर एक डिलीवरी जॉब आवंटित करते हैं। परिचालक, डिलीवरियों की संख्या एवं सही कौशल सहित मोबाइल के माध्यम प्रत्येक कोरियर की गतिविधियों को ट्रैक करता है।
	vi. घरेलू शिपमेंट के लिए, डिलीवरी अंतिम ग्राहक को सौंपी जाती है अथवा पार्सल लॉकर्स में डाली जाती है।
	vii. अंतर्राष्ट्रीय शिपमेंट के लिए, हम या तो अपने एजेंटों को शिपमेंट वितरित करते हैं या वे समझौते के आधार पर इसे हमारे गोदाम से उठाते हैं। ऐसे एजेंट हमें शिपमेंट ट्रैकिंग सेवाएं भी प्रदान करते हैं।
	viii. एजेंट पार्सल डिलीवरी आवश्यकताओं (प्राथमिकता, आकार और गंतव्य) के आधार पर डिलीवरी मॉड का चयन करता है और इसे गंतव्य देश के गोदाम में भेजता है। फिर शिपमेंट को डिलीवरी के लिए सॉर्ट किया जाता है।
	ix. शिपमेंट के प्राप्तकर्ता को तब एजेंट की ग्राहक सेवाओं द्वारा अनुबंधित किया जाता है और वितरण के लिए एक समय की व्यवस्था की जाती है।

पाठगत प्रश्न 13.2

i. निम्नलिखित का मिलान कीजिये :

1. सीमेंट फैक्टरी	1. सेवा सेक्टर
2. संयंत्र एवं मशीनरी में करोड़ 9 रूपए का निवेश	2. मध्यम उद्यम
3. फोटो स्टूडियो उपकरण के लिए लाख रूपए का निवेश 9	3. लघु उद्यम
4. कोरियर	4. सूक्ष्म उद्यम
5. खाद्य प्रस्संकरण यूनिट में 25 करोड़ रूपए का निवेश	5. निर्माण क्षेत्र

ii. सही उत्तर का चयर कीजिये :

i) सूक्ष्म उद्यम (निवेश की सीमा)

क) 0-1 करोड़	ख) 2-10 करोड़	ग) 11-50 करोड़	घ) कुछ नहीं

ii) लघु उद्यम (निवेश की सीमा) :

क) 0-1 करोड़	ख) 2-10 करोड़	ग) 11-50 करोड़	घ) कुछ नहीं

iii) मध्यम उद्यम (निवेश की सीमा)

क) 0-1 करोड़	ख) 2-10 करोड़	ग) 11-50 करोड़	घ) कुछ नहीं

iv) सूक्षम उद्यम (टर्नओवर की सीमा)

क) 0-1 करोड़	ख) 6-50 करोड़	ग) 51-250 करोड़	घ) कुछ नहीं

v) लघु सूक्षम उद्यम (टर्नओवर की सीमा)

क) 0-5 करोड़	ख) 6-50 करोड़	ग) 51-250 करोड़	घ) कुछ नहीं

vi) मध्यम सूक्षम उद्यम (टर्न ओवर की सीमा)

क) 0-5 करोड	ख) 6-50 करोड़	ग) 51-250 करोड़	घ) कुछ नहीं

13.4 ईज ऑफ डूइंग बिजनेस

"ईज ऑफ डूइंग बिजनेस" (EoDB) साइमोन डज्नकोव द्वारा निर्मित्त एक सूचकांक है जिसका प्रकाशन विश्व बैंक द्वारा वार्षिक रूप से किया जाता है। यह किसी देश में व्यापार करने की सुगमता को परिभाषित किया गया है। सूचकांक में उच्च रैंकिंग बेहतर, सरल व्यापार नियमों और संपत्ति के अधिकारों के लिए मजबूत सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करती है।

13.4.1 ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सूचकांक का महत्त्व

भारत में छोटे और मध्यम उद्योगों की बढ़ती संख्या के साथ, व्यवसाय में सुगमता की स्थापना भारत के आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करती है। जबकि व्यापार में सुगमता की स्थापना विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के लिए आशित हैं, स्थानीय व्यवसाय भी सरकारों द्वारा स्थापित प्रक्रियाओं, नियमों और विनियमों से प्रभावित होते हैं जो व्यवसाय के अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने या स्थानीय व्यवसायों को अपनी उद्यमशीलता की महत्त्वाकांक्षाओं को वापस रखने में मदद कर सकते हैं। यहां यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि जब सिस्टम, प्रक्रियाएं, नियम और कानून व्यापार के अनुकूल होते हैं, तो व्यापार स्थापित करना न केवल बड़ी कंपनियों के लिए बल्कि ऐसे छोटे लोगों के लिए भी आसान होता है, जिनके पास कम पूंजी और कम संसाधन होते हैं। इस प्रकार, व्यवसाय में सुगमता की स्थापना से मुक्त एवं निष्पक्ष आर्थिक वातावरण बनाने में व्यवसायों और स्थानीय नागरिकों को लाभ हो सकता है।

13.4.2 ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सूचकांक में भारत की रैंकिंग

पिछले कई वर्षों में निरंतर व्यापार सुधारों ने भारत को 2018 की वैश्विक रैंकिंग में डूइंग बिजनेस रैंकिंग में 23 स्थान की बढ़त के साथ 77वें स्थान पर पहुंचने में मदद की है। भारत ने पिछले वर्ष के दौरान छह व्यापार सुधार किए हैं, जो लगातार दूसरे वर्ष शीर्ष वैश्विक सुधार माने गए हैं। नवीनतम सुधार डूइंग बिजनेस के क्षेत्र में निर्माण परमिट से निपटने, बिजली प्राप्त करने, ऋण प्राप्त करने, कर भुगतान करने, और देश से बाहर व्यापार करने से संबंधित थे।

13.4.3 ईज ऑफ डूइंग बिजनेस

आठ प्रमुख क्षेत्र

उद्यम स्थापित करने के लिए, केंद्र और राज्य सरकारें निम्नलिखित घटकों पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं-

- व्यवसाय शुरू करना
- निर्माण परमिटों से संबंधित प्रक्रियाएं
- बिजली प्राप्त करना
- सम्पति का पंजीकरण करवाना
- क्रेडिट प्राप्त करना
- अल्पसंख्यक निवेशकों की सुरक्षा करना
- करों का भुगतान
- देश से बाहर व्यापार करने
- अनुबंधों का प्रवर्तन
- ऋणशोधन क्षमता समाधान

13.4.4 राज्य सरकारों द्वारा प्रयास

राज्य सरकारें व्यापार सुगमता की स्थापना को विचार में लेकर अनुमोदन के लिए एकल खिड़की प्रणाली स्थापित करने जैसे कई कदम उठा रही हैं। सुगमता के मापदंडों में निर्माण परमिट, श्रम विनियमन, पर्यावरण पंजीकरण, आसान ऋण, सेट-अप इंक्यूबेशन केंद्र, वित्त पोषण, और सूचना तक पहुंच, भूमि की उपलब्धता और एकल खिड़की प्रणाली जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

13.4.5 राज्यों के लिए ईज आफ डूइंग बिजनेस रैंक

विश्व बैंक द्वारा भारत के राज्यों की ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग विश्व बैंक द्वारा वर्ष 2015 से की जा रही है तथा इसकी सुविधा भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अध्याधीन औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग द्वारा वार्षिक सुधार कार्रवाई योजना में राज्यों की प्रगति के आधार पर सुगम बनाया गया है जिसमें 8 प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं, जिनके अंक प्रत्येक वर्ष परिवर्तित होते हैं।

राज्य अथवा संघ शासित प्रदेश	2018 रैंकिंग	2015 रैंकिंग	मान्यता
आंध्र प्रदेश	98.42(1/36)	70.12(2/32)	उत्कृष्ट
तेलंगाना	98.33(2/36)	42.45(13/32)	उत्कृष्ट
हरियाणा	98.07(3/36)	40.66(14/32)	उत्कृष्ट
झारखंड	97.99(4/36)	63.09(3/32)	उत्कृष्ट
गुजरात	97.96(5/36)	71.14(1/32)	उत्कृष्ट
छत्तीसगढ़	97.36(6/36)	62.45(4/32)	उत्कृष्ट
मध्य प्रदेश	97.31(7/36)	62.00(5/32)	उत्कृष्ट
कर्नाटक	97.40(8/36)	48.50(9/32)	उत्कृष्ट
राजस्थान	95.69(9/36)	61.05(6/32)	उत्कृष्ट
पश्चिम बंगाल	94.70(10/36)	46.90(11/32)	सफल
उत्तराखंड	94.21(11/36)	13.36(23/32)	सफल
उत्तर प्रदेश	92.87(12/36)	47.37(10/32)	सफल
महाराष्ट्र	92.71(13/36)	49.43(8/32)	सफल
उड़ीसा	92.09(14/36)	52.12(7/32)	सफल
तमिलनाडु	90.68(15/36)	44.58(12/32)	सफल
हिमाचल प्रदेश	87.90(16/36)	23.95(17/32)	तीव्र गति
असम	84.75(17/36)	14.84(22/32)	तीव्र गति
बिहार	81.91(18/36)	16.41(21/32)	तीव्र गति
गोवा	57.34(19/36)	21.74(19/32)	औसत गति
पंजाब	53.92(20/36)	36.73(16/32)	औसत गति
केरल	44.79(21/36)	22.87(18/32)	धीमी गति

जम्मू और कश्मीर	33.05(22/36)	05.93(29/32)	धीमी गति
दिल्ली	31.60(23/36)	37.35(15/32)	धीमी गति
दमन और दीव	28.69(24/36)	14.58(22/32)	धीमी गति
त्रिपुरा	22.27(25/36)	09.29(26/32)	महत्वकांक्षी
दादरा और नगर हवेली	21.28(26/36)	01.79(32/32)	महत्वकांक्षी
पुद्दुचेरी	15.65(27/36)	17.72(20/32)	महत्वकांक्षी
नागालैंड	14.04(28/36)	03.41(31/32)	महत्वकांक्षी
चंडीगढ़	11.44(29/36)	10.04(24/32)	महत्वकांक्षी
मिजोरम	03.63(30/36)	06.37(28/32)	उच्चमहत्वकांक्षी
अण्डमान और निकोबार	01.24(31/36)	09.73(25/32)	उच्चमहत्वकांक्षी द्वीप समूह
मणिपुर	00.27(32/36)	01.19(32/32)	अत्यधिक उच्चमहत्वकांक्षी
सिक्किम	00.13(33/36)	07.23(27/32)	अत्यधिक उच्चमहत्वकांक्षी
मेघालय	00.00(34/36)	04.38(30/32)	अत्यधिक उच्चमहत्वकांक्षी
अरुणाचल प्रदेश	00.00(35/36)	01.23(32/32)	अत्यधिक उच्चमहत्वकांक्षी
लक्षद्वीप	00.00(36/36)	00.3(32/32)	अत्यधिक उच्चमहत्वकांक्षी

पाठगत प्रश्न 13.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

i) ईओडीबी का अर्थ क्या है ....

ii) ईओडीबी इंडेक्स का निर्माण ....

iii) ईओडीबी इंडेक्स में .... पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

iv) ईओडीबी का प्रकाशन प्रत्येक .... विश्व बैंक द्वारा किया जाता है।

v) ईओडीबी 2018 में भारत का रैंक ....

vi) ईओडीबी 2018 में राज्य का प्रथम रैंक था।

आपने क्या सीखा

- उद्यम का अर्थ किसी सेवा या सेवाओं को प्रदान करने या प्रदान करने के कार्य करने वाली इकाई द्वारा माल का निर्माण या उत्पादन है।
- एकल स्वामित्व एक व्यवसाय है जिसका स्वामित्व, प्रबंधन एवं नियंत्रण एक व्यक्ति द्वारा किया जाता है।
- सीमित देयता भागीदारी अधिनियम 2008 अथवा भागीदारी अधिनियम 1932; ऐसे व्यक्तियों के बीच किसी ऐसे व्यवसाय से उत्पन्न लाभ का सहभाजन करने के प्रति सहमति है जो उनके द्वारा अथवा उनमें से किसी के द्वारा प्रत्येक की ओर से किया गया है।
- कम्पनी का अर्थ वह कम्पनी है जिसका गठन और पंजीकरण कम्पनी अधिनियम, 2013 के अंतर्गत हुआ है।
- सहकारी समिति का अर्थ सहकारी समिति अधिनियम 1950 या किसी राज्य सहकारी अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत सहकारी समिति है।
- फैक्टरी का अर्थ ऐसा कोई परिसर है जिसमें किसी भाग अथवा स्थान पर कोई भी निर्माण प्रक्रिया की जा रही है।
- सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम की परिभाषा निवेश की सीमा एवं टर्नओवर के आधार पर वर्गीकृत की गई है।

	निवेश (करोड़ में)	**टर्नओवर (करोड़ में)**
सूक्ष्म उद्यम	1	5
लघु उद्यम	10	50
मध्यम उद्यम	50	250

- भारत में छोटे और मध्यम उद्योगों की बढ़ती संख्या के साथ, व्यवसाय में सुगमता की स्थापना भारत के आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करती है। उद्यम स्थापित करने के लिए, केंद्र और राज्य सरकारें उद्यमियों को पंजीकरण, ऋण आदि के बारे में सहायता प्रदान कर रही हैं।
- पिछले कई वर्षों में निरंतर व्यापार सुधारों ने भारत को 2018 की वैश्विक रैंकिंग में डूइंग बिजनेस रैंकिंग में 23 स्थान की बढ़त के साथ 77वें स्थान पर पहुंचने में मदद की है।

- उद्योग आधार एक सरकारी पंजीकरण है जिसके अंतर्गत मान्यता प्रमाणपत्र और लघु अथवा मध्यम व्यवसायों या उद्यमों को प्रमाणित करने के लिए एक यूनिक संख्या प्रदान की जाती है।

पाठांत प्रश्न

1) सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्या हैं?
2) विनिर्माण सेक्टर एवं सेवा सेक्टर के मध्य भिन्नता स्पष्ट कीजिये?
3) ईज ऑफ डूइंग बिजनेस का अर्थ क्या हैं?
4) सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के संबंध में निवेश एवं टर्नओवर की व्याख्या कीजिये?
5) उद्योग आधार क्या है?
6) सीमेंट निर्माण की प्रक्रिया की व्याख्या कीजिये?
7) विभिन्न अधिनियमों पर आधारित उद्यमों के पंजीकरण की व्याख्या कीजिये?
8) ईओडीबी के प्रमुख क्षेत्रों की व्याख्या कीजिये?
9) कोरियर कम्पनी की सेवाओं की व्याख्या कीजिये?
10) भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के महत्त्व की व्याख्या प्रस्तुत कीजिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

1) असत्य	2) सत्य	2) सत्य	2) सत्य	2) सत्य

13.2

मिलान

i) 5	ii) 3	iii) 4	vi) 1	v) 2

i) क	ii) ख	iii) ग	vi) क	v) ख	vi) ग

13.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

1. ईज ऑफ डूइंग बिजनेस

2. साइमोन डज्नकोव
3. आठ
4. वर्ष
5. 77वां स्थान

आपके लिए क्रियाकलाप

अपने क्षेत्र में कुछ सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSME) की पहचान करें और उनके उद्यमों के पंजीकरण, लाइसेंस प्राप्त करने, सरकार से प्रोत्साहन, उद्यम उत्पाद और सेवा और इसकी प्रक्रिया के बारे में उनसे चर्चा करें।

टिप्पणी

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई)

अवधारणा नक्शे

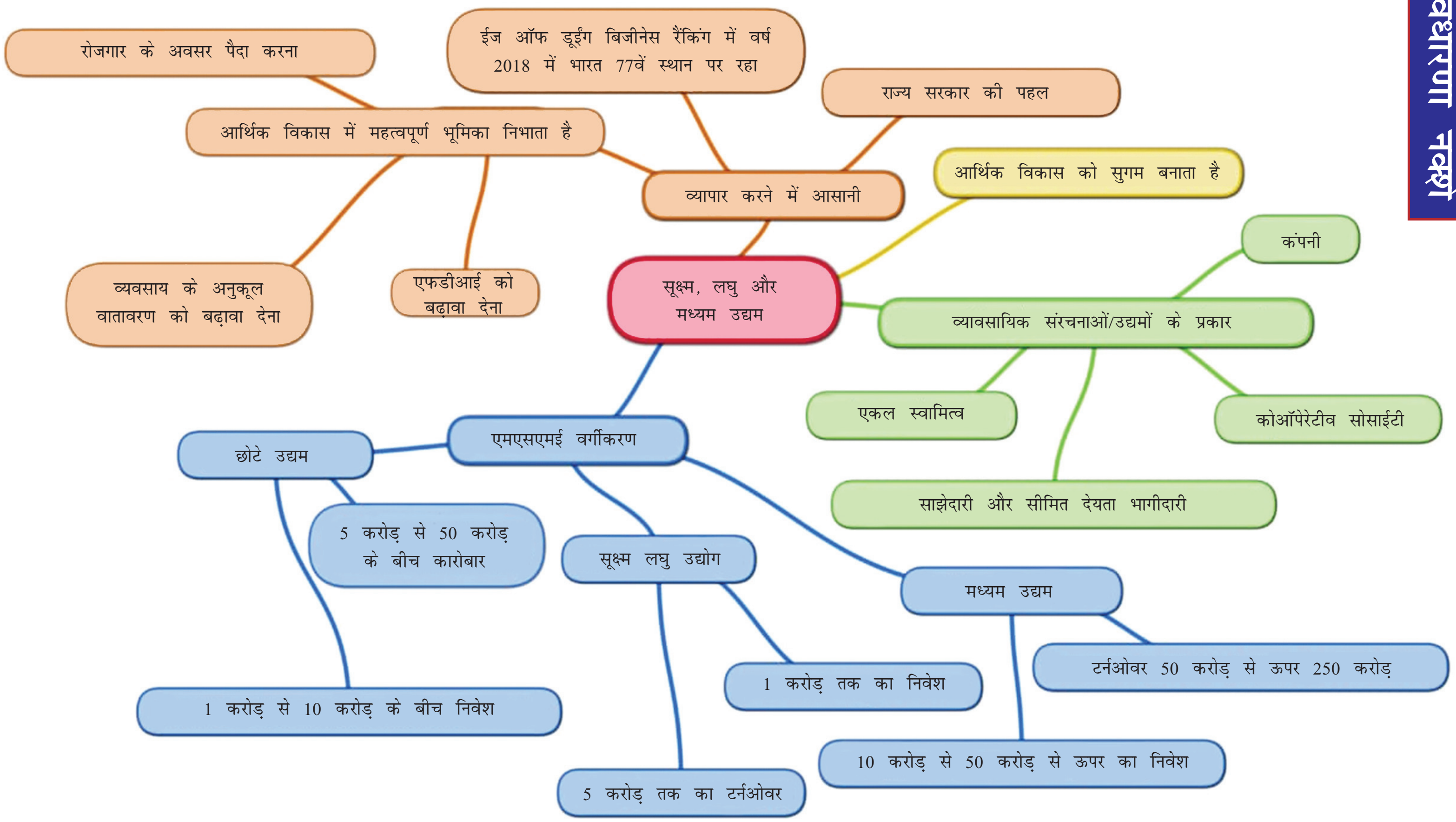

14

किससे, किसके लिए सम्पर्क करें

"किसी सिद्धांत के बिना अभ्यास करना बिल्कुल उस नाविक जैसा है जो बिना पतवार और बिना कम्पास के नाव चला रहा हो और जिसे यह ज्ञात नहीं है वह कहां जा पहुंचेगा।"

–लियोनार्डो द विंसी

उपरोक्त शब्द एक उद्यमी के लिए प्रासंगिक हैं जो किसी नाव में ऐसे नाविक की तरह है जो किसी गंतव्य तक पहुंचना चाहता है। केन्द्र और राज्य सरकारों के विभिन्न संगठन उद्यमियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। वे विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से उद्यमियों का समर्थन करते हैं। इन योजनाओं और कार्यक्रमों को विभिन्न सरकारी एजेंसियों के माध्यम से कार्यान्वित किया जाता है। एक बार जब आप उस व्यवसाय की पहचान कर लेते हैं जिसे आप शुरू करना चाहते हैं, तो आपको यह जानना ज्ञात करना होगा कि कौन से सरकारी विभाग आपके लिए सहायक हो सकते हैं। इसलिए, इन संगठनों के बारे में जानना और संबंधित सरकारी विभागों से संपर्क करना आपके मौजूदा व्यवसाय को शुरू करने या बढ़ाने में आपकी मदद कर सकता है।

आपने अपने आस-पास व्यवसाय के विकास के लिए कई सरकारी विभागों को काम करते देखा होगा। ये जिला उद्योग केंद्र (डीआईसी), खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी), राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी), राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड-एनएबीएआरडी) और अन्य विभिन्न बैंक हो सकते हैं।

इस अध्याय में हम यह सीखेंगे कि किस सरकारी विभाग से किन सेवाओं के लिए सहायता प्राप्त होती है और उनसे संपर्क कैसे किया जा सकता है।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- प्रमुख हितधारकों के साथ घनिष्ठता स्थापित करने के महत्त्व का वर्णन करते हैं;
- विभिन्न हितधारकों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं का वर्णन करते हैं।

14.1 उद्यमिता विकास में सरकारी संगठनों की भूमिका

उद्यमशीलता देश की आर्थिक वृद्धि और विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए, विभिन्न माध्यमों से उद्यमियों का समर्थन करने में सरकार की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। सरकार प्रशिक्षण, अवसंरचना, प्रौद्योगिकी, वित्त, मशीनरी, कच्चा माल समर्थन आदि प्रदान करती है। सरकार व्यापार-अनुकूल नीतियों जैसे मेक इन इंडिया और माल और सेवा कर (जीएसटी) की तरह कर प्रणाली सुधारों को भी सुनिश्चित करती है। व्यापार के अनुकूल नीतियों और सरकार के समर्थन के कारण ग्लोबल ईज ऑफ डूइंग बिजनेस इंडेक्स में व्यापार करने के लिए भारत को एक बेहतर स्तर पर वर्गीकृत किया गया है। ऐसा करने के लिए, केंद्र और राज्य सरकारों ने विभिन्न संगठनों और विभागों की स्थापना की है।

उद्यम शुरू करने के लिए उद्यमियों के पास शुरू में कुछ विचार होते हैं। उद्यमियों को उन व्यवसायों के चयन में मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है कि उन्हें कौन सा व्यवसाय शुरू करना चाहिए। उन्हें व्यवसाय शुरू करने की प्रक्रिया, नियमों, सरकारी योजनाओं और अन्य सहायता तंत्रों के बारे में भी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि नए उद्यमियों का समर्थन करने के लिए विभिन्न संगठनों द्वारा उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) आयोजित किए जाते हैं। यह समझने के लिए कि यह कितना महत्त्वपूर्ण है, कल्पना करें कि अगर कोई व्यक्ति ड्राइव करने के लिए सीखने के बिना ड्राइविंग शुरू करता है तो क्या होगा। यही कारण है कि हमारे पास ड्राइविंग स्कूल हैं। इसी तरह, नए उद्यमी जो उद्यमिता विकास कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं वे यह समझते हैं कि कोई व्यवसाय कैसे शुरू किया जा सकता है और कैसे चलाया जा सकता है और कैसे सफल उद्यमी बना जा सकता है। उद्यमियों को भी उपयुक्त सरकारी निकायों के साथ हर व्यवसाय को पंजीकृत करने की आवश्यकता होती है। इससे आसान बैंक ऋण और सरकारी योजनाओं तक आसानी से पहुंचने में मदद मिलती है। कुछ उद्यमियों को प्रौद्योगिकी, मशीनरी, कच्चे माल और विपणन के लिए भी मदद की आवश्यकता हो सकती है।

अब हम प्रमुख संगठनों को देखेंगे और यह ज्ञात करेंगे कि उद्यमी को किससे, किस लिए संपर्क करना चाहिए।

14.2 महत्त्वपूर्ण सरकारी संगठन

इस पाठ में हम महत्त्वपूर्ण सरकारी संगठनों के बारे में जानेंगे। हमें निम्नलिखित के बारे में जानकारी प्राप्त होगी :

1. जिला उद्योग केंद्र (डीआईसी)
2. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान (एमएसएमई-डीआई)
3. खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी)
4. राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी)
5. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड-एनएबीएआरडी)
6. भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (एसआईडीबीआई)
7. राज्य वित्त निगम (एसएफसी)
8. कौशल विकास केंद्र
9. उद्यमिता विकास संस्थान
10. निर्यात प्रोत्साहन परिषद एवं कोमोडिटी बोर्ड

पाठगत प्रश्न 14.1

निम्नलिखित संक्षिप्त अक्षरों का पूर्ण स्वरूप लिखें:

(i) डीआईसी	
(ii) एनएसआईसी	
(iii) एनएबीएआरडी	
(iv) केवाईआईसी	
(v) ईडीपी	

14.2.1 जिला उद्योग केंद्र (डीआईसी)

औद्योगिक नीति, 1977 के अंतर्गत केन्द्र सरकार के सहयोग से राज्य सरकारों द्वारा अपने राज्य के प्रत्येक जिले में जिला उद्योग केन्द्र की स्थापना की गई थी। यह केन्द्र जिला मुख्यालय में स्थित है तथा यह पूरे जिले में औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करता है।

जिला उद्योग केन्द्र उद्यमियों को सहायता एवं समर्थन प्रदान करता है। यह सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों का जिला स्तर

पर प्रोत्साहन करने के प्रति भी उत्तरदायी है। इनके द्वारा जनता के लिए रोजगार उत्पत्ति के अवसर भी उत्पन्न किए जाते हैं। जिला उद्योग केंद्र के प्रमुख महाप्रबंधक होते हैं तथा उन्हें उद्योग प्रोत्साहन अधिकारियों (आईपीओ) का सहयोग प्राप्त होता है। वे अपने संबंधित राज्य के उद्योग निदेशक के अध्याधीन कार्य करते हैं। तदनुसार, राज्य सरकार की अधिकांश योजनाएं एवं राजकीय सहायता जिला उद्योग केन्द्र के माध्यम से संचलित होती है।

उद्यमियों को स्थानीय जिला उद्योग केन्द्र में जाकर प्रतिभागिता एवं अपना पंजीकरण करवाना चाहिए जिससे उन्हें समर्थन सेवाएं एवं विशेषज्ञता के अधिकतम लाभ प्राप्त हो सकें। जिला उद्योग केंद्र द्वारा निर्मित्त जिला उद्योग प्रोफाइल से जिले में संसाधनों तथा अवसरों की उपलब्ध ता के बारे में अच्छे तथ्य ज्ञात हो पाते हैं।

14.2.2 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान (एमएसएमई-डीआई)

सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम-विकास संस्थान भारत सरकार के सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के विकास आयुक्त के फील्ड संस्थान हैं। देश भर में राज्यों की राजधानियों तथा अन्य औद्योगिक नगरों में सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम-विकास संस्थान तथा सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम-विकास संस्थान की शाखाएं स्थापित की गई हैं।

सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम-विकास संस्थान द्वारा सूक्षम लघु मध्यम उद्यमियों को परामर्शी एवं समर्थन सेवाएं प्रदान की जाती हैं। वे उद्यमियों का मार्गदर्शन उत्पादों के चयन, स्थल, कच्ची सामग्रियों, मशीनरियों, लेआउट, उत्पादन प्रक्रिया, प्रबंधकीय परामर्श इत्यादि के लिए करते हैं। बदलते हुए समय के साथ वे आधुनिकीकरण, प्रौद्योगिकी उन्नयन, अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता सिस्टम की प्राप्ति, ऊर्जा संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण एवं सूक्षम लघु मध्यम उद्यम से संबंधित क्रियाओं के लिए करते हैं।

सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान केंद्र सरकार की योजनाओं के बारे में जागरूकता फैलाते हैं और इन योजनाओं के लिए उपयुक्त लाभार्थियों की पहचान करते हैं। वे उद्यमिता सह कौशल विकास कार्यक्रम (ईएसडीपी), उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी), प्रबंधन विकास कार्यक्रम (एमडीपी) और कौशल विकास कार्यक्रम (एसडीपी) का संचालन करते हैं, जो, मौजूदा या मौजूदा उद्यमशील, प्रबंधकीय और तकनीकी कौशल को विकसित करने और तेज करने पर केंद्रित है।

कामये दुःखतप्तानाम्।
प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्।।

वे जिला उद्योग केन्द्र के साथ समन्वय करते हैं और राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ सम्पर्कता स्थापित करते हैं।

14.2.3 खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग

महात्मा गांधी द्वारा 1920 में शुरू किए गए स्वदेशी आंदोलन में खादी शब्द प्रचलन में आया था। उन्होंने हाथ से बुने और चरखे से बुने कपड़ों के उपयोग का प्रचार किया था। खादी चरखे या स्वदेशी चरखे का उपयोग करके हाथ से बना कपड़ा है।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार के अध्याधीन एक निकाय है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में खादी और अन्य ग्राम उद्योगों के विकास के लिए काम करता है। यह कारीगरों को कच्चे माल को अर्द्ध तैयार माल में संसाधित करने के लिए समान सुविधा केन्द्रों का निर्माण करने तथा उनके विपणन में भी समर्थन करता है। खादी के अलावा, खादी ग्रामोद्योग उद्योग साबुन, डिटर्जेंट, मिट्टी के बर्तनों, शहद, हस्तनिर्मित कागज, खाद्य प्रसंस्करण, चमड़ा, कॉयर आदि जैसे उद्यमों को बढ़ावा देता है।

खादी ग्रामोद्योग आयोग खादी, क्लस्टर विकास आदि के लिए विभिन्न योजनाओं को लागू करता है, लेकिन सबसे प्रमुख प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) है जो मूल रूप से एक क्रेडिट-लिंक्ड सब्सिडी योजना है जिसका उद्देश्य देशभर में रोजगार के अवसर पैदा करना है। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है।

14.2.4 राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी)

राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) मंत्रालय के तहत भारत सरकार का उपक्रम है। यह देश में कार्यालयों और तकनीकी केंद्रों के एक देशव्यापी नेटवर्क के माध्यम से संचालित होता है।

एनएसआईसी निविदा विपणन जैसे विपणन सहायता प्रदान करके एमएसएमई की मदद करता है। यह एक ही उत्पाद का निर्माण करने वाली सूक्ष्म और छोटी इकाइयों का समूह बनता है, जिससे उनकी क्षमता में पूलिंग होती है।

एनएसआईसी उनके लिए सुरक्षित ऑर्डर करने के लिए एमएसएमई की ओर से निविदाओं के लिए आवेदन करता है। इन आदेशों को फिर उनकी उत्पादन क्षमता के अनुसार उद्यमों में वितरित किया जाता है।

एनएसआईसी सरकारी खरीद के लिए एकल बिंदु पंजीकरण भी करता है। यह एमएसएमई को

मार्केटिंग इंटेलिजेंस प्रदान करता है, प्रदर्शनियों और प्रौद्योगिकी मेलों का आयोजन करता है और क्रेता-विक्रेता की बैठकें आयोजित करता है। यह नए सूक्ष्म और लघु उद्यमों की स्थापना के लिए बेरोजगार युवाओं को ऋण सहायता, प्रौद्योगिकी सहायता और ऊष्मायन प्रदान करता है। यह अन्य विकासशील देशों को भी अपनी एमएसएमई क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करता है।

14.2.5 राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) भारत सरकार के स्वामित्व का एक कृषि और ग्रामीण विकास बैंक है। यह देश में ग्रामीण और कृषि-आधारित छोटे उद्योगों के विकास कार्य देखता है। नाबार्ड के पास कृषि एवं कृषि इतर, दोनों के लिए योजनाएं हैं। कृषि क्षेत्र में, डेयरी इकाइयों, जैव-उर्वरक और जैव-कीटनाशक इकाइयों, कृषि-क्लीनिक, पशुपालन, कृषि विपणन आदि को शुरू करने के लिए समर्थन है। कृषि इतर क्षेत्र में नाबार्ड आजीविका विकास कार्यक्रमों, स्व-सहायता जैसे समूह (एसएचजी), बुनकर सहकारी समितियाँ आदि के लिए सहायता प्रदान करता है।

नाबार्ड शाखा कार्यालय सभी जिला मुख्यालयों में स्थित हैं। प्रधान कार्यालय मुंबई में है। यह ज्यादातर बैंकों के माध्यम से वित्त पोषण करता है।

इस प्रकार, विभिन्न अनुदानों एवं योजनाओं के लिए आवेदन बैंक के माध्यम से स्वीकार किए जाते हैं। इससे देश के सभी सहकारी बैंकों तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) का विनियमन एवं सुपरवीजन हो पाता है।

पाठगत प्रश्न 14.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

1. जिला उद्योग केन्द्र के प्रमुख .... होते हैं तथा उन्हें .... की सहायता प्राप्त होती है।
2. खादी ग्रामोउद्योग आयोग .... मंत्रालय के अध्याधीन एक निकाय है।
3. .... द्वारा सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यमियों को विपणन सहायता जैसे निविदा विपणन में सहायता प्रदान की जाती है।
4. नाबार्ड द्वारा .... तथा देश के लघु उद्योग आधारित .... के विकास के कार्य किए जाते हैं।

14.2.6 स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया (सिडबी)

स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया (सिडबी) सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यमियों के लिए एक विकासमूलक वित्तीय संस्थान है तथा इसका मुख्यालय

लखनऊ में स्थित है। देशभर में इसके कार्यालय स्थापित हैं।

सिडबी द्वारा सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यमों क्षेत्र के लिए सूक्षम वित्तीय संस्थानों (एमएफआई), गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों (एनबीएफसी) तथा बैंकों के माध्यम से ऋण की व्यवस्था की जाती है। इसका प्रमुख ध्यान केन्द्रण ग्रामीण उद्यमों एवं उद्यमिता विकास पर केन्द्रित है।

सिडबी द्वारा सिडबी वेंचर कैपिटल लिमिटेड (एसवीसीएल) के माध्यम से नए स्टार्टअप के लिए धन उपलब्ध करवाया जाता है। सूक्ष्म उद्यमों को सिडबी द्वारा माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी (मुद्रा) के माध्यम से ऋण की सुविधा ऐसे सहायक निःशुल्क ऋण बैंकों के माध्यम से उद्यमियों को उपलब्ध हैं। सिडबी के तहत इंडिया एसएमई टेक्नोलॉजी सर्विसेज लिमिटेड (आईएसटीएसएल) प्रौद्योगिकी सलाहकार और परामर्श सेवाएं प्रदान करता है।

सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यमों को सिडबी से क्रेडिट रेंटिंग के लिए भी सहायता प्राप्त होती है जिससे उन्हें आसानी से ऋण प्राप्त होते हैं। यह सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम सेक्टर में एमएसएमई के लिए तीव्रतर प्राप्तियों की सुविधा एवं निष्क्रिय परिसम्पतियों के समाधान में भी सहायता प्रदान करता है। सिडबी मेक इन इंडिया एवं स्टार्टअप इंडिया जैसी सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यमों की विकासशील योजनाओं के लिए नोडल एजेंसी भी है।

14.2.7 राज्य वित्त निगम (एसएफसी)

राज्य वित्त निगम (एसएफसी) राज्य स्तर के वित्तीय संस्थान हैं जो संबंधित राज्यों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के विकास के लिए उत्तरदायी हैं। राज्य वित्त निगम आवधिक ऋण, वर्किंग कार्यशील पूंजी ऋण, विभिन्न श्रेणियों के उद्यमियों की आवश्यकताओं के अनुरूप बीजमूलक पूंजी सहायता जैसी उद्यमियों के लिए अनुकूल योजनाएं प्रदान करता है। अधिकांश ऋण गिरवी संपत्ति के प्रति दिए जाते हैं। ऋण देते समय परियोजना के तकनीकी और वित्तीय पहलुओं पर विचार किया जाता है। विद्युतीकरण और स्थापना खर्चों को पूरा करने और मौजूदा इकाइयों के नवीनीकरण और आधुनिकीकरण के लिए भूमि की खरीद, कारखाने के निर्माण, संयंत्र और मशीनरी की खरीद के लिए ऋण सहायता प्रदान की जाती है। राज्य वित्त निगम आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और संतुलित क्षेत्रीय विकास की प्रक्रिया में योगदान करने के लिए सूक्षम लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र को सशक्त बना रहा है।

14.2.8 कौशल विकास केन्द्र

किसी कार्य को करने की क्षमता को कौशल माना जाता है। किसी इलेक्ट्रीशियन के बारे में

विचार करें। उसके पास फैक्टरी की इलेक्ट्रिक वायरिंग करने और इलेक्ट्रिकल मशीनों की मरम्मत करने का कौशल है। इसी तरह, धान के किसान के पास धान की खेती करने का कौशल होता है और मधुमक्खियों को पालने वाले के पास मधुमक्खियों को पालने और शहद पैदा करने की क्षमता होती है। किसी प्रशिक्षण केंद्र या संस्थान से कुछ कौशल विकसित करने के बाद, कोई व्यक्तिवेतनभोगी नौकरी कर सकता है या एक उद्यमी बन सकता है और अपने या अपने परिवार के सदस्यों का पालन पोषण कर सकता है।

भारत सरकार की प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) और दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना (डीडीयू-जीकेवाई) के तहत निःशुल्क कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान किए जा रहे हैं। उम्मीदवार इनकी वेबसाइट पर प्रशिक्षण केंद्र और अपनी रुचि के पाठ्यक्रम ज्ञात कर सकते हैं। औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम भी प्रदान करते हैं। इन प्रशिक्षणों के पश्चात नौकरी प्लेसमेंट किया जाता है।

14.2.9 उद्यमिता विकास संस्थान

कौशल विकसित होने के बाद, यदि कोई नौकरी करने के स्थान पर उद्यमी बनना चाहता है, तो व्यक्ति उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) में शामिल हो सकता है। अधिकांश कॉलेज और विश्वविद्यालय ईडीपी का संचालन भी करते हैं। इसके अलावा केवीआईसी, डीआईसी, एमएसएमई-डीआई इत्यादि भी पूरे वर्ष नियमित रूप से इन कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। उद्यमिकता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) में भाग लेने के प्रमाण पत्र में बैंक ऋण प्राप्त करने के लिए उद्यमिता का प्रत्यय भी जोड़ा जाता है। भारत में विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थान हैं, जो उद्यमिता विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण, परामर्श और अनुसंधान में विशेषज्ञता रखते हैं। यदि कोई उद्यमिता के उन्नत पाठ्यक्रमों भाग लेने के लिए इच्छुक है, तो वह व्यक्ति उद्यमिता विकास में विशेषज्ञता प्राप्त निम्नलिखित संस्थानों में से चयन कर सकता है।

- राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम संस्थान (NI-MSME), हैदराबाद

- उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई), अहमदाबाद
- राष्ट्रीय उद्यमिता और लघु व्यवसाय विकास संस्थान (NIESBUD), नोएडा
- भारतीय उद्यमिता संस्थान (IIE), गुवाहाटी
- ग्रामीण उद्यमिता विकास संस्थान (REDI)
- प्रशिक्षण और विकास संगठन (TDC)
- लघु उद्योग विकास संगठन (SIDO)
- उद्यमिता विकास केंद्र (CEI)

14.2.10 निर्यात प्रोत्साहन परिषद एवं सामग्री बोर्ड

निर्यात प्रोत्साहन परिषद (ईपीसी) भारत सरकार के संगठन हैं जो फर्मों को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रवेश करने के लिए सहायता एवं प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। वे नए एवं विद्यमान निर्यातकों का मार्गदर्शन करते हैं एवं सहायता प्रदान करते हैं।

निर्यात प्रोत्साहन परिषद उच्च गुणवत्ता वाले सामान और सेवाओं के विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता के रूप में भारत के ब्रांड को विदेशों में बढ़ावा देता है। वे निर्यात कों की इस आशय से निगरानी करते हैं कि वे अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करते रहें। वे वस्तुओं और सेवाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में रुझान और अवसर प्रदान करते हैं और निर्यात का विस्तार और विविधता लाने के लिए ऐसे अवसरों का लाभ उठाने में अपने सदस्यों की सहायता करते हैं। निर्यात प्रोत्साहन परिषद विदेशी बाजार के अवसरों का पता लगाने के लिए विदेश में सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल की यात्राओं का आयोजन करता है। वे भारत और विदेशों में व्यापार मेलों, प्रदर्शनियों और क्रेता-विक्रेता बैठकें भी आयोजित करते हैं।

सामग्री बोर्ड (कोमोडिटी बोर्ड) अर्थात मसाला बोर्ड, कॉयर बोर्ड, सिल्क बोर्ड और नारियल विकास बोर्ड विशेष वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार के अध्याधीन सांविधिक निकाय हैं।

पाठगत प्रश्न 14.2

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

   क) .... स्टार्टअप इंडिया के लिए नोडल एजेंसी है।

ख) भारत सरकार .... योजना के अंतर्गत मुफ्त विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान कर रही है।

ग) .... द्वारा उच्च गुणवत्ता वाले सामान और सेवाओं के विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता के रूप में भारत के ब्रांड को विदेशों में बढ़ावा दिया जाता है।

2. उद्यमिता विकास के विभिनन पहलुओं पर विशेष प्रशिक्षण परामर्श और अनुसंधान प्रदान करने वाले किन्हीं भी तीन प्रतिष्ठित संस्थानों का नाम बताइए।

आपने क्या सीखा

- नए और मौजूदा उद्यमियों के विकास के लिए विभिन्न केंद्रीय और राज्य सरकार के संगठन काम कर रहे हैं।
- केंद्र सरकार के संगठनों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम-विकास संस्थान (MSME-DIs), खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC), राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (NSIC), राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD), स्माल इंडस्ट्रीज डेवलमेंट बैंक ऑफ इंडिया (सिडबी), निर्यात प्रोत्साहन परिषद और कमोडिटी बोर्ड शामिल हैं।
- राज्य सरकार के संगठन जैसे जिला उद्योग केंद्र (डीआईसी), और राज्य वित्तीय निगम (एसएफसी) राज्य में उद्यमिता विकसित करने के लिए काम करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. जिला उद्योग केंद्र क्या है और जिला उद्योग केन्द्र के प्रमुख कार्य क्या है?
2. कुछ ऐसे प्रोत्साहनों के नाम बताएं जो सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के अंतर्गत उपलब्ध हैं।
3. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) के विभिन्न कार्य क्या हैं और यह उद्यमिता के विकास के लिए कैसे उपयोगी है।
4. देश में उद्यमिता विकास के लिए उत्तरदायी केंद्र सरकार के विभिन्न संगठन कौन से हैं? किन्हीं भी दो संगठनों की व्याख्या कीजिए।
5. जिला उद्योग केंद्रों (डीआईसीएस) के बारे में बताएं। यह उद्यमियों की मदद कैसे करता है?
6. देश के उद्यमिता विकास में सरकारी संगठनों की भूमिका का वर्णन कीजिए।
7. भारत में किसी भी पांच उद्यमिता विकास संस्थानों की सूची बनाइये।
8. निर्यात प्रोत्साहन परिषदों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1

1. जिला उद्योग केंद्र
2. राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम
3. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)
4. खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग
5. उद्यमिता विकास कार्यक्रम

14.2

1. महाप्रबंधक, उद्योग प्रोत्साहन अधिकारी (आईपीओ)
2. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
3. राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम
4. ग्रामीण; कृषि

14.3

1. (क) सिडबी
   (ख) दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल
   (ग) निर्यात प्रोत्साहन परिषद
2. (i) राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम संस्थान (ni-msme) हैदराबाद
   (ii) भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद
   (iii) राष्ट्रीय उद्यमिता और लघु व्यवसाय विकास संस्थान (NIESBUD), नोएडा

करें और सीखें

प्रिय विद्यार्थियों, सिद्धांत और व्यावहारिक दोनों वास्तविक शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। विभिन्न सरकारी संगठनों के बारे में जानने के बाद आपको अपने जिला मुख्यालय में स्थित अपने नजदीकी जिला उद्योग केंद्र (डीआईसी) का दौरा करना होगा। उद्योग संवर्धन अधिकारी (IPO) से मिलें और उद्यमिता विकास कार्यक्रम (EDP) के बारे में पूछताछ करें।

आपको केंद्र और राज्य सरकार के संगठनों की कम से कम 5 वेबसाइट पर जाकर उनके उद्यमिता विकास गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपनी टिप्पणियां लिखनी

किससे, किसके लिए सम्पर्क करें

अवधारणा नक्शे

15

उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं

यदि आप यह प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कोई आएगा और आकर आपके लिए सब ठीक कर देगा तो विश्वास कीजिए कोई नहीं आएगा। एक स्नातक और उद्यमी देवप्रिया गोप का यह कहना है कि यदि आप परिवर्तन लाने की खुद कोशिश करते हैं, तो विश्वास कीजिए परिवर्तन आपके जीवन में आएगा। उन्होंने एक फ्लाई ऐश ईंट निर्माण इकाई की स्थापना की है जो कोयले को जलाकर उत्पन्न होने वाली सामग्री का उपयोग करती है। यदि इस सामग्री का उपयोग न किया जाए तो इससे गंभीर संकट उत्पन्न हो सकते हैं। उनका कहना है कि फ्लाईऐश ईटें धीरे-धीरे पत्थर, सीमेंट कंक्रीट और ठोस ईंटों के निर्माण उद्योग की जगह ले रही हैं। अवधारणा नई है और इसका भविष्य उज्ज्वल है। इकाई की स्थापना बंगिया ग्रामीण विकास बैंक (बीजीवीबी), मुर्शिदाबाद से ऋण लेकर की गई थी। यूनिट में लगभग 26 लोग कार्यरत हैं। परियोजना की लागत 25 लाख रूपए और वार्षिक कारोबार 2,16,00,000 रूपए का है। डीआईसी और बैंकों के माध्यम से एक सरकारी योजना के तहत वित्तीय सहायता और सब्सिडी प्राप्त करके देबप्रिया गोप कैसे उद्यमी बन गए?

केंद्र सरकार भावी उद्यमियों के लिए विभिन्न योजनाएं लागू कर रही है। आइए हम उनके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- उद्यमियों के लिए उपलब्ध विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करते हैं; तथा
- उद्यमियों के लिए विशेष कार्यक्रमों की सूची तैयार करते हैं।

15.1 प्रधान मंत्री रोजगार उत्पति कार्यक्रम (पीएमईजीपी)

KVIC कामये दुःखतप्तानाम्। प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्॥	Khadi India	MICRO, SMALL & MEDIUM ENTERPRISES सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम OUR STRENGTH • हमारी शक्ति Ministry of MSME, Govt. of India

इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न करने के साथ साथ देश के शहरी क्षेत्रों में नए स्वरोजगार उद्यम, परियोजनाएं अथवा सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना करना है। इसके उद्देश्यों में:

- देश में पारंपरिक और भावी कारीगरों और ग्रामीण और शहरी बेरोजगार युवाओं को निरंतर और स्थायी रोजगार प्रदान करने, रोजगार के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं का शहरी क्षेत्रों के प्रति आकर्षण नियंत्रित करने में सहायता प्रदान करने।
- कारीगरों की मजदूरी अर्जन क्षमता बढ़ाने और ग्रामीण और शहरी रोजगार की वृद्धि दर में योगदान करने के लिए।

इस योजना को राष्ट्रीय स्तर पर नोडल एजेंसी के रूप में खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) द्वारा लागू किया गया है। राज्य स्तर पर, यह योजना राज्य निकायों, जिला उद्योग केंद्रों (डीआईसी) और बैंकों के माध्यम से कार्यान्वित की जाती है।

विनिर्माण क्षेत्र के अंतर्गत स्वीकार्य परियोजना/इकाई की अधिकतम लागत 25 लाख रूपए है और व्यवसाय/सेवा क्षेत्र के लिए यह 10 लाख रूपए है।

आशयित लाभार्थी

18 वर्ष से अधिक आयु का कोई भी व्यक्ति सहायता का पात्र है। यदि विनिर्माण क्षेत्र में परियोजना का आकार 10 लाख और सेवा क्षेत्र के लिए 5 लाख रुपये से अधिक है तो आवेदक को आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

केवल नई परियोजनाएं ही पीएमईजीपी के अंतर्गत स्वीकृति प्रदान की जाती है। यदि किसी अन्य योजना; पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत संस्थानों, उत्पादन सहकारी समितियों तथा चैरिटेबल ट्रस्टों से कोई लाभ प्राप्त न किए हों तो गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) सहित स्व सहायता समूह भी इसके लिए पात्र है।

अचार के व्यवसाय से हासिल सफलता की एक कहानी

दिल्ली के श्री किशन सिंह यह अच्छी तरह जानते थे कि भारतीय अचार और मुरब्बे की लोकप्रियता काफी प्राचीन है। पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने अपने व्यावसायिक उद्यम के लिए इन उत्पादों का व्यापार करने का निर्णय किया। उन्होंने मेरठ में खाद्य प्रौद्योगिकी के अपने आठ वर्षों के अनुभव के साथ अपनी इस महत्त्वाकांक्षा पर काम करने की ठान ली। प्रधान मंत्री रोजगार उत्पत्ति कार्यक्रम के अंतर्गत उन्होंने विजया बैंक, भोरगढ़ से 4,75,000/- लाख रूपए का ऋण लेकर विभिन्न प्रकार के अचार, जूस, जैम और मुरब्बों के निर्माण के साथ अपने काम की शुरूआत कर दी। श्री सिंह कहते हैं कि उनके ब्रांड ने पिछले दो वर्षों में दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में लोकप्रियता हासिल की है। कंपनी का लोगो बाजार में अच्छी तरह से जाना जाता है और आज उनका वार्षिक कारोबार 10,00,000/- रूपए से भी अधिक है जो कि उनके परियोजना निवेश से दोगुना है। अपने उत्पादों की मांग को देखते हुए, वह इकाई का विस्तार करने की योजना बना रहे हैं। वर्तमान में, इस इकाई में पांच लोग कार्यरत हैं। वह पीएमईजीपी योजना को अपनी सफलता का पूरा श्रेय देते हैं। वह कहते हैं, ''मैं अपनी सफलता को लेकर आश्वस्त था, लेकिन इतने कम समय में हासिल होगी, इसकी उम्मीद नहीं थी।''

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न : प्रधानमंत्री रोजगार उत्पत्ति योजना

प्रश्न : पीएमईजीपी के अंतर्गत अधिकतम अनुमत्त परियोजना लागत कितनी है?

उत्तर : विनिर्माण यूनिट के लिए 25 लाख रूपए तथा सेवा यूनिट के लिए 10 लाख रूपए।

प्रश्न : क्या भूमि की लागत परियोजना लागत में शामिल है?

उत्तर : नहीं

प्रश्न : कितना मार्जिन धन (सरकारी सहायता) स्वीकार्य है?

पीएमईजीपी के अंतर्गत लाभग्राहियों का वर्गीकरण	**अनुदान (मार्जिन धन) की दर (परियोजना लागत**	
क्षेत्र (परियोजना/यूनिट का स्थल)	शहरी	ग्रामीण
सामान्य वर्ग	15 प्रतिशत	25 प्रतिशत
विशेष (अजा/अजजा/ओबीसी/अल्पसंख्यक, महिलाएं, भूतपूर्व सैनिक, शारीरिक दिव्यांग, पूर्वोत्तर क्षेत्र, पर्वतनी एवं सीमांत क्षेत्रों सहित)	25 प्रतिशत	35 प्रतिशत

प्रश्न : परियोजना लागत के घटक क्या है?

उत्तर : पूंजीगत व्यय ऋण, कार्यशील पूंजी का एक चक्र और सामान्य वर्ग के मामले में योगदान के रूप परियोजना की लागत का 10 प्रतिशत और कमजोर वर्ग के मामले में परियोजना लागत का 5 प्रतिशत।

प्रश्न : लाभार्थी कौन हैं?

उत्तर : व्यक्तिगत उद्यमी, संस्थाएं, सहकारी समितियां, स्वयं सहायता समूह, ट्रस्ट

प्रश्न : कौन सी वित्तीय एजेंसियां?

उत्तर : सार्वजनिक क्षेत्र के 27 बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRB), संबंधित राज्य कार्य बल समितियों द्वारा अनुमोदित सहकारी बैंक और निजी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक।

प्रश्न : पूंजीगत व्यय ऋण/नकद ऋण सीमा का उपयोग कैसे किया जाना है?

उत्तर : कम से कम एक बार, कार्यशील पूंजी को मार्जिन धन के लॉक-इन पीरियड के तीन साल के भीतर कैश क्रेडिट की 100 प्रतिशत होनी चाहिए और औसतन, सीमा की मंजूरी के उपयोग के 75 प्रतिशत से कम नहीं होना चाहिए।

प्रश्न : लाभार्थी आवेदन या परियोजना प्रस्ताव कहां प्रस्तुत करता है?

उत्तर : लाभार्थी खादी ग्रामोद्योग की वेबसाइट www.kvic.org.in या kviconline.gov.in/pmegpeportal पर ऑनलाइन जमा कर सकते हैं। खादी ग्रामोद्योग/केवीआईबी/डीआईसी के कार्यालय पतों की सूची हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध है।

प्रश्न : ग्रामोद्योग क्या है?

उत्तर : ग्रामीण क्षेत्र में स्थिति कोई भी ग्रामीण उद्योग (नकारात्मक सूची में उल्लिखित के अलावा), जो कि किसी भी सामान का उत्पादन करता है या किसी भी सेवा का उपयोग करता है या शक्ति बिजली के उपयोग के बिना या जिसमें पूर्णकालिक पूंजी कारीगरों या श्रमिकों के लिए निश्चित पूंजी निवेश करता है जो मैदानी क्षेत्रों में एक लाख रूपये से अधिक नहीं और पहाड़ी क्षेत्रों में 1.50 लाख रुपये से

अधिक नहीं होना चाहिए। अंडमान और निकोबार द्वीप और लक्षद्वीप के लिए, यह सीमा 4.5 लाख रूपए है।

प्रश्न : ग्रामीण क्षेत्र क्या है?

उत्तर : राज्य के राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार गाँव के रूप में वर्गीकृत कोई भी क्षेत्र, चाहे कोई भी आबादी हो। इसमें शहर के रूप में वर्गीकृत ऐसे क्षेत्र भी शामिल है जहां 20,000 से अधिक आबादी नहीं है।

प्रश्न : आयु सीमा क्या है?

उत्तर : 18 वर्ष से अधिक आयु का कोई भी वयस्क लाभार्थी पीएमईजीपी के अंतर्गत वित्त पोषण के लिए पात्र है

प्रश्न : क्या उद्यमिता विकास कार्यक्रम (EDP) प्रशिक्षण अनिवार्य है?

उत्तर : पीएमईजीपी ईपोर्ट के माध्यम से एमएम दावा करने से पूर्व 5 लाख रूपए से अधिक परियोजना लागत के लिए 10 कार्य दिवसों का ईडीपी प्रशिक्षण; तथा 5 लाख रूपए की कम लागत की परियोजना के लिए 6 दिन का प्रशिक्षण अनिवार्य है।

प्रश्न : क्या संपार्श्विक सिक्योरिटी अनिवार्य है?

उत्तर : भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के दिशानिर्देशों के अनुसार, पीएमईजीपी ऋण के तहत 10 लाख रुपये तक की लागत वाली परियोजना को संपार्श्विक सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है। सीजीटीएसएमई द्वारा 5 लाख से अधिक और 25,000 लाख रूपए तक की परियोजना के लिए पीएमईजीपी योजना के अंतर्गत संपार्श्विक गारंटी उपलब्ध है।

प्रश्न : परियोजना के लिए लाभार्थी की तैयारी के लिए हेल्पलाइन क्या है?

उत्तर : वेबसाइट kvic.org.in पर 30 मॉडल परियोजनाएं अपलोड की गई हैं।

प्रश्न : क्या उद्यमी एक से अधिक परियोजना प्रस्तुत कर सकते हैं?

उत्तर : नहीं।

पाठगत प्रश्न 15.1

नीचे दिये गये वाक्यों में से साथ और असत्य कथनों की पहचान कीजिये।

1) मेरी आयु 18 वर्ष से अधिक है, क्या मैं पीएमईजीपी योजना के अंतर्गत आवेदन कर सकता हूं।

2) प्रधान मंत्री रोजगार उत्पति कार्यक्रम योजना से युवाओं के लिए रोजगार के अधिक अवसर निर्मित होंगे।

3) ग्रामीण महिलाओं को प्रधान मंत्री रोजगार उत्पति कार्यक्रम योजना के अंतर्गत 35 प्रतिशत मार्जिन धन/सहायता उपलब्ध है।

4) खादी ग्रामोद्योग आयोग राष्ट्रीय स्तर की नोडल एजेंसी है। राज्य स्तर पर योजना का कार्यान्वयन खादी ग्रामोद्योग निदेशालयों, राज्य खादी एवं ग्राम उद्योग बोर्डों, जिला औद्योगिक केन्द्रों तथा बैंकों के माध्यम से किया जाता है।

5) 18 वर्ष से अधिक आयु के युवा सहायता प्राप्त करने के पात्र है। यदि निर्माण सेक्टर के लिए परियोजना का आकार 10 लाख रूपए से अधिक तथा व्यवसाय/सेक्टर में 5 लाख रूपए से अधिक है तो आवेदन को कम से कम 8वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

15.2 प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई)

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) : माईक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी लिमिटेड (मुद्रा)

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) 8 अप्रैल 2015 को प्रधानमंत्री द्वारा गैर-कॉर्पोरेट, गैर-कृषि लघु या सूक्ष्म उद्यमों को 10 लाख रुपये तक का ऋण प्रदान करने के लिए शुरू की गई एक योजना है। मुद्रा (MUDRA) माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी लिमिटेड संक्षिप्त नाम है। इन्हें प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत मुद्रा ऋण के रूप में वर्गीकृत किया गया है। ये ऋण वाणिज्यिक बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी), लघु वित्त बैंकों, सूक्ष्म वित्त संस्थानों (एमएफआई) और गैर-बैंकिंग वित्त निगमों (एनबीएफसी) द्वारा दिए जाते हैं। उधारकर्ता ऊपर उल्लिखित किसी भी उधार देने वाले संस्थान से संपर्क कर सकते हैं या इस पोर्टल www.udyamimitra.in के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तत्वावधान में, मुद्रा ने तीन उत्पाद बनाए हैं: शिशु, किशोर और तरुण, लाभार्थी सूक्ष्म इकाई या उद्यमी की वृद्धि और वित्त पोषण की जरूरतों के चरण को इंगित करने के लिए और स्नातक या विकास के अगले चरण के लिए एक संदर्भ बिंदु भी प्रदान करते हैं।

नॉन-कॉरपोरेट स्मॉल बिजनेस सेक्टर (NCSBS) में उद्यमिता की वृद्धि में सबसे बड़ी अड़चन वित्तीय सहायता का अभाव है। इस क्षेत्र में 90 प्रतिशत से अधिक वित्त के औपचारिक स्रोतों तक पहुंच नहीं है। भारत सरकार एनसीएसबीएस घटक अनौपचारिक क्षेत्र की जरूरतों को मुख्य धारा में लाने की आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक वैधानिक अधिनियमन के माध्यम से मुद्रा बैंक की स्थापना कर रही है।

मुद्रा गैर-बैंकिंग वित्त कंपनियों, माइक्रो फाइनेंस इंस्टीट्यूशंस, सोसायटी, ट्रस्ट, धारा 8 कंपनियों (पूर्व में धारा 25), लघु वित्त बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों जैसे सभी अंतिम फाइनेंसरों को पुनर्वित्त करने के लिए जिम्मेदार होगा जो ऋण देने के व्यवसाय में हैं। सूक्ष्म/लघु व्यावसायिक संस्थाएँ विनिर्माण, व्यापार और सेवाओं की गतिविधियों के साथ-साथ कृषि-संबद्ध

टिप्पणी

गतिविधियों में संलग्न हैं। मुद्रा छोटे या सूक्ष्म व्यापार उद्यमों के अंतिम मील फाइनेंसर को वित्त प्रदान करने के लिए राज्य/क्षेत्रीय स्तर के वित्तीय मध्यस्थों के साथ साझेदारी करेगा।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (प्रधानमंत्री मुद्रा योजना) के तत्वावधान में, मुद्रा ने अपने प्रारंभिक उत्पादों और योजनाओं का निर्माण किया है। इन मध्यवर्तनों का नाम शिशु, किशोर और तरुण रखा गया है जो लाभार्थी सूक्ष्म इकाई/उद्यमी की वृद्धि/विकास और वित्त पोषण की जरूरतों के चरण के अनुसार है और आगे के लिए स्नातक/विकास के अगले चरण के लिए एक संदर्भ बिंदु प्रदान करता है। इन योजनाओं की वित्तीय सीमा निम्नलिखित है:-

क. शिशु: 50,000/- तक के ऋण को कवर किया गया है।

ख. किशोर : इसके अंतर्गत 50,000 रूपए से 5 लाख रूपए तक के ऋण कवर किए गए हैं।

ग. **तरूण** : इसके अंतर्गत 5 लाख रुपए से 10 लाख रुपए तक के ऋण कवर किए गए हैं।

मुद्रा के डिलीवरी चैनल की संकल्पना प्रारंभ में बैंकों/एनबीएफसी/एफएमआई का पुनर्वित्तीयन करने के माध्यम से की गई है।

ब्याज दरों को अविनियमित कर दिया गया है तथा बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक के दिशानिर्देशों के दायरे में औचित्यपरक ब्याज प्रभारित करने के लिए कहा गया है। मुद्रा ऋण के लिए किसी संपार्श्विक सिक्योरिटी की आवश्यकता नहीं है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न : मुद्रा (पीएमएमवाई) योजना

1. **मुद्रा क्या है?**

   MUDRA, माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी लिमिटेड का संक्षिप्त नाम है, एक वित्तीय संस्थान है जो माइक्रो यूनिट्स इंटरप्राइजेज के विकास और पुनर्वित्त के लिए भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है। वित्त वर्ष 2016 के लिए केंद्रीय बजट प्रस्तुत करते समय माननीय वित्त मंत्री द्वारा इसकी घोषणा की गई थी। मुद्रा का उद्देश्य बैंकों, एनबीएफसी और एमएफआई जैसे विभिन्न अंतिम माइल वित्तीय संस्थानों के माध्यम से गैर-कॉर्पोरेट लघु व्यवसाय क्षेत्र को वित्त पोषण प्रदान करना है।

2. **मुद्रा की स्थापना क्यों की गई है?**

   नॉन-कॉरपोरेट स्मॉल बिजनेस सेक्टर (NCSBS) में उद्यमिता की वृद्धि में सबसे बड़ी अड़चन इस क्षेत्र में वित्तीय सहायता का अभाव है। इस क्षेत्र में 90% से अधिक की वित्त के औपचारिक स्रोतों तक पहुंच नहीं है। भारत सरकार एनसीएसबीएस घटक अथवा अनौपचारिक क्षेत्र की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक वैधानिक अधिनियमन के माध्यम से मुद्रा बैंक की स्थापना कर रही है।

3. **मुद्रा के लक्ष्य क्या है/कौन से ऋणी मुद्रा से सहायता प्राप्त करने के पात्र हैं?**

नॉन-कॉरपोरेट स्मॉल बिजनेस सेगमेंट (NCSB) जिसमें लाखों प्रोपराइटरशिप/पार्टनरशिप फर्म हैं जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में छोटी निर्माण यूनिट, सेवा सेक्टर यूनिट, दुकानदार, फल/सब्जी विक्रेता, ट्रक ऑपरेटर्स, खाद्य सेवा यूनिट, रिपेयर शॉप्स, मशीन ऑपरेटर्स, कारीगर, खाद्य प्रोसेसर और अन्य लघु उद्योग के कार्य रही हैं।

मोबाइल रिपेयर शॉप-सफलता की कहानी

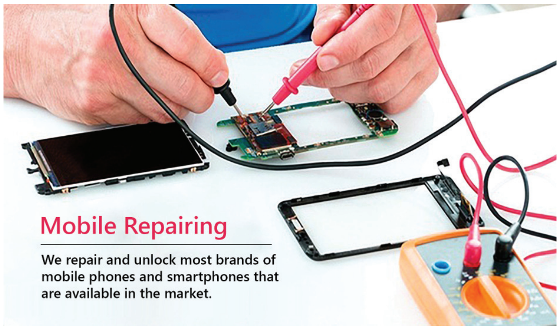

सचिदानंद एक स्वरोजगार मोबाइल मरम्मत करने वाले की लखनऊ के आशियाना कॉलोनी में न्यू गोल्ड लाइन के नाम से दुकान थी। चार साल तक इस मोबाइल की मरम्मत की दुकान चलाने के बाद भी वह मुश्किल से 300 रुपये प्रतिदिन कमा सकता था। उनकी मोबाइल मरम्मत का विस्तार मरम्मत-एवं-व्यापार के रूप में विस्तारित करने की योजना थी।

पूंजी की कमी के कारण, वह अपने व्यवसाय का विस्तार करने में असमर्थ था। एक दिन, सचिदानंद ने एक दैनिक समाचार पत्र से कटिंग के साथ ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, आशियाना शाखा, लखनऊ से संपर्क किया। इसमें प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के बारे में जानकारी थी। उन्होंने खुद को बैंक अधिकारी के सामने पेश किया और उन्हें बताया कि वह एक मोबाइल मरम्मत करने वाला और तकनीशियन है। उन्होंने कहा कि उन्हें हर दिन संघर्ष करना पड़ता था। उन्होंने बैंक अधिकारी से अपने व्यवसाय के विस्तार के लिए चार लाख रुपये की ऋण सुविधा के लिए अनुरोध किया। बैंक अधिकारियों ने अपने व्यवसाय के स्थान पर जाने और पुष्टि करने के बाद, अपने प्रस्ताव को व्यवहार्य पाया और प्रधान मंत्री मुद्रा योजना की किशोर श्रेणी के तहत चार लाख रुपये की कार्यशील पूंजी सीमा को मंजूरी दी। बैंक से ऋण प्राप्त करने के बाद, उन्होंने प्रतिष्ठित कंपनियों से मोबाइल हैंडसेट खरीदे और विभिन्न मोबाइल सेवा प्रदाताओं के कूपन रिचार्ज किए और अपनी दुकान के माध्यम से सेल फोन बेचना शुरू कर दिया। कारोबार तेजी से चल निकला। जल्द ही, सचिदानंद ने 800 रूपए से 1,000 रूपए प्रति दिन कमाना करना शुरू किया। मुद्रा लोन और अपनी मेहनत के बल पर, सचिदानंद अपने व्यवसाय का उच्च स्तर तक विस्तार करने में सफल हुए। वे धन का सुख उठा रहे हैं और अब उद्यमी के रूप में उनका सम्मान अधिक हो गया है।

पाठगत प्रश्न 15.1

I निम्नलिखित का मिलान करें :

1. शिशु	(i) 50,000 रूपए 5 लाख रूपए तक के ऋण के लिए
2. किशोर	(ii) 5 लाख रूपए से 10 लाख रूपए तक के ऋण के लिए
3. तरूण	(iii) 50,000 रूपए तक के ऋण के लिए

15.3 स्टैंडअप इंडिया

स्टैंडअप इंडिया योजना का लक्ष्य हरित उद्यम की स्थापना के लिए प्रति बैंक शाखा एक अनुसूचित जाति, अथवा अनुसूचित जनजाति तथा कम से कम एक महिला ऋणदाता को 10 लाख रूपए से एक करोड़ रुपए का ऋण प्रदान करना है। यह उद्यम विनिर्माण, सेवाओं या व्यापारिक क्षेत्र में हो सकता है। गैर-व्यक्तिगत उद्यमों के मामले में कम से कम 51 प्रतिशत हिस्सेदारी और नियंत्रण हिस्सेदारी अजा/अजजा अथवा महिला उद्यमी के पास होनी चाहिए।

स्टैंड अप इंडिया योजना अजा/अजजा और महिला उद्यमियों द्वारा उद्यम स्थापित करने, ऋण प्राप्त करने और व्यापार में सफल होने के लिए समय-समय पर आवश्यक अन्य सहायता प्राप्त करने वाली चुनौतियों को संज्ञान में लिए जाने पर आधारित है। इसलिए यह योजना में पारिस्थितिक तंत्रव्यवस्था के निर्माण की प्रक्रियाएं की गई हैं जिससे व्यापार के लिए सुखद वातावरण प्राप्त होता है। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की सभी शाखाओं को कवर करने वाली इस योजना तक तीन संभावित विधियों से पहुंच स्थापित की जा सकती है:

- सीधे अथवा शाखा के माध्यम से; अथवा
- स्टैंडअप इंडिया पोर्टल (www.standupmitra.in) के माध्यम से; अथवा
- लीड जिला प्रबंधक (एलडीएम) के माध्यम से

सिडबी (80 कार्यालय) और नाबार्ड (419 कार्यालय) स्टैंड अप इंडिया कनेक्ट सेंटर के रूप

में तब प्रशिक्षु उधारकर्ताओं के अनुरोध पर निम्न में से किसी भी विधि से समर्थन की व्यवस्था करते हैं:

sidbi	NATIONAL BANK FOR AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT

क. वित्तीय प्रशिक्षण के लिए: वित्तीय साक्षरता केंद्र (FLCs) पर

ख. कौशल के लिए: कौशल केंद्रों पर (व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र अथवा वीटीपी/अन्य केंद्र या ओसी)

ग. ईडीपी के लिए: एमएसएमई डीआई या जिला उद्योग केंद्र अथवा ग्रामीण स्व रोजगार प्रशिक्षण संस्थान

घ. वर्क शेड के लिए: डीआईसी

ङ. मार्जिन धन के लिए: मार्जिन धन सहायता योजना से संबंधित कार्यालय अथवा राज्य एससी वित्त

च. स्थापित उद्यमियों परामर्श सहायता के लिए: डीआईसीसीआई, महिला उद्यमी समाज, व्यवसाय निकाय। विश्वसनीय, अच्छी तरह से स्थापित एनजीओ से भी सहायता प्राप्त की जा सकती है।

छ. यूटिलिटी कनेक्शन के लिए: यूटिलिटी कनेक्शन के कार्यालय

ज. डीपीआर के लिए: सिडबी/नाबार्ड/डीआईसी के पास उपलब्ध परियोजना प्रोफाइल

स्टैंड अप इंडिया पोर्टल (www.standupmitra.in)

स्टैंड अप इंडिया पोर्टल इंटरैक्टिव है। यह ऋण प्राप्त करने वालों को आगे बढ़कर समर्थन प्रदान करने वाली विभिन्न संस्थाओं के बारे में जानकारी देता है। यह भी शामिल है:

- प्रशिक्षण : तकनीकी या/और वित्तीय
- डीपीआर तैयार करना
- मार्जिन धन सहायता
- शेड/कार्यस्थल की पहचान
- कच्चा माल स्रोत
- बिल में छूट
- ई-कॉम पंजीकरण
- कराधान के लिए पंजीकरण

पोर्टल को आवेदन पत्र इकट्ठा करने और जानकारी प्रदान करने, पंजीकरण सक्षम करने, हैंडहोल्डिंग के लिए लिंक प्रदान करने और ट्रैकिंग और निगरानी में सहायता करने के लिए डिजाइन किया गया है। जैसे-जैसे अधिक सुविधाएं उपलब्ध होती हैं, इसे आगे के अंत के समाधान में परिष्कृत किया जाएगा।

ऋण की प्रकृति

संयंत्र और मशीनरी और कार्यशील पूंजी जैसे परिसंपत्तियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण मिश्रित ऋण होता है। इससे परियोजना लागत का 75 प्रतिशत कवर करने की संभावना होती है और ब्याज की दर उस श्रेणी (रेटिंग) के लिए बैंक की सबसे कम लागू दर होती है जो आधार दर से अधिक नहीं होती (निधि लागत आधारित ऋण दर अथवा एमसीएलआर+3 प्रतिशत)। यह 18 महीने तक की मोहलत के साथ सात साल में चुकाने योग्य होता है। कार्यशील पूंजी घटक के संचालन को सक्षम करने के लिए एक रुपे कार्ड जारी किया जाता है। परियोजना लागत के 75 प्रतिशत को कवर करने की संभावना की ऋण की शर्त तब लागू नहीं होती है जब उधारकर्ताओं के अंशदान के साथ साथ किसी अन्य योजना से प्राप्त सहायता परियोजना लागत के 25 प्रतिशत से अधिक होती है।

उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं

क्रेडिट गारंटी/ऋण बंधक

एनसीजीटीसी NCGTC	स्टेंडअप इंडिया योजना आवेदकों को संपार्श्विक मुक्त ऋण प्रदान करती है। क्रेडिट गारंटी स्कीम स्टैंड अप इंडिया (CGSSI) के नाम से जानी जाने वाली योजना को राष्ट्रीय क्रेडिट गारंटी ट्रस्टी कंपनी (NCGTC) के माध्यम से अधिसूचित किया गया है।

मार्जिन धन

इस योजना में 25 प्रतिशत मार्जिन धन की परिकल्पना की गई है जो कि पात्र केन्द्रीय/राज्य योजनाओं के साथ मिलाकर प्रदान की जा सकती है। जबकि ऐसी योजनाओं को स्वीकार्य सब्सिडी का लाभ उठाने या मार्जिन धन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया जा सकता है, सभी मामलों में, उधार प्राप्तकर्ता को परियोजना लागत का न्यूनतम 19 प्रतिशत अपने योगदान के रूप में लाना होता है। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई राज्य योजना उधार प्राप्तकर्ता को परियोजना लागत का 20 प्रतिशत सब्सिडी के रूप में समर्थन करता है, तो उध ार प्राप्तकर्ता को परियोजना लागत का कम से कम 10 प्रतिशत योगदान करने की आवश्यकता होगी। एक इकाई द्वारा प्राप्त की जाने वाली कोई भी सब्सिडी जो ऋण के मूल्यांकन के दौरान नहीं थी, ऋण खाते में जमा की जाती है। ऐसे मामलों में, जहां सब्सिडी को मूल्यांकन के दौरान शामिल किया गया था, लेकिन कमीशन के बाद प्रदान किया गया था, मार्जिन ऋण की व्यवस्था के आशय से किसी भी ऋण को चुकाने के लिए उधार प्राप्तकर्ता को जारी किया

टिप्पणी

जा सकता है। पोर्टल पर केंद्रीय/राज्यवार सब्सिडी/प्रोत्साहन योजनाओं की एक सूची प्रदान की जाएगी। उपलब्ध होते ही नई योजनाओं को जोड़ा जाएगा।

सामान्य पूछे जाने वाले प्रश्न स्टैंड-अप योजन

1. ''स्टैंड-अप इंडिया'' योजना का उद्भव कैसे हुआ?

माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 15 अगस्त, 2015 को राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में ''स्टार्ट-अप इंडिया स्टैंड-अप इंडिया'' पहल की घोषणा की गई थी, जो कि अजा-अजजा/महिला उद्यमी द्वारा प्रवर्तित ग्रीन फील्ड उद्यमों के लिए बैंक वित्तपोषण को बढ़ावा देने की योजना है। देशभर में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के 1.25 लाख बैंक शाखा नेटवर्क के माध्यम से संचालित किया जाएगा।

2. ''स्टैंड-अप इंडिया'' योजना का उद्देश्य क्या है?

स्टैंड-अप इंडिया योजना का उद्देश्य कम से कम एक अनुसूचित जाति (एससी) या अनुसूचित जनजाति (एसटी) उधार प्राप्तकर्ता के लिए 10 लाख से 1 करोड़ के बीच बैंक ऋण की सुविधा उपलब्ध करवाना है। और ग्रीनफील्ड स्थापित करने के लिए प्रति बैंक शाखा में कम से कम एक महिला उधार प्राप्तकर्ता उद्यम की सुविधा देना है। यह उद्यम विनिर्माण, सेवाओं या व्यापारिक क्षेत्र में हो सकता है। गैर-व्यक्तिगत उद्यमों के मामले में, कम से कम 51% हिस्सेदारी और नियंत्रण हिस्सेदारी एससी/एसटी या महिला उद्यमी के पास होनी चाहिए।

3. ''स्टैंड-अप इंडिया'' योजना के तहत ऋण का क्या उद्देश्य है?

यह योजना अजा/अजजा/महिला उद्यमी द्वारा विनिर्माण, व्यापार या सेवा क्षेत्र में एक नया उद्यम स्थापित करने के लिए है।

4. स्टैंड-अप इंडिया योजना/किस तरह के तहत लक्षित ग्राहक कौन है? ऋण प्राप्त करने के लिए कौन पात्र हैं?

अजा/अजजा और/या नए उद्यम स्थापित करने वाली महिला उद्यमी स्टैंड-अप इंडिया योजना के तहत ऋण प्राप्त करने के लिए पात्र हैं। आमतौर पर विनिर्माण, व्यापार और सेवा क्षेत्र की परियोजनाएँ योजना के तहत कवरेज के लिए पात्र होती है।

5. स्टैंड-अप इंडिया योजना के तहत ऋण की प्रकृति क्या होगी?

समग्र ऋण (सावधि ऋण और कार्यशील पूंजी का समावेश), 10 लाख रूपए से 100 रूपए के बीच जो परियोजना लागत के संबंध में 75% तक की प्रतिनिधित्व पात्रता है।

15.4 राष्ट्रीय अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति हब

हब द्वारा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों को सूक्ष्म एवं लघु उद्यम आदेश 2012 के अंतर्गत केंद्र सरकार की सार्वजनिक खरीद नीति के तहत दायित्वों को पूरा करने,

लागू व्यवसाय व्यवसाय व्यवहारों को अपनाने और स्टैंडअप इंडिया पहल के लाभ उठाने के लिए व्यावसायिक सहायता प्रदान की जाती है। यह योजना राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड के माध्यम से कार्यान्वित की जाती है (एनएसआईसी)।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति हब ने निम्नलिखित कार्य किए हैं :

i. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उद्यम और उद्यमी के संबंध में सूचना का संग्रह, एकत्रीकरण और प्रसार

ii. कौशल प्रशिक्षण और ईडीपी के माध्यम से मौजूदा और भावी अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उद्यमियों के बीच क्षमता निर्माण।

iii. डीपीएससीआई सहित सीपीएसई, एमएसएमई-डीआई और उद्योग संघों से जुड़े विक्रेता विकास।

iv. प्रदर्शनियों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उद्यमियों की भागीदारी को बढ़ावा देना और इस उद्देश्य के लिए विशेष प्रदर्शनियों का आयोजन करना।

v. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों को अग्रसक्रिय होकर सहायता प्रदान करना।

vi. राज्यों के साथ-साथ अजा/अजजा उद्यमियों के लिए अन्य संगठनों के साथ काम करना ताकि इन उद्यमों को उन सभी से लाभ मिल सके।

vii. सार्वजनिक खरीद, डीजीएसएंडडी के ई-प्लेटफॉर्म में भाग लेने वाले अजा/अजजा उद्यमियों को सुविधा प्रदान करना और प्रगति की निगरानी करना।

viii. अजा/अजजा उद्यमियों के लिए क्रेडिट लिंकेज की सुविधा। नेशनल अजा/अजजा हब के दिशानिर्देश मंत्रालय की वेबसाइट यानी www.msme.gov.in पर उपलब्ध है।

पाठगत प्रश्न 15.3

1. कृपया बताएं कि नीचे प्रस्तुत विवरण में से सत्य अथवा असत्य वाक्यांशों की पहचान कीजिये।

   1) स्टैंडअप इंडिया योजना सिडबी और नाबार्ड द्वारा लागू की गई है।

   2) स्टैंडअप इंडिया योजना आवेदकों को संपार्श्विक मुक्त ऋण प्रदान करती है।

   3) इस योजना में 35 प्रतिशत के मार्जिन धन की परिकल्पना की गई है जो कि पात्र केन्द्रीय/राज्य योजनाओं के साथ संयोजन से प्रदान की जा सकती है।

4) स्टैंडअप इंडिया योजना के तहत ग्रीनफील्ड एंटरप्राइज स्थापित करने के लिए प्रति बैंक शाखा में कम से कम एक अनुसूचित जाति (एससी) या अनुसूचित जनजाति (एसटी) उधारकर्ता और कम से कम एक महिला उधारकर्ता के लिए 10 लाख रुपये और 1 करोड़ रुपये के बीच बैंक ऋण की सुविधा है।

5) स्टैंडअप इंडिया ऋण सम्मिश्रित ऋण है अर्थात संयंत्र एवं मशीनरी और कार्यशील पूंजी जैसी परिसम्पति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए।

II. निम्नलिखित में से सही उत्तर का चयन कीजिये :

i) स्टैंडअप इंडिया योजना के लिए नहीं है:

क) अ.जा. ख) अ.ज.जा. ग) महिला घ) पिछड़े वर्ग

ii) निम्नलिखित एजेंसी स्टैंड अप इंडिया के तहत भागीदार नहीं है-

क) नाबार्ड ख) सिडबी ग) एनसीजीटीसी घ) आरबीआई

iii) स्टैंड अप इंडिया के तहत उद्यमी ऋणों का उपयोग कर सकते हैं-

क) 10 लाख से 1 करोड़ करोड़ रुपये

ख) 20 लाख से 2 करोड़ करोड़ रुपये

ग) 5 लाख से 1 करोड़ रुपये

घ) कोई नहीं

पाठगत प्रश्न 15.4

सही उत्तर का चयन कीजिये:

i) राष्ट्रीय अनुसूचित जाति/जनजाति हब किस के लिए है:

क) अ.जा. ख) अ.ज.जा. ग) अजा और अजजा घ) पिछड़े वर्ग

ii) राष्ट्रीय अनुसूचित जाति/जनजाति हब का कार्यान्वयन कौन करता है:

क) नाबार्ड ख) एनएसआईसी ग) एनसीजीटीसी घ) आरबीआई

आपने क्या सीखा

- प्रधानमंत्री रोजगार उत्पति कार्यक्रम (पीएमईजीपी) : इस योजना का उद्देश्य नए स्व-रोजगार उपक्रमों या परियोजनाओं या सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना के माध्यम से ग्रामीण और देश के शहरी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करना है।

- इस योजना को राष्ट्रीय स्तर पर नोडल एजेंसी के रूप में खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) द्वारा लागू किया गया है। राज्य स्तर पर, यह योजना राज्य खादी ग्रामोद्योग निदेशालयों, राज्य खादी और ग्रामोद्योग बोर्डों (KVIBs) और जिला उद्योग केंद्रों (DIC) और बैंकों के माध्यम से कार्यान्वित की जाती है।
- विनिर्माण क्षेत्र के तहत स्वीकार्य परियोजना या इकाई की अधिकतम लागत 25 लाख रुपए है और व्यवसाय/सेवा क्षेत्र के अंतर्गत 10 लाख रुपए है।
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) 8 अप्रैल, 2015 को प्रधानमंत्री द्वरा ऋण प्रदान करने के लिए शुरू की गई एक योजना है। गैर-कॉर्पोरेट, गैर-कृषि लघु/सूक्ष्म उद्यमों को 10 लाख रुपए के ऋण उपलब्ध करवाए जाते हैं। इन योजनाओं की वित्तीय सीमा निम्नलिखित है:

  क. शिशु : 50,000 रुपये तक का ऋण

  ख. किशोर : 50,000 रुपये से 500 लाख रुपए तक के ऋण कवर।

  ग. तरुण : 5 लाख से 10 लाख रुपये तक का ऋण कवर।
- स्टैंड अप इंडिया योजना का उद्देश्य कम से कम एक अनुसूचित जाति (एससी) या अनुसूचित जनजाति (एसटी) उधार प्राप्त कर्ता को 10 लाख रुपये से 1 करोड़ रुपये के बीच बैंक ऋण की सुविधा प्रदान करना है और ग्रीनफील्ड स्थापित करने के लिए प्रति बैंक शाखा में कम से कम एक महिला उधारकर्ता उद्यम। योजना की परिकल्पना की गई है। 25 प्रतिशत मार्जिन मनी जो योग्य केन्द्रीय/राज्य योजनाओं के साथ संयोजन में प्रदान की जा सकती है।
- राष्ट्रीय अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति हब: हब अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों को सूक्ष्म और लघु उद्यम आदेश 2012 के लिए केंद्र सरकार की सार्वजनिक खरीद नीति के तहत दायित्वों को पूरा करने के लिए पेशेवर सहायता प्रदान करता है। यह योजना राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड के माध्यम से लागू की गई है।

पाठांत प्रश्न

1) प्रधानमंत्री रोजगार उत्पति कार्यक्रम क्या है? योजना का विवरण बताएं।
2) प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की व्याख्या कीजिए।
3) क्या अजा और अजजा उद्यमी राष्ट्रीय अनसूचित जाति/जनजाति हब के माध्यम से सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम का निर्माण कर सकते हैं?
4) अनुसूचित जाति/जनजाति उद्यमियों के लिए क्या योजनाएं उपलब्ध हैं? प्रत्येक योजना के बारे में विस्तार से बताएं।
5) स्टैंड अप इंडिया योजनाएँ किसके लिए हैं? योजना स्पष्ट कीजिये।

उत्तर कुंजी

15.1

1) सत्य 2) सत्य 3) सत्य 4) सत्य 5) सत्य

15.2

i) 3 ii) 1 iii) 2

15.3

I 1) सत्य 2) सत्य 3) असत्य 4) सत्य 5) सत्य

II रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

i) घ ii) घ iii) क

15.4

i) ग ii) ख

करें और सीखें

किसी स्थानीय बैंक में जाएं और उनसे संभावित उद्यमियों के लिए उपलब्ध योजनाओं की सूची मांगे। आवेदन फार्म एकत्र करें। प्रत्येक योजना के मध्य अंतरों का विस्तार से वर्णन करें।

अवधारणा नक्शे

उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं
प्रधान मंत्री मुद्रा योजना
राज्य/क्षेत्रीय स्तर के वित्तीय मध्यस्थों के साथ भागीदार
10 लाख तक का ऋण प्रदान करता हैस्टैंड अप
वित्तीय सीमाएं
शिशु, 50,000/- रुपये तक के ऋण को कवर करता है।
तरुण, 5,00,000 से 10,00,000/- तक के ऋण को कवर करता है
किशोर, रु. 50,000 से 5,00,000/- ऋण को कवर करने के लिए
प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम
पात्रता
केवल नई परियोजनाएं ही पात्र हैं
न्यूनतम आयु 18 होगी
परियोजनाओं के एक विशिष्ट वर्ग के लिए 8 उत्तीर्ण होना चाहिए
उद्देश्यों
वेतन अर्जन क्षमता बढ़ाना
ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करने का लक्ष्य
निरंतर और स्थिर रोजगार प्रदान करना
राष्ट्रीय SC/ST हब
अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों को पेशेवर सहायता प्रदान करना
कार्यो
भागीदारी को बढ़ावा देना
वेंडर का विकास
सूचना का संग्रह, मिलान और प्रसार
प्रशिक्षण और ईडीपी के माध्यम से क्षमता निर्माण
सलाह और संभालना
अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उद्यमियों की भलाई को सुखद करने के लिए राज्य और अन्य संगठनों के साथ काम करना
अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों के लिए क्रेडिट लिंकेज को सुगम बनाना
इंडिया
क्रेडिट गारंटी / संपार्श्विक
मार्जिन मनी
ऋण की प्रकृति
स्टैंड अप इंडिया ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से
सीधे शाखा में
मुख्य जिला प्रबंधक के माध्यम से
एक्सेस करने के तरीके
रुपये 10 लाख से 1 करोड़ के बीच ऋण प्रदान करें।
स्टार्ट अप इंडिया, एक ऑनलाइन इंटरेक्टिव पोर्टल
कच्चे माल की सोर्सिंग
मार्जिन मनी सपोर्ट
कराधान के लिए पंजीकरण
ई-कॉमर्स पंजीकरण
डीपीआर तैयार करना
वित्तीय और तकनीकी प्रशिक्षण
कार्यशाला की पहचान
बिल छूट

16

उष्मायन (इंक्यूबेशन) : एक परिचय

पिछले अध्यायों में हमने उद्यमी की परिभाषा एवं विशिष्टताओं के बारे में चर्चा की थी तथा यह अध्ययन किया था कि विचारों की उत्पति किस प्रकार की जा सकती है तथा कैसे उन्हें सफल व्यवसाय, संसाधनों की अपेक्षित उत्पति के लिए एवं उनके एकत्रण के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। आपको उद्यमिता के परितंत्र एवं संस्थानिक सहायता तथा इसके लिए सरकारी योजनाओं से मिलने वाली सहायता की भी जानकारी प्राप्त हुई है।

इस अध्याय में आपको सरकारी योजनाओं के अलावा उन उष्मायन (इंक्यूबेसन) के बारे में जानकारी दी जाएगी जो उद्यमियों को अपने व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए सहायता प्रदान करते हैं। आपको उत्प्रेरक की भूमिका एवं महत्त्व की जानकारी देते हुए भारत के कुछ प्रमुख उत्प्रेरकों के बारे में भी जानकारी दी जाएगी।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- प्रेरणा (उष्मायन) केन्द्रों की अवधारणा के बारे में जानकारी तथा उद्यमों के निर्माण एवं विकास में उनका योगदान की व्याख्या करते हैं;
- प्रेरणा (उष्मायन) केंद्रों के क्रियाकलापों की पहचान करते हैं;
- भारत में व्याप्त प्रेरणा (उष्मायन) केन्द्रों के नेटवर्क की पहचान करते हैं।

16.1 व्यवसाय उष्मायन का अर्थ

व्यवसाय प्रेरक विभिन्न प्रकार के समर्थन के माध्यम से उद्यमी की वृद्धि और सफलता में तेजी लाने के लिए स्थापित संगठन होते है। प्रेरक भौतिक स्थान, पूंजी कोचिंग, सामान्य सेवाओं और नेटवर्किंग कनेक्शनों सहित संसाधन और सेवाएं प्रदान करते है। प्रेरक संरक्षक के साथ-साथ

व्यावसायिक सहायता और निगरानी सेवाएं प्रदान करते हैं। नए उपक्रमों को जोखिमों और विफलताओं के बारे में सजग करने और विफल होने की संभावनाओं के प्रति जागरूक किया गया जाता है। व्यावसायिक प्रेरक उदयीमान उद्यमियों को प्रारंभिक चरणों में विशेष सहायता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसा करके वे स्टार्ट-अप उद्यमों के लिए एक त्वरक की भूमिका निभाते हैं।

व्यापार प्रेरणा (उष्मायन) की अवधारणा का उत्पति 1942 में संयुक्त राज्य अमेरिका में अत्यधिक संव्यवहार लागतों तथा नवोपाय करने वालों की सोशल नेटवर्किंग की कमी को विचार में लेकर अनुभव की गई थी जिसके अनेक आविष्कारों से उपयोगी उत्पादों के फल प्राप्त नहीं हो पा रहे थे। इस अवधारणा से इथाका में पहले व्यवसाय प्रेरक स्टूडेंट एजेंसिस इंकारपोरेशन की स्थापना हुई थी। इसके बाद 1946 में, एमआईटीके एक पूर्व छात्र ने एक प्रेरणा (उष्मायन) केन्द्र, अमेरिकन रिसर्च डेवलपमेंट (ARD) शुरू किया। तब से, व्यवसाय उत्प्रेरक की अवधारणा का प्रसार विश्व में तेजी से हुआ है। कुछ शीर्ष व्यवसाय प्रेरक सिलिकॉन वैली, न्यूयॉर्क, बर्लिन और सिंगापुर में हैं। अमेरिका स्थित इंटरनेशनल बिजनेस इनोवेशन एसोसिएशन का अनुमान है कि दुनिया भर में लगभग 7,000 से 15,000 प्रेरक हैं।

प्रेरणा (उष्मायन) क्रियाकलाप केवल विकसित देशों तक ही सीमित नहीं है। प्रेरणा (उष्मायन) का प्रसार अब विकासशील देशों में हो गया है और वे अब यूएनआईडीओ एवं विश्व बैंक जैसे संगठनों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने के प्रति आकर्षित हो रहे है।

व्यवसाय प्रेरणा (उष्मायन) की परिभाषा :

नेशनल बिजनेस इन्क्यूबेशन एसोसिएशन (एनबीआईए) द्वारा व्यवसाय प्रेरणा (उष्मायन) की परिभाषा क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय विकास के प्रमुख स्रोत के रूप में की गई है। शेरमैन एवं चैप्पल्ल ने व्यवसाय प्रेरणा (उष्मायन) को "आर्थिक विकास का ऐसे एक उपकरण के रूप में परिभाषित किया है जो समुदाय में नए व्यवसायों के सृजन एवं निर्माण में सहायक है। व्यवसाय प्रेरक उदयीमान व्यवसायों को विभिन्न की समर्थक सेवाएं, जैसे व्यवसाय विकास तथा विपणन योजनाएं, प्रबंधन दल का निर्माण, पूंजी प्राप्त करना एवं अधिक विशेषज्ञ व्यावसायिक सेवाओं की रेंज तक पहुंच करना, प्रदान करके सहायता दी जाती है। वे लोचक स्थल, सहभाजित उपकरण एवं प्रशासनिक सेवाएं भी प्रदान करते हैं।"

पाठगत प्रश्न 16.1

निम्नलिखित में से सत्य तथा असत्य कथनों की पहचान कीजिये:

क) प्रेरक संगठन होते हैं जो केवल सहभाजित स्थल उपलब्ध करवाते हैं।

ख) प्रेरक एक्सीलेर्टेरों की तरह ही होते हैं।

ग) प्रेरक केवल पूंजी उपलब्ध करवाते हैं।

घ) उत्प्रेरक द्वारा व्यावसायिक सेवा भी प्रदान की जाती है।

16.2 व्यवसाय उत्प्रेरक की भूमिका

(i) भौतिक सुविधा सहायता : व्यवसाय प्रेरक क) भौतिक सुविधाएं जैसे कि किराए के स्थल, बिजली, उच्च गति वाली इंटरनेट पहुंच, बाजार अनुसंधान सुविधाएं, सभा कक्ष सुविधाएं जैसी सुविधाएं उपलब्ध करवाने में सहायता देते हैं।

(ii) सेवा सहायता : व्यवसाय प्रेरक निम्नलिखित प्रकार की सहायता प्रदान करते हैं:–

(क) वे विपणन के लिए सहायता प्रदान करते हैं।

(ख) बैंक ऋण, ऋण निधि एवं गारंटियां प्रदान करने में सहायता देते हैं।

(ग) प्रेरक प्रस्तुतिकरण के कौशल में सहयोग देते हैं।

(घ) वे उच्चतर शिक्षा संसाधनों से सम्बद्धता करवाते हैं।

(ङ) वे रणनीतिक साझेदारों से मिलवाते हैं।

(च) वे एंजेल निवेशकों अथवा उद्यम पूंजी तक पहुंच स्थापित करने में सहायक होते हैं।

(छ) वे गहन व्यवसाय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

(ज) वे परामर्शी बोर्ड एवं उपदेशक की क्रियाएं करते हैं।

(झ) वे प्रबंधन टीम का निर्धारण करने में सहायक होते हैं।

(ण) वे व्यवसाय कौशल प्रदान करते हैं।

(ट) वे प्रौद्योगिकी को वाणिज्यिक बनाने में सहायता प्रदान करते हैं।

(ठ) वे विनियामक अनुपालनों के लिए सहायता प्रदान करते हैं।

(ड) वे बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन प्रदान करते हैं।

(न) प्रेरक लेखांकन सुविधाएं/वित्तीय प्रबंधन में सहायक होते हैं।

(य) प्रेरक बाजार अनुसंधान में सहायता देते हैं।

(iii) **नेटवर्किंग सुविधाएं :** व्यवसाय प्रेरक अपने सदस्यों को नेटवर्किंग सुविधाएं प्रदान करते हैं। उनकी सम्बद्धता विभिन्न एजेंटों एवं संगठनों के साथ होती है। वे अपने नेटवर्क का निर्माण करके फर्मों के लिए आगे बढ़ने का मार्ग प्रबल करते हैं।

जैसे ही वाक्यांश से ही स्पष्ट है, व्यवसाय प्रेरक एक प्रकार के ऐसे कार्यक्रम हैं जो छोटे व्यवसायों के उत्थान में सहायता प्रदान करते हैं। वे अनुभवहीन व्यवसायियों को सेवाओं और

किराये की जगह उपलब्ध करवाने में पूरी सहायता प्रदान करते हैं। उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं में आमतौर पर प्रशासनिक सहायता, परामर्श और संदर्भ शामिल होते हैं। उत्प्रेरक की क्रियाओं का प्रबंधन सार्वजनिक और निजी एजेंसियों द्वारा किया जाता है। व्यवसाय उत्प्रेरक को आर्थिक विकास कार्यक्रमों का एक मुख्य आधार माना जाता है। वे आमतौर पर नए उपक्रमों के लिए उपलब्ध संसाधनों के साथ स्टार्ट-अपके उद्यमशीलता अभियान को जोड़कर मूल्यों का निर्माण करते हैं। व्यवसाय उत्प्रेरक के प्राथमिक उद्देश्यों से स्थानीय अर्थव्यवस्था में रोजगार के अवसरों की उत्पति और प्रौद्योगिकियों का व्यवसायीकरण हो रहा है।

गैर-व्यावसायिक संगठन प्रेरक अथवा शैक्षणिक संस्थान प्रेरक लाभ अर्जित करने के लिए नहीं है। वे उद्यम को बढ़ावा देने और एक उद्यमशीलता की प्रक्रिया के कार्यान्वयन को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से कार्य करते हैं। ऐसे उत्प्रेरक की भूमिका से कुछ फोरम निर्मित होते हैं जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी शोधकर्ता के साथ-साथ छात्र और उद्यमी एक मिलकर उद्यमिता का सृजन करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

उत्प्रेरक के अन्य मॉडलों में माइक्रोसाफ्ट, इंफोसिस, विप्रो, इंटेल इत्यादि जैसे सहायक संगठन सहायता प्रदान करते हैं। वे स्वयं अपने कर्मचारियों को नव विचारों का निर्माण करने एवं नए उत्पाद निर्मित करने अथवा मौजूदा व्यवस्था में बदलाव लाने के लिए प्रेरित करते हैं। यदि विचार सफल होता है, तो कंपनी आगे बढ़ती है, जो संस्थापकों को उनके नवाचार पर प्रतिफल देती है। ऐसे कुछ उद्यम पूँजीपति हैं जो अपने प्रेरक स्वयं चलाते हैं। उत्प्रेरक का मुख्य लाभ यह है कि यह उद्यमी को मैक्रो और माइक्रो व्यावसायिक वातावरण के प्रभाव से अलग करता है।

16.3 प्रेरक के लाभ

किसी प्रेरणा (उष्मायन) कार्यक्रम में सदस्यता से जुड़े असंख्य लाभों को देखते हुए, छोटे व्यवसाय सलाहकार अक्सर अपने ग्राहकों को कम से कम एक में एक स्थान हासिल करने की संभावनाओं को ज्ञात करने का परामर्श देते हैं। उत्प्रेरक की शक्तियों में निम्नलिखित शक्तियां शामिल हैं :

1) सहभाजित बुनियादी परिचालन लागतें

व्यवसाय प्रेरणा (उष्मायन) के उपयोगकर्ताओं को ऊपरी खर्चों का लम्बा चौड़ा व्यय साझा करना पड़ता है जिनमें उपयोग्यताओं, कार्यालय उपकरण, कंप्यूटर सेवाएं, सम्मेलन कक्ष, प्रयोगशालाएं और रिसेप्शनिस्ट सेवाएं शामिल हैं। मूल किराए की लागत आम तौर पर उस क्षेत्र के लिए सामान्य से कम होती है जिसमें व्यवसाय परिचालन करते हैं और जिससे उद्यमियों को अतिरिक्त बचत का एहसास हो पाता है। तथापि, यह ध्यान देने योग्य है कि प्रेरक उपयोगकर्ताओं को कार्यक्रम में हमेशा के लिए रहने की अनुमति नहीं देते हैं; प्रेरक सुविधाओं के अंतर्गत अधिकांश पट्टे तीन साल तक चलते हैं, कुछ कार्यक्रमों में एक या दो साल के नवीकरण के विकल्प पेश किए जाते हैं।

2) परामर्श एवं प्रशासनिक सहायता

प्रेरणाए (उष्मायन) प्रदान करने वाले एवं उनके कर्मचारी अक्सर व्यापार के मुद्दों से लेकर व्यापार विस्तार वित्त पोषण तक व्यापक मुद्दों पर व्यावहारिक सलाह और/या जानकारी प्रदान कर सकते हैं। छोटे व्यवसाय मालिकों को यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रेरणा (उष्मायन) कार्यक्रम के आयोजक आमतौर पर व्यापार जगत के विभिन्न पहलुओं के बारे में काफी जानकार होते हैं। वे एक प्रकार से संसाधन हैं जिनका पूर्ण उपयोग किया जाना चाहिए।

3) पूंजी की प्राप्ति

अनेक व्यापार प्रेरक एनबीआईए के अनुसार उद्यमियों को रिवोल्विंग ऋण और माइक्रो-ऋणनिधियों के माध्यम से पूंजी प्राप्त करने में मदद करते हैं। वे कारोबारियों को संदर्भ के माध्यम से निवेशकों से जोड़ते हैं। वे पूंजीपतियों के सम्मुख उद्यम करने की प्रस्तुतियों के निर्माण में उद्यमियों की सहायता करते हैं और ऋण के लिए आवेदन करने में कंपनियों की सहायता करते हैं। किसी प्रेरणा (उष्मायन) कार्यक्रम द्वारा स्वीकार किए जाने से ही पूंजी जुटाने में स्टार्ट-अप की मदद की जाती है। ऐसे कार्यक्रम एक क्वालिफाइंग फिल्टर के रूप में कार्य करते हैं। जो स्वीकार किए जाते हैं वे व्यवसाय समुदाय में वैधता प्राप्त करते हैं।

4) इन्क्यूबेटर अर्थात प्रेरणा (उष्मायन) की अवधारणा की विश्व में व्यापकता

प्रेरणा (उष्मायन) का एक प्रमुख लाभ यह है कि इसकी अवधारणा प्रत्येक प्रकार के स्वरूपों, आकारों, जनसांख्यिकीय खंडों और उद्योगों के सभी समुदायों में कार्यात्मक है। कई मामलों में, प्रेरक स्वाभाविक रूप से उस समुदाय की कुछ विशेषताओं के अनुरूप क्रियाएं करता है जिसमें यह स्थित है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण आधार वाले प्रेरक अपने क्षेत्र में मौजूद कृषि के आधार पर कंपनियों को लॉन्च कर सकते हैं।

5) सहचर उद्यमियों सहचार्यता

छोटे व्यवसायों के स्वामी जिन्होंने प्रेरणा (उष्मायन) से सफल उद्यम शुरू किया है, वे अपनी सफलता का प्रमुख श्रेय दूसरे उद्यमियों उद्यमियों की मौजूदगी के रूप में देते हैं। उनका विचार है कि एक ही छत के नीचे एक साथ उद्यमियों को इकट्ठा करके, प्रेरक गतिशीलता के वातावरण निर्माण करते हैं जिसमें व्यवसाय स्वामी :

(क) अपने प्रयासों में एक दूसरे को प्रोत्साहन प्रदान करते हैं;

(ख) व्यापार से संबंधित विषयों पर जानकारी साझा कर पाते हैं; तथा

(ग) संवाद के लिए नेटवर्क तैयार कर पाते हैं जिससे भविष्य में उनकी और अच्छी सेवा कर सके।

प्रेरक के क्रियाकलाप

क) स्टार्ट-अप के लिए ''सेफ हाउस'' के रूप में प्रक्रियाएं करके वे उद्यम प्रारंभ करने के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करते हैं।

ख) उद्यमशीलता के लिए प्रतिभा का निर्माण करते हैं जिससे सफल स्टार्ट-अप की संख्या में वृद्धि हो पाती है।

ग) उद्यमियों के लिए नवोपायों का एक ऐसा केन्द्र बनना जहां उनके विचारों को साकार करने के लिए तैयार अवसंरचना उपलब्ध हो।

घ) स्टार्ट-अप की सफलता की संभावनाओं का विस्तार करना, सामाजिक और आर्थिक लाभ सुनिश्चित करना।

ङ) प्रेरक के क्षेत्र के लिए विशिष्ट स्थानीय उद्योगों की अनुरूपता के अनुसार नवोपायों का केन्द्र बनना।

च) क्षेत्र में कम लागत पर रोजगार के अवसर निर्मित्त करना।

छ) उद्यमशीलता के हितधारकों के एकत्रीकरण के लिए एक नोडल बिंदु के रूप में कार्य।

ज) विकास की नीतिगत रूपरेखा के संबंध में स्थानीय/क्षेत्रीय विशेषज्ञ के रूप में प्रक्रियाएं करते हैं।

झ) क्षेत्रीय उन्नति एवं विकास प्रोत्साहित करते हैं।

पाठगत प्रश्न 16.2

नीचे दिये गये कथनों में से सत्य अथवा असत्य कथनों की पहचान कीजिये:

क) प्रेरक संगठन को दीर्घकालिक सुविधाएं प्रदान करते हैं।

ख) उपलब्ध करवाए जाने वाले स्थान में सभा कक्ष शामिल नहीं होता है।

ग) परामर्श क्रियाकलाप केवल मार्केटिंग मामलों तक ही सीमित होते हैं।

घ) प्रेरक जिन्हें स्वीकार करते हैं वे व्यापार समुदाय से प्राप्त होने वाले लाभों के हकदार बन जाते हैं।

प्रेरकों की पसंद को प्रभावित करने वाले कारक

अनेक प्रेरकों ने छोटे व्यवसायों को उस सफलता के शिखर तक पहुंचने में काफी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हैं जहां से वे अपनी स्वयं आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि ये कार्यक्रम पूर्ण पुख्ता नहीं हैं। ऐसे कार्यक्रमों में उनकी सदस्यता के बावजूद कुछ छोटे व्यवसाय विफल होते हैं; प्रेरक स्वयं कभी-कभी अनेक कारणों से पीछे हट जाते हैं। उद्यमियों

को स्वयं यह संज्ञान करना चाहिए कि कुछ प्रेरक अन्यों की तुलना में उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बेहतर हो सकते हैं। किसी प्रेरक का निर्धारण करते समय जिन तथ्यों पर विचार किया जाना चाहिए वे निम्नलिखित हैं:-

- **क्या यह उचित प्रेरक है :** अपना खुद के कार्यालय वाले कुछ लोग नए उद्यमियों को आकर्षित करने के लिए स्वयं के प्रेरक होने का असत्य प्रचार करते हैं। उद्यमियों को उनके प्रत्येक प्रस्ताव पर विचार करके उनके दावों के सत्य होने एवं यथोचित होने का निर्धारण करना चाहिए।

- **परिचालन का काल :** प्रेरकों को अपनी साख बनाने में समय लगता है अथवा वे किसी उच्च प्रोफाइल वाले कारपोरेशन से स्पोंसर किए जाते हैं अथवा वे कोई अच्छा निधियन प्राप्त सरकारी एजेंसी होते हैं।

- **प्रेरक नेतृत्व :** अनेक विश्लेषकों का ऐसा मानना है कि उद्यमी केवल कार्यक्रम के नेतृत्व का अध्ययन करके एक प्रेरक के कार्यक्रम की मौलिक गुणवत्ता के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। क्या प्रेरक व्यावसायिक पृष्ठभूमि वाले लोगों द्वारा, या सामान्य कॉलेज अथवा एजेंसी प्रशासकों द्वारा प्रबंधित किया जाता है? क्या प्रबंधक ऐसी कोई दीर्घकालिक व्यवसाय योजना उपलब्ध करवा सकते हैं जिससे यह जानकारी प्राप्त हो सके कि वे किस तरह प्रेरक को वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान करने वाले हैं?

- **स्थल :** क्या प्रेरक का व्यवस्थापन आपकी अनुभवहीन कम्पनी की लक्षित बाजार, परिवहन, प्रतिस्पर्धा एवं भावी उन्नति जैसे आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है?

- **वित्त पोषण :** क्या प्रेरक का वित्तीय आधार विश्वसनीय है अथवा इसमें किसी प्रकार का कोई दोष है?

प्रेरक के किसी कार्यक्रम में भाग लेने से पूर्व छोटे व्यवसाय स्वमियों के पास अपनी खुद की पूर्ण व्यवसाय तैयार की जा सकती है। अधिकांश प्रेरक अपने संसाधनों का इष्टतम उपयोग करने के उद्देश्य से कड़ी स्क्रीनिंग प्रक्रिया हैं।

16.4 भारत में प्रेरणा (उष्मायन) का नेटवर्क

नेशनल एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टेवयर एंड सर्विसेज कंपनीज (नैसकॉम) और जिनोव कंसल्टिंग के अनुसार, मई 2017 में, भारत में चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चात भारत में विश्व के तीसरे सबसे अधिक स्टार्ट-अप प्रेरक और उत्प्रेरक थे।

140 प्रेरकों एवं उत्प्रेरकों के साथ, भारत ने इजरायल को पीछे छोड़ दिया, जिसकी गिनती 130 आंकी गई थी। तथापि, शीर्ष दो के साथ अंतर अभी भी बहुत बड़ा है। चीन और यूएसए में क्रमश: 2,400 और 1,500 से अधिक प्रेरक और उत्प्रेरक हैं।

बंगलौर, मुंबई और दिल्ली-एनसीआर में अधिक से अधिक हब बने हुए हैं। इन क्षेत्रों में केंद्रित सभी प्रेरक और उत्प्रेरकों का 40 प्रतिशत से अधिक आधार टॉयर II के नगरों में स्थित होने से प्रेरकों की संख्या में भी भारी वृद्धि हुई है।

एक प्रेरक आमतौर पर छह महीने से लेकर तीन साल तक के स्टार्ट-अप का मार्गदर्शन करता है, जिसके अंतर्गत समर्पित कार्यालय स्थान, निवेशकों के साथ नेटवर्किंग और अन्यों के साथ साथ तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था शामिल है। इसकी तुलना में, किसी उत्प्रेरक की संगत आमतौर पर तीन से 12 महीनों के लिए होती है, जो उद्यम पूंजी, रोड शो, सीईओ कोचिंग और डेवलपर टूल पर सत्र प्रदान करता है।

अभी हाल ही में, द न्यूड्ज फाउंडेशन, जो कि इन्फोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणी, जिन्हें टाटा ट्रस्ट और अन्य भारी भरकम उद्योगों का समर्थन प्राप्त है, ने एन-कोर, गरीबी उन्मूलन के लिए काम करने वाले गैर-लाभकारी स्टार्ट-अप के लिए एक प्रेरक लॉन्च किया है। यह जुलाई 2015 में बेंगलुरु में स्थापित किया गया था। चिपमेकर इंटेल इंडिया, आईआईटी-बॉम्बे की सोसाइटी फॉर इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप और केंद्र सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग अगस्त 2004 में एक हार्डवेयर प्रेरक प्रोग्राम शुरू करने के लिए एक साथ आगे आए हैं।

भारत में अधिकांश प्रेरकों को शैक्षणिक संस्थानों (लगभग 51 प्रतिशत प्रतिशत) द्वारा संचालित किया जाता है, जबकि बाकी कॉरपोरेट (नौ प्रतिशत), स्वतंत्र (32 प्रतिशत) या सरकार द्वारा समर्थित (आठ प्रतिशत) हैं।

स्टार्ट अप प्रेरणा (उष्मायन) जिसे स्टार्ट-अप उत्प्रेरणा भी कहा जाता है का भारत जैसे देश में काफी महत्त्व है जहां उद्यमी स्कोर बनाकर नए व्यवसाय की स्थापना करने एवं व्यवसाय की प्रक्रियाओं में बदलाव करने के कृत्य पलभर में कर लेते हैं। इस प्रकार की बिना सूत्रपात की प्रक्रियाओं के उद्यमों के लिए अथवा उद्यमियों के लिए **स्टार्ट-अप प्रेरणा (उष्मायन) कार्यक्रम अथवा केन्द्र** सहायता, मार्गदर्शन एवं संसाधन उपलब्ध करवाते हैं।

वे उन्हें प्रत्येक प्रकार का विशेषज्ञ परामर्श एवं ऐसा तकनीकी मार्गदर्शन, जो उनकी दीर्घकालिक-उत्तरजीविता के लिए आवश्यक है, प्रदान करते हैं जिससे ऐसे उद्यम अपने प्रारम्भ के भीतर ही अपना व्यवसाय अन्य अनेक उद्यमियों की तरह बंद न कर सकें।

लगभग प्रत्येक बिजनेस स्कूल में आज प्रेरणा (उष्मायन) केन्द्र हैं जिससे प्रत्येक स्रोत से नव विचारों की उत्पति हो रही है। भारत के व्यावसायिकों के शीर्ष निकाय आईएसबीए से समर्थन प्राप्त अनेक प्रेरणा (उष्मायन) केन्द्र हैं। कुछ निजी प्रेरक भी है जो काफी सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

पाठगत प्रश्न 16.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

क) न्यूड्ज फाउंडेशन, जिसका संस्थापन .... द्वारा किया गया था, ने .... का शुभारंभ किया गया था।

ख) ....हब हैं जिनमें सभी प्रेरकों और उत्प्रेरकों से अधिक आधार इन क्षेत्रों में केन्द्रित है।

ग) भारत में 140 प्रेरक हैं तथा ये यह अब .... से आगे है।

घ) भारत में अधिकांश प्रेरकों का संचालन .... द्वारा किया जा रहा है।

1) **नवोपाय एवं उद्यमिता (एसआईएनई, आईआईटी मुम्बई** की स्थापना वर्ष 2004 में की गई थी। अकादमियों में से यह एक प्रारंभिक प्रेरणा (उष्मायन) केन्द्र है जिसे आर्थिक विकास, रणनीतिक मूल्य एवं सामाजिक सम्बद्धता के साथ स्टार्ट-अप का निर्माण करने की क्षमता प्राप्त है।

यदि आपने वेबारू, भूगोल जीआईएस, SMS Gupshp.com के बारे में सुना होगा तो आपको यह ज्ञात होगा कि इन उद्यमों का आस्तित्व एसआईएनई से प्राप्त सहायता एवं प्रेरणा (उष्मायन) से स्थापित हुआ है जो आईआईटी बम्बई द्वारा पोषित प्रौद्योगिकी प्रेरक हैं। थिंक लैब्स टैक्नोसॉल्युशंस, जो कि एक शैक्षणिक रोबोटिक्स उद्यम है, माईजस टैक्नोलॉजिस एवं इलनफिनिटस कुछ ऐसे प्रसिद्ध व्यावसायिक संस्थान है जिन्हें एसआईएनई से प्रेरणा (उष्मायन) प्राप्त हुई है। ये स्टार्ट-अप बाजार से तीन करोड़ रूपए तक की पूंजी की प्राप्ति के पश्चात से सफलता के साथ उद्यम पूंजी निवेश कर रहे हैं। एसआईएनई एक समय में औसतन एक समय में 15 कम्पनियों को प्रेरित कर सकता है तथा इसके पास 10,000 वर्ग फुट में संस्थापित अवसंरचना है। उन्होंने अब तक बाह्य व्यवसाय प्रेरणा (उष्मायन) प्रारंभ नहीं की है क्योंकि उनके विचारों की उत्पति आईआईटी से होनी अभी समाप्त नहीं हुई है।

2) **प्रौद्योगिकी व्यवसाय प्रेरक, आईआईटी दिल्ली**

टीबीआई वर्ष 2000 से सक्रिय परिचालन कर रही है। यह फाउंडेशन फॉर इनोवेटिव एंड टेक्नोलॉजी ट्रांसफर (FITT) द्वारा संकल्पित एवं और निर्मित की गई है। यह प्रेरक IIT-D के छात्रों, पूर्व छात्रों या केवल शैक्षणिक कर्मचारियों में से किसी प्रेरणा के लिए आवेदन स्वीकार करता है। चयन मानदंड काफी कड़े हैं। यदि बाहरी स्टार्ट-अप इसका हिस्सा बनना चाहते हैं, तो वे कॉलेज के प्रोफेसरों के साथ टाई-अप कर सकते हैं, जो तब आपको टीबीआइ में प्रवेश करने में सक्षम बना सकते हैं।

3) **टेक्नो पार्क टेक्नोलॉजी बिजनेस प्रेरक (टी-टीबीआई), केरल**

इसकी स्थापना 2006 में केरल सरकार के सहयोग से हुई थी। इसे केरल स्टार्ट-अप मिशन का नाम दिया गया है। यह भारत का पहला और सफल गैर-शैक्षणिक व्यवसाय प्रेरक है। यह टेक्नो पार्क तिरुवनंतपुरम और विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार का एक संयुक्त संगठन है। टी-टीबीआईपूरी तरह से सुसज्जित कार्यशील स्थल प्रदान करता है जो 15,000 वर्ग फीट में विस्तारित है, इसके विशेषज्ञ परामर्श और उद्योग, विपणन और कानूनी प्रबंधन परामर्श और वित्तीय सहायता से मार्गदर्शन करते हैं।

टी-टीबीआई द्वारा वर्ष 2016 तक सफलतापूर्वक दो सौ से भी अधिक कम्पनियों को

प्रेरित किया गया है। वर्ष 2011 के प्रारंभ में टी–टीबीआई द्वारा विश्व की सर्वश्रेष्ठ उष्मायन (प्रेरणा) कम्पनी के साफ्टवेयर का उपयोग किया था तथा इस स्तर को प्राप्त करने वाला यह भारत का सर्वप्रथम संगठन है।

4) **स्टार्ट-अप विलेज**

यह कोच्चि में नॉट–फॉर–प्रॉफिट बिजनेस प्रेरणा (उष्मायन) केन्द्र है। यह अप्रैल 2012 में शुरू किया गया था। स्टार्ट–अप विलेज केरल सरकार द्वारा संचालित एक सार्वजनिक–निजी उद्यम है। सरकार ने स्टार्ट–अप विलेज के लिए 100 करोड़ रूपए निर्धारित किए है और सरकार 10 साल में एक हजार से अधिक स्टार्ट–अप करना चाहती है। दिलचस्प बात यह है कि छात्र उद्यमियों को इस प्रेरणा केंद्र का भाग बनाने का प्रस्ताव दिया जाता है, जिसमें कॉलेज में उपस्थिति प्राप्त करना, ग्रेस मार्क्स और स्टार्ट–अप विलेज परिसर के भीतर शुरू होने वाले व्यवसाय के लिए कर छूट भी शामिल है।

5) **इंडियन एंजल नेटवर्क (IAN)**

इंडियन एंजल नेटवर्क की स्थापना 2006 में हुई थी, यह एक अनूठी अवधारणा है जो भारत और दुनियाभर के ऐसे अत्यधिक सफल उद्यमियों और मुख्य कार्यकारी अधि कारियों को एक साथ लाती है जो स्टार्ट अप्स और शुरुआती चरण के उद्यमों में निवेश करने में रुचि रखते हैं जो सफल बनने की क्षमता रखते हैं। यह इंटरनेट और मोबाइल प्रौद्योगिकी, स्वच्छ प्रौद्योगिकी, स्वच्छ प्रौद्योगिकी, सामाजिक क्षेत्र के स्टार्ट–अप और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्रों में एक इक्विटी आधारित इनक्यूबेटिंग व्यवसाय है।

8) एनआरसीईएल, आईआईएम, बंगलौर द्वारा प्रबंधन किया जा रहा एक प्रेरणा (ऊष्मायन) केंद्र है। इस विशिष्ट शैक्षणिक संस्थान में एन.एस. राघवन सेंटर ऑफ इंटरप्रेन्योरियल लर्निंग (एनएसआरसीईएल) स्थापित है। 2002 में इसकी स्थापना के पश्चात से इसके द्वारा स्टार्ट–अप इको सिस्टम पर प्रभाव पैदा करने के लिए उद्यमियों, शिक्षाविदों और उद्योग विशेषज्ञों को एक साथ जोड़ा गया है। सरकारी एजेंसियों, कॉर्पोरेट और संस्थागत भागीदारों के समर्थन के साथ एनआरसीईएल सफल या नवोदित उद्यमियों को लाभ या गैर–लाभकारी उपक्रम चलाने के लिए एक मंच प्रदान कर रहा है। वे विभिन्न प्रकार के ऊष्मायन (प्रेरणाएं) प्रदान करते हैं, जिनमें कार्यालय सथल, डेस्कटॉप, बिजली की अबाधित आपूर्ति, हाई स्पीड इंटरनेट सुविधाओं इत्यादि सहित स्टार्ट–अप के लिए सभी बुनियादी सुविधाएं शामिल हैं। प्रेरक अपने प्रमुख संकायों के परामर्श से मार्गदर्शन देते हैं और प्रेरणा प्रदान करने वाली कुछ कंपनियों प्रारंभिक धन सहायता भी प्रदान की जाती है। फंडिंग मुख्य रूप से सरकारी अनुदान के माध्यम से होती है और इसका संवितरण प्राथमिक दिशानिर्देश एजेंसी द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार होता है। एनआरसीईएल में प्रवेश से पूर्व स्क्रीनिंग समिति द्वारा स्क्रीनिंग की जाती है।

9) **अटल इनक्यूबेशन सेंटर (अटल उष्मायन केन्द्र)** अटल इनोवेशन मिशन (अटल नवोपाय मिशन AIM) देश में नवोपाय और उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देने के

लिए भारत सरकार की प्रमुख पहल है। एआईएम का उद्देश्य अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में नवोपायों को बढ़ावा देने के लिए नए कार्यक्रमों और नीतियों को विकसित करना है, विभिन्न हितधारकों के लिए मंच और सहयोग के अवसर प्रदान करना, जागरूकता पैदा करना और देश की नवोपायों से जुड़ी पारिस्थिति की तंत्र की निगरानी के लिए एक संरक्षक संरचना का निर्माण करना है।

अटल नवोपाय मिशन का उद्देश्य अटल ऊष्मायन केंद्र नामक नए ऊष्मायन केंद्रों की स्थापना के लिए सहायता प्रदान करना है जो कि मापनयोग्य और टिकाऊ व्यवसाय उद्यम बनने के लिए उनके नवोपायों से नवीन स्टार्ट-अप का पोषण करेंगे।

अटल नवोपाय मिशन द्वारा अटल उष्मायम केन्द्रों को प्रेरणा प्राप्त करने वाले स्टार्ट-अप के लिए पूंजी उपकरणों एवं परिचालन सुविधाओं के संदर्भ में देश में उत्कृष्ट भौतिक अवसंरचना से युक्त विश्व श्रेणी के उष्मायन सुविधाओं के निर्माण में सहायता प्रदान की जाएगी जो नए उद्यमियों को उनके स्टार्ट-अप के लिए सेक्टरल विशेषज्ञों के मार्गदर्शन के साथ उपलब्ध होंगी। इसके अलावा, व्यापार योजना का समर्थन, प्रारंभिक पूंजी की उपलब्धि, उद्योग भागीदारी, प्रशिक्षण और नवीन स्टार्ट-अप का समर्थन करने के लिए आवश्यक अन्य प्रासंगिक घटक प्रदान किए जाएंगे।

इसी के साथ साथ, स्थापित किए गए अधिकांश अटल उष्मायन केन्द्र इन क्षेत्रों में अभूतपूर्व तकनीकी नवोपायों को बढ़ावा देने के लिए विनिर्माण, परिवहन, ऊर्जा, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, जल, स्वच्छता, साइबर सुरक्षा आदि क्षेत्रों में विशिष्ट होंगे।

उच्चतर शैक्षणिक संस्थान, अनुसंधान एंव विकास संस्थान जैसे अकादमिक संस्थान एवं साथ साथ ही कॉर्पोरेट सेक्टर उद्यमों जैसे गैर-अकादमिक संस्थान, सेबी में पंजीकृत वैकल्पिक निवेश निधियां, व्यवसाय उत्प्रेरक, व्यक्तियों के समूह एवं व्यक्ति इत्यादि आवेदन करने के पात्र हैं।

अटल नवोपाय मिशन के अंतर्गत अधिक 5 वर्ष की अवधि के लिए 10 करोड़ रुपए तक की अनुदान सहायता उपलब्ध है जिससे पूंजी एवं परिचालन व्ययों की पूर्ति हो पाती है।

अटल नवोपाय मिशन द्वारा एकल उपयोग के लिए आवेदन को उपयोग के लिए तैयार कम से कम 10,000 वर्ग फुट भूमि, निर्मित्त स्थल उपलब्ध करवाना होगा।

10) एजेंल प्राइम

एजेंल प्राइम का प्रारंभ हाल ही में वर्ष 2011 में भारत के प्रौद्योगिकी उद्योग में विख्यात बाला पार्थासारथी, श्रीपति आचार्य तथा संजय स्वामी द्वारा किया गया था। जिस क्षेत्र में एंजेल प्राइम प्रेरणा की प्रक्रियाएं कर रही है उनमें मोबाइल भुगतान, ई-कामर्स एवं स्मार्ट फोन/टेबलेट एप्पस हैं। इसके द्वारा एक मोबाइल भुगतान कम्पनी एवं एक स्मार्टफोन एवं टेबलेट स्टार्ट अप को प्रेरणा देने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।

सीआईआईई से हटकर एजेंल प्राइम उद्यमों को उनके कार्यालय स्थल पर ही प्रेरणा देने में विश्वास करती है जिससे वे उनकी अच्छी से देखभाल कर पाते हैं। एजेंल प्राइम की सेवाएं सीमित हैं क्योंकि इसके संस्थापक अपने पिछले कॉर्पोरेट नेटवक एवं अनुभवों को प्रेरणा के इस नए उद्यम में अपने साथ लेकर आए हैं।

अपने वाणिज्यिक के रोलआउट में विचारों के चरण में व्यावसायिक प्रेरक नए उत्पादों/सेवाओं के बीच अंतर को कम करने में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। इससे सभी उद्यमियों को एक समान मंच भी प्राप्त होता है जिससे वे उत्पादों और सेवाओं का निर्माण करके समाज के सभी वर्गों को लाभान्वित कर पाते हैं।

पाठगत प्रश्न 16.4

क) एसआईएनई द्वारा अनेक उद्यमों का पोषण किया गया है। किन्हीं दो का नाम बताएं।

ख) किसने और कब प्रौद्योगिकी व्यवसाय प्रेरक आईआईटी की स्थापना की?

ग) किस प्रेरक ने सिडबी के साथ गठबंधन किया है?

घ) किस प्रेरक ने डीएसटी के साथ गठबंधन किया है?

आपने क्या सीखा

- प्रेरक संसाधनों, सेवाओं और नेटवर्किंग के स्वरूप में विभिन्न प्रकार के समर्थन के माध्यम से उद्यमी के विकास और सफलता में तेजी लाने के लिए एक संगठन है। वे शुरुआती दौर में उद्यमियों की मदद करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- प्रेरकों की शक्ति में उनके सहभाजित बुनियादी परिचालन लागत, परामर्श और प्रशासनिक सहायत, पूंजी तक पहुंच और साथी उद्यमियों की कामरेडशिप शामिल है।
- प्रेरक का चयन उसकी सत्यनिष्ठा, परिचालनों के प्रसार, प्रेरक के नेतृत्व, प्रेरक के स्थल तथा उसके वित्तीय आधार पर निर्भर करता है।
- भारत को मई 2017 में नॉस्सकॉम के अनुसार 140 प्रेरकों और उत्प्रेरकों के साथ चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दुनिया में स्टार्ट-अप प्रेरकों के लिए तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है।
- भारत के कुछ व्यावसायिक प्रेरणा (ऊष्मायन) केंद्रों में नवप्रवर्तन और उद्यमिता (एसआईएनई), आईआईटी मुम्बई, प्रौद्योगिकी व्यवसाय प्रेरक, आईआईटी दिल्ली, टैक्नो पार्क टैक्नोलॉजी बिजनेस इन्क्यूबेर (टी-टीबीआई), केरल, स्टार्टअप विलेज, इंडियन एंजेल नेटवर्क (आईएएन), टेक्नो पार्क टीबीआई, सेंटर फॉर इनोवेशन, इनक्यूबेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप

(सीआईआईई), आईआईएम अहमदाबाद, एनएसआरसीईएल, आईआईएम बैंगलोर, अटल उष्मायन केंद्र और एंजेल प्राइम शामिल हैं।

पाठांत प्रश्न

1) प्रेरक (उष्मायक) की परिभाषा लिखिये।

2) प्रेरकों (उष्मायकों) की भूमिका का वर्णन कीजिये।

3) व्यवसाय प्रेरक (उष्मायक) का अर्थ क्या है? प्रेरक से प्राप्त लाभों का वर्णन कीजिये।

4) भारत के दस प्रमुख प्रेरकों (उष्मायकों) की सूची बनाइये।

5) भारत के किन्हीं चार व्यवसाय प्रेरकों के बारे में लघु टिप्पणी लिखिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

16.1

क) असत्य ख) असत्य ग) असत्य घ) सत्य

16.2

क) सही ख) गलत ग) गलत घ) सही

16.3

क) इंफोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलकेणी, एन-कोर

ख) बंगलौर, मुम्बई, दिल्ली

ग) इजरायल

घ) अकादमिक संस्थान

16.4

क) वेबारू, भूगोल, जीआईएस

ख) इनोवेशन एंड टैक्नोलॉजी ट्रांसफर, 2000.

ग) इंडियन एजेंल नेटवर्क

घ) टैक्नो पार्क

अवधारणा नक्शे

इन्क्यूबेशन
इनक्यूबेटर की भूमिका
समर्थन सेवाएं
नेटवर्किंग सुविधाएं
भौतिक सुविधा सहायता
इन्क्यूबेटरों की पसंद को प्रभावित करने वाले कारक
फाइनेंसिंग
स्थान
इनक्यूबेटर नेतृत्व
क्या यह एक सच्चा इनक्यूबेटर है
संचालन की लंबाई
लाभ
इनक्यूबेटर अवधारणा की सार्वभौमिकता
पूंजी तक पहुंच
परामर्श प्रशासनिक सहायता
साझा बुनियादी परिचालन लागत
साथी उद्यमियों का सहयोग
भारत में ऊष्मायन केंद्र
टी-टीबीआई, केरल
एंजेलप्राइम
प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर, आईआईटी दिल्ली
एनएसआरसीईएल, आईआईएम बैंगलोर
टेक्नो पार्क TBI
अटल इन्क्यूबेशन सेंटर
सीआईआईई, आईआईएम अहमदाबाद
नवाचार और उद्यमिता, आईआईटी मुंबई
इंडियन एंजेल नेटवर्क
स्टार्टअप गांव

17

ई-संसाधन

21वीं शताब्दी प्रौद्योगिकी की शताब्दी है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के साथ हमारे कार्य करने की क्षमता से हमारे जीवन में सुगमता का विस्तार हो रहा है। इससे हमें मौसम के पूर्वानुमानों से डिजिटल मार्केटिंग जैसे विभिन्न माध्यमों से सहायता प्राप्त हो रही है। हम में से अधिकाश अपने डेस्कटॉप कम्प्यूटर, लैपटॉप तथा स्मार्ट फोन के उपयोग से अपना कार्य आनन्द पूर्वक कर रहे हैं। इनके उपयोग से हम विभिन्न प्रकार की सूचनाओं की प्राप्ति, मित्रों से सम्पर्क एवं बिलों तथा करों इत्यादि का भुगतान ऑनलाइन कर पा रहे हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के क्षेत्र में भारत एक तीव्रतर विकासशील देश है। आपने अवश्य ही भारत की विख्यात टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), इंफोसिस एवं विप्रो जैसी सूचना प्रौद्योगिकी कम्पनियों के बारे में सुना होगा। इन प्राइवेट संगठनों के अलावा, बैंकों द्वारा भी सूचना प्रौद्योगिकी व्यवस्था को अपनाया गया है। आजकल बैंक ऋण प्राप्त करने, एकाउंट स्टेटमेंट प्राप्त करने की सुविधा ऑनलाइन उपलब्ध करवा रहे है और इसे इंटरनेट बैंकिंग अथवा मोबाइल एप्पस के माध्यम किया जा सकता है। ऑनलाइन संव्यवहार करने के लिए इसकी प्रक्रिया को सही ढंग से समझ लेना अत्यावश्यक है तथा ऐसा न किए जाने से अनेक समस्याएं उत्पन्न हो सकती है।

सरकार ने नए एवं विद्यमान उद्यमियों के लिए विभिन्न ई-संसाधनों का निर्माण करके सहायता प्रदान की है। इन ई-संसाधनों के उपयोग से आपको सरल ढंग से आवश्यक सूचना प्राप्त हो पाती है। उद्यमी इनके उपयोग के लिए सरल आनलाइन प्रक्रिया करके सरकारी योजनाओं का उपयोग एवं प्रमाण पत्रों की प्राप्ति कर सकते हैं। आइए, प्रारंभ करते हैं और इस अध्याय में हम उद्यमियों के लिए उपलब्ध विभिन्न प्रमुख ई-संसाधनों के बारे में अध्ययन करते हैं।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- भारत में उपलब्ध विभिन्न ई-संसाधनों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं;

टिप्पणी

- मोबाइल एप्प एवं ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से उपलब्ध विभिन्न सूचनाओं एवं योजनाओं का वर्णन करते हैं;
- विभिन्न उपलब्ध ई-संसाधनों के बारे में विचार-विमर्श करते हैं।

17.1 उद्यमों के लिए ई-संसाधन

उद्यमी के रूप में आपको अपना व्यापार प्रारंभ करने एवं उसका विकास करने के लिए जानकारियों की आवश्यकता होती है। अपेक्षित जानकारियां आप अनेक वेबसाइट से प्राप्त करते हैं। सरकारी संगठनों द्वारा उद्यमियों के लिए अपेक्षित जानकारियों का समेकन करके इस प्रक्रिया को सरल बना दिया गया है। आप विभिन्न योजनाओं तथा ऋणों के लिए इन वेबसाइट अथवा मोबाइल एप्प के उपयोग से अपने आवेदन कर सकते हैं। ऐसी कुल उपयोगी वेबसाइट और मोबाइल एप्प का विवरण नीचे दिया गया है:-

1. स्किल इंडिया पोर्टल
2. स्टार्टअप इंडिया
3. सिडबी उद्यमी मित्र
4. केवीआईसी-पीएमईजीपी ई-पोर्टल
5. सिडबी स्टैंडअपमित्र
6. माई एमएसएमई
7. टैक्नोलॉजी इनोवेशन मैनेजमेंट एंड एन्टरप्रेनरशिप इनफार्मेशन सर्विस (टाइम इज)

इन सभी ई-संसाधनों के बारे में हम आगे विस्तार से चर्चा करेंगे।

17.2 कौशल भारत पोर्टल

स्किल इंडिया पोर्टल राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) की एक पहल है। यह कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के अधीन है। पोर्टल का वेबसाइट पता https://skillindia.nsdcindia.org/ है। यह पोर्टल इच्छुक उम्मीदवारों को निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण/सीखने और रोजगार के अवसरों के लिए पंजीकरण करने की सुविधा देता है।

पंजीकृत करने के लिए उम्मीदवार को अपना मूल व्यक्तिगत विवरण, संचार, स्थान और शैक्षिक विवरण प्रदान करना होगा। उनकी रुचि के आधार पर उन्हें क्षेत्र और नौकरी की भूमिकाएं चुनने की आवश्यकता होती है जिसके लिए उन्हें कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। यह स्किल इंडिया मोबाइल ऐप का उपयोग करके भी किया जा सकता है।

स्किल इंडिया के तहत, युवा मान्यता प्राप्त प्रशिक्षण केंद्र में उद्योग प्रासंगिक कौशल प्रशिक्षण ले सकते हैं जिससे बेहतर आजीविका प्राप्त की जा सकती है। इस योजना के तहत, प्रशिक्षण और मूल्यांकन शुल्क सरकार द्वारा भुगतान किया जाता है। सरकार सफल प्रशिक्षुओं को नौकरी या उद्यमिता सहायता भी प्रदान करती है।

ई-संसाधन

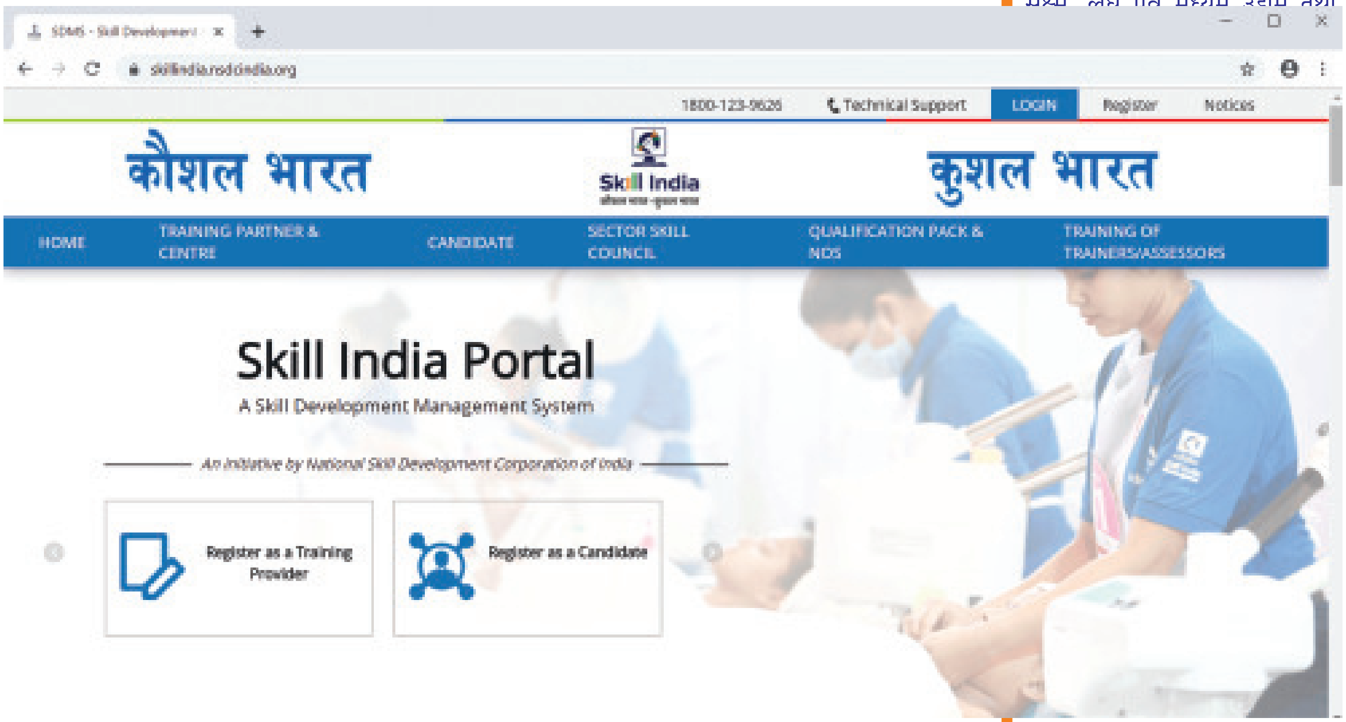

पाठगत प्रश्न 17.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजए:

1. कौशल भारत पोर्टल .... द्वारा की गई पहल है।
2. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) .... मंत्रालय के अधीन है।
3. ICT का पूरा नाम .... है।
4. TIME का पूर्ण नाम .... है।
5. कौशल भारत के अंतर्गत युवा उद्योग से संबंधित ------------ मान्यता प्राप्त केन्द्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

17.3 स्टार्टअप इंडिया

स्टार्टअप विकास की अपार क्षमता से युक्त एक अथवा अधिक उद्यमियों द्वारा स्थापित की गई एक ऐसी नई कंपनी होती है जो किसी नवीन उत्पाद या सेवा का व्यवसाय करने और कुछ सामाजिक समस्याओं का निवारण करने की संभावनाओं से युक्त होती है।

स्टार्टअप इंडिया देश में स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार के औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (DPIIT) की एक पहल है। इस योजना के तहत सरकार नए

उद्यमियों की देखरेख करती है, स्टार्टअप के लिए धन और प्रोत्साहन सहायता प्रदान करती है। ये उद्यम स्वयं को प्रमाणित कर सकते हैं, और कानूनी आवश्यकताओं का पालन कर सकते हैं। उन्हें सरकारी संगठनों द्वारा की गई खरीद में कर छूट और प्राथमिकताएं भी दी जाती हैं। ये उद्यम फास्ट ट्रैक पेटेंट आवेदन दाखिल करने के लिए पात्र हैं। स्टार्टअप इंडिया पोर्टल स्टार्टअप उद्यमियों के लिए एक ऑनलाइन मंच है। यह निवेशकों तथा व्यवसाय उत्प्रेरकों व्यवसाय उत्प्रेरक (बिजनेस इनक्यूबेटर्स) ऐसे संगठन हैं जो इनके लिए कार्यालय स्थल, उपकरण, तकनीकी मार्गदर्शन, वित्तीय नेटवर्किंग, नए स्टार्टअप व्यवसायों के लिए पेटेंट की व्यवस्था करते हैं) को स्टार्टअप से जोड़ कर एक मंच पर उन्हें एक दूसरे से संपर्क करने और सहयोग करने की सुविधा प्रदान करता है। वेबसाइट का पता https:/// www.startupindia. gov.in/ है।

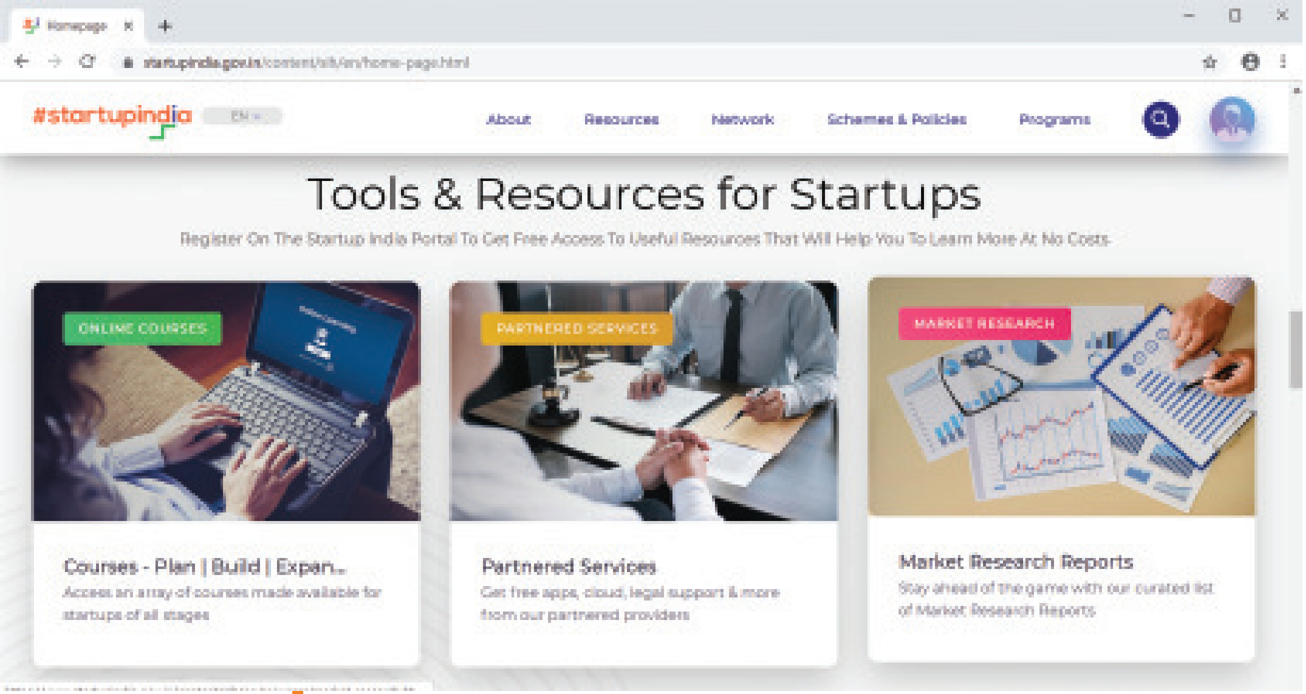

आवश्यक जानकारी के अलावा, पोर्टल ऑनलाइन पाठ्यक्रम, सरकारी योजनाओं का डेटाबेस, बाजार अनुसंधान रिपोर्ट, मुफ्त सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन और अन्य उपयोगी संसाधन प्रदान करता है। इस पोर्टल में टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबर और स्टार्टअप्स के लिए त्वरित ईमेल क्वेरी रिजॉल्यूशन भी उपलब्ध है। यह एक मोबाइल ऐप के रूप में भी उपलब्ध है।

17.4 सिडबी उद्यमी मित्र

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) द्वारा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमियों को क्रेडिट एवं हैंड हैंडलिंग की सेवाओं तक सुगम पहुंच स्थापित करने के लिए उद्यमी मित्र पोर्ट लांच किया गया है। इस वेबसाइट का पता :https://www.udyamimitra.in/. है।

ई-संसाधन

ई-संसाधन

उद्यमी बैंक की किसी भी शाखा में जाए बिना इस बैंक से 1.25 लाख से भी अधिक शाखाओं से ऋण के लिए आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं तथा अपने आवेदन के स्तर एवं ऋण से प्राप्त होने वाले विविध लाभों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसमें सभी आवश्यक दस्तावेज अपलोड करने की सुविधा भी प्रदान की गई है। इस पोर्टल के माध्यम से उद्यमी वित्त प्राप्त करने के लिए हैंड हैंडलिंग सहायता प्राप्त कर सकते हैं। इस वेबसाइट में प्रोफाइल, व्यापार विचार एवं उद्यमियों के लिए ज्ञानवर्चक जानकारियों के लिंक भी दिए गए हैं।

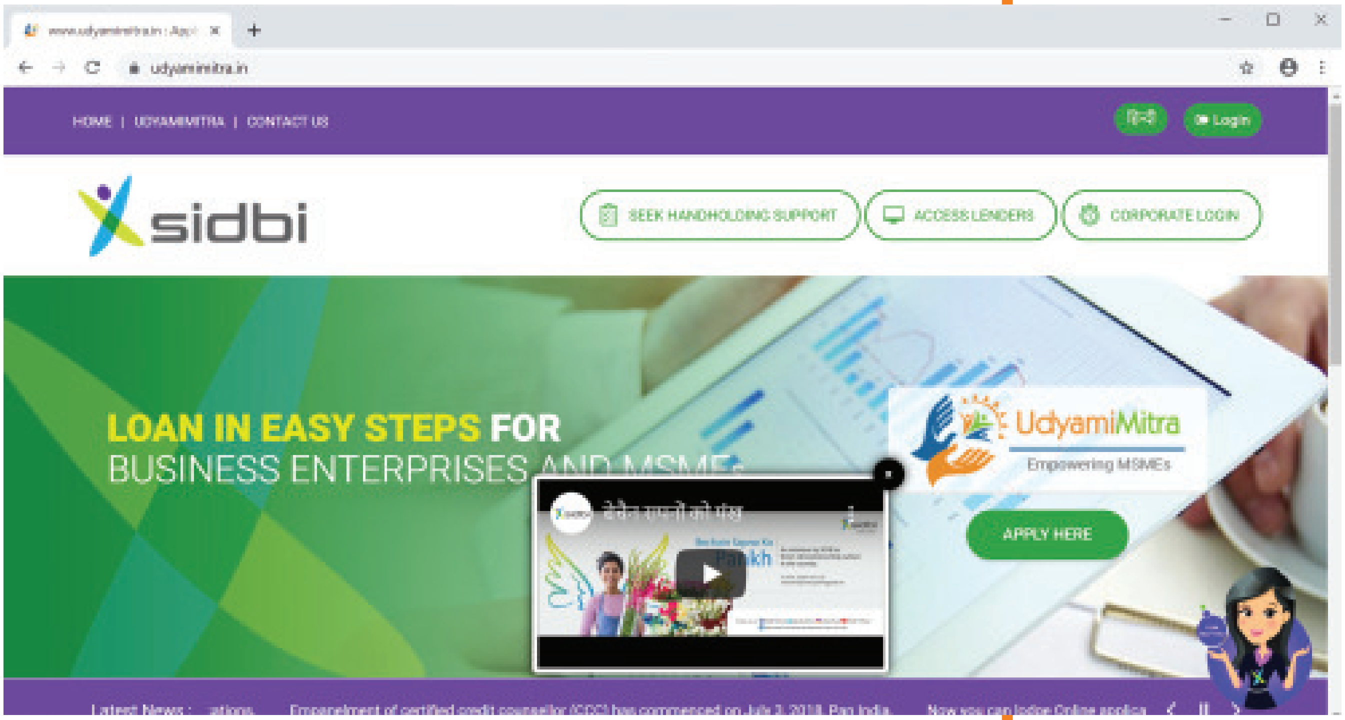

17.5 केवीआईसी-पीएमईजीपी ई-पोर्टल

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार की एक प्रमुख योजना हैं। इसे खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। उद्यमी इस योजना के लिए https://www.kviconline.gov.in /pmegpeportal/ pmegphone के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

इस पोर्टल में योजना के लिए आवेदन करने के अलावा एक मॉडल परियोजनाएं डाउनलोड की जा सकती हैं। यदि किसी को ऑनलाइन आवेदन के साथ कठिनाई होती है, तो वह हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में इस ऑनलाइन प्रक्रिया के वीडियो ट्यूटोरियल भी देख सकता है।

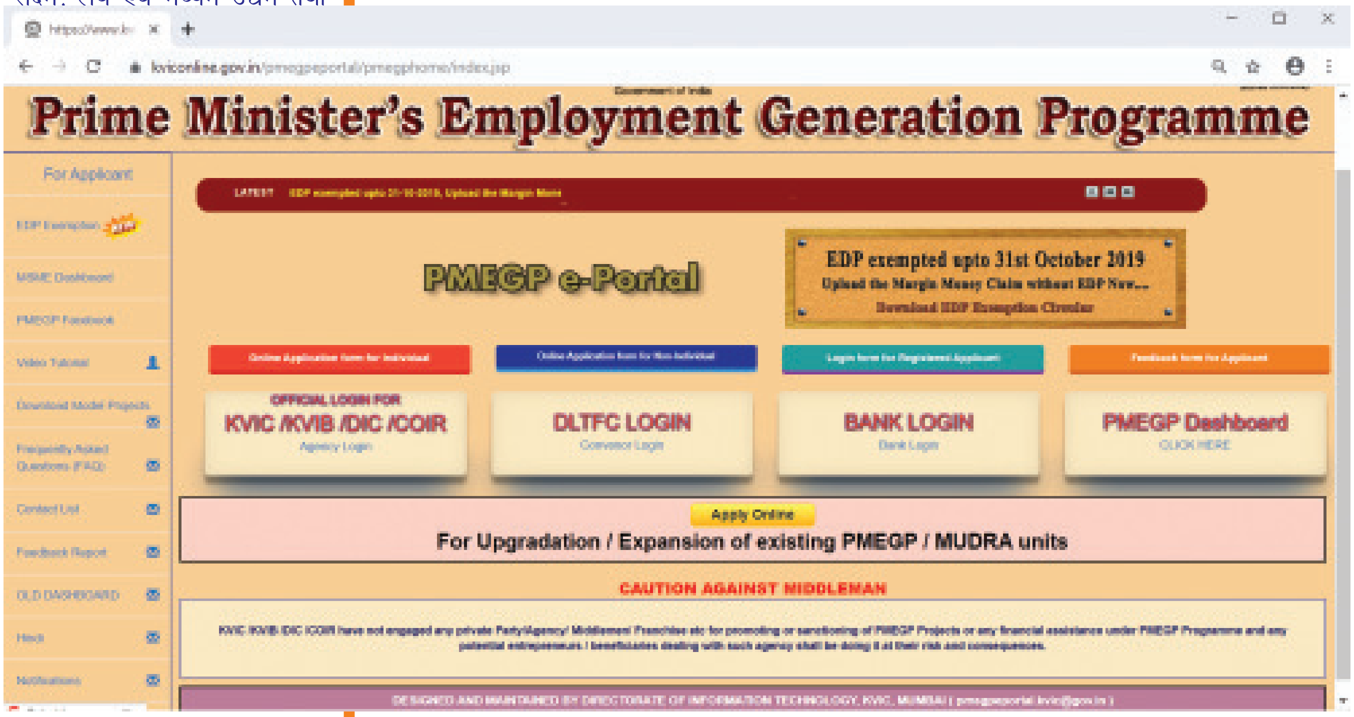

पाठगत प्रश्न 17.2

निम्नलिखित कथनों में से सही अथवा गलत का चयन कीजिए।

क) स्टार्टअप इंडिया डीपीआईआईटी की पहल है।

ख) स्टार्टअप को कर छूट दी जाती है परन्तु सरकारी संगठनों द्वारा की जाने वाली खरीद में किसी प्रकार की वरीयता नहीं दी जाती है।

ग) पीएमईजीपी ई-पोर्टल में आदर्श परियोजना रिपोर्ट नहीं हैं।

घ) उद्यमी मित्र पोर्टल से एमएसएमई की क्रेडिट तक पहुंच जाती है परन्तु इसमें हैंड हैंडलिंग सेवाएं नहीं दी जाती हैं।

ङ) स्टार्टअप फास्ट ट्रैक पैटेंट आवेदन फाइल करने के पात्र हैं।

17.6 सिडबी स्टैंडअप मित्र

स्टैंडअप इंडिया योजना एक नया उद्यम स्थापित करने के लिए अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की प्रति बैंक शाखा से कम से कम एक अनुसूचित जाति अथवा एक अनुसूचित जनजाति की एक महिला उधारकर्ता को बैंक ऋण प्रदान करती है। स्टैंड अप इंडिया पोर्टल एससी, एसटी और महिला वर्ग के उद्यमियों के बीच उद्यम प्रोत्साहन को समर्थन, सूचना प्रसार और

ऋण गारंटी के माध्यम से डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान करता है। वेबसाइट का पता https://www.standupmitra.in है।

ऋण के लिए आवेदन के अलावा, यह पोर्टल प्रशिक्षण, कौशल विकास कार्यक्रम, मार्गदर्शन आदि के बारे में जानकारी प्रदान करता है। निर्देशित करने के लिए हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया का वीडियो भी दिया गया है। इस वेबसाइट पर, विभिन्न उद्योग संघों, लीड जिला प्रबंधकों (एलडीएम) और सहायता केंद्रों के संपर्क विवरण भी दिया गया है।

17.7 माई एमएसएमई

माई एमएसएमई वेबसाइट और मोबाइल एप्लिकेशन भारत के सभी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) और अन्य हितधारकों के लिए है। यह सूक्ष्म लघु एवं, पंजीकरण, सेवाओं, योजनाओं आदि से संबंधित सभी जानकारी प्रदान करता है। वेबसाइट का पता https://my.msme.gov.in है।

यह एक ऐसा पोर्टल है जहां उद्यमी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम पंजीकरण के लिए उद्योग आधार मेमोरैंडम (यूएएम) दर्ज कर सकता है। इस पोर्टल पर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम योजना दिशानिर्देश और परियोजना प्रोफाइल भी उपलब्ध हैं। एक उद्यमी क्रेडिट, प्रौद्योगिकी, क्लस्टर विकास, विपणन, बौद्धिक संपदा अधिकार, गुणवत्ता, अवसंरचना, इन्क्यूबेसन, कौशल आदि जैसे सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम योजनाओं के लाभ के लिए सीधे इस पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकता हैं। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के

अंतर्गत आने वाले कार्यालयों एवं संगठनों के प्रति शिकायतें दर्ज की जा सकती हैं और कार्यालयों और संगठनों की वेबसाइट पर विजिट किया जा सकता है। यह पोर्टल उपयोगी लिंक टैब के तहत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के सोशल मीडिया हैंडल का सीधा लिंक भी प्रदान करता है।

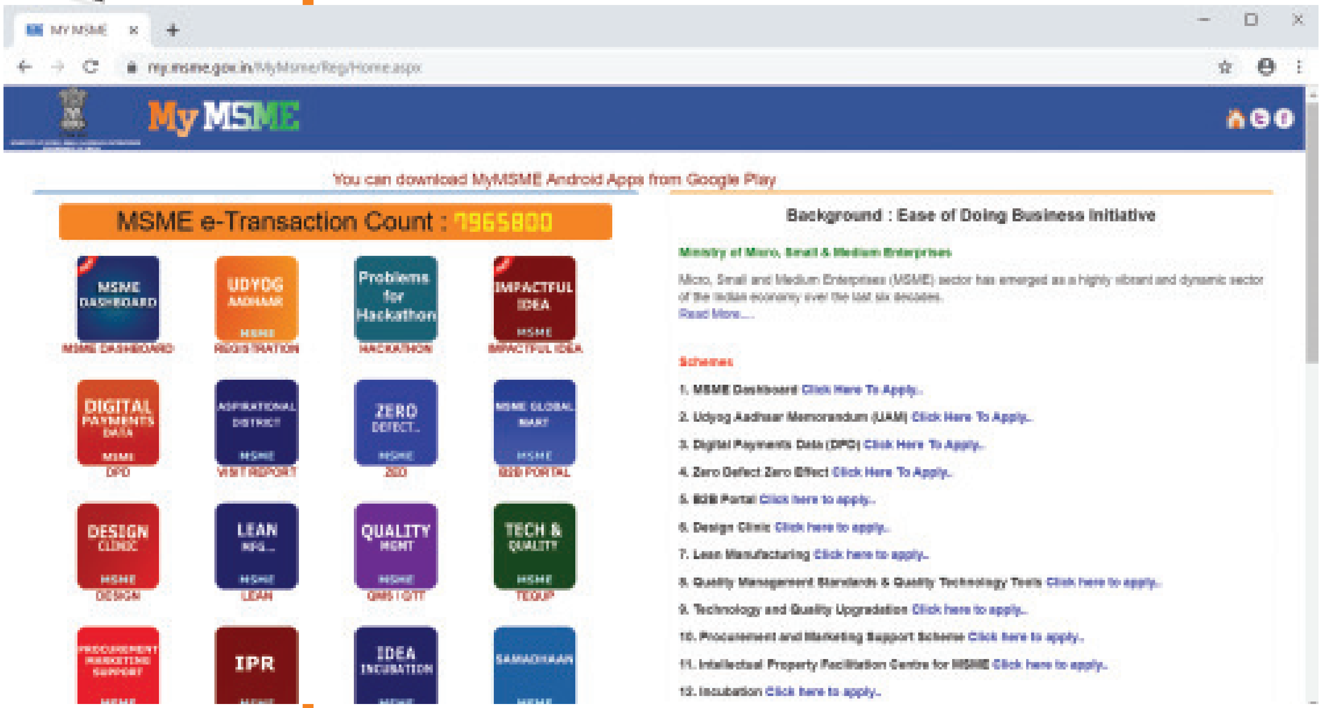

पाठगत प्रश्न 17.3

संक्षिप्त नाम	विस्तारित
(क) एसआईडीबीआई	
(ख) एमएसएमई	
(ग) यूएएम	
(घ) केवीआईसी	
(ङ) पीएमईजीपी	

17.8 प्रौद्योगिकी नवोपाय प्रबंधन एवं उद्यमशीलता सूचना सेवा (टाइम आईएस)

अनुसंधान संगठनों द्वारा विकसित नई प्रौद्योगिकियों पर आधारित नवीन उद्यमों को टैक्नोलॉजी इनोवेशन मैनेजमेंट एंड एन्टरप्रेनरशिप इंफर्मेशन सर्विसेज (टाइम आईएस) जैसी वेबसाइटों से सहायता प्राप्त करके शुरू किया जा सकता है। इस वेबसाइट का रखरखाव राष्ट्रीय विज्ञान और

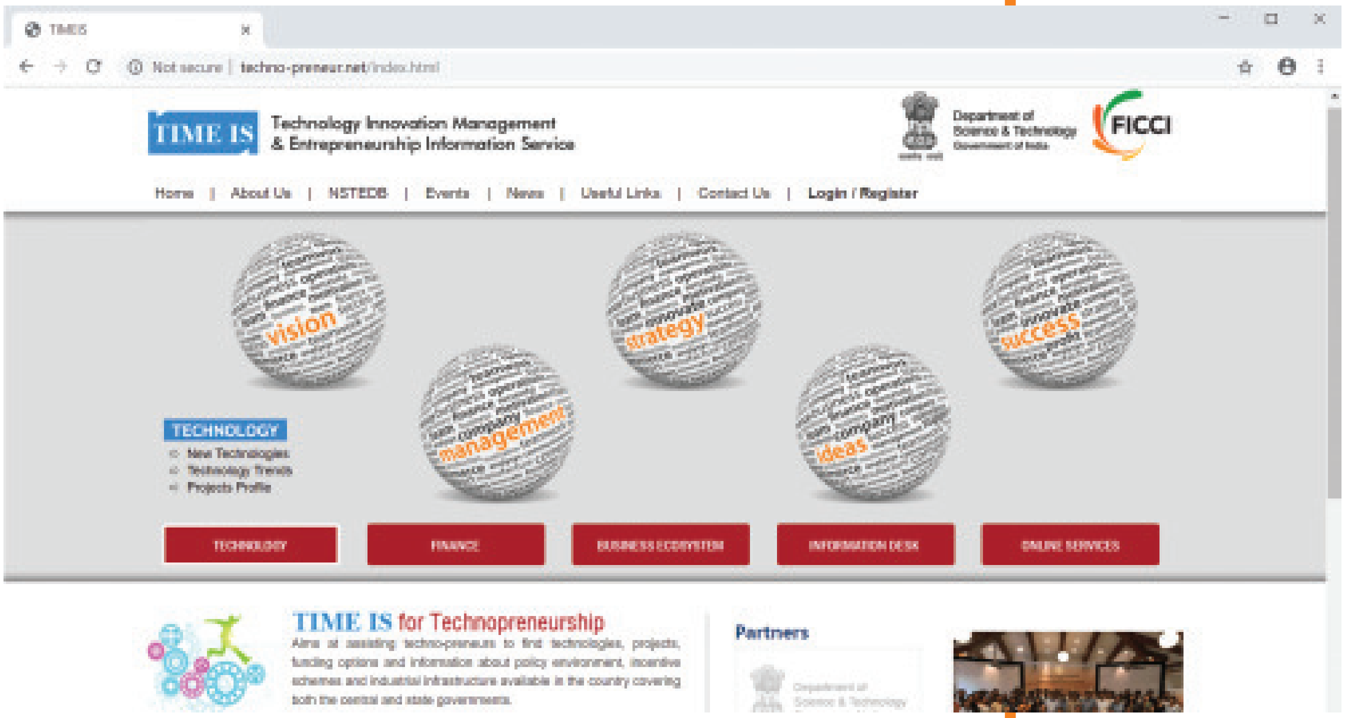

उद्यमिता विकास बोर्ड (एनएसटीईडीबी), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार एवं फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा किया जाता है। वेबसाइट का पता http://www.techno-commur.net है।

यह वेबसाइट उद्यमियों को नई वाणिज्यिक तकनीकों, वैश्विक रुझानों, परियोजनाओं की रूपरेखा और सरकारी योजनाओं को खोजने में मदद करती है। यह औद्योगिक नीतियों और बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता की जानकारी भी प्रदान करती है।

टाइम आईएस वेबसाइट विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के लिए इंटरैक्टिव ऑनलाइन टूल भी प्रदान करती है। पेटेंट, वैज्ञानिक अनुसंधान संगठन के संपर्क विवरण, बैंकों के वित्तपोषण निकायों, राज्य वित्तीय निगमों (एसएफसी), और उद्यम पूंजी (वीसी) से संबंधित प्रश्नों की जानकारी वेबसाइट में उपलब्ध है। उपयोगी लिंक विभिन्न उद्योग संघों, निर्यात संवर्धन परिषदों (ईपीसी) आदि को जोड़ता है।

पाठगत प्रश्न 17.4

निम्नलिखित का मिलान कीजिए:

वेबसाइट	संगठन
क) उद्यमी मित्र	(i) डीपीआईआईटी
ख) पीएमईजीपी ई-पोर्टल	(ii) एनएसडीसी
ग) स्किल इंडिया पोर्टल	(iii) सिडबी
घ) माई एमएसएमई	(iv) केवीआईसी
ङ) टैक्नोलॉजी इनोवेशन मैनेजमेंट एंड एन्टरप्रेनरशिप इंफार्मेशन सर्विसेज (टाइम आईएस)	(v) सूक्षम लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय
च) स्टार्टअप इंडिया	(vi) एनएसटीईडीबी

आपने क्या सीखा

- सरकारी संगठनों ने आजकल उद्यमियों के लिए अपना व्यवसाय शुरू करना बहुत आसान बना दिया है। इस प्रयास में, उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया है। वेबसाइटों और मोबाइल एप्लिकेशन ने उद्यमियों को अद्यतन जानकारी प्रदान की है। आईटी ने ऋण और योजनाओं के लिए आवेदन प्रक्रिया आसान बना दी है।
- सरकार विभिन्न ई-संसाधन बना कर नए उद्यमियों की मदद करने का प्रयास कर रही है। येई-संसाधन एक नजर में सभी आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं। उद्यमी एक सरल ऑनलाइन प्रक्रिया से गुजर कर विभिन्न ऑनलाइन योजनाओं के लिए आवेदन कर सकते हैं।
- स्किल इंडिया पोर्टल, स्टार्टअप इंडिया, सिडबी उद्यमी मित्र, केवीआईसी-पीएमईजीपीई-पोर्टल, सिडबी स्टैंडअप मित्र, मायएमएसएमई, टाइमआईएस कुछ सहायक वेबसाइट और मोबाइल ऐप हैं।

पाठांत प्रश्न

1. उद्यमियों के लिए 21वीं सदी में ई-संसाधनों का महत्त्व बताइये।
2. उद्यमियों के लिए फायदेमंद महत्त्वपूर्ण वेबसाइटों और मोबाइल अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार कीजिए।

ई-संसाधन

3. उद्यमियों के लिए उनकी उपयोगिता के साथ-साथ तीन वेबसाइटों के बारे में विस्तार से बताइये।
4. उद्यमियों के लिए किन्हीं भी दो ई-संसाधनों पर चर्चा कीजिए।
5. भारत में उपलब्ध ई-संसाधनों के बारे में बताइये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

1. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम एनएसडीसी
2. कौशल विकास एवं उद्यमशीलता
3. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी
4. टैक्नोलॉजी इनोवेशन मैनेजमेंट एंड एन्टरप्रेनरशिप इंफर्मेशन सर्विसेज (प्रौद्योगिकी नवाचार एवं उद्यमशीलता सूचना सेवाएं)।
5. कौशल प्रशिक्षण

17.2

क) सत्य

ख) गलत (दूसरा विवरण गलत है अर्थात स्टार्टअप को सरकारी संगठनों द्वारा की जाने वाली खरीद में वरीयता प्रदान की जाती है।)

ग) गलत

घ) गलत (दूसरा विवरण गलत है अर्थात उद्यमी मित्र पोर्टल हैंडहोल्डिंग सेवाए प्रदान नहीं करता है)

ङ) सत्य

17.3

क) भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक

ख) सूक्षम, लघु एवं मध्यम उद्यम

ग) उद्योग आधार ज्ञापन

घ) खादी ग्रामोद्योग उद्योग

ङ) प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम

17.4

1. ग 2. घ 3. ख 4. ड 5. च 6. क

निम्न क्रियाकलाप करते हुए सीखिए

1. सूचीबद्ध सभी सात वेबसाइटों पर जाएं और उद्यमियों के लिए इन वेबसाइटों की उपयोगिता को समझने के लिए अपनी सामग्री ब्राउज करें।

2. तीन क्रियाकलापों में से, कम से कम एक क्रियाकलाप करें:

   क) ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से पीएमईजीपी ऋण के लिए आवेदन करें

   ख) स्टार्टअप इंडिया के अंतर्गत ऑनलाइन पाठ्यक्रम के लिए पंजीकरण करें

   ग) माई एमएसएमई पोर्टल का उपयोग करके उद्योग आधार के अंतर्गत एक उद्यम पंजीकृत करें

अवधारणा नक्शे

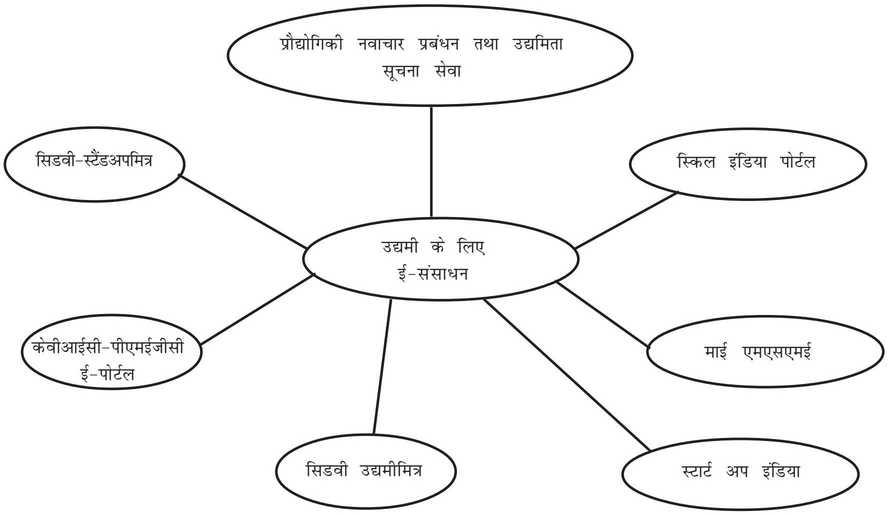

मॉड्यूल 6

परियोजना कार्य

अधिकतम अंक-00 | **अध्ययन घंटे 30**

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के पश्चात विद्यार्थी अपने आसपास के क्षेत्र में व्यवसाय अवसरों का संज्ञान करने में सक्षम हो सकेंगे तथा उसके लिए व्यवसाय योजना का निर्माण कर सकेंगे।

अध्याय 18 परियोजना कार्य

18

परियोजना कार्य

परियोजना की तैयारी एक प्रक्रिया है। परियोजना को अंतिम रूप प्रदान करने के लिए अनेक परियोजना विचारों का अनेक चरणों में विश्लेषण करना अपेक्षित होता है। परियोजना का निर्माण करते समय वह सुनिश्चय कर लेना चाहिए कि जब इसे किया जाए तो यह व्यवहार्य हो और पूरी तरह से उपयुक्त साबित हो ताकि इसे सफलता के साथ प्रारंभ किया जा सके।

तथापि, किसी उद्यमी को किसी व्यापार योजना के निर्माण के लिए समग्रता की आवश्यकता नहीं होती है। आप बस सही उद्यम व्यवहार अपनाकर भी सफल हो सकते हैं। इसके लिए आप www.udyami.org.in/projectreports एवं www.kviconline.gov.in/ pmegp/pmegpweb/d ocs/ jsp/newprojectReports.jsp पर विजिट करके और अधिक व्यवसाय योजनाओं के टैम्पलेट देख सकते हैं। एक सैम्पल टैम्पलेट हमने भी इसके साथ संलग्न किया है।

इसके अलावा, आप किसी स्थानीय राष्ट्रीयकृत बैंक, जिला उद्योग अधिकारियों, ईडीसी सेल, इनक्यूबेसन केंद्रों या चार्टर्ड एकाउंटेंट्स से मदद ले सकते हैं क्योंकि एक अच्छी व्यवसाय योजना आपको महत्त्वपूर्ण और सूचित व्यावसायिक निर्णय लेने में मदद कर सकती है। यह उम्मीद की जाती है कि परियोजना की तैयार का काम छात्रों को उद्यमिता के विभिन्न पहलुओं को समझने और इसे अपने जीवन में सार्थक बनाने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद करेगा।

परियोजना

1. अपने आसपास कम से कम पांच ऐसे व्यक्तियों का पता लगाएं जो उद्यमी के कार्य कर रहे हैं तथा यह संज्ञान करें कि वे अपने जीवनयापन के लिए कितना अर्जित कर रहे हैं। विभिन्न प्रकार के उद्यमशीलता के अंतर्गत उनको वर्गीकृत करें और निम्न प्रारूप में आँकडे दिखाएं:

क्र.सं.	उद्यम का नाम तथा पता	उत्पाद/सेवा का नाम	उद्यमिता का प्रकार
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

2. निम्नलिखित के आधार निम्नलिखित उद्यमों के क्रियाकलापों की तुलना करें :

क्र.सं.	क्रियाकलाप	अर्थ	विनियमन	आचार कर्ता	नियम एवं शर्तें संहिता	जोखिम	प्रतिफल
1.							
2.							
3.							
4.							
5.							

3. अपने आसपास के किन्हीं पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लें तथा यह ज्ञात करें कि वे अपने उद्यम में किन संसाधनों का उपयोग करते हैं :

क्र.सं.	उद्यम का नाम तथा पता	उत्पाद/सेवा का नाम	प्रयुक्त संसाधन		
			भूमि (वर्ग मीटर	पूंजी (रूप	कर्मचारियों की संख्या
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					

4. पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर यह ज्ञात करें कि उनकी व्यवसाय वित्त योजना क्या है :

क्र.सं.	उद्यम का नाम	ऋण पर ली गई पूंजी	स्वामित्व पूंजी	स्थिर पूंजी	परिवर्तनीय पूंजी
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					

5. पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर उनके द्वारा अपनाए गए गुणवत्ता मानक एवं उनके उत्पादों के लिए लागू गुणवत्ता मानक ज्ञात करें।

क्र.सं.	उद्यम का नाम	उत्पाद का प्रकार	गुणवत्ता मानक
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

6. पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लें और यह ज्ञात करें कि उनके द्वारा निर्मित्त उत्पादों में जोखिम क्या हैं :

क्र.सं.	उद्यम का नाम	उत्पाद का प्रकार	जोखिम का प्रकार
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

7. पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर यह ज्ञात करें कि वे अपनी व्यवसाय योजना के निर्माण के लिए किससे परामर्श करते हैं :

क्र.सं.	उद्यम का नाम	सरकारी विभाग	निजी व्यावसायिक से	स्थापित उद्यमों से
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

8. पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर यह पता लगाएं कि वे अपने उत्पाद अथवा का व्यवहार्यता विश्लेषण किस प्रकार करते हैं।

क्र.सं.	उद्यम का नाम	उत्पाद के प्रकार	विश्लेषण के लिए महत्त्वपूर्ण मुद्दे	व्यवहार्यता विश्लेषण कर्ता
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

9. विभिन्न प्रकार के उत्पाद एवं सेवाओं के कार्य करने वाले पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर उनसे यह ज्ञात करें कि अपनी व्यवसाय योजना के संबंध में ऋणदाताओं की शंकाओं का समाधान करने की समस्या से किस प्रकार निपटते हैं :

क्र.सं.	व्यवसाय का स्वरूप	उत्पादों के प्रकार	सामना की गई समस्या	समाधान के लिए किए गए उपाय
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

10. अपने आसपास के तीन बैंकों से ज्ञात करें कि वे कार्यशील पूंजी के लिए अपेक्षित निधियां किस दर पर उपलब्ध करवाते हैं।

क्र.सं.	बैंक	बैंक का नाम	ब्याज की दर	टिप्पणी
1.	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक			
2.	निजी क्षेत्र के बैंक			
3.	सहकारी बैंक			

11. कम से कम पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर यह ज्ञात करें कि वे अपने व्यवसाय के लिए अपेक्षित कच्चा माल कहां से प्राप्त करते हैं।

क्र.सं.	व्यवसाय का स्वरूप	उत्पादों के प्रकार	प्रयुक्त कच्ची सामग्रियाँ	कहां से प्राप्त करते हैं
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

12. कम से कम पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर उनका वितरण चैनल ज्ञात करें।

क्र.सं.	व्यवसाय का स्वरूप	उत्पाद का प्रकार	वितरण चैनल
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

13. कम से कम पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर यह ज्ञात करें कि उन्होंने अपना लाइसेंस कहां से प्राप्त किया है।

क्र.सं.	व्यवसाय का स्वरूप	उत्पाद का प्रकार	लाइसेंस जारी करने वाला प्राधिकरण
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

14. कम से कम पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर यह ज्ञात करें कि क्या वे अपने उत्पादों का विज्ञापन करते हैं। यदि हां, तो विज्ञापन का माध्यम क्या है?

क्र.सं.	व्यवसाय का स्वरूप	उत्पाद का प्रकार	विज्ञापन व्यय
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

15. कम से कम पांच उद्यमियों का साक्षात्कार लेकर यह ज्ञात करें कि वे कुशल अथवा अर्द्ध-कुशल श्रमिकों की सेवाएं लेते हैं। उनके व्यवसाय के लिए अपेक्षित कौशल की सूची भी तैयार करें।

क्र.सं.	व्यवसाय का स्वरूप	श्रमिक का प्रकार	अपेक्षित कौशल का प्रकार
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

16. एफएमसीजी उत्पादों के कार्य करने वाले किसी एक उद्यमी का साक्षात्कार लें तथा उनके द्वारा व्यवसाय स्थापित करने से लेकर व्यवसाय चलाने की पूरी प्रक्रिया पर एक लेख लिखिए।

माध्यमिक पाठ्यक्रम

उद्यमिता (249)

1. औचित्यपरकता

उद्यमी नवाचार, रोजगार उत्पत्ति तथा किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के विकास में प्रमुख वाहक होते हैं। अपने स्वयं के व्यवसाय के विचार का कार्यान्वयन जीवन के प्रारंभ से किया जाना चाहिए। भारत में, अनेक युवा उच्च वेतन वाली नौकरियां छोड़कर अपने कैरियर के रूप में उद्यमिता का चयन कर रहे हैं। भारत सरकार और राज्य सरकारों की ओर से समर्थनकारी उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किया जा रहा है और एकल खिड़की प्रणाली के माध्यम से प्रोत्साहन और ढाँचागत सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। इसके परिणामस्वरूप ही ''ईज ऑफ डूइंग बिजनेस'' की विश्व रैंकिंग में भारत के स्थान में सुधार हो पाया है। उद्यमशीलता का अर्थ किसी व्यापार उद्यम को शुरू करना, डिजाइन करना, लॉन्च करना तथा उसके प्रबंधन करने से है। किसी भी व्यावसायिक उद्‌यम को बनाए रखने और बेहतर बनाने के लिए नवाचार बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस भावना के साथ, विद्‌यार्थियों में उद्यमिता की बुनियादी और आजीविका के रूप में उद्यमिता का चयन करने की समझ विकसित करने के लिए माध्यमिक स्तर पर उद्यमिता पाठ्यक्रम शुरू किया गया है।

2. उद्देश्य

यह पाठ्यक्रम एक विषय के रूप में उद्यमिता की समझ विकसित करने में मदद करेगा। उद्देश्य के रूप में यह विषय शिक्षार्थियों को सक्षम करेगा:

- उद्यमिता का अर्थ, उसके स्वरूप एवं उसकी विशिष्टताओं का ज्ञान प्राप्त कर पाने में;
- उद्यमिता का चयन अपने कैरियर के रूप में करने के लिए प्रेरित कर पाने में;
- वे नवाचार एवं मूल्य संवर्धन के महत्व को समझ पाने में;
- उत्प्रेरणा की अवधारणा एवं उसके सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त कर पाने में;
- उद्यमिता के विचार को साकार करने की प्रक्रिया समझ पाने में; तथा
- उद्यमिता की तंत्रव्यवस्था एवं सरकारी सहायताओं का ज्ञान प्राप्त कर पाने में।

3. पाठ्यक्रम संरचना

पाठ का नाम	अंक	घंटे
मॉड्यूल 1 उद्यमिता 1. उद्यमिता : एक परिचय 2. उद्यमी : एक परिचय 3. उद्यमशीलता का महत्त्व	20 अंक	45 घंटे
मॉड्यूल 2 सृजनात्मकता एवं नवाचार 4. सृजनात्मकता : सफल उद्यमिता के लिए एक आवश्यकता 5. नवाचार और मूल्य संवर्धन की आवश्यकता 6. नवाचार और समस्या समाधानकर्त्ता के रूप	12 अंक	25 घंटे
मॉड्यूल 3 उद्यमिता उत्प्रेरण 7. उद्यमिता मूल्य एवं उत्प्रेरण 8. उपलब्धि उत्प्रेरण 9. सफल उद्यमी	18 अंक	40 घंटे
मॉड्यूल 4 उद्यमिता अवसर 10. विचारोत्पति 11. उद्यम की स्थापना 12. संसाधन एकत्रण	25 अंक	50 घंटे
मॉड्यूल 5 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा उद्यमिता परितंत्र 13. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) 14. किससे, किसके लिए, सम्पर्क करें 15. उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं 16. उष्मायन (इंक्यूवेशन) : एक परिचय 17. ई-संसाधन	25 अंक	50 घंटे
मॉड्यूल 6 परियोजना कार्य		30 घंटे

18. परियोजना कार्य		
योग	**100 अंक**	**240 घंटे**

4. अनुदेशों का माध्यम

हिन्दी (इस पाठ्यक्रम का क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनुवाद किया जाएगा)

5. मूल्यांकन

विषय के लिए मूल्यांकन के अंतर्गत शिक्षक-अंकित-मूल्यांकन पत्र (टीएमए) और सार्वजनिक परीक्षा के माध्यम से आंतरिक मूल्यांकन किए जाएंगे। सार्वजनिक परीक्षाएं वर्ष में दो बार अर्थात अप्रैल और अक्टूबर के महीने में आयोजित की जाएंगी। टीएमए को शिक्षण का एक उपकरण माना जाएगा। इससे विद्यार्थी अपनी प्रगति जानने और परीक्षा के लिए अच्छी तैयारी करने में सक्षम बन पाएंगे। इस परियोजना कार्य के अधिगम से विद्यार्थी अपेक्षित कौशल के विकास करने एवं उद्यमिता के विभिन्न घटकों को समझने में सक्षम हो सकेंगे तथा इसका अपने जीवन में सार्थक उपयोग कर पाएंगे। मूल्यांकन की उपर्युक्त रणनीतियों के अलावा, प्रत्येक पाठ के लिए पाठगत प्रश्न, पाठांत प्रश्न और क्रियाकलापों के लिए स्व-मूल्यांकन के लिए कुछ पूर्वनिर्मित घटक भी प्रदान किए जाएंगे।

6. मूल्यांकन प्रक्रिया

कालावधि समापन परीक्षा (टीईई) – 100 अंक

शिक्षक अंकित-मूल्यांकन पत्र (टीएमए) – सैद्धान्तिक का 20%

उतीर्वता मापदंड सैद्धान्तिक का 33%

7. पाठ्यक्रम विवरण

मॉड्यूल 1 उद्यमिता

उद्यमिता, उद्यमी होने की प्रक्रिया है। इस मॉडयूल के अध्ययन के पश्चात शिक्षार्थी उद्यमशीलता की अवधारणा और परिभाषा, इसके स्वरूप और क्रियाकलाप, नैतिकता, उद्यमी के मूल्यों और उद्यमशीलता के महत्व को समझने में सक्षम हो सकेंगे। आपको उद्यमियों के गुणों के बारे में भी ज्ञान प्राप्त होगा।

पाठ 1 उद्यमिता : एक परिचय

- अर्थ एवं परिभाषाएं
- उद्यमिता की विशिष्टताएं
- उद्यमिता के स्वरूप

- स्व-रोजगार
- आजीविका
- नौकरी एवं उद्यमिता के मध्य अंतर
- आजीविका के विकल्पा के रूप में उद्यमिता

पाठ 2 उद्‌यमी : एक परिचय

- उद्‌यमी कौन होता है?
- उद्‌यमी के गुण
- उद्‌यमियों के स्वरूप
- उद्‌यमी बनने के आकर्षण
- उद्‌यमी के कार्यकलाप
- उद्‌यमी अध्ययन

पाठ 3 उद्यमिता का महत्व

- सामाजिक आर्थिक विकास
- रोजगार उत्पति
- संतुलित क्षेत्रीय विकास

मॉड्यूल 2 : रचनात्मकता एवं नवाचार

रचनात्मकता नए विचारों को विकसित करने तथा समस्याओं और द्वारा अवसरों के लिए नई विधियों की खोज करने की क्षमता है। नवाचार, वह क्षमता है जिससे रचनात्मक विधि समस्याओं का निवारण करके एवं अवसरों की खोज करके लोगों के जीवन एवं समाज को समृद्ध बनाया जा सकता है। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों को रचनात्मकता और नवाचार का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। इसके अलावा, इससे नवाचार के माध्यम से मूल्यवर्धन प्राप्ति का ज्ञान भी प्राप्त होगा। सफल उद्‌यमियों के संदर्भ से विद्‌यार्थी प्रेरित हो सकते हैं। आईपीआर का एक संक्षिप्त परिचय इसमें शामिल किया गया है।

पाठ 4 रचनात्मकता : सफल उद्यमिता के लिए एक आवश्यकता

- रचनात्मकता की अवधारणा
- रचनात्मकता का संवर्धन करने की विधियां

- रचनात्मकता की बाधाएं

पाठ 5 नवाचार और मूल्य संवर्धन की आवश्यकता

- विचार, अन्वेषण, नवाचार
- रचनात्मरकता बनाम नवाचार
- अन्वेषण बनाम नवाचार
- मूल्य संवर्धन
- आईपीआर

पाठ 6 नवाचार और समस्या समाधानकर्त्ता के रूप में उद्यमी

- ऋषि
- स्वास्थ्य सेवा
- शिक्षा
- स्वच्छपता
- ऑटोमोबाइल
- सूचना प्रौद्योगिकी
- वस्त्र

मॉड्यूल 3 : उद्यमिता उत्प्रेरण

उद्यमिता उत्प्रेरण में विभिन्न ऐसे कारक शामिल हैं जो उद्यमिता की ऐसी आकांक्षाओं एवं क्रियाकलापों को प्रेरित करते हैं जिससे वे किसी लक्ष्य विशेष की प्राप्ति कर पाते हैं। इस पाठ्यक्रम में उद्यमिता मूल्यों, व्यवहार, उत्प्रेरण एवं नैतिकता पर ध्यान केन्द्रण किया गया है। उत्प्रेरणा की विभिन्न अवधारणाओं का उल्लेख सफल उद्यमियों की उपलब्धियों के अध्ययनों के साथ किया गया है।

पाठ 7 उद्यमिता मूल्य तथा दृष्टिकोण

- मूल्य, आचार व्यवहार एवं उत्प्रेरण
- नैतिकता

पाठ 8 उपलब्धि उत्प्रेरण

- मैक्कलैंड का सिद्धांत
- मैस्लो का आवश्यकताओं की तारतम्यता का सिद्धांत

- अधिकार नियंत्रण
- SWOT / आत्म विश्लेषण

पाठ 9 सफल उद्यमी

- ग्रामीण उद्‌यमी
- महिला उद्‌यमी
- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्गों के उद्‌यमी
- परिवार की पहली पीढ़ी के उद्‌यमी
- दिव्यांग उद्‌यमी
- कृषि उद्‌यमी
- सामाजिक उद्‌यमी

मॉड्यूल 4 : उद्यमिता अवसर

उद्‌यमी को व्यवसाय अवसर को संज्ञान में लेने के प्रति सदैव तत्पर होना चाहिए। इस पाठ्यक्रम में विचारों को उद्‌यम में परिवर्तित करने की प्रक्रिया पर व्यवस्थित स्वरूप में विचार किया गया है। इसका अध्ययन करने से विद्‌यार्थी विचार उत्पति की विधियों, उद्‌यम स्थापित करने की प्रक्रियाओं एवं उद्‌यम को प्रारंभ करने के लिए अपेक्षित संसाधनों के एकत्रण की विधि को समझ पाएंगे।

पाठ 10 विचारोत्पत्ति

- आवश्यकताएं, इच्छाएं, मांग
- विचार उत्पति की विधियां
  1. गहन विचार
  2. ध्यान केन्द्रण
  3. अंतर विश्लेषण
- चुनौतियों को अवसरों में परिवर्तित करना : केस अध्ययन

पाठ 11 उद्यम की स्थापना

- व्यवसाय उद्‌यम के स्वरूप
- परियोजना रिपोर्ट – व्यवहार्यता अध्ययन

- विधिक अनुपालन
- उद्यम का पंजीकरण (यूएएम)

पाठ 12 संसाधन एकत्रण

- संसाधनों की अवधारणा
- संसाधनों के स्वारूप (5 M)
- निधियन के स्रोत

  – पारम्परिक स्रोत

  – आधुनिक स्रोत

मॉड्यूल 5 : सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा उद्यमिता परितंत्र

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम हमारे देश में सकल विकास दर (जीडीपी) और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस पाठ्यक्रम में उद्यमी सहायता परितंत्र को शामिल किया गया है। शिक्षार्थी सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमिता, प्रमुख स्टेकधारकों, उद्यम स्थापित करने के लिए सरकार द्वारा प्राप्त सहायता को समझने में सक्षम होंगे।

पाठ 13 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई)

- निर्माण एवं सेवा सेक्टर की परिभाषा
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की परिभाषा
- ईज ऑफ डूइंग बिजनेस

पाठ 14 किससे, किसके लिए सम्पर्क करें

- परियोजना के चयन के लिए
- पंजीकरण
- वित्त
- तकनीकी
- प्रशिक्षण
- अवसंरचना
- कच्चा माल
- संयंत्र एवं मशीनरी
- विपणन जानकारी

पाठ 15 उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएँ

- पीएमईजीपी योजना
- मुद्रा (एमयूडीआरए) योजना
- स्टैंड अप योजना
- राष्ट्रीय अजा / अजजा हब योजना

पाठ 16 उष्मायन (इंक्यूबेशन) : एक परिचय

- अवधारणा
- उष्मायन केन्द्रों के क्रियाकलाप
- भारत में इंक्यूबेसन केन्द्र

पाठ 17 ई - संसाधन

- उद्यमी मित्र
- स्टार्टअप इंडिया
- मोबाइल एप्पस

मॉड्यूल 6: परियोजना कार्य

पाठ 18 परियोजना कार्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के पश्चानत विद्यार्थी अपने आसपास के क्षेत्र में व्यवसाय अवसरों का संज्ञान करने में सक्षम हो सकेंगे तथा उसके लिए व्यवसाय योजना का निर्माण कर सकेंगे। (इसका एक सैम्पल अगले पृष्ठ पर संलग्न किया गया है)

किसी उद्यमी को किसी व्यापार योजना के निर्माण के लिए समग्रता की आवश्यकता नहीं होती है। आप बस सही उद्यम व्यवहार अपनाकर भी सफल हो सकते हैं। इसके लिए आप www.udyami.org.in/projectreports एवं www.kviconline.gov.in/ pmegp/pmegpweb /docs/jsp/newprojectReports.jsp पर विजिट करके और अधिक व्यवसाय योजनाओं के टैम्प लेट देख सकते हैं। एक सैम्पनल टैम्पूलेट हमने भी इसके साथ संलग्न किया है।

इसके अलावा, आप किसी स्थानीय राष्ट्रीयकृत बैंक, जिला उद्योग अधिकारियों, ईडीसी सेल, ऊष्मायन केंद्रों या चार्टर्ड एकाउंटेंट्स से मदद ले सकते हैं, क्योंकि एक अच्छी व्यवसाय योजना आपको महत्वपूर्ण और सूचित व्यावसायिक निर्णय लेने में मदद कर सकते है।

आदर्श प्रश्न पत्र

उद्यमिता

(249)

माध्यमिक पाठ्यक्रम

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 100**

निर्देश : (i) इस प्रश्न पत्र में चार खण्ड है।

(ii) सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) अपने उत्तर लिखते समय शब्द सीमा का ध्यान रखें।

(iv) जहाँ भी आवश्यक हो, साफ, स्वच्छता तथा नामांकित सारणी/तालिका अथवा चित्र का निर्माण करें।

प्रश्न 1 से 8 के लिए दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिये। **1x8=8 अंक**

1. कोई उद्यमी जो अपने ग्राहकों एवं विपणन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है वह उद्यमी है:

   (क) ड्रोन उद्यमी (ख) पारम्परिक उद्यमी

   (ग) नव उद्यमी (घ) अवसरवादी उद्यमी

2. क्षमता की कमी की सम्बद्धता निम्नलिखित से है:

   (क) पुल कारक (ख) पुश कारक

   (ग) पुश एवं पुल कारक दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

3. आध्यात्मिक मूल्यों में निम्नलिखित शामिल है:

   (क) अंतदृष्टि (ख) जागरूकता

   (ग) सत्यता (घ) उपर्युक्त सभी

4. वह अधिकार जिससे विचारों की विशिष्ट अभिव्यक्ति का संरक्षण हो पाता है, उसे कहते हैं:

(क) ट्रेडमार्क (ख) पेटेंट

(ग) कॉपीराइट (घ) उपर्युक्त सभी

5. तारम्यता के सिद्धांत के अंतर्गत इनमें से क्या आवश्याकताएं नहीं है?

(क) मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं (ख) मान्यता आवश्यकताएं

(ग) स्वच्छता कारक (घ) अहं की आवश्यकताएं

6. स्वॉट (SWOT) मॉडल में क्या शामिल नहीं है:

(क) न्यूनताएं (ख) अवसर

(ग) शक्तियां (घ) व्यापार

7. तकनीकी व्यवहार्यता में किस अध्ययन को विचार में नहीं लिया जाता है:

(क) अवसंरचनात्मक सुविधाएं (ख) कच्ची सामग्री की उपलब्धता

(ग) श्रम बल की आवश्यकताएं (घ) पिछड़े क्षेत्रों के लिए प्रोत्साहन

8. सिडबी का क्या अर्थ है:

(क) स्टेट इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया

(ख) स्माल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया

(ग) स्माल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बोर्ड ऑफ इंडिया

(घ) स्टेट इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बोर्ड ऑफ इंडिया

प्रश्न संख्या 9 से 16 के प्रत्येक के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिए। 3x8=24

9. जीवन के प्रत्येक पथ पर महिलाएँ आगे से आगे बढ़ रही हैं। इस कथन के आयोग में महिला उद्यमियों की भूमिका की समीक्षा कीजिए।

10. उद्यमिता और पार-उद्यमिता के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

11. भारत में उद्यमिता कैसे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दे सकती है?

12. बहुआयामी विकास का महत्व बताएं।

13. उद्यमी विभिन्न स्रोतों से अपना दृष्टिकोण विकसित करते हैं। दृष्टिकोण विकसीत करने वाले विभिन्न स्रोतों की पहचान कीजिए।

14. तारतम्यवता के क्रम में दो में से किन की पूर्ति पहले करनी होती है- सुरक्षा या अहं? आवश्यकताओं की तारतम्यता के सिद्धांत के अनुसार इसकी परिभाषा प्रस्तुत करें।

15. प्रौद्योगिकी इनक्यूबेसन और उद्यमिता साथ-साथ चलते हैं। इस तथ्य के संदर्भ में प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर आईआईटी की भूमिका बताइये।

16. उद्योग आधार को परिभाषित करें। इससे कौन सा उद्देश्य पूरा होगा?

प्रश्न संख्या 17 से 24 के प्रत्येक के उत्तर 100-120 शब्दों में दीजिए। 4x8=32

17. आईपीआर को परिभाषित करें। यह क्यों महत्वपूर्ण है?

18. मैक्लेलैंड की प्रेरणा के सिद्धांत को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। इनकी आवश्यकताएं क्या हैं? स्पष्ट कीजिए।

19. विचारोत्पति की विचार मंथन तकनीक की व्याख्या कीजिए।

20. किसी उद्यम की स्थापना के लिए विभिन्न चरण पूरे करने होते हैं। यह जटिल हो सकता है। इस कथन के संबंध में एक उद्यम स्थापित करने में शामिल व्यापक चरणों की व्याख्या करें।

21. भौतिक संसाधन जुटाने की प्रक्रिया के दौरान ध्यान में रखे गए विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करें।

22. भारत में निर्यात प्रोत्साहन परिषद की भूमिका का वर्णन करें।

23. भारतीय संदर्भ में एमएसएमई का अर्थ स्प्ष्टक करें?

24. इनक्यूबेसन (उष्मायन) का अर्थ क्या है? एक इनक्यूबेसन (उष्मायन) की प्रक्रियाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।

प्रश्न संख्या 25 से 30 के प्रत्येक के उत्तर 120-150 शब्दों में दीजिए। 6x5=30

25. भारत में स्वस्थ उद्यमिता के वातावरण को बढ़ावा देने में सरकार की भूमिका और महत्व को स्पष्ट कीजिये।

26. अपने स्वयं के व्यतवसाय को ग्राहकों की नजर से देखने की क्षमता के विकास से मूल्यों संवर्धन की कला का विकास होता है। मूल्यों की अवधारणा के इस कथन की परिभाषा करें। साथ ही विभिन्न मूल्यों का वर्णन भी करें।

27. स्वॉट (SWOT) स्व-विश्लेषण का एक उपकरण है। स्वॉट (SWOT) के प्रत्येक तत्व में से कम से कम दो तत्वों के संदर्भ में उपयुक्त उदाहरण के साथ दिए गए कथन की व्याख्या कीजिये।

28. ''व्यवहार्यता अध्ययन एक व्यवस्थित विश्लेषण है जिसमें किसी विशेष व्यापार विचार के संभावित समाधानों को खोजना और उनका दस्तावेजीकरण करना शामिल है।'' व्यवहार्यता अध्ययन की अवधारणा को विस्तृत करते हुए कथन की व्याख्या करें।

29. ''उद्यम पूंजी ऐसे व्यक्तियों और फर्मों से पूंजी जुटाने की प्रक्रिया है जो उच्च विकास और उच्च जोखिम वाली फर्मों में निवेश करते हैं।'' दिए गए कथन के संदर्भ में वित्त के स्रोत के रूप में उद्यम पूंजी का विश्लेषण करें।

30. ''इज ऑफ डूइंग बिजनेस'' से भारत में साख निर्माण में काफी उछाल आया है। दिए गए कथन के संदर्भ में इज ऑफ डूइंग बिजनेस के अर्थ और महत्व को समझाएं।

प्रश्नपत्र योजना

विषय : उद्यमिता — स्तर : माध्यमिक

अधिकतम अंक : 100 — समय : 3 घंटे

1. लक्ष्य अनुसार अंक विभाजनन (भारांश)

उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
ज्ञान आधारित	28	28%
समझ आधारित	52	52%
प्रयोग कौशल आधारित	20	20%
	100	100%

2. प्रश्नों के प्रकार के अनुसार अंक विभाजन (भारांश)

प्रश्न-प्रकार	प्रश्न संख्या	प्रतिशत प्रश्न अंक	कुल अंक
बहु विकल्पात्मक प्रश्न	50	1	50
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न	6	2	12
लघुत्तरात्मक प्रश्न	6	3	18
दीघोत्तरीफ प्रश्न	4	5	20

3. पाठ्यविषय विभागानुसार भारांश (अंक विभाजन)

मॉड्यूल	अंक
1. उद्यमिता	19
2. रचनात्मकता एवं नवाचार	18
3. उद्यमिता उत्प्रेरणा	18
4. उद्यमिता अवसर	20
5. सुक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा उद्यमिता परितंत्र	25
6. परियोजना कार्य	00 (आंतरिक मूल्यांकन हेतु)

4. लक्ष्य अनुसार अंक विभाजनन (भारांश)

उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
ज्ञान आधारित	25%	25
समझ आधारित	45%	45
प्रयोग कौशल आधारित	30%	30

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

उद्यमिता (249)

माध्यमिक स्तर पर उद्यमिता विषय के पाठ्यक्रम का विभाजन			
कुल पाठ - 18			
मॉड्यूल	**शिक्षक-अंकित मूल्यांकन पत्र**	**सार्वजनिक परीक्षा (60%)**	
	(पाठ-7)	**वस्तुनिष्ट 50%** **पाठ-5**	**विषयनिष्ठ - 50%**
मॉड्यूल-1	पाठ-2 उद्यमी : एक परिचय	पाठ-3 उद्यमिता का महत्त्व	पाठ-1 उद्यमिता : एक परिचय
मॉड्यूल-2	पाठ-6 वाचार और समस्या समाधानकर्ता के रूप में उद्यमी	पाठ-5 नवाचार एवं मूल्य संवर्धन की आवश्यकता	पाठ-4 रचनात्माकता : उद्यमिता की सफलता के लिए एक आवश्यकता
मॉड्यूल-3	पाठ-9 सफल उद्यमी	पाठ-7 उद्यमिता मूल्य तथा दृष्टिकोण	पाठ-8 उपलब्धि उत्प्रेरण
मॉड्यूल-4	पाठ-10 विचारोत्पत्ति	पाठ-11 उद्यम की स्थापना	पाठ-12 संसाधन एकत्रण
मॉड्यूल-5	पाठ-15 उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं पाठ-17 ई-संसाधन	पाठ-14 किससे किसके लिए सम्पर्क करें	पाठ-13 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसमएमई) पाठ-16 उष्मायन (इनक्यूबेसन) : एक परिचय
मॉड्यूल-6	पाठ-18 परियोजना कार्य		

प्रस्तावित अंक योजना

सेट-I			
भाग क			
प्रश्न	विवरण	टिप्पणियां	अंक
1	घ	---	1
2	ख	---	1
3	घ	---	1
4	ग	---	1
5	ग	---	1
6	घ	---	1
7	घ	---	1
8	ख	---	1
भाग ख			
9	• महिला उद्यमी: अर्थ / परिभाषा • महिलाओं द्वारा नियंत्रित • 51 प्रतिशत अधिक भागीदार	कोई दो बिंदु	1.5+1.5
10	• उद्यमिता एवं पार–उद्यमिता के मध्य अंतर • उद्यमी: ○ अर्थ ○ विचार उत्पति करने वाला ○ जोखिम वहन करने वाला ○ पार–उद्यमिता अर्थ ○ विद्यमान संगठन में ○ नवाचार पर आश्रित जो नए विभाजन में परिणत हो सकता है।	कोई दो बिंदु	1.5+1.5

11	• स्वस्थ प्रतिस्पर्धा: ○ नए उत्पाद एवं सेवाएं ○ ग्राहकों के लिए अधिक विकल्प ○ कम मूल्य ○ नवाचार	कोई तीन बिंदु	1+1+1
12	• बहु आयामी विकास: ○ उद्यमी अपनी बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, समर्पण, साहस, एवं विभिन्न नई तकनीकों के ज्ञान, बाजार समझ इत्यादि से बहुआयामी विकास में मदद करते हैं।	---	3
13	• प्रवृत्ति के स्रोत: ○ वैयक्तिगत अनुभव ○ सहकारिता ○ समाज शिक्षा	कोई तीन बिंदु	1+1+1
14	• सुरक्षा एवं अहं की आवश्यकताएं ○ दोनों आवश्यकताओं का अर्थ एवं परिभाषा ○ पहले संतुष्ट की जाने वाली सुरक्षात्मक आवश्यकताएँ।	---	2+1
15	• प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर आईआईटी बिन्दु ○ वर्ष 2000 से सक्रिय परिचालन ○ नवाचार एवं प्रौद्योगिकी अंतरण के आधार द्वारा ○ केवल आईआईटी–डी विद्यार्थियों, पूर्व विद्यार्थियों एवं अकादमिक स्टॉफ के सदस्यों के माध्यम से इनक्यूबेटर आवेदन स्वीकार करना।	कोई दो बिंदु	1.5+1.5
16	• उद्योग आधार	कोई दो	1.5+1.5

	○ सरकारी पंजीकरण ○ लघु / मध्यम व्यवसाय अथवा उद्‌यम के प्रमाणन के लिए स्वीकृति प्रमाण पत्र तथा विशिष्ठ संख्या के साथ उपलब्ध करवाई जाती है। ○ क्या उद्यम अथवा इकाई एकल स्वामित्व, एएलपी, प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी अथवा कुछ और है।	बिंदु	
भाग ग			
17	आईपीआर तथा इसका महत्व: • अर्थ: कॉपीराइट, पेटेंट्स, भौगोलिक लक्षण, ट्रेडमार्क्स एवं भारत में अन्यर अमूर्त परिसम्पतियां • महत्व: ○ अन्यों से अतिक्रमण के प्रति सुरक्षा तथा उपयोग, निर्माण, बिक्री अथवा आयात के आपके एकल अधिकार की न्यायालयों से अंतत: सुरक्षा ○ अन्यों को आपकी अनुमति के बिना उपयोग, निर्माण, बिक्री अथवा आयात करने देना। ○ इसके लाइसेंस के माध्यम से रायल्टी कमाना ○ रणनीतिक गठबंधन के माध्यम से इसका दोहन करना। ○ इसकी बिक्री करके धर्नाजन करना	कोई चार बिंदु	1+1+1+1
18	• मैकक्लैंड का सिद्धांत ○ तीन आवश्यकता मॉडल ○ उपलब्धि के लिए आवश्यकता ○ शक्ति के लिए आवश्यकता ○ सम्बद्धता के लिए आवश्यकता	अर्थ के लिए 1 आवश्यकता के लिए 3	1+1+1+1
19	• विचार मंथन विधि ○ समाया के समाधान के लिए केन्द्र पर	कोई चार बिंदु	1+1+1+1

	ध्यान देश ○ यथासंभव अधिक विचारों की उत्पति ○ रचनात्मक एवं संकल्पनात्मक ○ पूर्व विचारों को विस्तारित अथवा मिश्रित करना ○ अन्यों के विचारों की आलोचना पर विचार करना ○ सामान्यत: यह 5-10 व्यक्तियों के समूह में भी जाती है ○ अन्यय कोई संबंधित बिंदु		
20	• उद्यम की स्थापना करना ○ विचार निर्धारण ○ व्यवसाय संगठन के स्वरूप का निर्धारण ○ व्यवहार्यता का अधययन ○ परियोजना रिपोर्ट तैयार करना ○ पंजीकरण एवं क्लीयरेंस ○ संसाधन एकत्र करना ○ वित्त प्राप्त करना ○ अंतिम निष्पादन	चरणों की व्याख्या अपेक्षित नहीं है	0.5x8
21	• भौतिक संसाधानों का एकत्रण ○ भौतिक संसाधन जैसे भूमि एवं भवन, संयंत्र एवं मशीनरी, फर्नीचर एवं जुड़नार, कच्चा माल इत्यादि ○ भौतिक संसाधनों में भारी निवेश अपेक्षित है। ○ भौतिक संसाधनों का परिमाण संगठन के आकार एवं स्वरूप पर निर्भर है। ○ अन्यए कोई सम्बद्ध प्वांइट	---	1+1+1+1
22	• भारतीय निर्यात प्रोत्साहन परिषद ○ भारत सरकार के संगठन जो फर्मों	कोई तीन बिंदु	1+1.5+1.5

	को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रवेश के लिए प्रोत्साहन एवं सहयोग देते हैं। ○ नए एवं विद्‍यमान निर्यातों को दिशानिर्देश एवं सहायता देते हैं। ○ निर्यातकों द्‍वारा अंतर्राष्ट्रीय मानकों का अनुसरण किए जाने की वे निगरानी करते हैं। ○ अन्य कोई सम्बद्ध प्वाइंट		
23	• भारतीय संदर्भ में एमएसएमई ○ दो वर्गो में वर्गीकृत है : एक निर्माण तथा दूसरा सेवा सेक्टर ○ इसका आगे सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्‍यमों में निवेश के आधार पर उनका वर्गीकरण किया गया है। ○ निर्माण सेक्टर में निवेश की सीमाएं व सेवा सेक्टर में निवेश की सीमाएं ○ सेवा क्षेत्र में निवेश की सीमाएं	कोई चार बिंदु	1+1+1+1
24	• उष्मायनः (रनक्यूबेटर) अर्थ ○ विभिन्न प्रकार की सहायताओं के माध्यम से उद्‍यमों के विकास एवं सफलता में संवर्धन के लिए स्थापित संगठन ○ वे व्यवसाय सहायता के लिए परामर्श प्रदान करते हैं तथा अंत में सेवाओं की निगरानी करते हैं। • क्रियाएं ○ स्टार्ट अप के लिए सेफ हाउस, वे ऐसा ज्ञान प्रदान करते हैं जो उद्‍यमियों को उद्‍यम प्रारंभ करने के लिए अपेक्षित होता है। ○ नवाचार पर केन्द्रित ताकि उद्यमी अपने विचारों को अवसंरचना के उपयाग के लिए तैयार कर सके ○ स्टार्ट-अप उद्‍गम की सफलता की संभावना को	अर्थ के लिए 1, तथा किन्हीं तीन क्रियाओं के लिए 3	1+3

	बढ़ाता है जिससे सामाजिक और आर्थिक लाभ सुनिश्चित होते हैं ○ क्षेत्र में प्रति काम कम लागत पर रोजगार उत्पन्न करता है ○ उद्यमशीलता की तंत्रव्यवस्था – नवीन उपायों कर्ता, सरकार, वित्तीय संस्थान, उद्यमियों, निवेशकों एवं प्रेरकों के एकत्रीकरण में नोडल बिंदु की भूमिका निभाता है। ○ अन्य कोई संबंधित बिन्दु		
भाग घ			
25	• सरकार की भूमिका ○ राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक नाबार्ड ○ द रूरल स्माल बिजनेस डेवलमेंट सेंटर आरएसबीडीसी ○ राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम एनएसआईसी ○ भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक सिडबी ○ द नेशनल कमीशन फार एंटरप्राइसेस इन द अनरिकोग्नाइज्ड सेक्टर एनसीईयूएस	कोई चार	1.5x4
26	• मूल्य : अर्थ ○ उत्पाद अथवा सेवाओं का मूल्य संवर्धन तथा तब जब ग्राहक अतिरिक्त आउटपुट के लिए अतिरिक्त धन के भुगतान के लिए सहमत हो • मूल्यों के प्रकार ○ कार्यात्मक मूल्य ○ भावात्मक मूल्य ○ अभिव्यक्त मूल्य	---	1+1.5+1.5+2

27	• स्वॉट (SWOT): अर्थ ○ एवॉटर (SWOT) विश्लेषण शक्तियों के संज्ञान पर आधारित एक विधि है। व्यक्तियों अथवा संगठनों के सम्मुख व्याप्त न्यूनताएं, अवसर एवं आशंकाएं • उदाहरणों के साथ स्पष्टीकरण	---	2+4
28	• व्यवहार्यता अध्ययन: अर्थ ○ तकनीकी व्यवहार्यता एवं लाभप्रदत्ता के संज्ञान के लिए प्रस्तावित विचार का विश्लेषण एवं मूल्यांकन • प्रकार: ○ बाजार व्यवहार्यता विश्लेषण ○ तकनीकी व्यवहार्यता विश्लेषण ○ वित्तीय व्यवहार्यता विश्लेषण ○ वाणिज्यिक व्यवहार्यता विश्लेषण ○ आर्थिक विश्ल्षण	---	1+5
29	• उद्यम पूंजी ○ अर्थ ○ दीर्घकालिक वित्त ○ समृद्ध निवेशक, निवेश बैंक तथा अन्य कोई बड़े स्तर का वित्तीय संस्थान ○ जो मौद्रिक अथवा तकनीकी अथवा प्रबंधकीय अनुभव के स्वरूप में हो सकता है ○ अत्यधिक जोखिम ○ उद्यम पूंजीपति को अपना भाग मिलता है तथा वह निर्णय निर्धारण में भूमिका निभाता है। ○ किसी उद्गम पूंजीपति का उल्लेख करें	कम से कम छः बिंदु	6

30	• इज ऑफ डूइंग बिजनेस: अर्थ • महत्व ○ कोई चार प्वांइट • इज ऑफ डूइंग बिजनेस में भारत की वरीयता		1+4+1